## ॥ अनुक्रमणिका ॥

॥ श्री ॥

# ॥ छत्रीश बोल संग्रह ॥

समस्त साधुजी, साधवीजी, श्रावक अने श्राविकाने अवश्य उपयोगी जाणीपोताने खर्चे घणीज रीते संशोधन करावी मफ़त ( बक्षीस ) आपवा सारु तैयार करी छपावी प्रसिद्ध करनार,

अगरचंद भेरुदान शेठीया. मु. बिकानेर.

प्रथमावृत्ति-प्रत १००० संवत १९७२ — सने १९१६

किम्मत सदुपयोग ( अमूल्य. )

| पृष्ठ | अशुद्ध | शुद्ध | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| ६० | कीडीना इंडा | अंड सूक्ष्म | १३ |
| | सूक्ष्म | | |
| ६० | धूंहरी सूक्ष्म | हरिसूक्ष्म | १४ |
| ६० | गलोय प्रमुख- | लयण सूक्ष्म जीवो- | |
| | ना इंडा सूक्ष्म | के घर | १४ |
| ६४ | वेहने | पेहने | ६ |
| ६४ | षिण | पिण | १४ |
| ७० | वृद्धीतरी | बधोतरी | ४ |
| ७० | आंखो नथी | आंत्रोथी | २४ |
| ७१ | करणनें | करणनें आया | ८ |
| ७१ | आसथा | आसता | १७ |
| ७४ | वाजित्रत्र | वाजित्र | ११ |
| ७८ | जीवने | जीवते | ९ |
| ८२ | करसुं | करेसुं | १२ |
| ८२ | रूहमें | रोहिमें | १४ |
| ८२ | पमावसुं | पमावेसुं | १५ |
| ८२ | पुरुषरो | पुरषरा | १९ |
| ८२ | सेवे | सर्व | २० |
| ८२ | शोके | शोक | २१ |
| ८२ | भाषाए | भाषारा | २२ |
| ८८ | भूतकारी | भूत | १० |
| ८९ | आदामें | आटामें | ६ |
| ८९ | करतें इत्योर्थ | करलें इत्यर्थ | १२ |
| ८९ | बोलाता | बोलना | १२ |

श्री जैन विद्याविजय प्रींटींग प्रेसमां शा. चुनीलाल अमथाभाइए छाप्युं-अमदावाद.

हीलें निंदे बेसीनें देवें ३, ए तीन बोले जीव अशुभ दीर्घ मोटो आउखो पामें घ-
णा रोग दुःख दारिद्र अशाता घणो पामे. २६

३ तीन प्रकारें जीव शुभ दीर्घ आयुषो पामें. जीवनी हिंसा न करें १, जूठ नही बोलें २, साधु चारित्रीयनुं सुझतो निरदोष एषणीक मननें गमतो प्रीतिकारीयो अन्न पाणी वस्त्र पात्र सतकारनें देवें, आदरसन्मान देवें, साधुनी सेवा करें घणें ३ प्रकारें ए तीन बोल सेवें तिकें जीव शुभ दीर्घ आउखो घणी सासतीसाता सुखरो मोटो आउखो पामें ३. २७

३ तीन प्रकाररी भली गतिः मनुष्यगति १, देवतारी गति २, सिद्धगति ३. २८

३ तीन भुंमीगतिः नरकगति १, तिर्यंचगति २, अशुभ मनुष्यगति ३. २९

३ तीन लेश्या भुंमी. कृष्ण १, नील २, कापोतलेश्या ३. ३०

३ तीन लेश्या भली. तेजुलेश्या १, पद्मलेश्या २, शुक्ललेश्या ३. ३१

३ तीन उसीगण. माता पितासुं बेटा बेटी उसीगण न थावें. तिके बेटा तथा बेटी मा-
तापितानुं शतपाक सहस्रपाक तेलें करीनें हाथसें मर्दन करें तिको मर्दन हाम्ने

# प्रस्तावना.

आ छत्रीश बोलना थोकडानुं पुस्तक बिकानेर (राजपुताना) निवासी श्रेष्ठी अगरचंदजी भेरुदानजी तरफथी सर्वे सत्पात्रने—सज्जनने भेट आपवा माटे छपावी प्रगट करवामां आव्युं छे.

धर्मज्ञाननो फेलावो करवो ए महापुण्यनुं काम छे. श्रमणभगवंत श्रीमहावीरप्रभुए कह्युं छे के—"पढमंनाणं तवो दया." ज्ञाननो प्रसार करी अज्ञानरुपी अंधकारनो नाश करवो ए काम मायावी जगतना जीवो माटे अति जरुरनुं छे. अधर्म अने धर्मनो भेद ज्ञानथी मालम पडे छे.

धर्म ए अमूल्य चीज छे, तेनुं खरुं स्वरुप समजवुं मुश्केल छे. मनुष्यना शुष्क जीवनमां धर्म ए एक शीतळ चैतन्य छे. आत्मानी अनेक निराशाओमां धर्मज आशानो संचार करे छे. मृत्यु पछी पण जीवनने अवलंबन आपनार वस्तु धर्मज छे, धर्मनुं बळ अप्रत्यक्ष छे पण तेथी तेनो अस्वीकार करी शकायज नहि. जगतमां जे जे प्रजा बनी छे ते सर्वे धर्मना जोसथीज बनी छे. हालमां धर्मनो अर्थ संकुचितदृष्टिथी करवामां आवे छे ते ठीक नथी. वादविवादथी धर्मनुं शान्तिप्रचारक मूळ स्वरूप नष्ट करी तेने विरोधवर्धक रूप आपवुं योग्य नथी एना यथोचित उपयोगथी मनुष्यनुं कल्याणज थाय छे. जे हानि थाय छे ते तो धर्मांधताथी थाय छे, धर्मथी थती नथी. माटे वादविवाद के विरोधवर्धक के धर्मांधता प्रदर्शक खंडनमंडन जेवुं लखाण प्रगट करवानुं पसंद नहि करतां छत्रीश बोलना थोकडा जेवुं सर्वने प्रिय थइ पडे तेवुं आ पुस्तक शेठश्री मोसुफे प्रगट करवानुं योग्य धार्युं जणाय छे.

जुदा जुदा सूत्रमां के स्थळमां जुदा जुदा बोलनुं छुटुं छुटुं ज्ञान मळी शके खरुं पण ते शोधवामां पुष्कळ वखत जाय अने तेम छतां पण जोइए तेटली विगत एकठी थइ शके नहि तेथी आ प्रमाणे छत्रीश बोलनो संग्रह

४ भारवाहीनो दृष्टांत श्रावक उपरें जाणवो. छकायरो आरंभ समारंभ ते भार जाणवो अने भारवाही समान श्रावक ते पहिलें विश्राम समकितसहित बारे व्रत अंगीकार करे तिवारे मिथ्यात अविरतरूपीयो दशगुणो भार उतरे अने इग्यार माहे सेंरो भार रहे १, बीजो विश्राम संवर सामायिक करे तिवारें सर्व आरंभथकी निवर्ते ते बीजो विश्राम २, तीजो विश्राम श्रावक महिनामाही छ पोसा करें सर्व आरंभथकी निवर्ते ते तीजो विश्राम ३, चोथे विश्रामें सर्व पाप आलोइ निंदी निशल्य थइने भात पाणीरा पच्चखाण करीनें जावजीव संथारो करें ते चोथो विश्राम ४. १०

४ च्यार गति. नरकगति १, तिर्यंचगति २, मनुष्यगति ३, देवगति ४. ११

४ च्यार प्रकारें धर्म. खंती १, मुत्ती २, अजवे ३, मद्दवे ४. १२

४ च्यार दर्शण. चक्षुदर्शण १, अचक्षुदर्शण २, अवधिदर्शण ३, केवलदर्शण ४. १३

४ च्यार शूरवीर पुरुष. क्षमाशूरा अरिहंतजी १, तपःशूराः अणगारजी २, दानेशूरा वैश्रमणदेवता ३, संग्रामशूरा वासुदेवजी ४. १४

४ च्यार प्रकारें नारकीरो आउखो बांधे. महा आरंभिया ए घर हाट हवेलीरा आरंभ

एक स्थळे एकठो करी प्रगट करवानुं काम उचितज थयुं छे. आजना जीवन कलह (strugal of existence) ना समयमां बधां सूत्रो वांचवा जनसमूहने निरांत होती नथी तेमने आ एक ठेकाणे ३६ बोलनो थयेलो संग्रह बहु उपयोगी थशे.

आ छत्रीश बोलमां घणी उपयोगी बाबतो समाववामां आवी छे. द्रव्ये ने भावे, स्वार्थे ने परमार्थे, धर्मने व्यवहारे बधी रीते आ बोलोना अभ्यासथी लाभ थाय तेवुं छे, माटे जे जे भाइओने आ पुस्तक प्राप्त थाय तेणे तेनो सारो उपयोग करवो एटली विनंती छे.

धर्मना फरमान प्रमाणे सर्वे प्रकारनी जतना राखी आ पुस्तक वांचवानुं छे.

ज्ञाननो प्रसार करवो ए महा पुण्यनुं काम छे एम कांइ जैन सूत्रोज कहे छे एम नथी. श्रीमद्भगवद्गीतामां पण कह्युं छे के "नहि ज्ञानेन सदृशं, पवित्रमिह विद्यते."

अज्ञान एज अंधकार—एज माया के अविद्या छे तेनो नाश करी आवी वातो समजावनारां पुस्तको उपयोगी शामाटे न गणाय?

आमांनी केटलीक वातो समजवी अथवा अनुभववी मुश्केल छे. जेमके आत्मा एक छे. "धर्मस्य सत्त्वं निहितं गुहायाम्" तथापि जो एवी वातो समजाय ने वर्तनमां मूकाय तो वेळासर बेडो पार—भव छेदन थइ जाय. मनुष्यनी परीक्षा श्रुत, शील, गुण ने कर्मवडे थाय छे अने आ ३६ बोलना संग्रहमांथी ए चारे वातो प्राप्त थाय तेम छे.

दयाधर्मनी दृष्ठिने माटे आवां पुस्तको उपयोगी छे. अर्थात् हिंसाए जगतने केटलुं बधुं नुकशान कर्युं

पिण अंत करें तिके आदीश्वरजी भरतेश्वरजी १, एक आपरें कर्मरो अंत करें परं अनेशनें कर्मरो अंत नही करें तिके पडिमाधारी २, एक आगलेरे कर्मनो अंत करें अने आपरो कर्मरो अंत न करें तिको पडिवाइ सम्यग्दृष्टि ३, एक आपरें कर्मरो अंत पिण न थावें अने पेलां रे कर्मरो पिण अंत न थावें तिके पांचमे आराना साधु जाणवा ४. १४२

४ च्यार प्रकाररा आचार्य. एक मांहिला परिसह सहे अने बाहिरला परिसह सहे ते देशथकी आराधक ने सर्वथकी पिण आराधक १, एक मांहिला परिसह जीपे अने बाहिरला परिसह जीपे नही ते देशथकी विराधक अने सर्वथकी आराधक २, एक बाहिरला परिसह जीपे अने मांहिला परिसह जीपे नही ते देशथकी आराधक अने सर्वथकी विराधक ३, एक मांहीला परिसह जीपे नही अने बाहिरला परिसह पिण जीपे नही ते देशथकी पिण विराधक अने सर्वथकी पिण विराधक जाणवा ४. १४३

४ च्यार चपल थानक. चपल चपलाईसुं बेसें १, गति चपल ते चपलाईसुं चालें २, भाषा चपल ते चपलाईसुं बोलें ३, भाव चपल ते एक सूत्र भणवो मांडे एक सूत्र भणतो

छे ते जणाववानी जरुर नथी. शान्ति अने अहिंसाने प्रसारनारां ने द्रढ करनारां पुस्तकोने उपदेशनी आ जगतने बहु जरुर छे. कह्युं छे केः—

त्यजेद्धर्मं दयाहीनं, विद्याहीनं गुरुं त्यजेत् । त्यजेत्क्रोधमुखी भार्यां, निःस्नेहान्बांधवांस्त्यजेत् ॥

(दया विनानो धर्म, ज्ञान विनानो गुरु, क्रोधमुखी भार्या अने स्नेह विनाना बांधवो तजवा.)

आ पुस्तक सौने उपयोगी थाओ एवी महेच्छासहित आवां पुस्तको विना मूल्ये वहेंचवानी इच्छा धरावनार शेठश्रीनो आभार मानी प्रस्तावना पूर्ण करवामां आवे छे.

रा. रा. पोपटलाल केवळचंद शाह शास्त्र विरुद्ध कंइ न छपाइ जाय ते जोवानी बनती काळजी राखी बने तेटली सहायता आपी छे, ए मारे अहिं खास जणाववुं जोइए.

ली. शेठजी अगरचंदजी भेरुदानजी बिकानरवासी तरफथी

ली. वाडीभाइ छगनलाल शाह जैन बुकसेलर ठे. फीकाभटनी पोळ—अमदावाद.

॥ स्वकुलप्रकाश ॥

धर्मचंदजी तत्पुत्र प्रतापचंद अगरचंद भेरुदान हजारीमल चिरंजीव जेठमल पानमल लहरचंद उदेकरण जुगराज गैनपाळ शेठीया श्रीकल्याणमस्तु ॥

पुस्तक मिलणेका ठिकाणा—ग्रंथसंग्रहकर्त्ताके पास.

अगरचंदजी भेरोदानजी शेठीया.

मरोठीयोंकी गवाड—बीकानेर—राजपुताना ( मारवाड ).

कलकत्ता—नं. १०८ पुराणाचीणाबजार ( बडाबजार ).

स्फर्शीने नीकळें ते जीव मुक्ति जाय ५. २३

५ पांच प्रकारे देवा. भव्य द्रव्यदेव ते इण भवमांही देवतारो आउखो बांध्यो छे अने इण भवरो आउखो भोगवें छे ते भव्य द्रव्यदेव कहीजें १ बीजे नरदेव ते चक्रवर्त्ति २, तीजे धर्मदेव ते साधु ३, देवाधिदेव ते तीर्थंकर ४, पांचमे भावदेव ते देवतारे भवमांही बे वाते देवता ५. २४

५ पांच नरकावासा सातमी नारकीरा जाणवा. पहिलो काल १, बीजो महाकाल २, तीजो रोरुव ३, चोथो महारोरुव ४, पांचमो अपइठाण ५. २५

५ पांच प्रकाररो ज्योतिषीदेवतारो उद्योत. पहिले चंद्रमारो १, बीजो सूर्यरो २, तीजो ग्रहरो ३, चोथो नक्षत्ररो ४, पांचमो तारारो ५. ए पांचुंही चर मनुष्य लोकमें बाहिरला तिरछालोकमां स्थिर जाणवा. २६

५ सम्यग्दृष्टि भगवंतरे समोसरणे आवें तिवारे पांच अभिगम साचवें. पहिले सचित्त द्रव्य दूरे मेहलें १, बीजे अचित्तद्रव्य पासे राखें २, तीजे खीलण विगर एकपटा कपडानी मुखे जयणा करें ३, हाथ दोनु जोडे ४, एक दृष्टि सन्मुखो जोवे ५. २७

हार ३, धारणा व्यवहार ४, जीत व्यवहार ५. ३२

५ पांच प्रकारे जागें. पहिले सुखे जागें १, दुःखे जागें २, तीजे सुपनो दीठांसें जागें ३, चोथो निद्राने क्षये जागें ४, पांचमे क्षुधा वेदनी लाग्यां जागें ५. ३३

५ पांच प्रकाररा पडिकमणा. पापरो निंदवो ते पडिकमणो. पहिलो मिथ्यातरो पडिकमणो १, अविरतरो पडिकमणो २, कषायरो पडिकमणो ३, प्रमादरो पडिकमणो ४, अशुभयोगरो पडिकमणो ५. ३४

५ पांच प्रकाररा पचखाण. सर्दहणाशुद्ध १, विनयशुद्ध २, अनुग्रहणाशुद्ध ३, अनुभावशुद्ध ४, भावशुद्ध ५. ३५

५ पांच प्रकारे अचित्त वायरो उपजें तिण करी सचित्त वायरो हणीजें. पहिले दवकेसुं पग मेहलें तिवारे अचित्त वायरो उपजें तिवारे अचित्त वायरो हणीजें १, बीजे लोहाररी धमणसुं अचित्त वायरो उठें तिणसुं सचित्त वायरो हणीजे २, तीजोमुंहमारीबाफसुं अचित्त वायरो उठें तिवारे सचित्त वायरो हणीजे ३, चोथो झुगमो निचोवतां अचित्त वायरो उठें तिवारे सचित्त वायरो हणीजे ४, पांचमो पंखेसुं अचित्त

तो० २, राजरो मोकलो भय हुवें तो० ३ पाणी आया नगरी वीटसीगो, पहिलीसुंही विहार करें ४, अनार्य पुरुष परीसह देवतो देखीने पहिली विहार करें ५. ४६

५ पांच प्रकारे ठमठरीया पीछे विहार करें तो भगवंतरी आज्ञा अतिक्रमे नही. पहिलो ग्यान भणवाने अर्थे १, बीजो दर्शनने अर्थे २, तीजो चारित्रने अर्थे ३, चोथे आचार्यनी वेयावच्चने अर्थे ४, पांचमें आचार्य कालकीधो जाणीने समुदायरी सार-संभाल करणने वासते विहार करें ५. ४७

५ पांच प्रकारे जीवना परिणाम. मैंपारा पुतला सरीखा परिणाम हुवें ते मरीने नरकगतिमें ऊपजें १, बीजे काले धोवण सरीखा परिणाम हुवें ते मरीने तिर्यंचगतिमें ऊपजें २, तीजे कल पाणीसहित सरीखा परिणाम हुवें ते मरीने मनुष्य हुवें ३, चोथे चोवाणी सरीखा परिणाम हुवें ते मरीने देवलोकमें ऊपजें ४, पांचमे निर्मल पाणीरा धारा सरीखा परिणाम हुवें ते मरीने मुक्तिमें जाय ५. ४९

५ पांच इंद्रीरा नाम. अनमनी कान १, चरचरी आंख २, खेचरी नाक ३, गोचरी जीभ, ४ अगोचरी काया ५. ५०

५ पांच जातिरा रजोहरण. ऊनरो रजोहरण १, ऊंटरी ऊननो रजोहरण २, मुंजरो रजोहरण ३, तृणांरो रजोहरण ४, वल्कलरो रजोहरण ५. ५५

५ पांच प्रकाररा वस्त्र. पहिलो ऊनरो वस्त्र १, पाटरो वस्त्र २, कपासरो वस्त्र ३, सिणरो वस्त्र ४, अर्कफूलरो वस्त्र ५. ५६

५ पांच शक्रेंद्ररा नाम. शक्रेंद्र १, वज्रपाणी २, सतक्रतु ३, मघवान, ४ पाकशाशन. ५७

५ पांच बोलरे सेवणवालासुं आहार पाणी भोग्तां भगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही. अकार्य करें आलोवें नही १, प्रायछित लेवें नही २, प्रायछित लेइने धरीने राखें ३, प्रायछित पूरो वहें नही ४, गुरांथीकी ऊपरांठो वहें ५. ५८

५ पांच कारणे एकलो साधु एकली साधवी भेला रहें तो भगवंतरी आज्ञा अतिक्रमे नही. दुर्भक्षकाल पड्यांसुं मार्गमांहि अटवी छे पेले नगर जावतां एक दोय रातिरा भेला रहें तो भगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही १, नगरमांही थानक नही मीलें तो भेला रहें भगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही २, विहार करतां सूर्य आथम गयो हुवें तो नागजक्षकुमाररे देहरामांही रहें तो भगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही ३, साधु

॥ अथ अशुद्धि शुद्धि पत्रकं ॥ (पंक्ति ओलीने कहे छे.)

| पत्र. | शुद्ध. | अशद्ध. | पंक्ति. |
|---|---|---|---|
| ६ | सिद्धामें | सिद्धानें | ८ |
| ६ | अघोपरो | आघोपरो | १८ |
| ६ | अणेखणीक | अन्नेषणीक | २१ |
| ७ | केवलीरूप्या | केवली प्ररूप्या | १७ |
| ८ | समकित शंका | समकितपर शंका | १२ |
| ९ | सेवे करें छे | सेवा करें छे | ५ |
| ९ | छिद्रा न जोवें | छिद्र न जोवें | १२ |
| ९ | राग स्नेह | राग स्नेह | १७ |
| १० | दीनुंही | दोनुंही | २५ |
| ११ | तीर्थंकरदवे | तीर्थंकरदेव | ५ |
| १२ | संसारसजे | संसारस्लै | १९ |
| १३ | ग्रहस्थीरी | गृहस्थरी | १३ |
| १४ | संख्या ऊपजे | संख्याता ऊपजे | १ |
| १६ | ऊणियआहारेणं | कुणियआहारेणं | १७ |
| १७ | विनय करंत | विनय करतां | २१ |
| १८ | तीजोगाथापतिरे | आणंदगाथापति | २ |
| १८ | बकुलब्राह्मणरे | बहुल ब्राह्मणरे | २ |
| १८ | घूजा सरीषा | धजा सरीखा | ६ |
| १९ | नही देवें | देवे | १३ |
| २० | प्रमुखरा | प्रमुखरा | १२ |

५ पांच प्रकारे स्त्री पुरुषने सेवतां गर्भ न धरें. पहिले वय छोटी छें वरस १२ तथा १३ में छें तो भामिनी गर्भ न धरें १, बीजे वय अतिक्रांत गई ५५ वरस उपरे आव्यां छें तो गर्भ न धरें २, तीजे जन्म वांझणी छें तो गर्भ न धरें ३, चोथे रोगणी छें ते गर्भ न धरें ४, पांचमे मन वगर सेवतां गर्भ न धरें ५. ७५

५ पांच कारणे स्त्री पुरुषनुं सेवताथकी गर्भ नही धरें. कदेही ऋतु आवें नही तो गर्भ न धरें १, बीजे कदेही ऋतु समयरी असद्धाइ जावें नही तो गर्भ नही धरें २, तीजे योनी वायरा करी भरी छें ते भणी गर्भ न धरें ३, चोथे योनी विणस गइ छें ते भणी गर्भ न धरें ४ पांचमे पुरुषरे अंगसुं भोग भोगवतां वीर्य बाहिर नखावें ते भणी गर्भ न धरें ५. ७६

५ पांच प्रकारे स्त्री पुरुषसुं सेवना करती थकी पिण गर्भ नही धरें. पहिले सदा पुरुष सेवे छें पिण हर्षवानथकी वेश्यानी परे १, बीजे अगनि जोरावर छें तिणसें योनीमें वीर्यना पुद्गल गया के विध्वंस जाय ते भणी गर्भ नही धरें ते श्रीदेवीरी परे २, तीजे घणी पित्तनी देह छें ते भणी गर्भ नही धरें २, चोथे देवता तथा मनुष्यकुरषकरीने

| | | | |
|---|---|---|---|
| २० | एही कथा | एहवी कथा | ७ |
| २० | एही कथा | एहवी कथा | ९ |
| २० | जीव कया | जीव कीया | ९ |
| २५ | व्यववहारीयो | व्यवहारीयो | १४ |
| २५ | मनमांहीअशुभ | सुभमांहिअसुभ | २६ |
| २६ | असुभमांहिसुभ | अशुभमांहि अ-शुभ | १ |
| २७ | निमित्तभोवें | निमित्तभावें | ७ |
| २७ | मार्गने | मार्गमें | ११ |
| २८ | महापम्भिवाथे | महापम्भिवाये | १३ |
| २८ | नरकावसो | नरकावासो | १७ |
| ३० | सर्ब | सर्प | १८ |
| ३१ | कुरणीवयमें | तरुणवयमें | ४ |
| ३१ | भगवंतरो | भगवंतरी | १० |
| ३१ | षोयया | पोयया | १६ |
| ३१ | जीपावेनही | जीपावें | २३ |
| ३२ | संख थोभा | रुंष थोभा | १६ |
| ३२ | काक समान | कांकरा समान | २६ |
| ३४ | परीसहन | परीसह | १३ |
| ३६ | अदिन्नाणाउ | अदिन्नादाणाउ | १२ |
| ३६ | समकित सबर | समकित संबर | २३ |
| ३७ | सासदान | सास्वादन | ६ |
| ३७ | आसथा | आसता | ८ |
| ३७ | मिथ्यात्वनुं | मिथ्यात्वीनुं | १३ |

## ॥ अथ सातमो बोल लिख्यते ॥

७ सात भय. इहलोक भय. ते जातिसुं जातिने भय ऊपजें. मनुष्यसुं मनुष्य मरें, देवतासुं देवता मरें, तीर्यंचथी तिर्यंच मरें, नारकीथी नारकी मरें, आप आपरी जातिशुं मरें ते इहलोकभय १, परलोकभय. परजातिसुं भय ऊपजें. देवांसुं मनुष्यने भय ऊपजें अथवा तिर्यंचसुं मनुष्यंने भय ऊपजें अथवा परलोकना दुःख सुणीने भय ऊपजें ते परलोकभय २, आदान भय ते परिग्रहथी भय ऊपजें ते धन राखवा निमित्ते चोरादिकनो भय ऊपजें ते आदानभय ३, अकस्मात् भय. अजाण गोली तोपनो शब्द सुणीने भय ऊपजें ते अकस्मात् भय ४, आजीविकाभय ५, मरणभय ते आउखानो भय ६, अपजसभय ते अजस अकीर्त्तिरो भय ७. १

७ सात प्रकारे नारकी. मनुष्यभव भोगवीने नीचो जाय ते नारकी तिणारा सात नाम. धम्मा १, वंसा २, शैला ३, रिठा ४, अंजणा ५, मघा ६, मघवई ७. २

७ नारकीना सात गोत्र. रत्नप्रभा १, सकरप्रभा २, वालुप्रभा ३, पङ्कप्रभा ४, धुमप्रभा

| पृष्ठ | अशुद्ध | शुद्ध | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| ३७ | समकितमें नही | समकितपामेंनही | १८ |
| ३८ | बेवाते | बेगाते | ५ |
| ३८ | ध्याय | धाय | २१ |
| ३९ | शुद्ध | शुद्धे | ७ |
| ३९ | अनुग्रहणाशुद्ध | अनुपेपणाशुद्धे | ७ |
| ३९ | अनुभावशुद्ध | अनुभासणाशुद्धे | ८ |
| ३९ | तिवारे अचित्त वायरो | तिणकरी सचित्त वायरो | १० |
| ३९ | वध्योतरी | वधोतरी | २१ |
| ४० | दानांअंतराय | दानअंतराय | ५ |
| ४० | लाभाअंतराय | लाभअंतराय | ५ |
| ४० | कदाग्रही | कदाग्रह | ८ |
| ४० | करतुठ | करतुत | २० |
| ४० | जलटथी | जलटा | २१ |
| ४१ | वीटसीठो | विटिजसीतो | १ |
| ४१ | ठमठरीयापीठे | ठमठरी पाठें | ३ |
| ४१ | मैपारा | मैणरा | ७ |
| ४१ | ऊपर्जे | ऊपजें | ९ |
| ४१ | कलपाणी | वेकलपाणी | ९ |
| ४२ | अर्कफूलरो | अकतुलरो | ४ |
| ४२ | नावासुं | नावसुं | २६ |
| ४३ | आरापणा | आरोपणा | १४ |
| ४३ | पडिलेहरारी | पडिलेहणारी | २६ |
| ४८ | निर्ग्रंथ | निर्ग्रंथगुरु | ३ |

शब्दनय ५, छठो समभिरूढनय ६, सातमो एवंभूतनय ७. ७

७ सात आचार्य निन्हव महावीरजीना जाणवा. पहिलो तो जमाली ते घणा समय लागें तिवारे कार्य निपजे पिण कार्य मांड्यो करवो ते कर्यो नही कहीजें इसी मति हूइ ते पहिलो निन्हव १, बीजो तिष्यगुप्त सजीव प्रदेश छेहलो एकप्रदेशी जीव मानें पिण असंख्यातप्रदेशी जीव नही मानें ते बीजो निन्हव २, तीजो आषाढमति ते तीन राशि मानें जीवराशि १, अजीवराशि २, नोजीव नोअजीवराशि ३ ते तीजो निन्हव ३, आसमंत मनमांहि संभ्रम रहें ते कुण जाणें कोइ साधु कोइ देवता ते चोथो निन्हव ४, पांचमो गांगव दोय क्रिया मानें एक समय दोय क्रिया करें इसी मती ते पांचमो निन्हव ५, छठो गुहिल ते जीव कर्मांरो बंध माने अबंध नही मानें पिण अणपारमीया कर्मरो बंध मानें ते छठो निन्हव ६, सातमो निन्हव माहिल खिण २ प्रतें जीव नवा २ मानें सायत २ मांही नवो जीव मानें ए सातमो ७. ८

७ सातेही कुशिष्य. जमाली १, मगुनामा २, अवंती ३, त्रिराशी ४, गांगिल ५, गुहील ६, माहिल ७. ९

| पृष्ठ | अशुद्ध | शुद्ध | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| ४८ | वदाय | वटाय | ११ |
| ४८ | पंचेंद्रिपपणो | पंचेंद्रियपणो | १३ |
| ४८ | अविरतेरी | अविरतरी | १७ |
| ४९ | अनिहंत्रं | अनिहंत | १३ |
| ५१ | नमावें | नचावें | ११ |
| ५२ | परसंसार | परसंसा | ३ |
| ५२ | आघोदेखे | आघो देखें | ५ |
| ५४ | अणपारसीया | अणफरसीया | १० |
| ५४ | धर्म मीलें | धर्मी मीलें | १५ |
| ५५ | तीन मकार | तीन प्रकार | ७ |
| ५५ | घट जावें | घट जावें | १७ |
| ५५ | मुठपावें | मुंठवावें | १८ |
| ५५ | जूगे | जूवो | २६ |
| ५६ | सो | सातसो | १४ |
| ५६ | ३६ | ३४६ | १५ |
| ५६ | २९ सो | ९ सो | १७ |
| ५६ | २९ सो | ९ सो | १ |
| ५६ | २४०८ | ४०८ | २० |
| ५८ | जीवसंहरे | जीवप्रदेशसंहरे | १२ |
| ५८ | सुप्रदर्शन | सुभदर्शन | १८ |
| ५८ | पालें ग्यानी | पालें ते ग्यानी | १९ |
| ५९ | पाम्मिविया | पाडुचिया | १३ |
| ६० | आढ | आठ | १२ |
| ६० | पाणीसूक्ष्म | प्राणसूक्ष्म | १३ |

मो वेश्यारो ५, छठो अहेमारो ६, सातमो पारकी स्त्रीरो ७. २२

७ सात प्रकारे उघाम्नो दुखम काल जाणीजें. चाहीजतो नही वरसें १, अणचाहीजतो वरसें २, असाधुरी महिमा पूजा हुवें ३, साधुरी महिमा पूजा न हुवें ४, मोटां ठिकाणे मिथ्यात्व घणो बल घणो तथा मात्रीतने गुरु गुरुणीने गेरु तथा शिष्य शिष्यणी मानें नही ५, छठें मनरो दुःख मनरी चिंता फिकर मिटे नही ६, वचनरो दुख असुहामणा दुःखकारी वचन घणा सुणीजें ७, इसे लक्षणे पांचमो दुखम समय जाणीजें ७. २३

७ सात प्रकारे उघाम्नो सुखमकाल जाणवो. चाहीजतो वरसें १, अणचाहीजतो नही वरसें २, साधु पूजीजें ३, असाधु नही पूजीजें ४, मोटे ठिकाणे समकित पावें मात्रीतांसु तथा गुरु गुरुणीसुं गेरुं तथा शिष्य शिष्यणी उपरागा नही चालें विनय करें ५, मनरो सुख ते मनने विषे घणी सुखशाता देवें ६, सुहामणो वचन बोलें ७. २४

७ कोइ समदृष्टि जीव राग द्वेषकररहित दया धर्म करके सहित एक उपवास करके अष्ट पोहरको पोसो करें तीणरे काइ फल होवें? २७ सो अरब ७७ करोड ७७ लाख

८ आठ आचार्यनी संपदा. आचारसंपदा १, शरीरसंपदा २, सूत्रसंपदा ३, वयणसंपदा ४, वाचनासंपदा ५, मतिसंपदा ६, संग्रहसंपदा ७, पारिणामिकसंपदा ८. ७

८ आठ मंगलीक. श्रीवत्स १, मछयुग्म २, दर्पण ३, भृंगार ४, पूर्णकलश ५, साथी-यो ६, नंदावर्त्त ७, भद्रासण ८. ८

८ केवली समुद्धात किसे कारणे करें वेदनीकर्म कर्म तो घणो अने आउखो कर्म थोमो पिण वेदनीने अने आउखा कर्मने बेहुंना पुद्गलदल सारीखा करवा भणी समुद्धात करें शरीरमांहीथी जीवप्रदेश काढीने लोकमांही विषे रहें ते केवली समुद्धात करतां ८ समय लागें ते कहें छे. पहिले समय दंमाकार करें ते सातमी नरकरे नीचले लोकाकाशप्रदेशसुं लेइने सिद्धशिला तांइ एक सारखो दंमरो आकार करें १, बीजे समय कमाम करें दोनुं दिसे कपाट करें २, तीजे समय मथाणो करें जेरणाने आकारे चिहुंही दिसे जीवप्रदेश पुद्गलकर्म वर्गणारा विषे रहें ३, चोथे समय सर्व लोकाकाश प्रदेश पूरें ४, पांचमे समय लोकाकाश प्रमाण जीव संहरे ५, छठे समय मथाणो संहरे ६, सातमे समय किमाम संहरे ७, आठमे समय दंम संहरे ८, पहि-

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९० | किसीकीनी | किसिकी | ३ |
| ९० | घरना | धरना | ७ |
| ९० | सवनका | सेवनका | १४ |
| ९२ | त्याग | त्यागें | २३ |
| ९२ | त्याग | त्यागें | २५ |
| ९३ | सोचें | सोवें | २५ |
| ९४ | जुलसना | हुलसना | १० |
| ९४ | सुनो | सानी | २५ |
| ९५ | पायकारी | पापकारी | २१ |
| ९६ | आत्मकल्प | आत्मतुल्य | ३ |
| ९६ | पूजन | पूंजनी | १० |
| ९६ | खामायिक | कालसामायिक | १५ |
| ९७ | पम्ना पम्ाना | पढना पढाना | १ |
| ९७ | नश्वर | विनीश्वर | २४ |
| १०१ | १६ बोल | १४ बोल | २१ |
| १०१ | प्रवार्थक | प्रिव्राजक | १९ |
| १०५ | प्रश्नार्थ | प्रश्नार्थ | ९ |
| १०५ | प्रश्नका | प्रश्नका | १४ |
| १०५ | रहरय | रहस्य | १४ |
| १०६ | वढवारोरी | वेढवीरोटी | २ |
| १०६ | नामजाम | तामजाम | २१ |
| १०७ | गटाऊं | लगाऊं | १३ |
| ११२ | संवेख | संपेख | ११ |
| ११२ | वना | विना | १२ |

८ आठ अनंता. अजव्यअनंता १, सिद्धअनंता २, वनस्पतिरा जीव अनंता ३, नव जीव अनंता ४, पडिवाइ जीव अनंता परिभ्रमण संसारमांही करें अने अनादि मिथ्याती पिण संसारें नव जीव घणा छें ४, कालद्रव्य अनंतो छें ५, पुद्गलद्रव्य अनंता छें ६, केवलज्ञानरा पर्यायवा अनंता छें ७, केवलदर्शनना पर्यावा अनंता छें. २७

८ आठ अंधा जाणवा. जन्मअंध १, जराअंध २, रात्रिअंध ३, दिनअंध ४, क्रोधअंध ५, मानअंध ६. मायाअंध ७, लोजअंध ८. २८

८ आठारे विषे उद्यमरो करवो ते जलो छें. आगला पापकर्म खपावानें अर्थे उद्यम करें १, नवा पापकर्म नही उपाजें एहवो उद्यम करें २, आगलो सूत्र जणीयो तेहने चितारवारो उद्यम करें ३, नवा सूत्र जणाववाने अर्थे उद्यम करें ४, नवा शिष्य साखा करवाने अर्थे उद्यम करें ५, छठे आगला शिष्य साखा जणावाने अर्थे उद्यम करें ६, चतुर्विध संघनो कलह मेटवाने अर्थे उद्यम करें ७, तप संयमने विषे वीर्य फोरवाने अर्थे उद्यम करें ८. २९

८ चोरेंद्रीना आरंज कीयां आठ प्रकाररो पाप लागें. फरसेंद्रिरा दुःखनो संयोग मेली

| | | | |
|---|---|---|---|
| १२२ | वेला | चेला | २३ |
| ११३ | निंद है | निंदाहै | ५ |
| ११८ | तृष्णा | तृश्ना | ६ |
| १२० | तृष्णा | तृश्ना | १५ |
| १२३ | ग्यान | ग्यान | २४ |
| १२४ | तृणकास | तृणफास | १८ |
| १२६ | ब्रह्म | प्रश्न | १३ |
| १२७ | संग | संग्या | २· |
| १२७ | दीष्ट | दृष्टी | २ |
| १२७ | बाचम्मीका | वावम्मीका | १५ |
| १२७ | नव | नव पदवी | २० |
| १२८ | उष्ण | उश्न | १ |
| १२९ | कृष्णागर | कृश्नागर | १५ |
| १३२ | २५ धनुषरी | १५ धनुषरी | ४ |
| १३२ | २० धनुष | १० धनुषरी | ४ |
| १३४ | कृष्ण | कृश्न | २५ |
| १३८ | आजीव | उंजीव | ४ |
| १३९ | आजीव | उंजीव | ४ |
| १३९ | पीणकी | पीणेंकी | १२ |
| १३९ | पगरणि | पगरखी | १५ |
| १३९ | वाहनि | पानहि | १५ |
| १३९ | विराधक १।२ | विराधक १।३ | २० |
| १३९ | पांचमो १ वृत्ति | पांचमो वृत्तावृत्ति | २२ |
| १३९ | असंबरीपहिलो | असंबरीपहिला | २२ |

त्रिकंत क्रिया ४, वज्ज क्रिया ५, महावज्ज क्रिया ६, सावज्ज क्रिया ७, महासावज्ज क्रिया ८, अप्पसावज्ज क्रिया ९. १६

९ नव रस नाम. वीर रस १, शृंगार रस २, अद्भुत रस ३, रुद्र रस ४, बिभत्स रस ५, भयानक रस ६, हास्य रस ७, करुणा रस ८, शांति रस ९. १७

९ नवे जीवे तीर्थंकरगोत्र बांध्यो महावीरजीने वारे. श्रेणिकराजा घणा जीवांने धर्मरो साहाज्य देइने तीर्थंकरगोत्र बांध्यो १, सुपार्श्वजी महावीरजीनो काको २, उदाइराजा ३, पोटल अनगार ४, डुधजगश्रावक ५, संखश्रावक ६, सत्यकीजी ७, रेवतीश्राविका ८, सुलसा श्राविका तीर्थंकरगोत्र बांध्यो ९. १८

९ नव पापना शास्त्र. उत्पातशास्त्र १, निमित्तशास्त्र २, मंत्रशास्त्र ३, मानंगशास्त्र ४, वैद्यकशास्त्र ५, कलाशास्त्र ६, आभरण शास्त्र ते घर हाट हवेलीना मुहूर्त्तनो देवो ७, अग्यानशास्त्र ८, मिथ्यात प्रावचनशास्त्र ९. १९

९ नव कोटी अशुद्ध आहार साधु नही लेवें. हणें नही हणावें नही हणताने अनुमोदे नही, हणवो ते सचित्तरो अचित्त अग्नि विना करें ते हणवो कहीजें ३, पचें न-

| | | | |
|---|---|---|---|
| १४० | १।१।५।११ मो | १।२।३।५।११ मो | २ |
| १४० | साथेजावे १।१।४ | साथेजावे १।२।४ | ८ |
| १४० | ११ सइंदिया | १२ सइंदिया | ८ |
| १४२ | युता | धुता | २ |
| १४२ | ञसीतना | नसीतना | ५ |
| १४२ | नहि गणो | नहीम्गिणो | १३ |
| १४३ | वीरमधु | खीरमधु | ८ |
| १४४ | हाजतगोर्में | हाजतरोकें | २१ |
| १४५ | २ सो कोम | १ सो कोम | १४ |
| १४५ | ५२ लाष | ५१ लाख | १४ |
| १४६ | चाबमा धूप | चांबमा माथे बांध | ५ |
| १४६ | गहला | गेहला | ५ |
| १४९ | पस्र | प्रश्न | ९ |
| १४९ | पकम्मीके | मकम्मीके | १९ |
| १४९ | निकाजे | निकाले | २३ |
| १४९ | गुरुके मुंह | गुरुके पुठे मुंह | २६ |
| १५० | सुगनेका | सुननेका | २ |
| १५० | वर्में | वनमें | ६ |
| १५० | सर्वको | सर्पको | ६ |
| १५० | खापाके | खा पीके | १५ |
| १५० | कर्मसें होय | कर्मसें | २२ |
| १५० | वम्मीकी | वम्मोंकी | २५ |
| १५१ | वीनी | विनय | ३ |
| १५३ | प्राप्नरूपी | प्रश्नरूपी | २५ |

१० दश बोले करी देवतामें ऊपजे. अल्प कषायी १, नष्ट वस्तुको सोच करे नही २, अशुभ ध्यान ध्यावे नही ३, व्रत पच्चखाण करे ४, शुद्ध सम्यक्त पाले ५, वैराग्य भाव लावे ६, दान देवे ७, धर्म ध्यान ध्यावे ८, बाल तपस्या अज्ञान भाव तप करे ते. महा कष्ट सेवे ९, देव गुरु धर्म भगती करे १०. ८०

१० दश बोल देवगतिसे आया मनुष्यमें ऊपजे–तिणमे पावे. क्षेत्र वास्तुक हिरण द्विपद चोपद पामे १, मित्र २, सज्जन ३, उच्चगोत्र ४, रूपसुंदर ५, शरीर नीरोग ६, भली बुद्धि ७, विनय ८, जसवंत ९, बलवंत १०. ८१

| १५४ | पुत्र नदीजे | पुंठ न दीजे | १६ |
|---|---|---|---|
| १५५ | गुरुने वंदणा देइने वांदे | गुरुकु वंदणा देऍके | २६ |
| १५६ | पछे समाधि पूछे वांदे | पहिलें सातासमाधि पूछे पछे वांदे | १० |
| १५६ | ३२ | गुरूकुं जजा राखी वांदे | १० |
| १५६ | इर्ष्यावंत | इर्षारहित | २५ |
| १५७ | मातापितानी सेवा | धीर्यवान | १ |
| १५७ | गुरुनी सेवा | यशवान् | १ |
| १५७ | तेजवंत | संतोषवंत | २ |

| १५७ | प्रश्णव्याकरण | प्रश्नव्याकरण | ४ |
|---|---|---|---|
| १५९ | प्रश्ण | प्रश्न | ८ |
| १६२ | सरस २ गुरुकुं देवे | सरस २ आप खावें निरस२ गुरुकुं देवे | ८ |
| १६५ | चैद सुदि | चैत सुदि | १ |
| १६५ | वदि वीज | वदि एकम | २ |
| १६५ | तारो डुरे | तारो टुटे | ६ |
| १६५ | मृत्यु राली है | मृत्यु टाली है | १० |
| १६५ | सूवी | सूती | २४ |
| १६६ | चेढून | वेढून | २ |
| १६६ | पारा | पाटा | ३ |
| १६६ | गेरी खान | गोटी खान | ११ |

## ॥ अथ तेरं बोल लिख्यते ॥

१३ तेरे १३ क्रिया. अठा दंन्डे १, अणठा दंन्डे २, हिंस्या दंन्डे ३, अकस्मात दंन्डे ४, दिठिविपर्यास दंन्डे ५, मोसवतीए ६, अदिन्नादाणवतिए ७, अजन्नवत्तिए ८ माणवतिए ९, मितरदोसवत्तिए १०, मायावत्तिए ११, लोभवत्तिए १२, इरियावही १३. १

१३ तेरे बोल हुवे जिहां साधू चोमासो करे बेरिंद्रियादिक जीव थोडा होय १, कीचड कादो थोडो होय २ उचार पासवणकी जायगा निरवद्य होय ३, थानक साताकारी हुवे ४, दहि दूध घृत गोरस घणो होय ५, बस्ती घणी होय ६, राजवैद्य होय ७, औषधभेषध चाहिजे सो मिलै ८, श्रावक कोठे धान घणो होय ९, गामरो ठाकुर रागी होय १०, पाखंडीयोंका जोर थोडा होय ११, आहार पाणीनी साता होय १२, सिझाय करणेकी जायगा जुदी होय १३. २

१३ तेरे तिणगा जन्मरूपणी रूई मरणरूपणी तिणगा १, संयोगरूपणी रूई वियोगरूपीया तिणगा २, साता रूपणी रूई असाता रूपीया तिणगा ३, संपदा रूपणी रूई

| | | | |
|---|---|---|---|
| १६६ | मोरी स्थान | मोटी स्थान | १२ |
| १६६ | खारो | खाटो | १६ |
| १६७ | सराटो | सरोतो | ९ |
| १६७ | ठाकर्मी | ताकर्मी | १० |
| १६७ | करवारा | ठंठारा | १७ |
| १६७ | मंम्लै | मंम्लैवे | २६ |
| १६८ | पारी | पाटी | १० |
| १६९ | रस्कलठी | स्कलठी | २० |
| १७० | कर्मठेदना | कर्मबेदना | ६ |
| १७० | ठेदता बंधका | बेदता बंधका | ६ |
| १७० | ठेदता वेदका | बेदत्ता वेदका | ६ |
| १७० | सन्या | संग्या | ७ |
| १७० | छेदना | बेदना | ७ |
| १७० | समुद्धात | समुद्घात | ७ |
| १७० | चाचक | त्राजक | ११ |
| १७० | भेदे | १७ भेदें | १२ |
| १७० | भेदे | १२ भेदे | १३ |
| १७० | जामग्री | जामखी | १७ |
| १७१ | सवी वरते | सगो वरते | ५ |
| १७१ | उघाम्रे दीव | उघाम्रे मीव | ११ |
| १७२ | भ्रमि दूगी | भ्रमि टगी | १५ |



न योजन फाफेरी परिधिवाळो एक पल्य कल्पवो ते माहिउत्तर कुरुक्षेत्र संबंधी यु-
गलीयानो रोम एहवा सूक्ष्म छे के ते ४०९६ रोम एकठा करीये तिवारे कर्मभूमि
मनुष्यनो एक वाळ थाय एहवा ते युगलीयाना सूक्ष्म रोम छे ते रोम लंबाइये एक
तसुनो लेइने तेना सात वखत आठ आठ कटका करीये तेवारे २०९७१५२ कटका
थाय तेवा कटके करी पूर्वोक्त पाळो भरीजे पछी ते एकेक कटको सो सो वर्षने आं-
तरे काढतां जेवारे ते पल्य खाली थाय तेवारे संख्याता वर्ष थाय तेने बादर पल्योपम
कहीयें अने ते पूर्वोक्त एकेका रोम खंडना असंख्याता खंड करीने तेवा खंडे ते पू-
र्वोक्त कूप एवी रीते ठांसीने भरवो के तेना उपरथी चक्रवर्त्तिनी सेना चाली जाय तो
पण ते दबाय नही पछी ते एकेको सूक्ष्म खंड सो सो वर्षे काढतां असंख्याता पूर्व
व्यतिक्रमे छते ते पल्य खाली थाय तेवारे एक पल्योपम थाय छे ९, दश कोडाको-
डी पल्योपमे एक सागरोपम थाय ११, दश कोडाकोडी सागरोपमे एक अवसर्प्पि-
णी थाय ११, दश कोडाकोडी सागरोपमे एक उत्सर्प्पिणी थाय १२, उत्सर्प्पिणी अ
वसर्प्पिणी मिली एक काळचक्र थाय १३, अनंता काळचक्रे एक पुद्गल परावर्त्त थाय

| पृष्ठ | अशुद्ध | शुद्ध | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| ११९ | मृगापुत्र | मेघकुमार | १ |
| १२५ | अढारे आंगुले | छ आंगुले | ९ |
| १२७ | चामर | चरम | १४ |
| १२८ | मागर | सागरमें सोसागर | ९ |
| १३० | दोयसें छप्पन | दोयसें छ | २२ |
| १३४ | धर्मास्ति | धर्मास्तिकायके प्रदेश | १७ |
| १३४ | अधर्मास्ति | अधर्मास्तिकायके प्रदेश | १७ |
| १३४ | आकाशास्तिं | आकाशास्तिलोका-काशके प्रदेश | १७ |
| ८७ | अवोपरे | अवोयरे | १० |
| ८७ | खेताइजाइकंते | खेताइकंते | ११ |
| ९९ | अनन्नवत्तिए | असन्नवत्तिए | २ |
| १३० | अध्ययनकीसाख११मे | उत्तराध्ययन सूत्रकी ६ अध्ययन दशमा कालीकमे | १ |
| ११४ | बलमर्ण | आत्ममर्ण वनस्नागि२ तथा शस्त्रादिकसें घात करो मरे | २ |
| ११४ | प्रमालमर्ण | प्रलायमर्ण प्रमादके वश संकल्पविकल्प करी मरे | |
| ११४ | अंतोलमर्ण | अंतोसलमर्ण | २ |

१५ सुविनीतका १५ बोल. नीचा प्रवर्त्ते १, चपलपणारहित २, मायारहित ३, कतुहलप-णारहित ४, कर्कश वचनरहित ५, दीर्घ रोष न करें ६, मित्रसुं मित्राइपणो सेवें ७, सूत्र लहि मद न करे ८, आचार्यादिकरी निंदा न करें ९, मित्रके उपर कोप न क-रे १०, मित्रके पूठ पाछें गुण करें ११, कलह ममतरहित १२, ग्यानतत्त्व जाणे १३, अभिजात विनेवंत १४, लज्यावंत इंद्रीगुप्ति १५. ६

१५ बोल १५. समुद्रनी उपमाए संसारवर्णव. पूज्य भगवान समुद्रमें पाणी छें, संसाररू-पीये समुद्रमें कीसो पाणी छें, जन्म जरा मरणरूपीयो पाणी छे १, पूज्य भगवान समुद्रमें कादो छें, संसाररूपीये समुद्रमें कीसो कादो छें, कामभोग रूपीयो कादो छे २, पूज्य भगवान समुद्रमेंतो फेण उठें छें, संसाररूपी समुद्रमें अहंकाररूपी फिण उठें छे ३, पूज्य भगवान समुद्रमें तो दरमां छें, संसाररूपी समुद्रमें त्रसनारूपी दरमा छें ४. पूज्य भगवान समुद्रमें तो कलस छे उबके छें, संसाररूपी समुद्रमें नारकी ती-र्यंच मनुष्य देवतारूपी कलस उबके छे ५, पूज्य समुद्रमें मगरमछ छें संसाररूपी स मुद्रमें सबला निरबला मारें छें तीके मगरमछ सरीखा जाणवा ७, पूज्य भगवान

| | | | |
|---|---|---|---|
| १४३ | बाह्यबुद्धि | बीजबुद्धि | ए |
| १६ए | समकितसहित | संस्कारयुक्त | १४ |
| १०ए | १५ बोल सिद्धां केमें २ नहीं है | प्रत्येकबुद्धसिद्धा ते करकंडुराजादि ११ स्वयंबुद्ध सिद्धा ते कपिलादिक १२ | |
| ७२ | विवगारिहे वि- गयरो त्याग क- रे | विवेगारिहे अकल्प- नीय वस्तुरो त्याग करे | २५ |
| ५ए | पारिणामिक | प्रयोग | २ |
| १२८ | तृणकास | तृणफास | १ए |

अशुद्धि शुद्ध पत्रमां.

१ अशुद्ध शुद्ध १ शुद्ध अशुद्ध

४४ लाख. ४ उपयोग ४ कोम ६४ लाख. ५ लेश्या ३ कोम ४२ लाख. ६ शरीर ३ कोम ए१ लाख. ७ वेद १ कोम २४ लाख. ८ दीठं १ कोम ४२ लाख. ए संग ३ कोम ३६ लाख. १० कषाय ३ कोम ३६ लाख. ११ प्राण ५ कोम १० लाख. १२ रूपीना २६ कोम ८० लाख. १३ भावविषे ११ कोम १० लाख. १४ द्रव्यविषे १३ कोम ८८ लाख. १५ संघेण १ कोम ६६ लाख. १६ संठाण १ कोम ७४ लाख. १७ समोसरणना बोल २६ कोम ७० लाख. १८ निमतीना बोल ५० कोम ए लाख. १ए करणना बोल ३१ कोम ६० लाख. २० हेतु ३ए कोम ४४ लाख. २१ इंद्री १ कोम कही. २२ मनुष्यरी पर्याय १ कोम ११ लाख.

६

## ॥ अथ छत्तीसबोलसंग्रह लिख्यते ॥

### १ प्रथम बोल.



१ एगेआया कहेतां एक आत्मा सुबुद्धिरूप छे. १

१ एगेअणाया कहेतां एक अनात्मा जडरूप छे. २

१ एगेदंडे कहेतां एक दंड जिणे करी कर्मबंध छे. ३

१ एगेअदंडे कहेतां एक अदंड कर्मबंध नहि. ४

१ एगेखए कहेतां एक आकाश. ५

१ एगेलोए कहेतां एक लोक छ द्रव्यमय. ६

१ एगेअलोए कहेतां एक केवल आकाश है. ७

अछते काम भोगकी वंछा करे ते महा मोहनी कर्म बांधे २८, ब्रह्मचर्य पाली तपस्या करी आलोइ निंदि देवता थया छे तेहनी निंदा करे ते महा मोहनी कर्म बांधे २९ देवता आवे नही अरु कहे मेरे पास देवता आवे छे इम कहे ते महा मोहनी कर्म बांधे ३०. १

२० दुषमा कालके ३० लक्षण. नगर ते गाम सरीखा १, गाम ते मसाण सरीखा २, कुटंब ते दास सरीखा ३, पुरुष प्रधान लालच ग्राही ४, राजा जम सरीखा ५, सुखी जन निर्लज ६, केताएक कुलनी स्त्री वेश्या सरीखी ७, पुत्र स्वछंदे चालसी ८, सिष्य ते गुरुना प्रत्यनीक होसी ९, दुर्जन सुखी घणी ऋद्धिना धणी होसी १०, सज्जन दुखी अल्प ऋद्धिना धणी होसी ११, देशमें परचक्रना आडम्बर कंतार घणी होसी १२, प्रथवी दुर्भिक्षादि अती पीडा १३, ब्राह्मण अर्थना लोभी १४, समण महात्मा कुलवास त्यागी १५, मोटा धर्ममे कषाय कुलख-चित्त होसी १६, सम्यग्दृष्टि देवता मनुष्य थोडा १७, मिथ्यादृष्टि देवता मनुष्य प्रचुर घणा १८, मनुष्यने देवतानो दरसण दुर्लभ १९, विद्या मंत्रनो प्रभाव भंगे २०, गोरसमें रस थोडो २१,

| | | |
|---|---|---|
| १ | एगेपुएये कहेतां एक पुएय सुखहेतु. | ८ |
| १ | एगेपावे कहेतां एक पाप डुःखहेतु. | ए |
| १ | एगेधम्मे कहेतां एक धर्म वस्तु स्वभाव. | १० |
| १ | एगेअधम्मे कहेतां एक अधर्म स्वधर्मसें भिन्न. | ११ |
| १ | एगेआसवे कहेतां एक आश्रव जिणसें कर्म्मबंध होय. | १२ |
| १ | एगेसंवरे कहेतां एक संवर कर्मोंका बंधकु रोकै. | १३ |
| १ | एगावेयणा कहेतां एक वेदना कर्मोंका भोगवणा. | १४ |
| १ | एगानिज्जरा कहेतां कर्मोंका क्षय. | १५ |
| १ | एगे जीवे कहेतां एकजीव चैतन्य गुणधारी. | १६ |
| १ | एगे अजीवे कहेतां एक अजीव जमरूप. | १७ |
| १ | एगे नाणे कहेतां एक ज्ञान. | १८ |
| १ | एगे दंसणे कहेतां एक दर्शन. | १ए |
| १ | एगेचरित कहेतां एक चारित्र क्रियारूप. | २० |

कल्याण होवे किणनी परे श्रेणिक राजानी परे ३, मन वचन कायानो जोग सुद्ध प्रवरतावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गजसुखमालनी परे ४, छत्ती समकती क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे परदेशी राजानी परे ५ पांच महाव्रत निरमला पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गौतमस्वामीनी परे ६, कायरपणो छोडे सुरपणो आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सेलक मुनीराजनी परे ७, पांच इन्द्रीने वस करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे हरिकेसी मुनिराजनी परे ८, माया कपटाई छोडे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मल्लीनाथजीना छए मित्रनी परे ९, खरे धर्मनी आस्ता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे वर्ण नामे नटनी परे १०, चरचा वारता करीने सरदहणा सुद्ध करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे केसी गोतमस्वामीनी परे ११, दुखी देखीने करुणा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मेघरथ राजा मेघ कुमाररे पाछले हाथीरे भवनी परे १२, खरे वचनरी आसता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे आणंदजी कामदेवनी परे

१ एगेपएसे कहेतां एक प्रदेश. २१
१ एगेप्पमाणे कहेतां एक प्रमाण. २२
१ एगेबंधे कहेतां एक बंध. २३
१ एगेमोक्खे कहेतां एक मोक्ष निवृत्ति. २४
१ एगेसिद्धे कहेतां एक सिद्ध. २५
१ एगेसमए कहेतां एक समय कालभेद. २६
१ एगेसद्दे कहेतां एक शब्द. २७
१ एगेरूवे कहेतां एक रूप. २८
१ एगेगंधे कहेतां एक गंध. २९
१ एगेरसे कहेतां एक रस. ३०
१ एगेफासे कहेतां एक फर्श. ३१
१ एगेवट्टे कहेतां एक वर्त्त गोल. ३२
१ एगेतंसे कहेतां एक लंबा. ३३

जीवमें इंद्रीया सहित तथा रहित, १८ वाटे वहता जीवरा भेद ७ लाजे अपर्यासा, १९ वाटे वहता जीवमें समकिती मिथ्यात्वी, २० वाटे वहता जीवमें प्राण १ आउखो, २१ वाटे वहता जीवमें सन्नी असन्नीवि, २२ वाटे वहता जीवमें तसवि थावरवि २३ वाटे वहता जीवमें आत्मा ७ पावे चारित्र आत्मा टली, २४ वाटे वहता जीवमें संग्या ४, २५ वाटे वहता जीवमें अभासक, २६ वाटे वहता जीवमें करण २८। २७ वाटे वहता जीवमें हेतु २३, २८ वाटे वहता जीवमें सुक्ष बादर दोनु, २९ वाटे वहता जीवमें अणाहारीक, ३० वाटे वहता जीवमें किरिया सहित तथा रहित, ३१ वाटे वहता जीवमें जोग १ कायारो. १

३१ सिद्धके ३१ गुण. ५ वर्ण नही, ५ रस नही, ५ संठाण नही ८ फरस नही, २ गंध नही ३ वेद नही २८ कर्म नहो २९ काया नही ३० संसारको संग्रह नही ३१.

३१ सिद्धोका ३१ अतिसय. ५ ग्यानावरणी कर्म क्षय कीया ९ दर्शणावरणी कर्म क्षय कीया २, वेदनी कर्म २ मोहनी कर्म ४ आउखा कर्म क्षय कीया २ नाम कर्म क्षय कीया २ गोत्र कर्म क्षय कीया ५ अंतराय कर्म क्षय कीया एवं ३१.

१ एगेचउरसे कहेता एक चोखुणा. ३४

१ एगेपरिमंमले कहेतां एक लडू आकार. ३५

१ एगेमणे कहेतां एक मन. ३६

१ एगेवए कहेतां एक वचन. ३७

१ एगेकाए कहेतां एक काया. ३८

१ धर्म और कर्म किस प्रकारसे होय सो कहते है, धर्म तो आत्मभावें शुद्ध उपयोगें होवे अंर कर्म अशुद्ध उपयोगें तथा शुभाशुभ भावें होता है, जैसी करणी यानें क्रियां तैसा कर्म हुवे अंर धर्म तो अक्रियारूप है, जैसा शुद्ध उपयोगकी वृद्धि होवे वैसा धर्म पिण वृद्धिवान् होता है.

संख्यानुं छे अने एनी चूर्णी १४३२५ श्लोकनी छे सर्व संख्या ७६७९८ छे ३ व्यवहारदशाकल्पछेदसूत्र एना दश अध्ययन छे एनी मूल संख्या जुनी टीपमां ६००० नी छे एनी टीका श्री मलयगिरिसूरिकृत श्लोक २२६२५ नी छे तथा चूर्णी १०३६१ श्लोकनी छे एनुं भाष्य जुनी टीपमां ६००० श्लोकनुं लख्युंछे सरवाले संख्या ५०५८६ थइ ४ दशाश्रुतस्कंध छेदसूत्र जेनुं आठमुं अध्ययन कल्पसूत्र छे तेनी मूल संख्या १८२५ छे तथा चूर्णी २२४५ श्लोकनी, छे अने निर्युक्ति संख्या १६८ श्लोक छे सर्व संख्या ४२४८ थइ १ दशवैकालिक सूत्र श्री सिद्यंभवसूरिकृत मूल श्लोक ७०० संख्या छे एनी वृत्ति तिलकाचार्यकृत श्लोक ७००० प्रमाण छे तथा बीजी वृत्ति श्री हरिभद्रसूरिकृत ६८२० श्लोक छे तथा श्री मलयगिरि महाराजकृत वृत्ति ७७०० श्लोक छे लघुवृत्ति ३७०० श्लोक छे तथा निर्युक्तिनी गाथा ४५० छे तेम आधुनिक श्री सोमचंद्रसूरिकृत लघु टीका ४२०० तथा समयसुंदर उपाध्याय कृत लघु टीका २६०० छे २ उत्तराध्ययनसूत्र एना छत्तीस अध्ययन वैराग्यमय छे एनी मूल संख्या २००० छे तथा बृहद्वृत्ति वादिवेताल श्री शान्तिसूरिकृत १८०००

## अथ दूजो बोल. २

| | | |
|---|---|---|
| २ | सर्व द्रव्य दोय प्रकारे जाणवा. जीवद्रव्य १, अजीवद्रव्य २. | १ |
| २ | वळी संसारीजीव दोय प्रकारे जाणवा. सूक्ष्म १, बादर २. | २ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. त्रस १, थावर २. | ३ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. पर्याप्ता १, अपर्याप्ता २. | ४ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. भवसिद्धिया १, अभवसिद्धिया २. | ५ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. एक तो सिद्ध १, दूजो संसारी २. | ६ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. शरीरसहित १, शरीररहित २. | ७ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. इंद्रीसहित १, इंद्रीरहित २. | ८ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. वेदसहित १, वेदरहित २. | ९ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. कषायसहित १, कषायरहित २. | १० |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. कायासहित १, कायारहित २. | ११ |

लग जाय तो दुसरे दिन कमती रखें. सवेरेसुं सामतक च्यार पोहरका पच्चक्काण करें तथा रात्रिकी च्यार पोहरके पच्चक्काण देवगुरु धर्माचार्यकी आज्ञा ले या गुरु पासे पच्चक्काण करें रोजं नेम रखणा गिणती तथा वजन मर्यादा उपरांतरा त्याग. जितने तक त्रण नवकार कही नहि पारु उतनी तकरा च्यार पोहर तथा आठ पोहरका त्याग संघटेरी जयणा पनहीरी सम्हकरी चिरागरी स्त्रीके संगटेरी सचित्तरे संगटेरी याने संगटो होय जाय तो दोष नहि ॥

चितारना दिनभरमें जोजो भोग उपभोगमें आया हुवे उसको याद करना रा-ख्या उससें कमती लागा सो निरजराखाते अजाणमें जास्ति लागा होय उसका मन वचन कायाए करी मिछामि दुक्कडं ॥

॥ पारनेकी विधिः ॥ फासियं पालीयंरी पारी गुण कर त्रण नवकार गुण लेना फेर नेम कर लेणा याने धारलेणा ॥ ए चवदे नियम कहे छे. जो मर्यादा करें उत्कृष्ट रसाए आवें तो तिर्थंकरगोत्र कर्म बांधें नरक तिर्यंचनी गतिनें बंध करें साख सूत्र आवश्यकनी इति ॥

| | | |
|---|---|---|
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. सजोगी जोगसहित १, अजोगी जोगरहित २. | १२ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. सलेशी लेश्यासहित १, लेश्यारहित २. | १३ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. आहारिक १, अनाहारिक २. | १४ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. भासक बोलनेवाला १, अभासक नहि बोलनेवाला २. | १५ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. सागार आगारसहित १, अनागार आगाररहित २. | १६ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें संसारसमावन्नगा संसारमें रहणेंवाले १, असंसारसमावन्नगा संसारमें नहि रहेनेवाला २. | १७ |
| २ | सर्व जीव दोय प्रकारें. सकर्मी कर्मसहित १, अकर्मी कर्मरहित २. | १८ |
| २ | कर्म दोय प्रकाररा. अणुभागकर्म कर्मरस १, प्रदेशकर्म कर्मदल २. | १९ |
| २ | जीव दोय प्रकाररी वेदना भोगवे. अभ्युपगमकी १, उपक्रमकी २. | २० |
| २ | सर्व जीवनें उन्माद दोय प्रकाररो जक्षादिक १, मोहउन्माद २. | २१ |
| २ | प्रतिमा दोय प्रकाररी. भद्रप्रतिमा १, महाभद्रप्रतिमा २. | २२ |
| २ | वली प्रतिमारा दोय भेद, खुड्डीयामोयप्रतिमा १, महल्लियामोयप्रतिमा २. | २३ |

कूटवंश, १७ करटकवंश, १८ थरटपालवंश, १९ विरुद्कवंश, २० गुहिलवंश, २१ गुहिलपुत्तवंश, २२ पौतिकवंश, २३ चहुआणवंश, २४ धान्यपालकवंश, २५ राजपाशकवंश, २६ अमंगलवंश, २७ निकुंभवंश, २८ दहिकरवंश, २९ केलातुरवंश, ३० हूणवंश, ३१ हरिवंश, ३२ ढोढारवंश, ३३ शकवंश, ३४ चंदेलवंश, ३५ शोलंकीवंश, ३६ मारववंश. ६

३६ विनोद छत्तीश. १ दर्शनविनोद, २ श्रवणविनोद, ३ गीतविनोद, ४ नृत्यविनोद, ५ लिखितविनोद, ६ वक्तृत्वविनोद, ७ शास्त्रविनोद, ८ शस्त्रविनोद, ९ करविनोद, १० बुद्धिविनोद, ११ विद्याविनोद, १२ गणितविनोद, १३ तुरंगमविनोद, १४ गजविनोद, १५ रथविनोद, १६ पक्षीविनोद, १७ आखेटकविनोद, १८ जलविनोद, १९ यंत्रविनोद, २० मंत्रविनोद, २१ महोत्सवविनोद, २२ फलविनोद, २३ पुष्पविनोद, २४ चित्रविनोद, २५ पतितविनोद, २६ यात्राविनोद, २७ कलत्रविनोद, २८ कथा विनोद, २९ युद्धविनोद, ३० कलाविनोद, ३१ समस्या विनोद, ३२ विज्ञानविनोद, ३३ वार्त्ताविनोद, ३४ क्रीडाविनोद, ३५ तत्वविनोद, ३६ कवित्वविनोद. ७

२ वळी प्रतिमारा दोय भेद. जवमध्यप्रतिमा १. वज्रमध्यप्रतिमा २. २४

२ वळी प्रतिमारा दोय भेद. क्षुल्लागसर्वतोभद्र १, महासर्वतोभद्र २. २५

२ दोय प्रकाररा जीव दुःख भोगवे. सरीरीदुःख १, मानसीक दुःख २. सरीरीक० सरीरने विषे १६ रोग वेदना आय ऊपजे १, मानसीक० मनमें चिन्ता सोच फिकर सदा रहै २. २६

२ दोय प्रकाररी गति करें तिका कहै छै ऋजुगति जीव सरीर छोड़करि १ समयमांहि परभवें जायतिका ऋजुगति १ वक्रगति जीको जीव परभव जातो वळो पर्छे ३ समय रस्तैमें लागै पछें जाका गति वांकी हुवै तिहां जाय तिका वक्रगति २. २७

२ दोय प्रकाररी श्रेणि बांधे तिका कहै छै. समोहिया क० बंदूकनी गोळीनी परें प्रदेश एकठा नाकलें १, असमोहिया क० जीव ६ माहेना पहिली प्रदेशांरी श्रेणी बांधे. २८

२ सर्व जीव दोय प्रकाररो आउखो बांधे. नोपक्रमी क० आउखो बांधे जितरा पूरो भोगवें पिण उपक्रम नहि लागे. १ सोपक्रमी क० आउखो घणो बांधीयो हुवे ते-हनें उपक्रम लागीने थोडा काळमांहि पूरो करे २. २९

२ दोय प्रकाररी ऊणोदरी. द्रव्यऊणोदरी १, भावऊणोदरी २. ३०

२ द्रव्यऊणोदरीरा दोय भेद. उपगरणऊणोदरी क० वस्त्र पात्र ऊणा निरदोष भोगवें १, भात पाणी ऊणोदरी भात पाणी ऊणो भोगवें २. ३१

भावऊणोदरी तिका अप्पकोहे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकलहे. ४

## ॥ अथ तीजो बोल लिख्यते ॥

३ सर्व जीव तीन प्रकारें. स्त्रीवेद १, पुरुषवेद २, नपुंसकवेद ३. १

३ सर्व जीव तीन प्रकारें. संजती १, असंयती २, संजतासंयती ३. २

३ सर्व जीव तीन प्रकारें. विरती १, अविरती २, विरताविरती ३. ३

३ सर्व जीव तीन प्रकारें. पच्चक्खाणी १. अपच्चक्खाणी २, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ३, ४

३ सर्व जीव तीन प्रकारें संवरी १, असंवरी २, संवरासंवरी ३. ५

३ तीनदिष्टि. समदृष्टि १, मिथ्यादृष्टि २, समामिथ्यादृष्टि ३. ६

३ सर्व जीव तीन प्रकारें. सूक्ष्म १, बादर २, नोसूक्ष्म नोबादर ३. सूक्ष्म ते सर्वलोक मांहि भरीया छे, मारीया मरें नही १ बाहादर ते लोकरा एक देशमांहि रहे छे मारीया मरें २, नोसूक्ष्म नोबाहादर तें वाटें वहता जीव. ७

३ सर्व जीव तीन प्रकारें. त्रस १, थावर २, नोत्रस नोथावर ३. त्रस ते हालै चालै १, थावर ते हालें नही २, नोत्रस नोथावर ते सिद्ध जाणवा ३. ८

३ सर्व जीव तीन प्रकारें पर्याप्ता च्यार पर्याय पूरी करें १, अपर्याप्ता पर्याय अकरीयें मरें २, नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता जीव वाटें वहता ३. ९

३ सर्व जीव तीन प्रकारें भवसिद्धिया ते मोक्ष जावें १, अभवसिद्धिया ते कदी पण मोक्ष नहीं जावे २, नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया सिद्धारां जीव ३. १०

३ सर्व जीव तीन प्रकारें. सिद्धराजीव १, संसारीजीव २, वाटवहताजीव ३. ११

३ तीन प्रकारें केवलीयें लोक बताव्यो, ऊंचोलोक १, नीचोलोक २, तिरछोलोक ३. १२

३ तीन प्रकारी दिशि. ऊंचीदिशि १, नीचीदिशि २, तिरछीदिशि ३. १३

३ भवनपतिनी परषदा तीन प्रकारें. तुंबा ते मांहली परषदा १ वार बुलावी आवें १, तुम्भिया ते विचली परषदा वगर बोलावी आवें २, भीढरा ते बाहिरली परषदा बोलावी अणबोलावी पिण आवें ३. १४

३ व्यंतरांरी परिषदा तीन प्रकारें. ईसा १, तुम्भीया २, भीढरा ३. १५

३ तीन प्रकाररी वनस्पति. प्रत्येक १, सूक्ष्म २, साधारण ३. १६

३ वनस्पति जीव तीन प्रकाररा. संख्याता १, असंख्याता २, अनंता ३. १७

३ तीन प्रकारना अजीवना संस्थान. वट १, तंस २, चोरंस ३. १८

३ श्रावकरा मनोर्थः किंवारें हुं आरंभ परिग्रह गेम्हशुं १, किंवारें हुं श्रावकरा व्रत निरतिचार पालशुं २, किंवारें हुं अपछिम संलेषणा करी समाधिमरण आराधशुं ३, १९

३ तीन मनोर्थ साधुना. प्रथम मनोर्थे साधु इम मनमांहि चिंतवे किंवारें हुं थोमो तथा घणो सूत्र न्नणुं एकलविहारीपणुं पमिवजुं १, बीजें मनोर्थः इम चिंतवे किंवारे हुं बाराभिखुरी पमिमा आदरुं २, त्रीजे मनोर्थः पादोपगमन संथारो करुं एहवी चिंतवणा करें, एहवो ध्यान धरुं ३. २०

३ तीन समकितरी सरदहणा, अरिहंत सिद्धामें देव करी जाणे १, साधुनें गुरु करी जाणें २, क्षमा दयामयी धर्म करी जाणें ३. २१

३ तीन समकितरा दृष्टांत. किंनर देवतारा गीत राग धरीनें चित्त राखें तिम गुरुनो उपदेश सांभलें सांभलवारें विषें एकाग्र चित्त राखें १, बीजें भूखेंरो जीव अन्नरी अभिलाष करें तिम समकित पालवानें विषें अभिलाषा करें २, तीजें रोगीनें उंषधि करी समाधि उपजावें तिम आचार्यरी सेवा पर्यूपासना करी चित्त प्रफुल्ल करीसमाधि

उपजावें ३.

३ तीन प्रकारनी समकितनी रक्षा. पहिलें बोलें प्राइ बाइयांनें मिथ्यावीनें अनमतीने आपरो धर्म दिखामें तेहनें उत्तर देइनें निषेधें तो समकितरी रिष्या हुवें १, बीजें बोलें उत्तर नही देवायें तो अणबोल्यो रहै पिण मिलती नही मारे तो समकिती हुवें २, तीजें अणबोल्यो नही रहे तो अग्रो परो जावें तो समकितरी रिष्या हुवें ३. २३

३ तीन प्रकारें जीव अल्प अधुरो आउखो बांधें जाणबूज त्रसजीवनी हिंसा करें १ दूजें जांणबूज जूठ बोलें २, तीजें जाणबूज साधु चारित्रयनें असुफनो आधाकर्मी अणेखणीक अन्न पाणी देवें ३. २४

३ तीन बोले जीव मोटो आउखो बांधे. त्रस जीवरी हिंसा न करें १, जूठो वचन नही बोले २, साधु चारित्रीयने सुफतो अन्न पाणी देवें ३. ए तीन बोल सेवें तिके जीव मोटो आउखो बांधे. २५

३ तीन प्रकारें जीव अशुभ दीर्घ आउखो पामे त्रसजीवरी हिंसा करें १, जूठो बोलें २, साधुचारित्रीयनुं असुफतो आधाकर्मी अने दाणीक अन्न पाणी वस्त्र पात्र देवें

सुखकारी होवें, त्वचानें सुखकारी होवें, रोमने सुखकारी होवें, इसो मर्दन करें. पीछे ऊनो सीतल सुगंधी ए तीन पाणीसुं स्नान करावें, चोसठ तरकारी बत्तीस पकवान हाथें जीमावें, पीछे कांधें लेइनें फिरे तो पिण भगवंतें कह्यो के मातापितासुं ऊरण न थावें. परं केवलीरूप्या धर्मनें प्रवर्त्तावें तिवारें उसरावण थावें १, बीजें बोलें गुरुसें शिष्य उसरावण न थावें. अद्कार पिण जिकां गुरां पासें शिष्यो हुवै, जिकांरो विनय करें घणी सेवा भक्ति करें उपगार मेटें नही. धर्मरे प्रभावें गुरांरे प्रभावें मरी देवता हुवें घणी रिद्धि पामें. एक प्रस्तावें तेहीज गुरु विहार करता अटवी उजाड़मांहि भूख्याथका देवता आवीनें वसतीमांहि मेले, पछे रोग कोढ आय ऊपनाथका दुःखी छे, आपदा भोगवें छे, ते देवता आवीनें रोग उपसमावें, सुखसाता करें तो पिण गुरु तथा गुरुणीसुं उसरावण नही थावें. तिवारें गुरुरी तथा गुरुणीरी धर्म उपरसुं आसता ऊतरी जाणीने ते देवता हेतजुगत करीनें केवली प्ररूपीया धर्ममें प्रवर्त्तावें. तिवारें ते देवता गुरुशुं तथा गुरुणीशुं उसरावण थावें २, तीजें बोले वाणोतर शेठशुं उसरावण नही थावें. शेठने आपदा पड़ी हुवें वाणोतररी पुण्याइ वधी छे, शेठरी पु-

एथाइ हीणी छें, तिवारें वाणोतर शेठसुं पाछो उपगार करें, तोपिण उसरावण नही थावें, केवलीप्ररूपीया धर्ममें प्रवर्त्तावें तिवारें उसरावण थावे शेठसुं वाणोतर ३. ३२

३ तीन गारव. इड्डिगारव कहेतां रिद्धिरो गारव पाना पुस्तक सिष्य साषा भंडोपगरण जेहनो अहंकार करे ते इड्डिगारव १, बीजो रसगारव आहार सरस मिलें तेहनो अभिमान करें एहवा सरस आहार अमनें मिले छे बीजानें मिलें नही ते रसगारव. २, तीजो सातागारव ते सुखसातारो गरव ते अभिमान करें अमनें सुखशाता छे इसी दूजा केहनें नही ते सातागारव ३. ३३

३ तीन शल्य. मायाशल्य १, नियाणाशल्य २, मिथ्यातदर्शणशल्य ३. ३४

३ तीन विराधना ते ग्यान अकालने विषें भणें, ग्यानरो विनय न करें, ग्यानवंतनी आसातना करें, ग्यान भणतां गुणतां आलस मोडें अभषला लेवें जिणरें पासें ज्ञान भणीयो हुवे तेहनो उपगार मेटें तिणारा अवगुणवाद बोलें ते नाणविराधना १, बीजी दर्शनविराधना. समकित शंका कंषा आवें, समकितीसुं द्वेष करें, मिथ्यात्वीनी परसंसा करें, साधुसुं द्वेष करें, तेहनी निंदा करें, ते दर्शणविराधक सिके नही ते दर्श-

नविराधना २, तीजी चारित्रविराधना ते चारित्रविराधना उत्तरगुणनुं दोष लगावें

सरीररी सुश्रूषा करें ते चारित्रविराधना ३. ३५

३ तीन आराधना. ग्यानआराधना १, दर्शणआराधना २, चारित्रआराधना ३. ३६

३ तीन प्रकारें तिर्यंच पुरुष. जलचर १, थलचर २, खेचर ३. ३७

३ तीन प्रकारनी तिर्यंचणी. जलचरणी १, थलचरणी २, खेचरणी ३. ३८

३ तीन प्रकाररा मनुष पुरुष. कर्मभोमी १, अकर्मभोमी २, अंतरद्वीपक ३. ३९

३ तीन प्रकाररी मनुषरीस्त्री. कर्मभोमनी १, अकर्मभोमनी २, अंतरद्वीपनी ३. ४०

३ कर्मभोममें तीन कर्म. असि शस्त्रसें १, मसी लिखकर २, कसी खेतीकर ३. ४१

३ तीन पद तीर्थंकरदेव गणधरोनें आपें. हेय ते छांडवा योग्य १, ज्ञेय ते जाणवायोग्य

२, उपादेय ते आदरवा योग्य ३. ए तीन पदनें अनुसारे गणधरदेव ११ अंग रचें. ४२

३ तीन पद थिवर भगवंतानें तीर्थंकरजी कहै. उप्पन्नेवा, उपजता है १, विगमेवा, वि-

णासता है २, धुवेवा, थिरपणै ३. थिवरभगवंत बार उपांग रचै. ४३

३ तीन द्रह. पद्म १, महापद्म २, तिगछिद्रह ३. ४४

३ तीन द्रह. केशरीद्रह १, पुंडरीकद्रह २, महापुंडरीक द्रह ३. ए ६ द्रह रुकुल गिरि पर्वत ऊपर जाणवा. ४५

३ तीन देवी. ह्रिरि १, श्री २, धिति ३. ४६

३ तीन देवी. कित्ति १, बुद्धि २, लछी ३. ए ६ देवी द्रहांरी जाणवी. मोटो रिद्धिरी धणीयाणी छे एक पल्योपमरो आउखो भवनपत्यांरी देवी छे असंख्याता देवता सेवे करें छें. रवांइ द्रहांने विषें रवांइ देव्यारां भवन छे तिके भवन आधे कोसरा चवडा, कोसरा लांबा, देशऊणें कोसरा वली ऊंचा, आछा निर्मला, घटारीया मठारीया तीन २ बारणा छे चवदेंसयचालीस एक भवनरा थांभा छे रत्नारा थांभा छे. ४७

३ तीन प्रकारें वाचणी नही देवें. अवनीतनें नही देवें १, रसलोलुपीनें नही देवें २, कीयो क्रोध खमावें नही तेहनें वांचना नही देवें ३. ४८

३ तीन प्रकारे वाचना देवें. पंडितनें देवें १, सरलचित्तरा धणीनें देवें २, गुरुगुरुणीरा छिद्र न जोवें तेहनें वाचणी देवें ३. ४९

३ तीन प्रकारें देवता मनुष्यलोकमां आवे. पूर्वस्नेहे देवता आवे १, तपस्वीरी महिमा क-

खा देवता आवें २, तीर्थंकरजीरा पांचकल्याणकमांहि देवता आवें ३. ५०

३ तीने प्रकारें देवता आवें. तीर्थंकरजीरे जन्म ऊपरें आवें १, तीर्थंकरजीरी दिक्षारें म-होछव ऊपरें आवें २, तीर्थंकरजीरे निर्वाण महोछव ऊपरें आवें ३. ५१

३ तीन प्रकारे देवता आवें नही. अठेंरो रागस्नेह बूटो छे १, ऊठेंरो रागस्नेह लागो छे बत्तीसबद्ध बत्तीस अक्षरनें आकारें नाटक पमे छे २, मनुष्यलोकरी दुर्गंध वासना ऊछल रही छे तिण कारणें देवता मनुष्यलोकमां नही आवें ३. ५२

३ तीन प्रकारें देवता आवतो जाणीजें. देवता आवें तिवारें आंख टमकारें नही मनवं-छित कार्य पूरवें १, बीजें फूलारी माला कुमलावें नही आवतारी गंद पमे नही २, तीजें धरतीसुं च्यार अंगुली पग ऊंचा रहै तिण कारण देवता आया जांणीजें. ५३

३ तीन प्रकारें देवता सोचैं. मातापितानें चोथो आश्रव सेवता देखीनें सोचैं १, आया गर्भरा दुःख देखीने सोचैं २, मलमुत्रमांहि ऊपजणो पमसी तिण कारणें सोचैं. ५४

३ देवता देवलोकथका तीन बोलरी वांछा करें. १ आर्यक्षेत्ररी १, मनुषजन्मरी २, सुकु-लमें ऊपजवारी ३. ५५

३ तीन बोलें देवतानें ६ महिना पहिली आगलारी खबर पड़ें रत्नारामवा माणवक थं-
भ झांखा देखें १, बीजें फूलांरी माला झांखी देखें २, तीजें तेजोलेस्या झांखी देखें ५६

३ तीन प्रकारना देवतारा विमान. वटविमाण ते वृत गोल सगलांरे चिहुंही दिसें कोट
जाणवा सर्व वाटला विमानरे एक २ बारणो १, बीजे त्र्यंस विमानरे तीन बारणा
जाणवा २, चउरंस विमाणरे च्यार बारणा वेदिका चिहु दिसे जाणवी ३. ५७

३ तीन प्रकारे देवता सोचे घणो विनय वैयावच्च कीया नही हुवे तिवारे सोचैं १ घणी
दिक्षा नही पाली हुवे तो सोचैं २, घणा सूत्र नही अवगाह्या हुव तो सोचैं. ५८

३ तीन प्रकारे देवता नही सोचे. घणी वेयावच्च करी हुवे तो नही सोचे १, घणी दि-
क्षा पाली हुवे तो नही सोचैं २, घणा सूत्र अवगाह्या हुवे तो नही सोचैं ३. ५९

३ तीन प्रकारना थिवर. वयथिवर साठ वरसरी अवस्था ते वयथिवर १, सूत्रथिवर ते
ठाणांग समवायांग सूत्रना अर्थ लेवैं ते सूत्रथिवर २, प्रवृज्याथिवर तेवीस वरस दि-
क्षा लीधांने हुवा होय ते प्रवृज्याथिवर ३. ६०

३ तीन करण. मनकरण १, वचनकरण २, कायाकरण ३. ६१

३ तीनदंम. मनदंम १, वचनदंम २, कायदंम ३. ६२
३ तीनगुप्ति. मनगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३. ६३
३ तीनकरण. सारंभ कहेतां पाप मनमें चिंतवें १, समारंभकरण कहेतां वचन कहीनें पाप करावें २, आरंभकरण कहेतां ठकायरो हणवो पोतानें हाथे करीनें करें ३. ६४
३ तीनकरण. करण १, करावण २, अनुमोदना ३. ६५
३ तीनमिथ्यात. कुगुरु १, कुदेव २, कुधर्म ३. ६६
३ तीनसमकित. सुगुरु १, सुदेव २, सुधर्म ३. ६७
३ तीनरत्न. ग्यानरत्न १, दर्शणरत्न २, चारित्ररत्न ३. ६८
३ तीनपरिग्रह. कर्मपरिग्रह ते आठ कर्म १, सरीरपरिग्रह ते सरीरनी ममता करे २, भंमत्तपगरण परिग्रह भंमत्तपगरणरी ममता करे ३. ६९
३ तीनपरिग्रह. सचित्त परिग्रह सिष्य सालारो १, अचित्तपरिग्रह भंमत्तपगरणरो २, मिश्रपरिग्रह शिष्य सापा सचित्त भंमत्तपगरण ते अचित्त दीनुंही ममता मूर्गी करे. ७०
३ तीनपुरुष. जघन्य १, मध्यमपुरुष २, उत्कृष्टपुरुष ३. ७१

३ जघन्यपुरुष तीन प्रकारना. दारूगा ते दासना काम करे १, भृतका ते भाम्यो लेइने कर्म कार्य करावे २, भायल्लया भागदे आघदे काम करावे ३. ७२

३ मध्यमपुरुष तीन प्रकारना. उग्रकुलना १, भोगकुलना २, राजन्यकुलना ३. ७३

३ उत्कृष्टपुरुष तीन प्रकारना. कामपुरुष ते चक्रवर्त्ती १, भोगपुरुष ते वासुदेव २, धर्मी पुरुष ते तीर्थंकरदेव ३. ७४

३ तीन प्रकाररी क्रिया. सैते समकित १, वैते विरत २, कैते क्रिया ३. ७५

३ तीन प्रकारे विद्या वधे. घोते घोषेसुं १, पूते पूछांसुं २, चिङ ते चिंतारेसुं ३. ७६

३ तीन सामायक. श्रावकरी सूत्र सामायक ते निर्मलो ग्यान भणे १, समकित सामायक ते निर्मलो समकित शंका कंखारहित पाले २, देशविरत सामायक ते विरत पचखाण निर्मला चोखा अतिचाररहित पाले ते तीजी समाधि जाणवी ३. ७७

३ तीन जागरका. बुधजागरका ते तीर्थंकरजीनी १, अबुधजागरका ते सामानीक साधुनी २, सदधुजागरका ते श्रावकनी ३. ७८

३ तीन प्रकाररा पुद्गल पलगसा ते जीव पुद्गल ग्रहै ग्रहणो कपम्यो आहार पाणी शरीर

घर इत्यादिक आदि देइने वीजाही पुद्गलजीवरे प्रजोजन जोगमे ग्रहे ते पुद्गल पं-
जगसा कहीजै १, वीससा ते वादल जाणवा २, मिसा ते जीव पूर्वे ग्रहणा कपमा
शरीर इत्यादिक पुद्गल ग्रही २ ने मेल्या ते पुद्गलमिसा कहीजै ३. ७ए

३ तीन प्रकारे सिद्धांरी संचलना जाणवी धु १, वे २, उत्पात ३. धु ते सिद्ध चले न-
ही १, वे ते सिद्धांरी वय पलटे नही २, उत्पात ते जिण समय ग्यानरो उपयोग
हुवे तिण समय दर्शरो उपयोग नही, जिण समय दर्शरो उपयोग हुवै तिण समय
ग्यानरो उपयोग नही ३. ८०

३ तीन अरिहंत. अवधिग्यानी अरिहंत १, मनपर्यवग्यानी अरिहंत २, केवलज्ञानी
अरिहंत ३. ८१

३ तीन जिन. अवधिग्यानी जिन १, मनपर्यवग्यानी जिन २, केवलग्यानी जिन ३.८२

३ तीन केवली. अवधिग्यानीकेवली. अवधि ते मर्यादाए निर्मलो देखे १, मनपर्यवग्या-
नी ते निर्मला सन्नीपंचेन्द्रिना मनना भाव जाणे २, केवलग्यानी केवल सर्व लोक
अलोकना भाव जाणे ३. ८३

३ तीन इंद्र ग्यानेंद्र ते केवलग्यानी १, दर्शणेंद्र ते क्षायक समकिती २, चारित्रेंद्र ते यथाख्यात चारित्री ३. ८४

३ तीन इंद्र. असुरकुमारना इंद्र चमरेंद्र बलेंद्र १, मनुषलोकना इंद्र चक्रवर्त्ती २, सर्व देवताना इंद्र शक्रेंद्र ३. ८५

३ तीन प्रकारे देशथकी थोडीसी धरती धूजै. मोटा पर्वत पाद्दाम पडे थोडीसी धरती धूजै १, बीजे भवनपति वाणव्यंतर देवता बेहुं कुफ करे तिवारे थोडीसी धरती धूजे २, तीजें भवनपति वाणव्यंतर बेहु भेला थइने तीर्थंकरांने वंदना करणने जावे तिवारे, तिवारे देशथकी धरती धूजे ३. ८६

३ तीन प्रकारे सर्वथकी धरती धूजै. घणो दधिरो पाणी हेठलो उछलै तेहथकी सर्वथा धरती धूजे १, ज्योतिषी विमानिक भेला हुयने कुफ करे तिवारे सर्वथकी धरती धूजै २, तीजै, ज्योतिषी विमानिक बेहुं भेला हुयने तीर्थंकरांने वंदना करण जाय तिवारे सर्वथकी धरती धूजै ३. ८७

३ तीन जोग. मनजोग १, वचनजोग २, कायजोग ३. सर्व ठवांइ दिसांरो पुद्गल वस्तु

होवै ते जोग. ८८

३ तीन प्रजोग. मनप्रजोग १, वचनप्रजोग २, कायप्रजोग ३. सर्व ठवांई दिसांना पुद्गल प्रवर्त्तावे ते. ८९

३ तीन लखण मिथ्यात्वीना जाणवा. ऊणायरियए भगवंतरे भाष्याथकी ऊणो परूपे १, अइरियए भगवंतरे भाष्याथी अधिको परूपे २, वइरियए भगवंतरे भाष्याथी विपरीत परूपे इसी परूपणा करे तेहथी अनंत संसार सजै ३. ९०

३ तीन प्रकाररा मिथ्यात. लौकिकमिथ्यात ते लोकनी क्रिया करे संसारना कार्य विवाह सगाइ देव पितर गोगो खेतरपाल मानै पूजे ते लौकिकमिथ्यात १, संसयमिथ्यात ते देव गुरु धर्मना गुण न जाणे २, कुप्रावचनिक मिथ्यात ते अन्यमति जोगी संन्यासी तापसनी प्रशंसा करे परिचय करे ३. ९१

३ तीन पख. धर्मपख ते साधु साधवी १, अधर्मपख ते चतुर्विध संघ टालीने बीजा सर्व जीव अधर्मपखमांहि जाणवा २, मिश्रपख श्रावक श्राविका जाणवा ३. ९२

३ तीन ज्योतिषीरी परखदा. तुंबा १, तुडिया २, पेचा ३. ९३

३ तीन विमानिकरी परिषदा. समीया ते मांहिली परिषदा बोलावी आवै १, चंमा ते विचली विनाबोलावी आवे २, जाया ते बाहिरली बोलावी विनाबोलावी आवै३. ९४

३ भगवंतरी तीन परिषदा. जाणीया ते समझावा समर्थ १, अजाणीया ते पिणसमझावा समर्थ २, डुवेड्ढा ते समझावा समर्थ नही ३. ९५

३ तीन प्रकारनी एषणा. गवेषणा ते निरदोष अन्न पाणी देखीने ठिकाणे भाजनदातारना भाव जाणीने गवेषे १, ग्रहणएषणा अन्न पाणी सर्व वस्तु घणे कालरी थोमे कालरी जीवरहित जीवसहित देखीने पछे निरदोष जाणीने लेवे २, परिभोग एषणा भोगवतोथको अजयणा करे नही सरावे नही विसरावे नही प्रकाशकारी भाजनमांहि दोषण टालीने भोगवे ३. ९६

३ तीन प्रकारे भाव विउसग्ग आठ कर्म बांधे १, चउगति संसार बांधे २, च्यार कषाय बांधे ३. ९७

३ तीन प्रकारे साधुने पात्रा. तुंबेरो १, काठरो २, माटीरो ३. ९८

३ साधु तीन बोल सेवे तेहने माथे प्रायछित आवे. साधुरी चोरी करे १, अन्यतीर्थीरी चोरी

करे २, हथवाइ करे ३.

३ तीन बंध. कसिणबंध १, अकसिणबंध २, अनेक द्रव्यबंध ३. १००

३ तीन बंध. सचितबंध. हाथी घोमा दोपद चोपद जेहना समूह ते सचित्त १, अचित्त बंध सोनो रूपो घर हाट हवेली तेहनो समूह ते अचित्तबंध २, मिश्रबंध ते गहणा गांठातो अचित्त मनुष्य तथा हाथी घोमा सचित्त इत्यादिक सचित्त अचित्तरो भेल ते मिश्रबंध ३. १०१

३ तीन पूर्वी पूर्वानुपूर्वी. ते पहिलेसे लेइने अनुक्रमे गणे ते पूर्वानुपूर्वी १, पछानुपूर्वी ते छेहमासुं लेइने पहिले तांइ गणे ते पछानुपूर्वी २, अनानुपूर्वी ते पहिले छेहमे दोनुं टालीने विचला सर्व अनानुपूर्वी जाणवा ३. १०२

३ तीन पूर्वी तीनप्रदेशी खंधथी लेइने अनंतप्रदेशीखंध तांइ गिणे ते अनुपूर्वी कहीजें १ आनानुपूर्वी ते डुप्रदेशीखंध २, अवत्तवए ते परमाणु ३. १०३

३ तीन वेदना. सीतवेदना १, उसनवेदना २, मिश्रवेदना ३. १०४

३ तीन प्रकारे जीव ऊपजें. नारकी तेरेंदंमक देवतारा तीन दंमक विकलेंद्रीरा गर्भज

तिर्यंच एवं १७ दंडकें तीन प्रकारें जीव ऊपजें कयसंचया एकें समयमें संख्या ऊप-
जैं १. अकयसंचया ते एके समयमें असंख्याता ऊपजें २, अवसवए ते एकें समयमें
एकहीज ऊपजैं ३. गर्भज मनुष्यमांहि २ प्रकारें ऊपजें. कयसंचया १ अवत्तसवया
२ च्यारथावर असन्नी मनुष्यमांहि अकयसंचया जीव ऊपजें. वनस्पतिमांहि एकें स-
मयमांहि अनंता ऊपजें. १०५

३ तीन योनि. शीतयोनि १, उसनयोनि २, मिश्रयोनि ३. नारकी देवतारी शीत उसन
योनि, गर्भज मनुष्यरी तिर्यंचरी मिश्रयोनि. च्यार थावर तीन विकलेंद्री असंनी म-
नुष्य तिर्यंचरी तीन प्रकाररी योनि. १०६

३ तीन प्रकाररी योनि. सचित्त १, अचित्त २, मिश्र ३. नारकी देवतारी अचित्तयोनि
बाकी सर्व दंडकै तीन योनि सचित्त अचित्त मिश्रयोनि. १०७

३ तीन प्रकाररी योनि. नारकी देवता पांच थावरांरी संबुडायोनि तिका ढांकी १, तीन
विकलेंद्री असंनी मनुप तिर्यंचनी वियडायोनि २, गर्भज मनुष्य तिर्यंचरी तीन यो-
नि संबुडा ते ढांकी वियड ते उघाडी, संबुडवियड ते कांइक ढांकी, कांइक उघा-

न्नी ते मिश्रयोनि. १०८

३ तीन प्रकाररी योनि. उत्तमपुरुष मातानी कछुवें सरीखी १, चक्रवर्त्तिरी श्रीदेवीरी शंखरें आवर्त्त सरीखी योनि, तिणमें जीव उपजें पिण हर जाय २, बीजां सघलांरी मातारी योनि वांसरी पताका सरीखी योनि ३. १०९

३ तीन काल. अतीतकाल १, वर्त्तमानकाल २, आगामिकाल ३. ११०

३ तीन काल. शून्यकाल १, अशून्यकाल २, मिश्रकाल ३. १११

३ तीन प्रकाररी दिख्या. एहलोकरें प्रतिबंधसुं नीकलें १, परलोकरे प्रतिबंधसुं नीकलें २, दोहांही लोकरें प्रतिबंधसुं नीकलें ३. ११२

३ तीन प्रकाररी दिष्या. पूर्वले प्रतिबंधसुं नीकलें १, मार्गरे प्रतिबंधसुं नीकलें २, पूर्वलें सजनादिकरें तथा मार्गरे बेहुं प्रतिबंधसुं नीकलें ३. ११३

३ तीन प्रकाररी दिष्या. तुयावश्या १, पुयावश्या २, बुश्यावश्या ३. ११४

३ तीन प्रकाररी दिष्या. उवायपवज्जा १, अषायपवज्जा २, संघायपवज्जा ३, ११५

## ॥ अथ चोथा बोल लिख्यते ॥

४ च्यार अंतक्रिया. अल्पकर्म अल्पवेदना अल्पनिर्जरा संयमबहुले संवरबहुले आदीसर भरतेसरजी जांणवा १, च्यार अंतक्रिया. कर्म घणा वेदना घणी निर्जरा घणी संयम अल्प संवर अल्प गजसुखमालजी जांणवा २, च्यार अंतक्रिया कर्म घणा वेदना घणी निर्जरा घणी संयम पिण घणो संवर पिण घणो सनतकुमारचक्रवर्त्तिरी परे ३, च्यार अंतक्रिया अल्प कर्म अल्प वेदना अल्प निर्जरा अल्प संयम अल्प संवर मरुदेवीमातारीपरें जांणवा ४. १

४ च्यार कुंभ. मधुरो घडो मधुरो ढांकणो १ मधुरो घडो नें विषरो ढांकणो २, विषरो घडो ने मधुरो ढांकणो ३, विषरो घडो ने विषरो ढांकणो ४. ए कुंभनें दृष्टांते च्यार पुरुषरी जाति छे ते कहे छे. एक पुरुष मनमें निर्मला अने मुखथकी मीठो मधुरो भाखें १, एक पुरुष हियें निपाप निर्मला अनें मुखें कडवो कठोर भाखें २, एक पुरुष हियें कठोर मुखथकी मीठो मधुरो भाखें ३, एक पुरुष हियें पिण कडवो कठोर

मुखथकी पिण कम्वो कठोर भाखे ४.



४ च्यार जातिना फूल. एक फूल रूप संपन्न छे पिण गंध संपन्ने नही, रोहीमारो फूल. १, एक फूल गंध संपन्ने छें पिण रूप संपन्ने नही, पोहणीरो फूल २, एक फूल गंध संपन्ने पिण छें रूप संपन्ने पिण छे चंपो मोगरो गुलाबरो फूल ३, एक फूल गंध संपन्ने पिण नही, रुप संपन्ने पिण नहि, आकमा धतुरारा फूल ४ इण दृष्टांते च्यार पुरुष जाणवा. एक पुरुष रुप संपन्ने छे पिण सील संपन्न नथी ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तिवत्, एक पुरुष सील संपन्ने छे पण रूप संपन्ने नही हरिकेशी अणगारवत्, एक पुरुष रूप संपन्ने:पिण छे सील संपन्ने पिण छे आदीश्वर भरतेश्वरवत्, एक सील संपन्ने पिण नही रूप संपन्ने पिण नही कालक शूरीक कसाइवत्. ८

४ च्यार विश्रामना दृष्टांत. भारवाही घणो बोज खांधे लीयो छें एक कांधेथी लेइ बीजें खांधे लेवे तिवारें थोमोसो विश्राम पामें १, बीजें विश्रामें नागकुमार तथा जलकुमार रे देहरे उतारे ते बीजो विश्राम २, तीजें विश्रामें लाहमी तथा वमीनीतरे काजें उतारें ते तीजो विश्राम ३, चोथें विश्रामें घरे आय उतारें ते ४. ९

करे तीव्र परिणामें राति दिवस हर्षसहित आरंभमांहि प्रवर्त्तें १, महापरिग्गहियाए छतो परिग्रह मिलियो छे तिणरी ममता मूर्छा घणी छे अने अछतेरी वांछा करे पराये धन सुखसाहबी देखीनें चिंतवें ए माहरे हुवे तो भली एहवी अछतेरी वांछा करे २, कुणिय आहारेणं, मांसरो मदरो आहार करे ३, पंचिंदिय वहेणं, जांणबूझनें निरअपराध पंचेंद्रियजीवरो वध करे ४. १५

४ च्यार प्रकारें तिर्यंचरो आयुषो बांधे. माइल्लयाए, कपटाइ केलवे मुंढेसुं मीठो बोलें हृदयमांही कपट केलवे १, नियडमाइल्लयाए, मित्रसुं घणी मित्राइ करीने मित्रनें वंचें मुंह मीठो पूंठे अवगुणवाद बोले २, अलीयवयणे केलवणी करीने झूठ बोले कूड तोले कूडमाणे खोटो तोल खोटो माप लेवणरा जुदा ने देवणरा जुदा ४. ए च्यार बोले जीव तिर्यंचमांहि जाय ऊपजे. १६

४ च्यार प्रकारें जीव मनुषरो आयुषो बांधे. पगइभद्दियाए स्वभावें भोला भद्रिक हुवें कुटलाइ नही १, पगइविनीयाए स्वभावेंहीज विनीत हुवे २, साणुकोसियाए अनुकंपा घणी हुवे ३, अमछरयाए मछरभावरहित हुवे ४. ए च्यार बोल सेवें जिको मनु-

ष्यमांही ऊपजैं. १७

४ च्यार प्रकारें देवतारो आउखो बांधे. सरागसंजमे रागसहित संयम पाले वस्त्र पात्र प्रमुख उपगरण शिष्य शाखा उपरें राग धरें १, संयमासंयमे क्युंहिक संयम क्युंहिक असंयम अविरत ते असंयम विरत ते संयम तिको श्रावकनो धर्म २, अकाम निर्जरा सदाइ भूख तिरषा सहे रीसरें वस सहें ३. बालतपस्वी अग्यान तपस्या करे ४ ए च्यार बोल सेवें तिकें देवतारी गतिमांही जाय ऊपजैं. १८

४ च्यार विकथा. राज्यविकथा १, देशविकथा २, स्त्रीविकथा ३, भातविकथा ४. १९

४ भगवंतरी वारे परिषदाना चतुर्विधसंघ. साध १, साधवी २, श्रावक३, श्राविका४. २०

४ च्यार जातिना देवता. भवनपति १, वाणव्यंतर २, ज्योतिषी ३, विमानीक ४. २१

४ च्यार जातिरी देवी. भवनपतिरी देवी १, वाणव्यंतररी देवी २, ज्योतीषीरी देवी ३, विमानीकरी देवी ४. २२

४ च्यार कर्मबंधरा प्रकार. प्रकृतिबंध ते कर्मना स्वभाव १, स्थितिबंध ते जेटली स्थितिना कर्म बांधे तेटलोहीज काल कर्मबंध भोगवे २, अनुभागबंध ते रस शुभ अशुभ

भोगववो ३, प्रदेशबंध ते दलनिकाचितबंध असंख्याते प्रदेशें करी विना भोगव्यां न छूटें.२३

४ च्यार कषाय. क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४. २४

४ च्यार आहार. असण १, पाणि २, खादिम ३, सादिम ४. २५

४ च्यार पुरुष ऊगीनें ऊग्या आदिश्वर भरतजीवत् १, ऊगीने आथम्या ब्रह्मदत्तचक्रवर्त्तिवत् २, आथमीनें ऊग्या हरकेशी अणगारवत् ३, आथमीनें आथम्या कालकशूर कसाइवत् ४. २६

४ च्यार प्रकाररी बुद्धि. उपत्तीया उत्पातरी बुद्धि ते आपणाहीथी ऊपजैं १, विणीया ते विनय करंत बुद्धि ऊपजे २, कम्मिया ते काम करतां सुबुद्धि ऊपजे ३, परिणामिया ते वय परिणमतां बुद्धि ऊपजें ४. २७

४ च्यार जातिना क्रियाणा. गिणीमंच गणिय सोपारी प्रमुख १, धरिमंच धर्मीयें तोल्यो विकें २, मेकंच गजें मिणी वेचें कपडादिक ३, परिछिजांच पारिष्यायें वेचें जूंहारादिक जाणवा ४. २८

४ च्यार-मेरुपर्वतउपरे वन. भद्रसालवन १, नंदनवन २, सोमनसवन३, पंडगवन४.२९

४ महावीरस्वामीजीरा च्यार पारणा. पहिलो विजयब्राह्मणरे घरे पारणो १, बीजो सामें गाथापतिरें घरे पारणो २, तीजो गाथापतिरें घरे पारणो ३, चोथो बकुलब्राह्मणरें घरे पारणो ४. ए च्यार राजग्रही चोमासेंमांहि पारणा जांणवा. ३०

४ च्यार श्रावक. माता पिता समान श्रावक १, मंत्री समान श्रावक २, बंधव समान श्रावक ३, सोक समान श्रावक ४. ३१

४ च्यार जातिरा वली श्रावक. आदर्श सरीखा श्रावक १, घूजा सरीखा श्रावक २, खयररा खुंटा सरिखा श्रावक ३, लोहरें कांटें सरीखा श्रावक ४. ३२

४ च्यार जातिरा आचार्य. चोल मजीठ सरीखा आचार्य आप पोते वैराग रंग राता छे अवरानें पिण वैरागरूप रंग चढावें १, परवाला सरीखा आचार्य आप वैराग रंग करी राता छे अवरांनु वैराग रंग चढावै नही २, चूनें सरीखा आचार्य आप वैराग करीने ढीला छे अवरांने वैराग रंग चढावें ३, खरी सरीखा आचार्य आपही वैराग रंगे लूखा अवरांने पिण वैराग रंग चढावणनें लूखा. ३३

४ च्यार वस्तु अमोलक जाणवी. सात धातुमांही तो लोह अमोलक १, पथरमांही जु-

हार अमोलक २, वस्त्रे मांही क्षौमयुगल कपासरो नीपनो वस्त्र अमोलक ३, काष्ट-
मांही बावनोचंदन अमोलक ४. ३४

४ च्यार करंमीया. राजारें करंमीयें समान तीर्थंकरदेव १, शेठरें करंमीयें समान गणधर
देव २, वेश्यारें करंमीये समान अन्यदर्शणी ३, चंमालरें करंमीये समान भोरामसी
करणवाला ४. ३५

४ च्यार चंमाल. पशूमांही गधो चंमाल १. पंखीमांही काग चंमाल २, साधुमांही क्रो-
धी चंमाल ३, लोकिकमें भंगी चंमाल ४. ३६

४ च्यार कषाय घणी किण २ में. नारकीमांहि तो क्रोध घणो १, मनुषमांही मान घ-
णो २, तिर्यंचमांही माया घणी ३, देवतामांही लोभ घणो ४. ३७

४ च्यार अजीर्ण. तपस्यारो अजीर्ण क्रोध १, भणीयेंरो अजीर्ण अहंकार २, कार्यरो
अजीर्ण विकथा ३, लोकमें अन्नरो अजीर्ण वमन ४. ३८

४ च्यार विरख. सालरोरुख अने सालरो परिवार आदिनाथ भरतचक्रवर्त्तिवत् १, साल-
रोरुंख एरंमरो परिवार गर्गाचार्य शिष्यवत् २, एरंमरो रुंखसालरो परिवार अंगारमर्दन

शिष्य आचार्यवत् ३, एरंडरो रुंख एरंड परिवार कालकशूरकसाई परिवारवत् ४. ३९

४ च्यार मेह. एक मेह गाजें पिण वरसे नही १, एक मेह वरसें पिण गाजें नही २, एक मेह गाजें पिण वरसें पिण ३, एक मेह नही गाजें नही वरसें ४. ४०

४ इण दृष्टांते च्यार पुरुष. एकेक पुरुष पोमावें पिण दान देवे नही १, एकेक पुरुष दान देवें पिण पोमावें नही २, एकेक पुरुष दान पिण देवे पोमावे पिण ३, एकेक पुरुष नही दान देवें नही पोमावें ४. ४१

४ च्यार मेह. एकेक मेह कालें वरसें पिण अकाले वरसे नही १, एकेक मेह अकाले वरसे कालें वरसे नही २, एकेक मेह कालेंही वरसे अकालेंही वरसे ३, एकेक मेह कालें वरसे नही अकाले पिण वरसे नही ४. ४२

४ इण दृष्टांते च्यार पुरुप ते किसा. एकेक पुरुप चाहीजतो दान देवे पिण अणचाहीजतो नही देवे १, एकेक पुरुष अणचाहीजतो देवे पिण चाहीजतो नही देवें २, एकेक पुरुष चाहीजतो पिण देवें अणचाहीजतो पिण देवे ३, एकेक पुरुष नही चाहीजतो देवें नही अणचाहीजतो नहीं देवें ४. ४३

४ च्यार मेह. क्षेत्रें वरसें अक्षेत्रें नही वरसें १, अक्षेत्रें वरसे क्षेत्रें नही वरसें २, क्षेत्रें पिण वरसें अक्षेत्रें पिण वरसें ३, क्षेत्रें वरसें नही अक्षेत्रें पिण वरसे नही ४. ४४

४ इण दृष्टांते च्यार पुरुष जाणवा. एकेक पुरुष सुपात्रने दान देवें पिण कुपात्रने नही देवें १, एकेक पुरुष कुपात्रने देवें पिण सुपात्रने नही देवें २, एकेक पुरुष सुपात्रने पिण देवें कुपात्रने पिण देवें ३, एकेक पुरुष नही सुपात्रने देवें नही कुपात्रने देवे.४५

४ च्यार जातिरा मेह. पुष्करावर्त्तमेह. एकवार वर्षे तिको दशहजार वर्ष तांइ नीपजें पहिले आरे वरततां एह मेह वरसें १, परजन्यमेह. एकवार वरस्यां थकां हजारवरस तांइ नीपजें बीजे आरे वरततां वरसें २, जीमनामामेह. एकवार वुठांथकां दस वरस तांइ नीपजें तीजे चोथे आरे वरतां वरसें ३, जीमनामामेह. वार २ वरसें तो नीपजें पांचमे आरे वरसें ४. ४६

४ मेह ऊपर दृष्टांत. संजतीराजा गर्दभालीऋषीश्वररी वाणी एकवार सांभलीनें राज्य पद छोडीने दीक्षा लीधी १, प्रदेशीराजा केशीकुमाररी वाणी एकवार सांभलीनें समकितसहित बारे व्रत अंगीकार करी समज्या २, श्रेणिक महाराजा अनाथी ऋषीश्व-

ररी एकवार वाणी सांभळीनें समकित अंगिकार करें ३, हिवें पांचमे आरेरा जीव सुणें सांभळें तिरां तिणांरां दृढता परिणाम रहै अने सुणें सांभळें नही तिवारे धीठ परिणाम पमितां वार लागें नही चोथा शैममेह समान जाणवा. ४७

४ च्यार आहार परिठववाना भांगा. एक जायगा फासुक् तस थावर जीव करीनें रहित जाणें लोक आवें जावें देखें छें १, एक फासुक जायगा दूरथकी देखें छें परलोक आवें जावें नही २, एक जायगा फासुक तस थावर जीवरहित परं लोक आवें जावें छें दूरथकी नही देखें ३, एक जायगा फासुक तस थावर जीवरहित लोक नही आवें नही जावें दूरथकी देखें पिण नही ४. तीन जायगाए आहार परिठववो नही चोथी जायगाये परिठववों. ४८

४ च्यार जातिरां रूंख. एक रूंख ऊंचो ने फल नीचा डाख खर्जूररा बीजोरांरा १. एक फल ऊंचा ने रूंख नीचा नालेररा २, एक फल पिण ऊंचा ने रूंख पिण ऊंचा ताड़ प्रमुखरा ३, एक फल पिण नीचा रूंख पिण नीचा रींगणी प्रमुखरा ४. ४९

४ इण दृष्टांते च्यार पुरुष. एकेक पुरुष जातीरा ऊंचा पण करणीरा नीचा ब्रह्मदत्तच-

क्रवर्त्तिवत् १, एकेक पुरुष करणीरा ऊंचा परं जातीरा नीचा हरकेशी अणगारवत् २, एकेक पुरुष जातिए पिण ऊंचा ने करणीए पिण ऊंचा आदीश्वरचक्रवर्त्तिवत् ३, एकेक पुरुष जातिएं पिण नीचा कुलकरणीए पिण नीचा कालकशूर कसाइवत् ४. ५०

४ भगवंत च्यार प्रकाररी कथा कहें. उखेवणी ते प्रश्न न्यारा करें तेहनुं स्वमतना जाण परमतना जाण दोनुं मतना विशेष भाव जाणीने कहें, तिणसुं निर्मल जाणपणो पेलाने आवें १, विखेवणी कथा. समकित मिष्ट वचने थापें अने मिथ्यात उथापें विशेषे समकितने थापें परपाखंडीना मत उथापें एही कथा कहें २, निर्वेगणी कथा पांच इंद्री विशेषथकी वश्यभाव वर्तें कामभोगथकी विरक्तभाव हुवें संसारथकी उद्वेगभाव पामें एही कथा कहें ३, संवेगणी कथा. वैरागभाव पमार्में जीव कया कर्म भोगवें छें कर्मथकी मुकावाना भाव तप संजमना फल कहें एही वैरागणीकथा४.५१

४ च्यार बल. एकेक २ नुं तपस्यारो बल छें आहाररो बल नही १, एकेक २ नुं आहाररो बल छें पिण तपस्यारो बल नही २, एकेक २ नुं आहाररो पिण बल छें तप पिण बल छें ३, एकेक २नुं आहाररो बल पिण नही तपस्यारो पिण बल नही ४. ५२

४ च्यार गोला. रत्नरे गोला सरीखा निर्ग्रंथ स्नातक १, वज्ररे गोला सरीखा गणधरदेव २, सोनारा गोला समान श्र्यागा उपयोगयुक्त साधु ३, रुपेरा गोला समान सामान्य साधु ४. ५३

४ च्यार गोला. मांखणरो गोलो तावमे नांखी थांढी गलें तिम कोइने वचन कथन कहेंसुं धर्म छोमी देवें १, जतु ते लाख तेहनो गोलो तावमे मेलीयें तो परघलें नही अग्निरे पसवामे मेलीयें तो परघलें तिम कोइक पुरुष वचन कथन कहेंसुं धर्म छोमे नही पिण गाल राल बोहत देणेंसुं धर्म छोमी देवें २, दारु ते काठरो गोलो तावमे मेलीयें सुं परघलें नही अग्निरे पसवामे मेलीयें सुं परघलें नही परं अग्निमें घाल्यां थकां बलें तिम वचनरो गालरो परिसह दीयां धर्म नही छोमे परं मारवा कूटवारे परिसहथकी धर्म छोम देवें ३, माटीरो गोलो तावमे मेल्यां पिण पाको हुवें अग्निमें पसवामे मेल्यां पिण विशेष पाको अग्निमें घाल्या तो विशेषतर पाको तिम केइक पुरुषमें मारवा कूटवारा परिसह देवें पिण धर्मथकी चूकें नही धर्मने विषे दृढ परिणाम राखें अरणाक कामदेवनी परे ४. ५४

४ च्यार बुद्धि. तीर्थंकरजीरी बुद्धि समुद्र सरीखी १, गणधरांरी बुद्धि सरवर सरीखी २, आछे उत्तमसाधुरी बुद्धि कूवें सरीखी ३, सामान्य साधुरी बुद्धि पसली सरीखी. ५५

४ च्यार आचार्य. शिष्यने सूत्र भणावें पिण अर्थ नही भणावें १, एक आचार्य अर्थ भणावें पिण सूत्र नही भणावें २, एक सूत्र पिण भणावें अर्थ पिण भणावें ३, एक सूत्र पिण नही भणावें अर्थ पिण नही भणावें. ५६

४ च्यार आचार्य. एक आचार्य विहार करें अने परिषदाने समझावें नही १, एक विहार करें परिषदा समझावें २, एक विहार न करें परिषदा समझावें ३, एक विहार न करें परिषदा पिण नही समझावें ४. ५७

४ च्यार पुरुष. एकेक पुरुषने धर्म वल्लभ छे पिण धर्म उपरे दृढता नही १, एकेकने धर्म ऊपरे दृढता छे पिण धर्मवल्लभ नही २, एकेकने धर्म ऊपरे दृढता छे धर्मवल्लभ पिण छे ३, एकेकने धर्म ऊपरे दृढता पिण नही धर्मवल्लभ पिण नही ४. ५८

४ च्यार पुरुष. एक पुरुष गुण करें पण अभिमान अहंकार न करें १, एक अभिमान अहंकार करें पिण पराया गुण न करें २, एक अभिमान अहंकार करें अने पराया

गुण पिण करें ३, एक अभिमान अहंकार न करें पराया गुण पिण न करें ४. ५९

४ च्यार पुरुष. एक पुरुष बोलें साचो पिण संयम दया करीने रहित १, एक संयमवंत छें परं फूठ बोलें २, एक बोलें साचो अने संयमवंत छें ३, एक संयमवंत पिण नही साचो पिण बोलें नही ४. ६०

४ च्यार वस्त्र. एक वस्त्र सहेजें उजल निर्मलो पाणीसुं धोयां पिण उज्जल निर्मलो हुवें १, एक वस्त्र पहिली मेलो हुवें पछे पाणीसुं धोयां उज्जलो हुवें २, एक पहिला वस्त्र मेलो पछे धोयांसुं पिण मेलो ३, एक वस्त्र पहिली पिण मेलो पछे पिण मेलो हुवें ४. ६१

४ च्यार पुरुष. एक पुरुष बाहिर फूटरा नाया धोया पिण मांही मेला गुण करीने हीणा १, एक पुरुष बाहिर मेला कुरूप पिण मांही निर्मला २, एक पुरुष बाहिर मेला मांही पिण मेला ३, एक पुरुष बाहिर पिण निर्मला मांही पिण निर्मला ४. ६२

४ च्यार फल. एक रुंख सूधा परं फल वांका १ एकरा फल सूधा अने रुंख वांका २, एकरा फल पिण सूधा रुंख पिण सूधा ३, एकरा फलही वांका रुंखही पिण वांका. ६३

४ इण दृष्टांते च्यार पुरुष. एक पुरुष दीसता तो सरल सूधा दीसे पण मनमांही कुटील १, एक पुरुष शरीरे करीने वांको कूबमो अने मांही भाव निर्मला २, एक पुरुष शरीरे सूधा मनमांही पिण सरल सूधा ३, एक पुरुष शरीरे पिण वांका कूबमा मनमांही पिण कुटील कूमा ४. ६४

४ च्यार फल. एक आंबरो फल दुःखे सेवतां २ हाथे आवें बारे वरसांताइ सेवें ते पामें १, एक सेवें घणो अने फल अल्प मोलरो ते ताम्रो फल २, एक सेवीजें थोमो ने फल घणा देवें ते वेलरा फल ३, एक सेवेंही थोमो ने फल पिण थोमा काले ते आक धतुराना फल ४. ६५

४ इण दृष्टांते च्यार पुरुष. एक पुरुष भगवंतरो मार्ग सेवें घणो तथा गुरांरी सेवा पिण घणी तेथी मुक्तिरूप फल पामें केहनी परे गौतमस्वामीनी परे १, कोइ एक मार्ग सेवें घणो अने फल थोमो केहनी परे कूलवालक साधुनी परे २, एक पुरुष सेवें जिनमार्ग थोमो ने फल घणो ते अर्जुनमाली परदेशीराजानी परे ३, एक पुरुष भदंत भगवंतरो मार्ग सेवें थोमो थोमीही फल पामें ४. ६६

४ च्यार प्रकाररा पुत्र. एक पुत्र पिताथकी अधिको ते आदिश्वरजीनी परें ते पिता भला नाभिराजा कुलगुरु हुवा तेह आदिश्वरजी तीर्थंकर हुवो ते आदिश्वरजी. पिताथकी अधिका हुवा १, एक पुरुष पिता तो अधिका अने पुत्र हीणा ते भरतेश्वरजी चक्रवर्त्ति हुवा तेहना पुत्र आदित्ययशाराजा ते भरतेश्वरजीसुं हीना राजरिद्धिशुं २, एक पुत्र पिता अने पुत्र दोनुंही बराबर ते आदित्ययशाने पाटे महायशा पुत्रनी परे ते पितापुत्र राजरिद्धिसुं बराबर जाणवा ३, एक पुत्र कुलने विषे अंगार समान ते कुंभरीकनी परे जाणवो ४. ६७

४ इण दृष्टांते च्यार प्रकाररा शिष्य. एक गुरुथकी शिष्य अधिका सिंहगिरीने वेरस्वामीनी परे १, एक गुरुथकी शिष्य हीणा ते भद्रबाहु अने थूलभद्रनी परे जाणवा २, एक गुरु शिष्य बराबर प्रभवस्वामी सिर्यंभवनी पेर ३, एक शिष्य गुरुने कलंक लगावें कूलवालक उदाहिरो मारणहारनी परे जाणवो ४. ६८

४ च्यार ज्यातिरा घुण. एक लकड़में उपरली त्वचा थोमीसी खावें १, एक घुण लकड उपरली छाल खावें २, एक घुण काष्ट खावें ३, एक घुण काष्टमांहिली गिरीसार-

मीजी खावें ४. ६ए

४ च्यार जातिनी गोचरी. एक गोचरी काष्टरी त्वचा समान सवादरहित आहार ग्रहण करें तिको खावणो निरस अने तपस्या सार कर्म घणा तोमें १, एक गोचरी गाल स-मान तेलेपरहित आहार भोगवें ते तपस्या काष्ट समान जाणवी अने आहार ते ब वमें समान जाणवो २ एक काष्ट समान गोचरी ते धार विगय खावे ते तप ब्वमें समान जाणवो ३, एक सीर समान गोचरी ते पांच विगय खावें भोगवें ते तप पतलें ब्वमें समान जाणवो ४. ७०

४ च्यार प्रकारनो विषय. देवता देवीसुं भोग भोगवें १, एक देवता तिर्यंचणीसुं मनु-ष्यणीसुं भोग भोगवें २, एक तिर्यंच मनुष्य देवीसुं भोग भोगवें ३, एक मनुष ति-र्यंच मनुष्यणी तिर्यंचणीसुं भोग भोगवें ४. ७१

४ च्यार प्रकारें क्रोध ऊपजें. एक आत्मा ऊपरे क्रोध ऊपजें १, एक परआत्मा ऊपर क्रोध ऊपजें २, एक आत्मा परआत्मा बेहु ऊपरे क्रोध ऊपजें ३, एक विना कार्य मन परिणामनाहकसुं क्रोध ऊपजें ४. ७२

४ च्यार प्रकारे क्रोध ऊपजें. खेत्र निमित्ते क्रोध ऊपजें १, वस्त्र निमित्ते क्रोध ऊपजें २, शरीर निमित्ते क्रोध ऊपजें ३, उपगरणरे निमित्ते क्रोध ऊपजें ४. ७३

४ च्यार प्रकाररो क्रोध. आभोग क्रोध क्रोधरा फल जाणीने क्रोध करें १, अनाभोग क्रोध क्रोधरा फल न जाणें अने क्रोध करें २, उपसम क्रोध ते, उदय विना उदय आणीने क्रोध करें ३, अणुपसमक्रोध क्रोध उदयभाव आयांको क्रोध करें ४. ७४

४ च्यार भाषा जिनकल्पी साधु बोलें. याचनारे वासते भाषा बोलें १, पूछवारे अर्थे भाषा बोलें २, आग्या अर्थे बोलें ३, आगले पूछीयेसुं बोलें ४. ७५

४ च्यार पडिमा. समाधिपडिमा समताभाव राखें १, उपधानपडिमा तपस्या करें २, विवेकपडिमा शरीर त्याग करें ३, विउसग्गपडिमा काउस्सग्ग करें ४. ७६

४ च्यार जातिरा आचार्य. एक आचार्य वियावच्च करें नही करावें पिण नही १, एक करावें पिण करें नही २, एक करें नही करावें पिण नही ३, एक करें पिण करावें पिण ४. ७७

४ च्यार जातिरा हस्ती. भद्रजातिरो हस्ती कल्याणकारी तिको किसें गुणे करी जाणी

जें; धीर्यवंत संग्राममें भाजें नही उतावलो चालें अगाभी शरीर उंचो पछाभी शरीर निम्न निम्नतर सर्व अंग उपांग शोभतो जाणवो कांइक आंख्यां पीली मधु समान जाणवी पुंछ लांबो धरती लागतो सर्दऋतुने विषे मचें मद चढें दंतुले करीने परजीवने हणें इस गुणे भद्रजातिनो हाथी जाणीजें १, मंदजातिरो हाथी किसें लक्षणे करी जाणीजें धीर्यवंत चालें उतावलो पीली आंख्यां पुछ अगाभी जाडो पुंठसें पतलो नख केस चांबडी जाडी वसंतऋतुने विषे मचें मद चढे सुंढसुं संग्राम करे परजीवने हणें इसे गुणे करीने मंदहाथीनी जाति जाणवी २, मृगजाति हाथी पतला नख केस चांबडी पिण बहुत पातली बिहकण घणो संग्रामसुं भागे हेमवंतऋतुने विषे मचें मद चढें सर्व शरीरसुं परजीवने हणें इसे लक्षणे मृगजाति हाथी जाणवो ३, संकीर्णहाथीरी जाति थोडो २ इणां तीनांही हाथीयांरी जातिरा गुण लीयां रहें सर्व कालने विषे मचें मद चढें सर्व शरीर करीने परजीवने हणें इसे गुणे करी संकीर्ण हाथी जाति जाणवो ४. ९८

४ इण दृष्टांते च्यार जातिरा मनुष्य. एक भद्रजातिरा पुरुष दीसता, शोभनीक दीसें

मन पिण कल्याणकारी धीर्यवंत १, एक मंदजाति पुरुष कार्य करणें ढील घणी म-
नमें म्हरें घणो पापसुं पिण म्हरें लोकिकसें पिण म्हरें २, एक मृगजाति पुरुष मनमें
म्हरें पापसुं पिण म्हरें लोकिकसुं पिण म्हरें ३, एक संकीर्णजाति पुरुष तीनांइ पुरुषां-
रो थोमो २ गुण लीयां रहें ४.

७९

४ च्यार दिस. पूर्व १, पश्चिम २, दक्षिण ३, उत्तर ४.

८०

४ च्यार कोण. ईशानकूण १, वायवकूण २, अग्निकूण ३, नैरूतकूण ४.

८१

४ च्यार पुरुष. एक पराया गुण करें आपरो अपमान करें १, एक आपरो अपमान
करें पराया गुण करें २, एक पराया गुण न करें आपरो अपमान करें ३, एक परा-
या गुण पिण न करें आपरा अपमान पिण न करें ४.

८२

४ च्यार जातिरा रोग. दीसतो डुष्ट परं वेदना नथी मेद जातिरो रोग १, एक दीसतो
तो डुष्ट नही परं वेदना घणी कंठमालादिकरो रोग २, एक दीसतोही डुष्ट वेदना
पिण घणी पेटरी सूल माथेरी सूल ३, एक दीसतो ही डुष्ट नही वेदना पिण थोमी
सून्य भस्म रोग ४.

८३

४ च्यार व्यवहारीयां. एक आदर सन्मान घणो देवें परं दाम देवें नही १, एक व्यव-
वहारीयो दाम देवें परं आदर सन्मान नही देवें २, एक व्यवहारीयो आदर सन्मान
पिण देवें दाम पिण देवें ३, एक व्यवहारीयो आदर सन्मान पिण नही देवें उलटो
लडे धकाधूम करें दाम पिण नही देवें ४. ७४

४ च्यार प्रकाररो धर्म दान १, शील २, तप ३, भाव ४. ७५

४ च्यार प्रकाररी दिक्षा. एकतो सिंहपणे व्रत आदरें सिंहपरे व्रत पालें आदीश्वरजी
भरतेश्वरजीरी परे १, एक सिंहपणे व्रत लेवें परं स्यालपणे व्रत भांगें कुंमरीकनी परे
२, एक स्यालपणे व्रत लेवें परं सिंहनी परे पालें अंगारमर्दन आचार्यना शिष्यनी
परे ३, एक स्यालनी परें व्रत लेवें स्यालनी परेहीज व्रत पालें कालकाचार्यना कु-
शिष्यनी परे जाणवा ४. ७६

४ च्यार जातिरा पुरुष. छे ने छे तिके श्रावक १, छे ने नही तिका वेश्या २, नहि ने छे
तिके साधुजी ३, नही ने नही तिके पापरा करणहारा दरिद्री नरा ४. ७७

४ च्यार जातिरा पुरुष शुभमांही शुभ तिके व्यवहारीया १, मनमांही अशुभ तिके स-

वदागर २ अशुभमांही शुभ तिका व्यवहारीयारी बेटी ३, अशुभमांहि शुभ तिके पापकरणहारा दरिद्री नरा ४. ८८

४ च्यार प्रकाररा स्नेह. सुंठकर्म्मतृणां तुटक तुटतां ताल लागें नही तिम सनेह तुटतां ताल लागें नही १, विदलकर्म्म वांसरी बुहाम्दरी चटाइ कांइक तुटतां ताल लागें तिम सनेह तुटतां पिण कांइक ताल लागें २, चम्मकर्म्म चांमम्दानी चटाइ तुटतां विशेष ताल लागें ३, कंमलकर्म्म कांबलारी चटाइ टुटतां विशेप २ ताल लागें तिम सनेह पिण टुटतां विशेष २ ताल लागें तोम्दांया दुःखसुं तुटें ४. ८९

४ च्यार जातिरा पुरुष एक आपरो अंगुण देखें परं पारका अंगुण नही देखें १, एक पारकाहीज अंगुण देखें अने आपरा अंगुण नही देखें २, एक पारका अंगुण पिण देखें आपरा पिण अंगुण देखें ३, एक आपरा अंगुण पिण नही देखें पारका अंगुण पिण नही देखें ४. ९०

४ च्यार जातिरा पुरुष. एक आपरो पाप उदीरे अने आगले कने कोइ उदीरावें नही १, एक आगले कने उदीरावें अने आप पाप कोइ उदीरे नही २, एक आप-

रोही पाप उदीरे अने आगले कने पाप उदीरावें ३, एक आपरोही पाप उदीरे नही अने आगला कने पिण पाप उदीरावें नही ४. ९१

४ च्यार जातिरा पुरुष. एक आपरो पाप निर्जीरे अने. आगला कने पाप निर्जीरावें नही प्रत्येकबुद्धियांनी परे १ एक आगला कने पाप निर्जीरावें परं आपणा निर्जीरे नही अन्नन्यनी परे २, एक आपराह पिण पाप निर्जीरे अने आगला कने पिण निर्जीरावें तिके सामान्यसाधुजी ३, एक आपही आपणो पाप निर्जीरे नही अनेरां-नो पाप पिण निर्जीरावें नही तिके मिथ्यामति जाणवा ४. ९२

४ च्यार सुखसद्या. पहिलो सुखसिद्या मुरादेवीमाता १, बीजी सुखसद्या आदीश्वरजी भरतेश्वरजी २, तीजी सुखसद्या सनत्कुमार चक्रवर्त्ति ३, चोथी सुखसद्या गजसुकु-मालजी ४. ९३

४ च्यार केवलज्ञानीरा नाम. उपन्नणाण दंसणधरे १, अर्हा २, जिन ३, केवली४.९४

४ च्यार प्रकारे देवतारी गतिरो आयो जांणीजें. उदार चित्त १, सुस्वरकंठ २, धर्मरो रागी ३, देवगुरांरो रागी ४, ९५

४ च्यार प्रकारे तिर्यंच गतिरो आयो जाणीजें. उलंठ घणो १, असंतोषी २, मायावी ३, मूर्खरी सेवा करें भूख आलस्य घणो ४. ९६

४ च्यार प्रकारे मनुष्यरी गतिरो आयो जाणीजें वनीत १ निर्लोभी २, दयाधर्म उपरे हित भाव राखें ३, परनेसु मन सुहामणो लागें ४. ९७

४ च्यार प्रकारसुं नारकीरी गतिरो आयो जाणीजें. क्रोधी १, पंडिताईरहित २, कषाई ३, कलकली भूत ४. ९८

४ च्यार तरेसुं भवनपतिमें जावें. क्रोध करें १, क्रोधीसुं प्रतिबंध करें २, निमित्तभावें ३, इहलोकरे अर्थे तपस्या करे ४. ९९

४ च्यार बोल सेवणवालो आभोगीयां देवतामें जावें अहंकार करें १, अवगुणवाद बोलें २, भोरामसी करें ३, हस्त कर्म करें ४. १००

४ च्यार बोल सेवणवालो नाटकीयां देवतामें जावें. अमार्गरी देशना देवें १, मार्गने भेद पामें २, वारंवार नियाणो करें ३ अणतृपतिसुं भोग भोगवें ४. १०१

४ च्यार बोलरो सेवणवालो कलिमेपीचूहमा देवतामें जावें. तीर्थंकरजीरा अवगुणवाद

बोलें १, केवलीपरूपित धर्मरो अवगुणवाद बोलें २, धर्माचार्यना अवगुणवाद बोलें ३, चतुर्विध संघना अवगुणवाद बोलें ४. १०२

४ च्यार प्रकारे देवता मनुष्यलोकमां आवें नही. देवता संबंधी कामभोगमें तल्लालीन छे १, अनेरा राग सनेह तूटा छे अनें नाटक पर्म छे जघन्य दस दिन मझिम छ महिना उत्कृष्ट दशहजार वरस तांइ काल नाटकमें जायें जितरें पिछला सज्जनाकारो आउखो पूरण हुवें ते भणी नही आवें २, च्यारसें तथा पांचसें जोजन लगें दुर्गंध उछलें ते भणी नही आवें ३, च्यारसें जोजन दुर्गंध पहिले बीजें आरें आश्री जाणवो मनुष्य थोभा मलमूत्र थोभो ते भणी च्यारसें जोजन गंध उछलें बाकी च्यार आरें वर्त्ततां भरत ऐरावतने विषे मनुष्य घणा मलमूत्र पिण घणो ते भणी पांचसें जोजन लगें दुर्गंध उछलें ते भणी देवता नही आवें ४. १०३

४ च्यार प्रकारे देवता मनुष्यलोकमां आवें. आचार्य उपाध्याय आपरा उपगारीनुं वंदना नमस्कार रिद्धि दिखाडवाने आवें १, तपस्यारी महिमा करणने आवें २, तिर्थंकरजीरे पाच कल्याणक महिमाने आवें ३, सज्जनादिकने सनेह रागे बंध्यो मि-

ग्रने सनेहे बंध्यो तथा वचने बंध्यो आवें ४. १०४

४ च्यार प्रकारे लोकमें उद्योत हुवें. चोसठ इंद्रलोकमें भेला हुवें तीर्थंकरजीरे जन्म महिमा भणी आवें तिवारे तिरछे लोकमें उद्योत हुवें १, दीक्षा भणी आवे तिवारे तिरछे लोकमें उद्योत हुवें २, तीर्थंकरजीरे केवल महिमा भणी आवें तिवारे तिरछे लोकमें उद्योत हुवे ३, तीर्थंकरजीरे निर्वाण महिमा भणी आवे तिवारे तिरछे लोकमे उद्योत हुवे ४. १०५

४ च्यार प्रकारे धर्म नही पामे अहंकारी धर्म नही पामे १, क्रोधी धर्म नही पामे २, रोगी धर्म नही पामे ३, प्रमादी धर्म नही पामे ४. १०६

४ च्यार वेलाये साधु साधवी सिद्धांत नही गुणे. सूर्य ऊगती वेलाये १ सूर्य आथमती वेलाये २, मध्यान्ह वेलाये ३, अर्द्धरात्री वेलाये ४. १०६

४ च्यार प्रकारे सिद्धांत भणतां गुणतां वेयावच्च करतां विघातकारी हुवे १, पहिले इंद्र महोछव १, बीजे नाग महोछव २, तीजो भूतमहोछव ३, चोथो जक्षमहोछव. १०८

४ च्यार महापुनम. च्यार महापडिवाथे साधु साधवी सिद्धांत भणे गुणे नही. आसो

ज ऊतरती पुनम काति वदि पड़िवा १, काति सुदी पुन्नम मिगशर वदि पड़िवा २, चैत्रसुदि पुन्नम वैशाखवदि पड़िवा ३, असाढ़ सुदि पुन्नम श्रावण वदि पड़िवा. ११०

४ च्यार पेतालीसलाख जोजनरा ते कहे छे. ऊडुनामा विमान पहिले देवलोके १, सीमंतनामा नरकावसो पहिली नरके २, मनुष्यक्षेत्र ३, सिद्धशिला ४. १११

४ च्यार लखा लाख जोजन प्रमाणे. पहिलोहिवै लाख योजनरो अप्पइट्ठाण नरकावासो सातमी नरके १, लाख योजनरो पालकविमान पहिले देवलोके २, लाख योजनरो जंबुद्वीप तिरछा लोकमे ३, लाख योजनरो सर्वार्थसिद्ध विमान ऊर्द्धलोकमे जाणवो ४. ११२

४ च्यार प्रकारे लोकरो मध्यविचाल कहे छे. ऊंचे लोकरो मध्य पांचमे देवलोक विचे छे १, नीचे लोकरो मध्य चोथी नरकने विचे छे २, तिरछे लोकरो मध्य मेरुपर्वतना रुचकप्रदेशाष्टक ३, सर्व लोकनो मध्य पहेली नारकी तांइ ४. ११३

४ च्यार प्रकारना फल संसारमे कहीजे. एक फलमांही कवलोकोमल अने बाहिर करडो ते नालेरादिक १, एक फल बाहिर कवलो कोमल अने मांही करडो ते बोरा-

दिक २, एक फल मांही कवलो कोमल अने बाहिर पिण कवलो कोमल जायफल द्राक्षादिक ३, एक फल मांही पिण करमो बाहिर पिण करमो पूगफलादिक४. ११४

४ इसे दृष्टांते च्यार जातिरा पुरुष जाणवा. एकेक पुरुष ऊपरसुं वचन कठोर बोले परं मनमांही प्रणाम घणा नरम जाणवा १, एकेक ऊपरे मीठा बोला आचारवंत गुणवंत दीसें परं मनमांही प्रणाम घणा कठिन २, एकेक पुरुष ऊपर पिण मीठा बोला आचारवंत अने मनमांही पिण घणा गुणवंत ३, एकेक पुरुष ऊपरही कठोर मन मांही पिण कठोर कठिण जाणवा ४. ११५

४ च्यार जातिरा विष. विछूरो विष आधें भरत प्रमाणें छे १, देडकेंरो विष आखे भरत प्रमाणे छे २, सापरो विष जंबुद्वीप प्रमाणे छें ३ मनुषरो विष अढाइद्वीप प्रमाणे छें. ११६

४ च्यार बोलें नारकीजीव मनुष्यलोकमां आय शके नही. परमाधर्मीयारी मार करीने आय शके नही १, दश जातीरी खेत्र वेदना करीने आय शके नही २, आशातावेदनी घणी तेहसुं आय० ३, आउखो घणोसुभोगवणो तेहसुं आय० ४. ११७

४ च्यार प्रकारे नारकीमांही अंधारो छे. नारकीरो अंधारो १, नारकीरे जीवारो अंधारो

२, नरकावासारो अंधारो ३, अशुभ पुद्गलारो अंधारो ४. ११८

४ च्यार प्रकारे चांनणो मनुष्यलोकमें. चंद्रमारो चांनणो १, सूर्यरो चांनणो २, अग्निरो चांनणो ३, मणिरत्नरो चांनणो ४. ११९

४ च्यार प्रकारे देवलोकमें चांनणो. देवलोकरी भूमीनो चांनणो १, देवतारो चांनणो २, विमानरो चांनणो ३, आभरणरो चांनणो ४. १२०

४ च्यार जाणपणारा प्रमाण. आगम प्रमाण सिद्धांतथकी जाणें, जिम नरक देवतारा भाव धर्मास्तिकायादिक जाणें १, अनुमान प्रमाण अनुमान करीने बुद्धिथकी जाणे. धूवे करीने अग्नि, वादले करी वर्षा, इत्यादिक अनुमान करीने जाणें २, उपमा प्रमाण उपमाथकी वस्तुने जाणें; जिम गाय सरिखो रोफ छें ३, ए उपमा प्रमाण ३, प्रत्यक्ष प्रमाण ते नजरे दिठी वस्तु ४. १२१

४ च्यार उंपमा. छती वस्तुने अछती उंपमा १, अछती वस्तुने छती उंपमा २, अछती वस्तुने अछती उंपमा ३, छती वस्तुने छती उंपमा ४. १२२

४ च्यार प्रकारे जीवांने कर्मारो संयोग. द्रव्य संयोग ते जिके द्रव्यांसुं जीव कर्म बांधे

तिकेंहीज द्रव्यांसुं जोगवें १, खेत्र संयोग ते जिकें खेत्रसुं जीव कर्म बांधे तिकेंहिज खेत्रसुं जोगवें २, कालसंयोग तें जिकें काले जीव कर्म बांधें तिकेंहीज काले जोगवें ३, जावसंयोग ते जिकें प्रणामे जीव कर्म बांधे तिकेंहीज प्रणामसुं कर्म जोगवें. १२३

४ च्यार प्रकाररी निर्जरा. महा वेदना अल्पनिर्जरा सातमी नरकरा नेरइयाने जाणवा १, अल्प वेदना महा निर्जरा सामान्य साधुजी जाणवा २, महा वेदना महा निर्जरा पमिमाधारी साधुजी जाणवा ३, अल्प वेदना अल्प निर्जरा पांच अनुत्तरविमानरा देवता जाणवा ४. १२४

४ सामायिकरा च्यार अनुयोग दरवाजा. उपकर्म १, निक्षेप २, अनुगम ३, नय. १२५

४ च्यार प्रकारे मति उग्गह १, ईहा २, अवाय ३, धारणा ४. १२६

४ च्यार प्रकारे अवधिग्यान ऊपजें १, जगवंते कह्या इसा परीसह जीते तो अवधिग्यान ऊपजें १, बारें कुलांरी गोचरी निस्पृहपणे करें तो अवधिग्यान ऊपजें २, च्यार विकथा वरजें तो अवधि० ३, पाछलीरात्रें धर्मजागरिका करें तो अवधि० ४.. १२७

४ च्यार प्रकारें अवधिग्यान नही ऊपजें: जगवंत कह्या तिकें परीसह नही जीतें तो-

अवधिग्यान नही ऊपजें १, बाराकुलारी गोचरी निस्पृहपणे न करे तो अवधिग्यान नही ऊपजें २, च्यार विकथा नही वरजें तिणने अवधिग्यान नही ऊपजें ३, धर्म-जागरिका रात्रे नही करें तो अवधिग्यान नही ऊपजें ४. १२८

४ च्यार प्रकारे अवधिग्यान ऊपनो पिण परो जावे. कुंथुंवारी श्रेण्या देखीने जाय १, धन देखीने जाय २, मनुष्यलोक बाहिरला सर्व देखीने जाय ३, इंद्र इंद्राणीरे पगे लागतो देखीने जाय ४. १२९

४ च्यार निक्षेपा पहिलो नाम निक्षेपो ते नाम धरें १, थापना निक्षेपो ते मूर्त्त करीने थापें २, द्रव्यनिक्षेपो ते जाणपणो नही तथा जीवरहित शरीर पड्यो छे ते द्रव्य-निक्षेपो ३, भाव निक्षेपो ते जाणपणासहित उपयोगसहित ते भावनिक्षेपो ४. १३०

४ च्यार प्रकाररा सूत्र. नामसूत्र १, थापनासूत्र २, द्रव्यसूत्र ३, भावसूत्र ४. १३१

४ च्यार बोल जीपतां घणा दोहीला छे. व्रतमांही शीलव्रत पालवो दोहिलो १, आठ कर्मामांही मोहनी कर्म जीपतां दोहिलो २, पांचे इंद्रियामांही रसेंद्रिय जीपतां दोहिलो ३, तीनुं योगांमांही मनरो योग जीपतां दोहिलो ४. १३२

४ च्यार बोल पावणा दोहिला. पांच ज्ञानमांही केवलग्यान पामवो दोहिलो छे . १,
लेश्या छमांही शुक्ललेश्या पामवी दोहिली छे २ च्यार ध्यानमांही धर्मध्यान शुक्लध्या-
न पामवां दोहिला छे ३, भरयोवनमांही शील पामीने पालतां दोहिलो ४. १३३

४ च्यार बोल करवा महा दोहिला दुर्लभ. कुरणीवयमें शील पालवो १, छता भोग
छांडीने दिक्षा लेवण दोहिली २, मोटां पुरुषांनुं क्षमा करणी दोहिली ३, कृपणने
दान देवणो दोहिलो ४. १३४

४ च्यार ठिकाणे कषायरो वासो छे. क्रोधरो वासो ललाटमांही १, मानरो वासो गरदन
मांही २, मायारो वासो हीयामांही ३, लोभरो वासो सर्व अंगमांही ४. १३५

४ च्यार वात अकलदारीकी. जागतां तो चोर नासे १, क्षमा करतां कलह नासे २,
उद्यम करतां दरिद्र नासे ३, भगवंतरो वाणी सुणतां पाप नासे ४. १३६

४ च्यार वस्तु साधु छांडे. टोलो छांडे १, शरीर छांडे २, उपगरण छांडे ३, भात पाणी
छांडे ४. १३७

४ च्यार प्रकारे प्रतिबंध. द्रव्यथकी प्रतिबंध शिष्य शाखा वस्त्रपात्ररो प्रतिबंध १, खेत्र-

थकी प्रतिबंध थानक ग्राम नगरनो प्रतिबंध २, कालथकी प्रतिबंध समयावलि मूहू-
र्त्तादिकनो प्रतिबंध ३. भावथकी कषायरो तथा रागद्वेषरो प्रतिबंध ४. १३८

४ च्यार प्रकाररा प्रतिबंध. अंमया पंखीनो प्रतिबंध १, खोयया हस्तिनो प्रतिबंध २, उ-
घाया थानकरो प्रतिबंध ३, पघाया भंमउपगरणनो प्रतिबंध ४. १३९

४ च्यार प्रकाररा जीव ते कहे छे. एक सुख दुःख जाणें अने वेदें ते च्यार गतिरा जी-
व जाणवा १, एक जाणें पिण वेदें नही ते सिद्ध १, एक वेदें पिण जाणें नही ते
असन्नी ३, एक जाणें पिण नही वेदें पिण नही ते अजीव द्रव्य. १४०

४ च्यार प्रकाररा पुरुष. आप परिसह जीपें पिण आगलेने जीपावें नही १, एक आ-
गलानुं परिसह जीपावें परं आप परिसह जीपे नही २, एक आपही परिसह जीपे
अने अनेराने पिण जीपावें नही ३, एक आपही परिसह नही जीपे अनेराने पिण
परिसह नही जीपावें ४. पहिले भागे आदीश्वरजी भरतेश्वरजी १, बीजे भागे जिन
कल्पी २, तीजे भागे कुंमरीक ३, चोथे भागे कालकसूरिक कसाई ४. १४१

४ एकेक पुरुषरा एहवा स्वरूप. एक आपरे कर्मरो अंत कीयो अने आगलेरे कर्मरो

ढोंमे ते भाव चपल ४. १४४

४ च्यार वस्तु थोमी, एक रत्नरा आगर थोमा १, एक सत्पुरुष थोमा २, एक कर्पूर-वासित संख थोमा ३, एक सूत्र धर्मउपदेशकवाला थोमा ४. १४५

४ च्यार प्रकाररा काल. चरकाल १, निमित्तकाल २, मरणकाल ३, अद्धासमय० १४६

४ च्यार प्रकाररा पुरुष थोमा. परदुःखीये दुःखी थोमा १, परउपगारी जन थोमा २, गुणग्राहीजन थोमा ३, निर्धनसुं नेह राखेसुं थोमा ४. १४७

४ च्यार दिशे पुरुष. पूर्वदिशि भोगी घणा १, पश्चिमदिशि सोगी घणा २, उत्तरदिशि योगी घणा ३, दक्षिणदिशि रोगी घणा ४. १४८

४ च्यार प्रकाररा काम. देवतारे शृंगारकाम १, मनुष्यारे करुणा काम २, तिर्यंचरे दुगंछा काम ३, नारकीरे बिहामणा काम ४. १४९

४ च्यार जातिना आहार. नारकीमें खीरां समान आहार १, भोजर समान आहार २, शीत समान आहार ३, पालें समान आहार ४. १५०

४ च्यार प्रकाररा तिर्यंचरा आहार. काक समान आहार १, बाल समान आहार २,

मास समान आहार ३, चांमाबरे मांस समान आहार ४. १५१

४ देवतारे च्यार प्रकाररो आहार. भलोवर्ण १, भलोगंध, भलोरस३, भलोफर्श४. १५२

४ च्यार प्रकारे दुःख ऊपजें. मनुष्यसुं १, तिर्यंचसुं २, देवतासुं ३, आत्मासुं ४. १५३

४ च्यार प्रकारे दुःख देवें. हास्यरे कारणे दुःख देवें १, द्वेषरे कारणे दुःख देवे २, आहारके कारणे दुःख देवें ३, पुत्रादिकरे स्नेहरे कारणे दुःख देवें ४. १५४

४ च्यार प्रकारे देवता दुःख देवें. हास्यरे कारणे देवता दुःख देवें १, द्वेषरे कारणे देवता दुःख देवें २, परीष्यारे कारणे देवता दुःख देवे ३, भयरे कारणे देवता दु० ४. १५५

४ च्यार प्रकारे मनुष्य तिर्यंचने आपोआप थकी दुःख ऊपजें. पहिले बोले मननें विषे अचो असाताथकी दुःख ऊपजें १, बीजे बोले ऊंचो नीचो खाडमांही पग पडीयां थकी दुःख ऊपजें २, तीजे बोले घणे काले भात पाणी मिल्यांथकी दुःख ऊपजें ३, चोथे बोले फोडो फुणगल आपरे हाथ पगसुं तोडें तो दुःख ऊपजें ४. १५६

४ च्यार प्रकारे आहारनी इच्छा ऊपजें. पहिले बोले कोठो ऊणो रहे ते भणी आहारनी इच्छा ऊपजें १, बीजे बोले क्षुधा लाग्यां आहारनी इच्छा ऊपजें २, तीजे बोले

वात आहाररी सुणता आहारनी इच्छा ऊपजें ३, चोथे बोले वारंवार वात आहाररी सुणतां आहारनी इच्छा ऊपजे ४. १५७

४ च्यार प्रकारे जीवने भय ऊपजें. घणो कायर हुवे तो भय ऊपजें १, मोहरे उदय-सुं भय ऊपजें २, भयरी वात सुणतां थकां भय ऊपजें ३, चोथे वार २ वात सुणतां भय ऊपजें ४. १५८

४ च्यार प्रकारे मैथुनरी इच्छा ऊपजें. लोही मांसरो जमाव हुवे तिणने मैथुनरी इच्छा ऊपजें १, मोहनी कर्म घणो हुवे तेहने मैथुनरी इच्छा ऊपजें २, मैथुनरी वात सुणतां मैथुनरी इच्छा ऊपजें ३, राग रंग सुणतां मैथुनरी इच्छा ऊपजें ४. १५९

४ च्यार प्रकारे परिग्रह संज्ञा ऊपजें. घणे धनने मेलवें धनरे प्रसंगे संज्ञा ऊपजें १, परिग्रहना मोहे करीने संज्ञा ऊपजें २, परिग्रहरी वात सुणतां संज्ञा ऊपजें ३, वार २ परिग्रही वात सुणतां संज्ञा ऊपजें ४. १६०

४ च्यार जातिरा गलणा. धरतीरो गलणो इर्यासुमति १, मनरो गलणो शुभध्यान २, वचनरो गलणो निरवद्यभाषा ३, संसाररो गलणो कागो कपडो ४. १६१

४ च्यार जातिरा आचार्य. आप जणें अने अनेराने जणावें १; एक आप जणें अनेराने नही जणावें २, आप नही जणें अनेराने जणावें ३, एक आपही नही जणें अनेराने पिण जणावें नही ४. १६२

४ च्यार प्रकाररा साधु एक आपरो भरणपोषण करें अनेरारो भरणपोषण नही करें तिको जिनकल्पी साधु १, एक आपरो भरणपोषण नही करें अने अनेरारो भरणपोषण करें तिके परउपगारी साधु २, एक आपरो भरणपोषण पिण करें अने अनेरानो पिण भरणपोषण करें तिके सामानिक साधु ३, एक आपरो पिण भरणपोषण नही करें अनेरारो पिण भरणपोषण न करें तिके दरिद्री साधु ४. १६३

४ च्यार प्रकारनी दुखशय्या. ऊंची नीची जायगा सूतां दुःख ऊपजें तिका द्रव्य दुःखशय्या छें, भाव दुःखशय्या संयमने विषे दोषण लगावें भगवंतरी वाणीरे ऊपरे संका कंखा आणें, मनरा ऊंचा नीचा प्रणाम राखें ए पहिली दुःखशय्या १, बीजी दुःख० आपरा लाभा ऊपरे संतोष न करें पराई आशा वांछा करें २, तीजी मनुष्य देवतारे भोगनी वांछा करें ३, चोथी नावण धोवण मेलनुं परीसहन नही सही शके ४. १६४

४ च्यार जनने दिक्षा न देवें. रोगीने दिक्षा न देवें १, विगयने विषे लोलुपी घणो हुवें तेहने दिक्षा न देवें २, क्रोधीने दिक्षा न देवें ३, मायावीने दिक्षा न देवें. १६५

४ च्यार पछेवडी आर्यानें राखणी कल्पे. एकतो दोय हाथ प्रमाणे तिका थानकमें उंढे १, दोय हाथ प्रमाणे बाहिर भूमि जातां मांहिलेंकानी बिसोमो राखें २, एक तीन हाथ प्रमाणे गोचरी जाती उंढें ३, एक च्यार हाथ प्रमाणे साधुरे समवसरणे जाती उंढें ४. १६६

४ च्यार लक्षणे करीने देवता आयो जाणीजें. आवतो आंख टमकारें नही १, गंध पडे नही २, फूलांरी माला कमलावें नही ३, धरतीसुं च्यार अंगुल पग उंचा रहे. १६७

४ च्यार प्रकाररा वाजंत्र. तंतवाजिंत्र तिको तातथी वाजें १, वितंतवाजिंत्र तिको तांत विना वाजें २, घणवाजिंत्र कांकसीया प्रमुख ३, फूखिरवाजिंत्र ढोल प्रमुख ४. १६८

४ च्यार प्रकाररी कथा. स्त्रीकथा १, भक्तकथा २, देशकथा ३, राज्यकथा ४. १६९

४ स्त्रीविकथा च्यार प्रकारे. स्त्रीजातिनी कथा कहें १, स्त्रीरे रूपरी कथा कहें २, स्त्रीरे ग्रहणारी कथा कहें ३, स्त्रीरे वस्त्रारी कथा कहें ४. १७०

४ देशविकथा च्यार प्रकाररी. देशना नाना प्रकारना भोजननी कथा कहें १, देशना विकल्प विचार सोनो रूपो धननी कथा कहें २, देश बंदका ते देशनी रीतगीत नादनो करणो तेहनी कथा कहें ३, देशना पहेरवेशनी कथा कहें ४. १७१

४ भत्तकथा च्यार प्रकाररी. भत्तस्सउवायका भोजन उपजावारी विधि कहें १, भत्तस्स निवायका भोजन पचावारी विधि कहें २, भत्तस्स आरंभका भातरे आरंभकी कथा कहें ३, भत्तस्स परिभोगावा भोजन जीमवारी विधिनी कथा कहें ४. १७२

४ राज्यनी विकथा च्यार प्रकाररी. राजारे नगरमांही पेसवानी रीतनी कथा कहें १ राजारे नगरमांहीथी नीकलवानी रीतनी कथा कहें २, रथ हाथी घोडा सिणगारवानी रीतनी कथा कहें ३, राजाना कोठार भंडारनी कथा कहें ४. १७३

४ च्यार धर्म. दानके प्रभावसे धन्नो उर शालीभद्र असंख्य लक्ष्मीका भोग्य भोगव देवलोकमें प्राप्त होवें यावत् सिद्धिपद पामेगें एसे जाण सुपात्रकुं दान देवें १, शीलका प्रभावसें सुदर्शनशेठकु शुलीका सिंहासण हुवा उर कलावतीका कट्या हाथ नया उत्पन्न हुवा एसे जाणकर शुद्ध शील पालणा २, तपके प्रभावसें धन्नो साधु

दृढप्रहारी हरिकेशी मुनि ऊंर ढंढणऋषी प्रमुख कर्म क्षय करी मोक्षपद पाया एसे जाण कर तपस्या करणी ३, भावनाके प्रभावसे प्रसन्नचंद्रराजर्षि इलायचीकुंमार कपिलमुनि खंदकमुनिका शिष्य भरतचक्रवर्त्ति ऊंर मरुदेवीमाता प्रमुख मोक्ष पदवी पामी एसा जाणकर शुद्ध मन भावना भावणी ४. १७४

४ बंधतत्त्वना च्यार भेद. कर्मनो स्वभाव ते प्रकृतिबंध १, कर्मनो कालमान ते स्थितबंध २, कर्मनो रस बांधवो ते अनुभागबंध ३, कर्मना संचय दलरूप तेहनो बांधवो ते प्रदेशबंध ४. १७५

## ॥ हवे पांचमो बोल लिख्यते ॥

५ द्रव्य पांच. धर्मास्तिकाय तिको चलण लक्षण १, अधर्मास्तिकाय तिको थिर स्वभाव २, आकाश ते विकाश लक्षण ३, जीव तिको चेतना लक्षण ४, पुद्गलास्तिकायद्रव्य तिको पलटवारूप ए पांच द्रव्य अस्तिकाय द्रव्य जाणवां ५. १

५ पांच प्रकारे शरीर. ऊदारिक शरीर सरुजावें पडिजावें विखरजावें तिको उदारिकशरीर १, वैक्रियशरीर नाना विधि क्रियाकारी २, आहारिकशरीर लब्धिरूप ३, तेजसशरीर तेजरूप ४, कार्मणशरीर कर्मरूप ५. २

५ पांच ज्ञान. सर्व वस्तुरो जाणपणो ते ग्यान. मतिग्यान १, श्रुतग्यान २, अवधिज्ञान ३, मनपर्यवग्यान ४, केवलग्यान ५. ३

५ पांच अणुव्रत. थूलाउं पाणाइवायाउं वेरमणं १, थूलाउं मुसावायाउं वेरमणं २, थूलाउं अदिन्नाणाउं वेरमणं ३, थूलाउंमिहुणाउं वेरमणं ४, थूलाउंपरिग्गहाउं वेरमणं ५. ४

५ पांच सुमति. इर्यासुमति १ भाषासुमति २, एषणासुमति ३, आयाणभंम्मत्तनिवेख-
णा सुमति ४, उच्चारपाश्रवणखेलजलसंघाणपरिठावणिया सुमति ५. ५

५ पांच आचार. ज्ञान आचार १, दर्शण आचार २, चारित्र आचार ३, तप आचार
४, वीर्य आचार ५. ६

५ पांच गति. नरकगति १, तिर्यंचगति २, देवगति ३, मनुष्यगति ४, सिद्धगति ५. ७

५ पांच प्रमादे जीव मुके, आठ मदनो करवो १, विषयरो सेवणो २, कषाय मोहनीये
मुकवो ३, नंदारो करवो ४, विकथा च्याररो करवो ५. ८

५ पांच मिथ्यात आश्रव. मिथ्यात आश्रव १, प्रमाद आश्रव २, कषाय आश्रव ३, अ
विरति आश्रव ४, अशुभयोग आश्रव ५. ९

५ पांच संवर. समकितसवर १, विरतिसंवर २, अप्रमादसंवर ३, अकषायसंवर ४, शुभ-
योगसंवर ५. १०

५ पांच वर्ण. कालो १, नीलो २, पीलो ३, लाल ४, धवलो ५. ११

५ पांच रस. तीखो १, कडुवो २, कसायलो ३, खाटो ४, मीठो ५. १२

५ पांच इंद्रिय. श्रोत्र १, चक्षु २, घ्राण ३. रस ४, स्पर्श ५. १३
५ पांच क्रिया. काइया १, अधिकरणीया २, पावसिया ३, पैरितावणीया ४, पाणाइवाइया क्रिया ५. १४
५ पांच क्रिया. आरंभिया १, पारिग्गहिया २, मायावत्तियां ३, अपचक्खाणीया ४, मिथ्यादंसणवत्तिया ५. १५
५ पांच समकित. सासदानसमकित १, उपशमसमकित २, खयउपशमसमकित ३, वेदकसमकित ४, क्षायिकसमकित ५. १६
५ पांच समकितरा लक्षण. सम १, संवेग २, निर्वेद ३, अनुकंपा ४, आसथा ५. १७
५ पांच समकितरा अतिचार. समकित उपरे शंका आणें १, अनेरा धर्मरी वांछा करें २, फलमते संदेह आणें ३, परदर्शिणीरा धर्मरी वांछा करें ४, परदर्शणीसुं संस्तव परिचय करें. १८
५ पांच समकितरा दूषण. पहिलां मिथ्यात्वीने बोलावें १, वारंवार सामूहो जोवें २, मिथ्यात्वनुं पोचावण जावें ३, विना प्रयोजन थानके जावें ४, विना प्रयोजन वारंवार

थानके जावें ५. १९

५ पांच समकितरा भूषण. धर्मने विषे चतुराइ राखें १, जिनशासननें दीपावें २, भला साधुरी सेवा करें ३, धर्मथकी डिगतांने थिर करें ४, साधु साधर्मीरी वेयावच्च करें.२०

५ पांचना अवगुणवाद बोलतांथकां जीव दुर्लभबोधपणो पामे कदेइ निर्मल समकित मे नही च्यार गतिमांहि रुलें पिण पांचमी गति पामें नही. पहिले अरिहंतना अवगुणवाद बोलें १, बीजे अरिहंत प्ररूपित धर्मना अवगुणवाद बोलें २, तीजे आचार्य उपाध्यायरा अवगुणवाद बोलें ३, चोथे चतुर्विध संघरा अवर्णवाद बोलें ४, पांचमे मोटा देवतारा अवगुणवाद करें अने परपूंठे सर्वनी निंदा चावत करें ए पांच बोल सेवतां जीव धर्म नही पामें ५. २१

५ इणा पांचानाहीज गुण ग्राम करें तो सुलभबोधि हुवें. २२

५ पांच शरीरने विषे जीव नीकलवाना दरवाजा जाणवा पगांथी जीव नीकलें तो नरके जाय १, पींडीथकी नीकलें तो तिर्यंचगतिमां जाय २, नाभिकानीसुं जीव नीकलें तो मनुष्यमांही जाय ३, मस्तक मुखमांही नीकलें तो देवतामें जाय ४, सर्वांग

५ पांच वाना अलगा मेहलने तीन प्रकाररी सेवा करें मनरी वचनरी कायारी. छत्र १ चामर, मुकुट ३, पान ४, फूलांरी माला ५, ए पांच दूरा मेहलने भगवंतने वांदना करें. २७

५ पांच जणारी साधुजी आगन्या लेवें. पहिली इंद्रनी आग्या लेवें दिसा मात्रो परिठववाने काजें १, बीजी राजानी आग्या लेवें नगरमें पेठणारी विरीयां २, तीजे सथातररी आग्या लेवें थानकरी ३, चोथी सामान्य गृहस्थनी आग्या लेवें सर्व वस्तुनी ४, पांचमी साधर्मीनी आग्या लेवें उपगरणादिकरी ५. २८

५ पांच प्रकाररी धाय. अंकधाय ते खोलेमांहि बेसाणें १, मंडणधाय ते गहणा पटकुल वस्त्र पहिरावें २, मघनधाय ते स्नानादिक करावें ३, खीरधाय ते चूंघावें ४, किलामणधाय ते खेलणा लेइने खिलाडें रमाडें ५. ३०

५ पांच थावरकायरा नाम. पहिलो इंदीथावरकाय १, बीजो बंभीथावरकाय २, तीजो सप्पीथावरकाय ३, चोथो सोमीथावरकाय ४, पांचमो पीयावच्ची थावरकाय ५. ३१

५ पांच प्रकाररा व्यवहार जाणवा. आगम व्यवहार १, सूत्र व्यवहार २, आग्या व्यव-

५ पांच प्रकारे देवतारी सभा. उववायसभा ऊपजणरी १, अलंकारसभा गहणागांठा पहिरवानी २, अभिषेकसभा अभिषेक राज्यनो करें ३, विवसायसभा पुस्तक वांचवा- नी ४, सुधर्मासभा तिहां दरबार करें जठें माणवक स्तंभ बें तठें भगवंतरी दाढां रहे बें ५. ४१

५ पांच अंतराय दानांअंतराय दान देवें नही १, लाभाअंतराय उदयभावे लाभ पाम सकें नही २, भोग अंतराय भोगवी सकें नही ३, उपभोग अंतराय भोग उदय आय सके नही ४, वीर्य अंतराय उदयभावे वीर्य पामें नही ५. ४२

५ पांच प्रकारे मिथ्यात. अभिग्रह मिथ्यात ग्रह्यो कदाग्रही नही ठोमें लोह वाणीयानी परे १, अणअभिग्रही मिथ्यात हरजीकेरो ग्रहियो मिथ्यात सेवें २, अभिनिवेसकमि- थ्यात आपतो पोते पाको मिथ्यात्वी अने अनेराने हेतयुक्ते करीने मिथ्यातमांहि पा- लें जिनमार्गथकी भिगावें ३, अनाभोग मिथ्यात्व विना उपयोग मिथ्यात्व सेवें ४, संसय मिथ्यात्व संदेह घणो रहें ५. ४३

तिण कारणें चोथो आश्रव न सेवें ५.

५ पांच प्रकारराा मिथ्यात्व. लोकिकमिथ्यात्व गोगो खेतरपाल इहलोकरे नामने अर्थें

मानें पुजें संसारना सर्वकार्य करें तिको लोकिक मिथ्यात्व १, लोकोत्तर मिथ्यात्व ते देवगुरुना गुण नही अने देवगुरु करीनें जाणें हिंसा कुलमांहि धर्म जाणें सर्दहें तिको लोकोत्तर मिथ्यात्व २, कुप्रावचनीक मिथ्यात्व ते योगी सन्यासी इत्यादिक कुतीर्थीरो मार्ग सेवें तिको कुप्रावचनीकमिथ्यात्व ३, ऊणायरिय मिथ्यात्व भगवंतरी प्ररूपणासुं ऊणो प्ररूपें ४, अतिरिक्तमिथ्यात्व भगवंतरी प्ररूपणासुं अधिको प्ररूपें. ४४

५ पांच प्रकाररो मिथ्यात्व. विपरीत मिथ्यात्व भगवंतरो मार्ग विपरीत हीणो कहें १, अक्रियमिथ्यात्व तिको क्रिया कर तुठ मानें नही सर्व वस्तुनी नास्ति मानें २, अनाण मिथ्यात्व ते सर्व भाव उलटथी जाणे ३, अविनयमिथ्यात्व गुणवंतरा गुण नही करें ४, असातना मिथ्यात्व ग्यान दर्शन चारित्ररी आसातना करें ५. ४५

५ पांच जणा वांदवा योग्य नही. आपरे छांदे चालें तिणने १, संयमने विषे दोष लगावें तिणने २, गृहस्थसुं परिचय करें तिणने ३, संयमनें पसवाडे मेहल दीयो तिणने ४, माठोआचार सेवें तिणने ५, ए पांचेही वंदवा नमस्कार करवायोग्य नही. ४६

५ पांच कारणे छमछरी पहिले विहार करें. भयरे कारणे करें १, दुर्भिक्ष दुःकाल पडे

५ पांच इंद्रीरा अर्थ. सोतेंद्री कान गीत गान राग सुणवाने सावधान १, चक्षुइंद्री आंख भला २ रूप देखवाने वासते सावधान २, घ्राणेंद्री नाक ते भला २ गंध सुं-घवाने विषे सावधान ३, रसेंद्री जीभ ते भला २ रस भोगवारे विषे अने बोलवाने विषे सावधान ४, स्पर्शइंद्री काया ते खरखरा सुंहाला भोग भोगवाने सावधान.५१

५ पांच इंद्रीना आकार. बाहिरला अनेक प्रकाररा जाणवा अने अंतरंग मांहिला ए पांच छे. सोतइंद्रीनो आकार कमल फूलरो १, चक्षुइंद्रीरो आकार चंद्रमारो २, घ्राणइंद्रीरो आकार अति मुक्तक वनस्पतिरा फूल सरीखो ३, रसइंद्रीरो आकार क्षुरपलारो ४, स्पर्शइंद्रीरो आकार नाना प्रकाररो ५. ५२

५ पांच इंद्रीनी अवगाहना. श्रोतइंद्रीनी अवगाहना आंगुलीने असंख्यातमें भाग १, घ्राणेंद्री रसेंद्री स्पर्शइंद्री इणां तीनानी अवगाहना नव आंगुलीरी जाणवी.५३

५ पांच इंद्रीनी विषय जाणवी. श्रोतइंद्रीनी विषय बारें जोजन प्रसरें १, चक्षुइंद्रीनी वि-षय लाख जोजन तांइ पसरे २, घ्राणइंद्री रसइंद्री स्पर्शइंद्री इणां तीनांरी विषय नंव २ जोजन तांइ पसरें ५४. ५४

साधवी विहार करतां चोरे हेरो कीयो हुवें जेनउपगरण खोसी लेवें जिण कारणे भेला रहे तो भगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही ४, अनार्यपुरुष परिसह देवें तो सील राखवाने कारणे भेला रहे तो भगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही ५. ५९

५ पांच कारणे साधु साधवीरी भार संभाल करें तो भगवंतरी आग्यां अतिक्रमे नही. अत्यंत हर्ष करी संयमथकी मन बाहिर प्रवर्त्तावे तेहनी सारसंभाल करीने थिर करे १, अत्यंत रोगे करीने पिडीत छें तेहनी सारसंभाल करीने थीर करें २, वाइ करीने परवस छें तो सारसंभाल करीने थिर करें ३, चोथे जक्षरा परवशपणामांही पडी छे तेहनी सारसंभाल करें ४, मोहरे वसे पुत्र संयम लीधो हुवें पुत्रादिकनी तथा पुत्र मातारी सारसंभाल करें तो भगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही ५. ६०

५ पांच कारणसुं साधु साधवीसुं संघटो करें तो भगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही. पहिलें पंखी हाथी पांखमें तथा सुंढमां घाली लेइ जावतां झालने राखें तो भगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही १, बीजे खाडमें पडतां गिरतांने राखें तो भग० २, तीजे नावासुं ऊतरतां पाणीमें डूबतां झालीने राखें तो भग० ३, चोथे भवल आवती हुवें

तो कालीने राखे तो भग० ४, पांचमे संथारो कीधो हुवें चकरी आयने पम्तीथकी ने कालें तो भगवंतरी आग्या अतिक्रमे नही ५. ६१

५ पांच कारणे टोलो समुदाय छोमें. प्रायछितीया जाणीने टोलो समुदायने छोमें १, बीजे जहरे वस तथा वाहरे वस टोलो समुदाय छोमें २, तीजे अवनीतने सूत्र भणावें नही तिणसें टोलो समुदायने छोमें ३, मोहरे वस मन ठाम रहे नही तिण कारणे टोलो समुदायने छोमें ४, अनेरा टोला समुदायमें साधुजन सीदावें छे जिणानें साहाय देवा जाय तिके कारणे टोलो समुदाय छोमें ५. ६२

५ पांच आचार्यना अतिशय. पहिले थानकमांही आवीने हाथ पग पुंजे १, थानकमांही मूत्र स्थंम्लि करें २, तीजे वियावच इछा हुवें तो न करें ३, चोथे थानकमांही एकांतध्यान ध्यावें बेसें ४, पांचमे थानक बाहिर एकांत बेसें ध्यान ध्यावें ५. ६३

५ पांच प्रकाररा प्रायछित. गुरुमास ते तीस दिनारो प्रायछित देवें १, लघुमास ते सत्तावीस दिनारो प्रायछित देवें २, गुरुचोमास ते तीस दिनारो महीनो गणीने च्यार मासरो प्रायछित देवें ३, लघु चोमास ते सत्तावीस दिनारो महीनो गणीने च्यार

मासरो प्रायछित देवें ४. आरोपणा ते फरीने पांच महाव्रत उचरावें ५. ६४

५ पांच प्रकाररी आरोपणा. पठविया ते घणा प्रायछित माथे आया छें १, बीजी ठविया ते घणा मांहिलो पहिलो प्रायछित वहें ते ठविया २, तीजी कसिणा जेटला प्रायछित गुरु देवें तेटला सर्व संपूर्ण अखंम्डित वहें ३, चोथी अकसिणा ते गुरुदेवें प्रायछित दीधो छे तीको सर्व खंम्डित करीने प्रायछित पूरो पार्मे ४, पांचमी हम्डाहम्डा ते तुरतरो दंम्ड तुरतही प्रायछित ५. ६५.

५ पांच प्रकाररा विणीमग. रांक दीन दयामणा वचन कहीने लेवें ते विणीमग. पहिलो अतिथीविणीमग ते जीमणवेलाये आवें १, बीजो कृपणविणीमग ते धन खावें खरचें नही २, माहणविणीमग ब्राह्मण ३, श्वानविणीमग ते भिकारी कुतरारी परे उन्हा टोवें ४, पांचमो समणविणीमग ते साधुना गुणरहित जाणवा ५. ६६

५ पांच प्रकाररा समण. पहिलो समण साधुरा गुण होणा १, बीजो समण ते शाक्यादिक योगी २, समणतापस ३, समणसन्यासी ४, समणगोशालकमति ५. ६७

५ पांच पम्डिलेहणारी वेदका जाणवी. पहिली गोमांरें उपरे हाथ राखीने पम्डिलेहण न

करें १, बीजी गोडांरे नीचे हाथ राखीने पडिलेहण न करें २, तीजे गोडारे पासती हाथ राखीने पडिलेहण न करें ३, चोथे गोडारे विचे हाथ राखीने पडिलेहण न करें ४, पांचमी एक हाथ गोडांरे विचाले अने एक हाथ गोडां उपरे इसडी तरे पडिलेहणा करें ५. ६८

५ पांच जातिरा मछ. एक मछ पाणीरे सामुहो चालें १, बीजो मछ पाणीरे उपराठो चालें २, तीसरो मछ पाणीरे पासती चालें ३, चोथो मछ मध्य विचाले चालें ४, पांचमो मछ सर्व पाणीमें चालें ५. ६९

५ इण दृष्टांते साधु पांच प्रकारे गोचरी करें. पहिली सामुही गोचरी करें १, बीजी थानकथी अपूठी गोचरी करें २, तीजी डेहडै २ गोचरी करें ३, चोथी मध्य विचालरी गोचरी करें ४, पांचमी अनुक्रमे सघलांही घरांरी गोचरी करें ५. ७०

५ पांच प्रकारसा मूर्ख. पहिलो आपही वात करें अने आपही हसें ते मूर्ख १, बीजो मार्गमांही खावतो चालें ते मूर्ख २, तीजो कियो उपगार गिणें नही ते मूर्ख ३, चोथो गई वस्तुरो शोच करें ते ४, पांचमो दोय जणा वात करतां तीजो जावे ते ५. ७१

५ पांच गुणरा धणीने भणवो आवें. विनीत हुवें ते भणें १, उद्यमवंत भणें २, निर्मल बुद्धिरो धणी भणें ३, उपयोगवंत भणें ४, आजीविका हुवे तो भणें ५. ७२

५ पांच प्रकार गुरुने अने भणनेवालाने भेला चाहीजें. थानक सखरो हुवें तिवारे भणें १, पुस्तक हुवें तो भणें २, अवसर देखीने भणें भणावें ३, गुरु चेलामांही राग हुवें तो भणें भणावें ४, साहाय्य हुवें तो भणें भणावें ५, ए पांच बोल हुवें तिवारे भणणो आवें. ७३

५ पांच प्रकारे स्त्री पुरुष विना सेव्याही गर्भ धरें. पहिले उंमीतरे वस्त्र आघो करीने वीर्यसु खरडी धरती उपरां बेसें पुरुष बेठो हुवें तथा धरती आसन वस्त्र उपरे तीन पोहरतांइ बेसें नही अने बेसें तो गर्भनी उत्पत्ति स्त्री बेठी हुवें जठे पुरुष एक घडी तांइ बेसें नही अने बेसें तो शीलनुं दोष लागें १, बीजे वीर्य खरडीया वस्त्र पहिरे तों विना सेव्यांही गर्भ धरें २, तीजे आपरे पासें वीर्य पुद्गल छे तीके निज हाथसें घाले तो गर्भ धरें ३, चोथे अनेरी स्त्री पासे योनीमें वीर्य पुद्गल घलावें तो गर्भ धरें ४, पांचमे पाणीमें वीर्य पुद्गल हुवें तिण पाणीसुं पखाल करें तो गर्भ धरे ५. ७५

कूख बांध मेहली छे ते भणी गर्भ नही धरें ४, पांचमे पुत्र पुत्री होयवारो उदय-भाव नही तिका गर्भ नही धरें ५. ११

५ निरावलिकारा पांच वर्ग. पहिलो निरयावलिका १, बीजो कप्पिया २, तीजो कप्पवडंसिया ३, चोथो पुप्फचूलिया ४, पांचमो वह्लिदशा ५. ५॥

॥ अथ छठो बोल लिख्यते ॥

६ षटद्रव्य. पहिलो धर्मास्तिकाय १, बीजो अधर्मास्तिकाय २, तीजो आकाशास्तिकाय ३, चोथो काल ४, जीवास्तिकाय ५, पुद्गलास्तिकाय ६. १

६ छ प्रकाररो अवधिग्यान. पहिले जिको अवधिग्यान जिके गाम नगरमें ऊपजें जिठेइज देखें पिण उण गामसुं निकलीयां नही देखे फेर उणाहीज गाम आवें तिवारे देखे १, बीजे जिठे अवधिग्यान ऊपजे तिहां देखे अने जिहां जावे तिहां पिण देखे २, तीजो अवधिग्यान ऊपजतो आंगुलीने असंख्यातमे भाग ऊपजे तिवारे पछे देखतां २ असंख्याता द्वीप समुद्र देखे ३, चोथो हीणो पडे झांखो देखे पहिली असंख्याता द्वीप समुद्र देखे पछे हीणो २ पडतां २ आंगुलीने असंख्यातमे भाग देखे ४, पांचमे आखो लोक देखे पछे पाछो पडे पछे सर्व अणदीठ होय जावे ५, छठो अवधिग्यान ऊपजीयां पछे पाछो पडे नही लोक तो आखो देखे अने अलोकमां एक आकाशनो प्रदेश देखे तो पिण पाछो न पडे लोकमांहि अवधिग्यानसुं

असंख्याता आकाश प्रदेश दीठा तिण प्रमाणे अलोकमाही असंख्यात गुणा अ-
लोक आकाशना खंम्वा देखे तिको परम अवधिग्यान कहीजे तिणसु पीछे केवल-
ग्यान ऊपजे परं पाछो पम्े नही ६. २

६ अजयणासे पम्लिलेहणा करतां छ दिशिना जीव हणीजे. पूर्वथी १, दक्षिणथी २,
पश्चिमथी ३, उत्तरथी ४, ऊंचीदिशिथी ५, नीचीदिशिथी ६. ३

६ छ प्रकारे जयणासुं पम्लिलेहणा करतां छकाय जीवनी आराधना करे. एहीज पूर्वादि
छ दिशि जाणवी. ४

६ छ प्रकारे साधुजी आहार लेवे. पहिले क्षुधा वेदनीने कारणे आहार लेवे १, बीजे
वेयावच्चने कारणे आहार लेवे २, तीजे इर्या सोधवारे वासते आहार लेवे ३, चोथे
संयम निरवाहने अर्थे आहार लेवे ४, पांचमे पोतारा प्राण रुलता हुवे तो आहार
लेवे ५, छठे पाछली रात्रीरी धर्मजागरणा नही हुवे तिके कारणे आहार लेवे ६. ५

६ छ कारणे आहार छोम्े. पहिले रोग आवीने ऊपनो हुवे तो आहार छोम्े १, बीजे
उपसर्ग ऊपने आहार छोम्े २, तीजे ब्रह्मचर्यथी परिणाम म्ीगता जाणीने आहार

ढोमे ३, चोथे प्राणी जीवरी दया वास्ते आहार छोमे ४, पांचमे तपस्यारे वास्ते आहार छोमे ५, जावजीव अनशण करे ते नणी आहार छोमे ६. ६

६ ठ काय. पृथिवीकाय १, अप्पकाय २, तेऊकाय ३, वाऊकाय ४, वनस्पतिकाय ५, त्रसकाय ६. ७

६ ठ पृथिवीरा नाम. सन्ना १, सुद्धा २, वालुया ३, मणशीला ४, शर्करा ५, खरपुढवी. ८

६ ठ पर्याय. आहारपर्याप्ति १, शरीरपर्याप्ति २, इंडियपर्याप्ति ३, श्वासोश्वासपर्याप्ति ४, नाषापर्याप्ति ५, मनपर्याप्ति ६. ९

६ ठ लेश्या. कृष्णलेश्या १, नीललेश्या २, कापोतलेश्या ३, तेजोलेश्या ४, पद्मलेश्या ५, शुक्ललेश्या ६. १०

६ ठ संघेण. वज्रऋषननाराचसंघयण १, ऋषननाराचसंघयण २, नाराचसंघयण ३, अर्द्धनाराचसंघयण ४, कीलिकासंघयण ५, सेवठासंघयण ६. ११

६ ठ नावरा नाम. उदयनाव १, उपशमनाव २, क्षायक ३, क्षयोपशम ४, प्रणामिक ५, सन्निपातिक ६. १२

६ जीव चोवीसांदंम्कां ब प्रकारे आउखो कर्म बांधे. पहिलो जातिनाम १, बीजो गति नाम २, तीजो स्थितिनाम ३, चोथो अनुभागनाम ४, पाचमो उंगाहणानाम ५, छठो प्रदेशनाम ६. १३

६ ब बोल साधुने अहेतकारी हुवें मुक्तिनो घात करें. पहिलो प्रवृज्यानो मद करें १, बीजो सूत्रनो मद करें २, तपस्यारो मद करें ३, शिष्य शाखा पुस्तकरे लाभरो मद करें ४, घणी परषदा पूजारो मद करें ५, आदरसन्मान सत्काररो मद करें ६. १४

६ ब प्रकारना मनुष्य. कर्मभूमि १, अकर्मभूमि २, बपन्नअंतरद्वीप, एहीज तीन समूर्छिम, एहीज तीन गर्भज ६. १५

६ ब प्रकारना जंबुद्वीपमे खेत्र. हेमवय १, एरएयवय २, हरिवास ३, रम्यगवास ४, देवकुरु ५, उत्तरकुरु ६. १६

६ ब खेत्रामें मनुष्य ऊपजें. जंबुद्वीप १, पूर्वधातकी २, पश्चिमधातकी ३, पूर्वपुष्करार्ध ४, पश्चिम पुष्करार्ध ५, अंतरद्विप ६. १७

६ ब राजाये मल्लिनाथजी पासे दीक्षा ग्रही. प्रतिबुद्धराजा इक्षागदेशनो १, रूपीराजा

कुणालदेशनो २, चंडछायराजा अंगदेशनो ३, संखराजा काशीदेशरो ४, अदीनश- १८
त्रुराजा कुंजरदेशनो ५, जितशत्रुराजा पंचालदेशनो ६.

६ ब मत. प्रथम जैनमें देव अरिहंत निर्ग्रंथ १, बौधमतमें देवबुद्ध गुरु पात्रदी २, शि-
वमतमें देवरुद्र गुरुयोगी ३, देवमतमें देवधर्म गुरुवैरागी ४, न्यायमतमें देवजगत्कर्त्ता १९
गुरु सन्यासी ५, मीमांसकमतमे देव अलख दरवेस गुरु ६.

६ ब रिद्धिवंत मनुष्य. तीर्थंकर १, केवली २, चक्रवर्त्ति ३, वासुदेव ४, बलदेव ५, भा- २०
विक आत्माना घणी साधु अतिशयवंत ६.

६ ब बोल करवानी शक्ति नही. जीवनो अजीव करणारी सगति नही १, अजीवरो
जीव करणारी सगति नही २, परमाणुउं पुद्गल छेदी भेदी शके नही ३, एकण सम-
यमां दोय भाषा बोल शके नही ४, आपरा कीधा कर्म आपही भोगवे पर बीसरो २१
वदाय शके नही ५, लोकरी चीज ते अलोकमांही जाय शके नही ६.

६ ब बोल पामवां दुर्लभ. मनुष्यपणो पामवो दोहिलो १, आर्यकुल पामवो दोहिलो
२, पंचेंद्रिपपणो पामवो दोहिलो ३, सिद्धांत सुणवो दोहिलो ४, सर्धा आवणी

२२
दोहिली ५, तपस्या संजम ऊपरे बल वीर्य फोरवणो दोहिलो ६.

६ ठ ठिकाणे क्रिया लागें. मिथ्यात्वीने चोवीस क्रिया लागें इर्यावहीटली १, समदृष्टि-
नें तेवीस क्रिया लागें २ क्रियाटली मिथ्यात्वरी इरियावही २, श्रावकने बावीस क्रि-
या लागें तीनटली दोय तो पूर्वलीहीज तीजी अविरतेरी ३, प्रमादवंत साधुने २१
क्रिया लागें ४ टली तीन तो ऊवेहीज चोथी प्राणातीपातकी टली ४ अप्रमादवंत
साधुने २ क्रिया लागें बीजी सर्वहीटली एक मायावत्तिया बीजी संपराइया ५, वीत-
२३
राग संयमवंतने १ क्रिया लागें बीजी सर्वटली एक इरियावहिया लागें ६.

६ ठ समकितरा आगार. राजारे कहिणसुं असंयतीने मानें तो समकितने दोषण लागें
नही १, सज्जनादिकरे कहणसुं मानें २, हठ करके मनावें तो मानें ३, देवता मनावें
तो मानें ४, मातापितारे कहणसुं मानें ५, काल दुर्भिक्ष पडीयो हुवें वृत्ति आजीविका
२५
निमित्ते मानें ६.

६ ठ समकितरी जतना. पहिले अन्य तीर्थरा गुणग्राम न करें १, बीजे अन्य तीर्थने
वांदे पुजें नही २, तीजे अन्य तीर्थशुं विना बोलाये बोलें नही ३, चोथे वारंवार

आलापसंलाप करें नही ४, पांचमे अन्यतीर्थने धर्म निमित्ते अन्न पाणी न देवें ५, छठे अन्यतीर्थने धर्मनी बुद्धिशुं वस्त्र पात्र न देवें ६. २६

६ छ समकितरी भावना. पहिलो धर्मनो कारण समकित १, बीजो धर्मनो उपार्जवो ते समकित २, तीसरो धर्मना दूधरो भाजन ते समकित ३, चोथे धर्मनगरनो दरवाजो समकित ४, धर्मरूप मंदिररो आधार ते समकित ५, छठे देशविरती सर्वविरतीरूप विरतीनो आगर ते समकित ६. २७

६ छ समकितरी स्थापना. जीवादिक नव पदार्थ चिंतवें १, कर्मथी जीवरी उत्पत्ति ने विनाश २, शुभ अशुभकर्मनो कर्त्ता ३, आपना कीधा कर्म ते आपही भोक्ता ४, विना भोगवीया नही छूटे ५, कर्मथी मुकाय ने मोक्ष जावें ६. २८

६ छ कषाय. सकषायी १, कोहकषायी २, मानकषायी ३, मायाकषायी ४, लोभकषायी ५ अकषायी ६. २९

६ छ संस्थान अजीवरा. परिमंडल १, वट्ट २, त्रंस ३, चोरस ४, आयतन ५, अनिथंत्र ६. ३०

६ ठ उपक्रम. नामउपक्रम १, स्थापनाउपक्रम २, द्रव्यउपक्रम ३, खेत्रउपक्रम ४, कालउपक्रम ५, भावउपक्रम ६. . . . . . ३१.

६ ठ अल्पाबहुत्व. सर्वथुं थोमा जीव १, पुद्गल अनंतगुणा २, काल अनंतगुणो ३, सर्व द्रव्य विषे साहिया ४, आठकर्मरा पर्यावा अनंतगुणा ५, केवलगुणरा पर्यवा अनंतगुणा ६. ३२

६ ठ प्रकाररा हण संसारमें क्षुद्र जीव. तेउ १, वायु २, बेरेंद्री ३, तेरिंद्री ४, चोरिंद्री ५, तिर्यंचपंचेंद्री ६. . . ३३

६ ठ ऋतु. पावसऋतु आसाढ श्रावण १, वर्षाऋतु भाद्रव आसोजरो २, शरदऋतु कार्त्तिक मृगसररो ३, हेमंतऋतु पोष ने माघरो ४, वसंतऋतु फागुण चैत्ररो ५, ग्रीष्मऋतु वैशाख जेठरो ६. . ३४

६ अवग्रह मतिरा ठ भेद. खिप्पसमोग्गहिए ते शीघ्र उतावलो ग्रहें १, बहु समोग्गहिए ते घणा सूत्रनो ग्रहण करें २, बहुविहिग्गहिए ते घणे भेदे संबद्ध ग्रहें ३, धुवोग्गहिए ते निश्चलपणे ग्रहें ४, अणिस्सियोग्गहे ते अनिश्रायमतिसुं ग्रहें ५, अ-

संदिग्धोग्गहिए ते संदेहरी रीत विगर ग्रहण करें ६. .३५

६ इमहीज विचारवाना सचेतनाना एहीज ७ भेद जाणवा. ३६

६ एहीज निश्चय करवाना ७ भेद जाणवा. ३७

६ धारणाना ७ भेद ते कहे छे. खिप्पसमोग्गहिए शीघ्रपणे धारें १, बहुविधे करीने धारे २, पुराणी वस्तुने धारे ३, दुधर वस्तुने धारें ४, अनिश्रायसुं धारें ५, संदेहरहितपणेसुं धारें ६. ३८

६ ७ पलिमंथ ते विपरीत फल पामें. कुचेष्टा कुतुहल करे ते संयमरो पलिमंथ १, अलिक जूठ कहे ते संयमनो पलिमंथ २, आघो पाछो दिष्टि देखें ते इर्यासुमतिरो पलिमंथ ३, तणतणाट गोचरीने विषे करें तो एषणासुमतिनो पलिमंथ ४, इच्छारो निरोध न करें तो निर्लोभीपणानो पलिमंथ ५, तप करीने नियाणो करें तो मोखनो पलिमंथ ६. ३९

६ ७ प्रकारे करणवालाने कहणवालाने सरिखो प्रायछित आवें. प्राणातिपात सेवें नही अने सेवणवालो कहें तेहने १, मृषावाद बोलें नही अने बोलवावालो कहे तेहनें २,

अदत्तादान लेवें नही अने लेवणहार कहें तेहने ३, मैथुन सेवें नही अने सेवण-
हार कहें तेहने ४, दास नही अने दास सरीखा वचन कहें तेहने ५, नपुंसक नही
ने नपुंसक सरीखा वचन कहें तेहने ६. ४०

६ छ प्रकारे साधु जूठ नही बोलें. झूठ न बोलें १, किणकाहि अगुण न करें २,
किणही खिष्टता न करें ३, कठोर वचन न कहें ४, गृहस्थी सरिखा वचन न कहें
५, कलंक न देवें ६. ४१

६ छ प्रकारे समकित गमें अने मिथ्यात्व आदरें. अरिहंतारा अवगुणवाद बोलें तिवारे
समकितने गमीने मिथ्यात पामें १, अरिहंत प्ररूपीया धर्मना अवगुणवाद बोलें तो
समकित गमीने मिथ्यात पामें २, आचार्य उपाध्यायना अवगुणवाद बोलें तिवारे
समकित गमीने मिथ्यात पामें ३, चतुर्विध संघना अवगुणवाद बोलें ते समकित
गमीने मिथ्यात पामें ४, जक्षरे वशथी समकित गमीने मिथ्यात पामें ५, मोहरे व-
श उन्मादपणो पामें समकित गमीनें मिथ्यात पामें ६. ४२

६ छ प्रकारे वाद करें. आगलानुं पाछो बोलवाने वाद करें १, आगलारी वात सुणीने

पीछें वाद करें २, तीजे आगलाने मनगमता वचन बोलीने वाद करें ३, आगलाने वैरीपणे करीने वाद करावें ४, आगलारे मांही पेसीने वाद करें ५, आगलेसुं जेवो थइने चरचा करें ६. ५३

६ छ प्रकाररो प्रमाद. मदप्रमाद १, कषायप्रमाद २, निंदाप्रमाद ३, विकथाप्रमाद ४, जूवोप्रमाद ५, अजयणा प्रमादे करीने पडिलेहणा करें अने जयणासुं न करें ते प्रमाद पडिलेहणा प्रमाद जाणवो ६. ५४

६ छ प्रकारे पडिलेहणा करतां जीव जन्म मरण वधारे. १ उतावली घणी करें १, अण पडिलेह्या उपरे बेसें २, पडिलेह्या अणपडिलेह्या भेगा करें ३, वारंवार झाटकने जोवें नही ४, पडिलेहणा करोने वस्त्र चीवर विषेर राखें ५, वेदिकारहित पडिलेहणा करें६. ५५

६ छ प्रकारे पडिलेहणा करतो जीव जन्म मरण टालें घटावें. पडिलेहणा करतो शरीर वस्त्र नमावें नही १, पडिलेह्या अणपडिलेह्या भेला न करें २, ऊंची छातसें लगावें नही ३, नीचो धरतीसुं लगावें नही तिरछो भींतसुं वस्त्र लगावें नही मर्यादासहित पडिलेहणा करें ३,-छ प्रकारनी कुपडिलेहणा कही ते न करें ४, नव अखोडा नव

पखोमा करें ५, प्राणी जीवने देखें दयारे निमित्ते पडिलेहणा करें ६. ४६

६ छ प्रकारे इंद्रीनी रति अरति. श्रोत्रेंद्री सुणवाने अर्थे रागद्वेष करें १, चक्षुइंद्री देखवाने विषे राग द्वेष करें २, घ्राणेंद्री नाक वासनारे अर्थे राग द्वेष करें ३, रसेंद्री रस भोगववारे अर्थे राग द्वेष करें ४, स्पर्शेंद्री स्पर्शने अर्थे राग द्वेष करें ५, नोइंद्री ते मनने अर्थे राग द्वेष करें ६. ४७

६ प्रथम नरकगतिमेंसें आकर मनुष्य हुआ होय तिसके बहुलता छ लक्षण सो लि० कालो कुरूप १, क्लेशी होय २, रोगी होय ३, अति भयवान् होय ४, अंगमेंसें दुर्गंध आवें ५, क्रोधी होय ६. ४८

६ तिर्यंचगतिसें आकर मनुष्य हुआ होय तिसके छ लक्षण. लोभी होय १, कपटी होय २, जूठा होय ३, अति भूखा होय ४, मूर्ख होय ५, मूर्खसें प्रीति होय ६. ४९

६ मनुष्यगतिमेंसें आकर मनुष्य हुआ होय तिसके छ लक्षण. सरल होय १, सुभागी होय २, मीठाबोलनेवाला होय ३, दाता होय ४, चतुर होय ५, चतुरसें प्रीति होय ६. ५०

६ देवगतिसें आकर मनुष्य हुआ होय तिसके लक्षण. सत्यवादी दृढधर्मी होय १, दे-

वगुरुका भक्त होय २, धनवान् होय ३, रूपवान् होय ४, पंमित होय ५, पंमितसें प्रीति होय ६. ५१

६ ठ कायारी अहिंसारा ठ कारण. जीतव्य १, पर संसार २, मान ३, पूजा ४, जन्म मरण मुकाण ५, डुःखमीटण अर्थे ६. ५२

६ ठ बोल नटवैरा नकारो करणैरा लक्षण. आंख्या मीच ले १, आघो देखें २, ऊंचो देखे वा नीची दृष्टि घालें ३, जमीन कुतरणै लग जाय ४, डुसरेशुं वात करण लग जाय ५, मुन पकम् लें ६ काल विलंब करें ॥ गाथा ॥ जिउमे अधालोयणं ऊंची परंमुहवयणं । मोनकालविलंबो नाकारे विहो होइ ॥ १ ॥ ५३

६ ठ आरा अवसर्पिणीकालका. सुखमासुखम १, सुखमा २, सुखमाडुखमा ३, डुखमासुखम ४, डुखम ५, डुखमाडुखम ६. ५४

६ ठ आरा उत्सर्पिणीकालरा. डुखमाडुखम १, डुखम २, डुखमासुखम ३, सुखमाडुखम ४, सुखम ५, सुखमासुखम ६. ५५

६ ठ पापरा बोल. ए६ भव्य जीव हणें जितरो एक सरोवर सोष्येमें पाप १, १०१ स-

रोवर सोष्यांरो पाप इतरो एक दावानलमें पाप २, १०७ दावानलरो पाप इतरो एक कुवाणिज्यमें पाप (साजी साबु लोह गुली) ३, १४४ कुवाणिज्य कियांरो इतरों एक कूमो आलदियांरो पाप ४, १५१ कूमा आलदियांरो इतरो एक पारकी स्त्री सेव्यांरो पाप ५, ९९९९ पारकी स्त्री भोगवे इतरो एक रात्रिभोजनमें पाप ६. ५६

६ छ कारणसें छकायारी हिंसा करें. जिवणके अर्थे १, प्रशंसा अर्थे २. मान अर्थे ३, पूजा अर्थे ४, जन्म तथा मरण बुझाने के अर्थे ५, दुःख मिटाने के अर्थे ६. ५७

६ लेश्याका प्रणाम छ. कृष्णलेश्या हिंसाकरणकी इछा होय १, नीललेश्यासें चोरीकी इछा होय २, कापोतलेश्यासें मैथुनकी इछा होय ३, तेजुलेश्यासें तपस्या करणेकी इछा होय ४, पद्मलेश्यासें दान देणेकी इछा होय ५, शुक्ललेश्यासें मोक्षकी ६. ५८

५, तमप्रभा ६, तमतमप्रभा ७. ३

७ सात महावीरजीना कल्याणक. चवण ते दशमा देवलोकसुं चव्या १, संहरण ते देवानंदानी कूखसुं हरिणगमेषी देवें संहरण कीधी २, ऊपजवो ते त्रिसलानी कूखें हरिणगमेषीये संक्रमाव्या ३, जन्म थयो ४, दिक्षाकल्याणक ५, केवलज्ञानकल्याणक ६, निर्वाणकल्याणक ७. ४

७ सात समुद्घात. वेदनी १, कषाय २, मरणांत ३, वैक्रिय ४, तेजस ५, आहारिक ६, केवली ७. ५

७ सात विनय. ज्ञानविनय १, दर्शनविनय २, चारित्रविनय ३, मनविनय ४, वचनविनय ५, कायविनय ६, लोकोपचार विनय ७. ६

७ सात नय जाणणहारना मनरा विचाररूप नय. पहिलो नैगमनय हजारां गमे अर्थे एक पदार्थरा मानें ते किसी तरें, आत्मा ते पिण सामायक, समकित ते पिण सामायक, सुमति ते पिण सामायक, इत्यादिक अनेक अर्थे करने मानें सामायकने; ते नैगमनय १, बीजो ऋजुसूत्रनय २, तीजो संग्रहनय ३, चोथो व्यवहारनय ४, पांचमो

७ सात प्रकारे सुख. पहिलो सुख जिनधर्मधारी १, बीजे सुख जातिनो भारी २, तीजे सुख रोग नही मीलें ३, चोथे सुख धर्म मीलें ४, पांचमे सुखवासो शुद्ध ठाम ५, छठे सुख निर्मल परिणाम ६, सर्वथकी रहें सुख पुण्य वभो नही व्यापे दुःख ७. १०

७ सात प्रकारे छद्मस्थ जाणीजें. पहिले प्राणातिपात लागें १, बीजे मृषावाद लागें २, तीजे अदत्तादान लागें ३, चोथे शब्द रूप गंध रस स्पर्श आस्वादें ४, पांचमें पूजा सत्कार वांछे ५, छठें असावद्य प्ररूपें परं सावद्य लागें ६, सातमे जिसो प्ररूपें तिसो पालें नही जाहावायी ताहा कारिया न भवइ ७. ११

७ सात प्रकारे साधुजीनी भाषा. थोभो बोलें १, मीठो मधुरो बोलें २, विचारीने बोलें ३, कार्य पभीयां बोलें ४, निरवद्य वाणी बोलें ५, मायारहित बोलें ६, सूत्र सिद्धांतरे अनुसारे बोलें ७. १२

७ सात प्रकार सूत्र सुणवारा. अणबोल्यो सुणे १, हुंकारो देवे २, ईछें ३, विशेषइ वांछे ४, पूछें ५, प्रमाण करें ६, निश्चल करीने धारे ७. १३

७ सर्व जीव सात प्रकारे. एकेंद्री १, बेरिंद्री २, तेरिंद्री ३, चौरिंद्री ४, पंचेंद्री ५, स-

इंदिया ६, अणिंदिया ७.

७ दंड सात प्रकारना. हकार १, मकार २, धिकार ३, वचने करी निर्भछे ४, रोकी राखें ५, काराग्रहमांही राखें ६, कान नाक कापे ७. १५

७ सात प्रकारे धनने भय. राजानो भय १, चोरनो भय २, कुटुंबरो भय ३, अग्निनो भय ४, पाणीरो भय ५, नासण भागमरो भय ६, विनाशरो भय ७. १६

७ सात पदवी. आचार्यरी पदवी १, उपाध्यायरी पदवी २, थिवीररी पदवी ३, धर्मथकी डिगताने थिर करें ते थिवर तेहना तीन मकार जाणना ३, प्रवर्त्तीरी पदवी ते धर्मने विषे प्रवर्त्तावे सर्व संघाडामांही वडो जाणवो ४, गणीरीपदवी ते संघाडानो नायक ५, गणधरपदवी ते बारा अंग रचें ६, गणावछेद ७. १७

७ सात प्रकाररी गोचरी. क्षीरगोचरी अचित्त दोषरहित निर्मल अन्न पाणी सूझतो होवें १, अमृतगोचरी ते विना जाचीयें विना मागीयें अचित्त वस्तु आवें २, मधुकरगोचरी भमरानी परे आपरी आत्माने तृप्ति करें पराये जीवने पीडा उपजावें नही ३, कुडगोचरी बीहावीने लेवें ४, अजगरगोचरी ते एक घर उपर पार्डे ५ गलगोचरी ते

थोभो २ लेवे ६, गछ्यागोचरी एकठोहिज लेवें परं पूठलो विचार नही देखे ७. १८

७ सात कथा. स्त्रीकथा १, नत्तकथा २, देशकथा ३, राजकथा ४, ग्यानन्नेदरी कथा ५, समकितरी कथा ६, चारित्र न्नेदरी कथा ७. १९

७ साते प्रकारे सोपक्रमी आउखो घटें. घणो आउखो बांध्यो ठे पिण घट जावें. घास-कों खायने मरें १, तरवार कटारी फांसीसुं मरें २, मंत्रने जोगे आगलो मुंह ठवें तथा मांकिनी साकिनीरे मंत्रथकी मरें ३, आहाररे अजीर्णसुं मरें ४, शूलादिक वेदना ऊपजें मरें ५, शर्प विछु इत्यादिक स्पर्श लागें मरें ६, आपणा श्वासोश्वास रोकीने मरें ७. २०

७ सात डुःख. पहिलो डुःख घर आंगण जार १, बीजे डुःख पाडोसी चार २, तीजे डुःख घर आंगण कूवो ३, चोथे डुःख बेटो जूवो ४, पांचमे डुःख माथे रिण घणो ५, ठठो डुःख कुमारो धिय बेटीतणो ६, सातमो डुःख पंमिततणो नही संग, इण पर वरते संसारनो रंग ७. २१

७ सात कुव्यसन. पहिलो जूठो १, बीजो चोरी २, तीजो मांस ३, चोथी सुरा ४, पांच-

७७ हजार सो ७७ पल्योम झाजेरो नारकीनो आउखो तुटें देवतानो शुज आउखो बांधे १, पोसेसहित पोरसी करें तो ३६ करोम्‌ २२ लाख २२ हजार २२२ पल्योपम फाजेरो नारकीनो आउखो तुटे २, कोइ आधा महुरतको संवर करें तो ४६ करोम्‌ २ए लाख ६१ हजार २ए सो पल्योपम झाजेरो नरकनो आउखो तुटें ३, कोइ एक सामाइक करें ए२ करोम्‌ ५ए लाख २५ हजार २ए सो २५ पल्योपम फाजेरो नरकनो आउखो तुटे ४, कोइ घमी २ ना पच्चखाण करें तो २ करोम्‌ ५३ हजार २४०ं पल्योपम झाजेरो नरकनो आउखो तुटे ५, कोइ एक नवकारमंत्रको ध्यान करें तो १ए लाख ६३ हजार २६३ पल्योपम झाजेरो नारकीनो आउखो तुटे ६, कोइ एक आनपूर्वी गुणे तो जघन्य ६० सागरोपम झाजेरो उत्कृष्टो पांचसो सागरोपम झाजेरो नारकीनो आउखो तोमे देवतानो शुज आउखो बांधे

७ प्रसस्तकाय विनयका सात नेद. जयणांसुं उनो रहें १, जेयणासुं चालें २, जेयणासुं बेसें ३, जेयणासुं सोवें ४, जेयणांसुं उलंघे ५, जयणांसुं वार २ उलंघे ६, सघलो शरीर जयणासुं प्रवर्त्तावे ७.

७ सर्वार्थसिद्धविमानके चंद्रवा के २५३ मोतीयांके सात घेरा. तिण मध्ये एक विचमें मोती ६४ मणको १, उसकै चोफेर ४ मोती ३२।३२ मणका २, उसके चोफेर ८ मोती १६।१६ मणका ३, उसके चोफेर १६ मोती ८।८ मणका ४, उसके चोफेर ३२ मोती ४।४ मणका ५, उसके चोफेर ६४ मोती २।२ मणका ६, उसके चोफेर १२८ मोती २।२ मणका ७, एवं सर्व मिली २५३ मोती ८३२ मणका थया ७. २६

७ सात स्वर. खर्ज १, ऋषभ २, गंधार ३, मज्झिम ४, पंचम ५, धैवत ६, निषाद. २७

७ सात अनन्य. पालकब्राह्मण ५०० साधु घाणीमें पिल्या ते १, पालक कृष्णजी पुत्र घोडे निमित्त श्रीनेमिनाथजीके दर्शणकुं गया ते २, कालकसूरकसाइ ३, कपिलादासी ४, संगमदेवता श्रीमहावीरजीकुं उपसर्ग दीया ते ५, इंगालमर्दनाचार्य ६ रत्नसारजट्ट उदाईराजानो मारणहार ७. २८

७ धनमें सातोकासीर. १ पृथ्वी, २ अग्नि, ३ पाणी, ४ देवता, ५ कुटुंब, ६ चोर, ७ राजा. २९

## ॥ अथ आठमो बोल लिख्यते ॥

८ आठ मद. जातिमद १, कुलमद २, बलमद ३, रूपमद ४, तपमद ५, लाभमद ६, सूत्रमद ७, इश्वर ( ठकुराइ ) मद ८. १

८ आठ पृथिवी. सात तो नरकपृथिवी, आठमी इसीप्पभारापृथिवी. २

८ आठ कर्म. ज्ञानावरणी १, दर्शनावरणी २, मोहनीकर्म ३, वेदनीकर्म ४, नामकर्म ५, गोत्रकर्म ६, आयुकर्म ७, अंतरायकर्म ८. ३

८ आठ स्पर्श. उष्ण १, शीतल २, लूखो ३, चीकणो ४, खरदरो ५, सुहालो ६, हलवो ७, भारी ८. ४

८ आठ ग्यान. मतिग्यान १, श्रुतिग्यान २, अवधिग्यान ३, मनःपर्यवग्यान ४, केवलग्यान ५, मतिअग्यान ६, श्रुतिअग्यान ७, विभंगअग्यान ८. ५

८ आठ आत्मा. द्रव्यआत्मा १, कषायआत्मा २, जोगआत्मा ३, उपयोगआत्मा ४, ग्यानआत्मा ५, दर्शनआत्मा ६, चारित्रआत्मा ७, वीर्यात्मा ८. ६

ठो समय आठमो समय उदारिक जोगसुं प्रवर्त्ते २।६।७ मो समय उदारिक मिश्र जोगसुं प्रवर्त्ते ३।४।५ मो समय कार्मण जोगसुं प्रवर्त्ते पांच समयमांही आहार लेवें अने तीने समय आहार नही लेवें ते तीन समय कार्मणजोगना जाणवा. ९

८ आठ प्रकारना दर्शन. चक्षुदर्शन १. अचक्षुदर्शन २, अवधिदर्शन ३, केवलदर्शन ४ मिथ्यातदर्शन ५, समामिथ्यातदर्शन ६, सुप्रदर्शन ७, समकितदर्शन ८. १०

८ आठ बोल सीखामण. दान, दया पालें ते दानेसरी १, धर्मरो आचार पालें ग्यानी २, पापसें डरें ते पंडित ३, पांच इंद्री दमे ते शूरवीर ४, कुलक्षण छोमें ते चतुर ५, सत्यवचन बोलें ते सिंह ६, परउपगार करें ते धनेसरी ७, निर्धनसुं नेह करें ते असंडित ८. ११

८ दयाधर्मने आठ उपमा. पहिलें बीहताने सरणानो आधार तिम भव्यजीवनें दयानो आधार १, बीजे चउपदने खुंटानुं आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार २, तीजे पंखीने आकाशनो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार ३, चोथे तरसीयाने पाणीनो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार ४, पांचमे भूखाने अन्नरो आ-

धार तिम भव्यजीवने दयानो आधार ५, छठे रोगीने उंषधीनो आधार तिम भव्य जीवने दयानो आधार ६, सातमे भूल्याने साथरो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार ७ आठमे डुबताने पाटीयानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार. १२

८ आठ प्रकाररी लोकरी स्थिति. आकाश प्रतिष्ठित वायु १, वाउ प्रतिष्ठित उदद्दी २, उदद्दी प्रतिष्ठित पृथिवी ३, पृथिवी प्रतिष्ठित त्रस थावर प्राणिनः ४, अजीव जीव प्रतिष्ठित ५, जीव कर्म प्रतिष्ठित ६, अजीव जीव संग्रहीत ७, जीवकर्म संग्रहीत८. १३

८ आठ प्रकारना जीव. पुढवी काइया १, आउकाइया २, तेउकाइया ३, वाउकाइया ४, वणस्सइकाइया ५, त्रसकाइया ६, सकाइया ७, अकाइया ८. १४

८ आठ प्रकारना जीव. मनुष्य १, मनुषिणी २, तिर्यंच ३, तिर्यंचणी ४, देवता ५, देवांगना ६, नेरइया ७, सिद्ध ८. १५

८ आठ बोलरे सेवणहारने पारंचिया प्रायछित आवे. कुलमें भेद पामें १, गणमें भेद पामें २, हिंसा जीवांनी चिंतवें ३, छिद्र गवेषी ४, ज्योतिष निमित्त भाखें ५, दिठि पाडुचिया ६, पमायपाडुचिया ७, अनमन्न पाम्हिविया ८. १६

८ आठे बोले जीव धर्म नही पामें. घणो हसें तिको धर्म नही पामें १, इंद्री नोइंद्री दमें नही तिको धर्म नही पामें २, मर्ममोसो बोलें तिको धर्म नही पामें ३, श्रावकरा व्रत पच्चखाण निर्मला पालें नही तिको जीव धर्म नही पामें ४, साधुरा व्रत पच्चखाण निर्मला पालें नही तिको जीव धर्म नही पामें ५, रसरो लालची हुवें तिको जीव धर्म नही पामें ६, क्रोधी हुवें तिको जीव धर्म नही पामें ७, जूआ बोल्लो हुवें तिको जीव धर्म नही पामें ८. १७

८ एकलो साधु तथा साधवी रहें तेहना आठ अवगुण जाणना. पहिलें क्रोधी हुवें ते एकलो रहें १, बीजे अहंकारी हुवें ते एकलो रहें २, तीजे कपटी हुवें ते एकलो रहें ३, चोथे लोभी हुवें ते एकलो रहें ४, पांचमे पापमें रक्त हुवें ते एकलो रहे ५, छठे कतुहली हुवें ते एकलो रहें ६, सातमे धूर्त्त हुवें ते एकलो रहें ७, आठमे माठे आचारनो धणी हुवें ते एकलो रहें ८. १८

८ आठ गुणारो धणी हुवें तिको साधु एकलो रहें. पहिले संयमने विषे दृढ रहें ते एकलो रहें १, बीजे घणा सूत्ररो जाण हुवें तिको एकलो रहें २, जघन्य तो दश

पूर्व नणीयो हुवे उत्कृष्ट चवदे पूर्व नणीयो हुवे तिको एकलो रहे तीजे ग्यानरो विनय करे तिको रहे ३, चोथे च्यार ग्यानरो धणी हुवे तिको एकलो रहे ४, पांचमे बलवंत हुवे तिको एकलो रहे ५, छठे कलेशरहित हुवे ते तिको एकलो रहे ६, सातमे संतोषी हुवे तिको एकलो रहे ७, आठमे धैर्यवंत हुवे तिको एकलो रहे ८. १९

८ आठ ग्यानआचाररा नेद. अवसर देखीने नणे १, विनयसहित नणे २, नणावणवालाने घणो सन्मान देवे ३, नणावणवालाने गोपवे नहि ४, नणीया पछे तप वहे ५, सूत्र नणे ६, अर्थ नणे ७, सूत्र तथा दोनुंही विनयसहित नणे ८. २०

८ आठ दर्शनाचाररा नेद. जिनवाणी उपरे शङ्का नही आणे १, अनेरा धर्मरी वांछा न करे २, फलप्रते संदेह नही आणे ३, अनेरारो मत देखीने मुरझावे नही ४, गुणवंतरा गुण दीपावे ५, धर्मथकी डिगताने थिर करे ६, सर्व जीवने हितकारी हुवे ७, सिद्धांतरी नक्तिकें प्रनावना करे ८. २१

८ चारित्र आचारना आठ नेद. पांच तो सुमति अने तीन गुप्ति ८, २२

८ आठ सूक्ष्म ते कहे छे. स्नेहसूक्ष्म १, फूलसूक्ष्म २, पाणीसूक्ष्म ३, कीडीना इंडा सूक्ष्म

४, फूलणसूक्ष्म ५, बीजसूक्ष्म ६, धूंहरीसूक्ष्म ७, गलोइ प्रमुखना इंमा सूक्ष्म ८. २३

८ आठ वनस्पति उपजाववानी खाण छे. अग्गबीया १, मूलबीया २, खंधबीया ३, पोरबीया ४, बीयरुहा ५, संमूछिया ६, तणलया ७, वणस्सइकाइया ८. २४

८ आठ त्रसजीव उपजणरी खाण. अंमया इंमाथकी उपजें ते पंखी १, कोथलीसुं उपजें ते हाथीया प्रमुख २, जराउया ते जरसुं उपजें ते गऊ प्रमुख ३, रसजा ते रससुं उपजें ते चलित रसना जीव ४, संस्वेदजा ते परसेवासुं नीपजें जुं मांकुण प्रमुख ५, संमूर्छिमा ते समूर्छिम आपुणथी सरद गरमीसुं उपजें ६, उब्भिया धरती फोमीने उपजें ते पतंगादिक ७ उववाइया ते नारकीना जीव कुंभीमें उपजें देवता शय्याने विषे उपजें ८. २५

८ आठे प्रकारे पाप करें ते अर्थदंमर्में जाणवा ते कहें छे. आत्मा अर्थे पाप करें १, न्याति गोतीरे अर्थे पाप करें २, घर हाटने अर्थे पाप करें ३, कुटुंब परिवारने अर्थे पाप करें ४, मंत्रादिक साधवारे अर्थे पाप करें ५, भूतने अर्थे पाप करें ६, जक्षरे अर्थे पाप करें ७, नागरी पूजा अर्थे पाप करें ८. २६

यो १, फरसेंडीरा सुखनो वियोग मेलीया २, रसेंडीरा सुखरो वियोग पामीयो ३, रसें-
ड्रीना दुःखरो संयोग मेलीयो ६, चक्षुइंद्रीना सुखनो वियोग मेलीयो ७, चक्षुइंद्री-
ना दुःखनो संयोग मेलीयो ८. ३०

८ आठ बोल जाणवा योग छे. पहिले नही जाणे नही, आदरे नही पालें ते लोकि-
कमिथ्यात १, बीजे जाणे नही आदरे नही पालें छें तिके जोगी सन्यासी २, तीजे
जाणे नही आदरे छें परं पालें नही तिको भद्रभावधारी ३, चोथे जाणे नही आदरे
छें पालें छें तिको आपणपें उत्कृष्टपणो मानें अगीतार्थ पुरुष ४, पाचमे जाणें छे
आदरे नही पालें पिण नही तिके अविरते समकिती ५, छठे जाणे छें आदरे नही
पालें छे तिके श्रेणिक प्रमुख ६, सातमे जाणे छें, आदरे छें पालें नही तिके पास-
त्थादिक ७, आठमे जाणे छें आदरें छें पाले तिके भगवंतनी आग्या पाले छे ते साधु
साधवी जाणवा ८. ३१

८ क्रोध जेसो जहेर नही १, मान जैसो वैरी नही २, माया जैसो भय नही ३, लोभ
जैसो दुःख नही ४, संतोष जैसो सुख नही ५, पच्चखाण जैसो हेतु नही ६, दया

जैसो अमृत नही ७, साच जैसो सरणो नही ८. ३२

८ आठ बोल. ज्ञानरो उद्यम १, ज्ञानरो चोलणा पचोलणा २, संवर करी आवता करमाने रोके ३, तपस्या करी जुना कर्माने खपावें ४, निरधन उपरी नेह राखे ५, नया दीक्षितने ज्ञान सीखावें ६, मारगीमाहेमें क्लेश पड्यो थको मिटावें ७, घरमा बाल रोगी तपसीरी वेयावच करें ८. ३३

८ आठ कर्मारा दृष्टांत. ज्ञानावरणीकर्म तेलीकाबलदके पाटानो दृष्टांत १, दर्शनावरणीकर्म. राजारा पोलीयारो दृष्टांत २, वेदनीकर्म, सहतलिपटी तरवारकी धाराको दृष्टांत ३, मोहनीकर्म. मत्तवाला गहलारो दृष्टांत ४, आऊखाकर्म. खोडामें पगरो दृष्टांत ५, नामकर्म. चीतेरारो दृष्टांत ६, गोत्रकर्म कुंभारका भांडाको दृष्टांत ७, अंतरायकर्म राजारा भंडारीको दृष्टांत ८. ३४

८ आठ गहिला. स्त्री पासे बेसें तद गहिलो १, बालकने खेलावतो गहिलो २, बालकसुं मित्राइ ते गहिलो ३, भांग दारु पीवे ते गहिलो ४, सिरपाव पहिरे ते गहिलो ५, आरिसामांहि मुख जोवतां गहिलो ६, विवाहमांहि लुगाइ गालियां गावे ते

गहिली ७, होलीमाहीं पुरुष गहिलो ८. ३५

८ आठ मित्र. जन्मका माता पिता १, घरमें मित्र धन तथा स्त्री २, देह मित्र अन्न ३, आत्माका मित्र कर्म ४, रोगिका मित्र उषध ५, संग्राममें मित्र भुजा ६, परदेशमें मित्र विद्या ७, अंतकालको मित्र जीवरो श्री भगवान जिनेश्वरदेवरो धर्म ८. ३६

८ आठ बोल जीतणा दुर्लभ. आठ कर्मामांही मोहनी कर्म जीतणो दुर्लभ १, पांच इंद्रीमांही रसेंद्री जीतणी दुर्लभ २, तीन जोगामांही मनको योग जीतणो दुर्लभ ३, पांच व्रतमांही चोथो व्रत जीतणो दुर्लभ ४, छकायमांही वाउकायरी दया पालणी जीतणो दुर्लभ ५, तरुणावस्थामें सिल पालणो जीतणो दुर्लभ ६, छती समर्थाइ क्षमा करणी जीतणो दुर्लभ ७, छती जोगवाई पांच इंद्रीका स्वाद छोडणा दुर्लभ ८. ३७

८ आठ बोल श्रावकरा. थोडा बोलें १, काम पड्यां बोलें २, मीठा बोलें ३, चतुराइ सुं बोलें ४, मर्मकारी भाषा न बोलें ५, अहंकाररहित बोलें ६, सूत्रके न्याय बोलें ७, सर्व जीवने शाताकारी बोलें ८. ३८

८ आठ बोल प्रस्तावीक. पापसुं डरे सो पंडित १, दया पाळें सो दानेश्वरी २, कुलंलण लेंडें सो चतुर ३, धर्म करे सो ग्यानी ४, इंद्रि दमे सो सूरा ५, परउपकार करे सो पूरा ६, सत्य वचन बोलें सो सिंह ७, निर्धनसुं नेह करें सो धनवंत ८. ३९

८ आठ महा पापी. आपघाती महापापी १. विश्वासघाती महा पापी २, गुणलोपी महा पापी ३, गुरुद्रोही महा पापी ४, कुडीसाखी महा पापी ५, खोटी सलाह देवें ते महा० ६, वार २ पच्चखाण भांगे ते महा० ७, हिंसामें धर्म थापें ते महा० ८. ४०

८ बोल आठ सिखामणका. भगवंतरो जाप जपीजें १, दया पालीजें २, सत्य वचन बोलीजें ३, सील पालीजें ४, संतोष राखीजें ५, क्षमा कीजें ६, परने दगो न दीजें ७, गुरुके आंकुसमें रहीजें ८. ४१

## ॥ अथ नवमो बोल लिख्यते ॥

९ नव तत्त्व. जीवतत्त्व १, अजीवतत्त्व २, पुण्यतत्त्व ३, पापतत्त्व ४, आश्रवतत्त्व ५, संवरतत्त्व ६, निर्जरातत्त्व ७, बंधतत्त्व ८, मोक्षतत्त्व ९. १

९ नव पुन्यभेद. अन्नपुन्ने १, पाणपुन्ने २, लेणपुन्ने ३, सयणपुन्ने ४, वत्थपुन्ने ५, मन्नपुन्ने ६, वचनपुन्ने ७, कायपुन्ने ८, नमस्कारपुन्ने ९. २

९ नव ब्रह्मचर्यनी वाडी. स्त्री पशु पिंडगसहित थानक न भोगवें, जो भोगवे तो मुंसा बिलाइको दृष्टांत १, स्त्री कथा करें नही, करें तो नींबुको दृष्टांत २, स्त्रीके आसण उपर बेसें नही, जो बेसें तो पेठने आटा काचरीको दृष्टांत ३, स्त्रीना अंगोपांग निरखे नही, जो निरखें तो सूर्यको दृष्टांत ४, स्त्री पुरुष विषयादि करता होय तिसके भीत टाटीने आंतरे नही रहें, जो रहें तो मोर गाजरो दृष्टांत ५, पूर्वला कामभोग चितारे नही, जो चितारे तो बुढीयाकी छाछको दृष्टांत ६, रस प्रणीत आहार करें नही, जो करें तो सन्निपात रोगकुं दूध मिसरीको दृष्टांत ७, मर्यादाथी अधिको आहार कर

नहीं, जो करें तो बोदिकोथलीनो दृष्टांत ८, शरीरकी विभूषा करें नहीं, जो करें तो रांक हाथे रत्नरो दृष्टांत ९. ३

९ नव निधान. नैसर्प निधान १, पंडुक निधान २, पिंगल निधान ३, महापद्म निधान ४, सर्वरत्न निधान ५, कालनिधान ६, महाकाल निधान ७, शंख निधान ८, माणवक निधान ९. एक २ निधान नव जोजन चोडो, बार जोजनरो लांबो, आठ जोजनरो, ऊंचो पेटीने आकारे, निधानमांही सर्वही वस्तु पामीजें. ४

९ नव नियाणा. राजगृहीनगरीने विषे श्री महावीरस्वामी समवसर्या; श्रेणिकमहाराजा वंदना करणने मोटे मंडाणे जाईने श्री वीतरागने वांद्या; तिवारे साधु साधवीये श्रेणिकमहाराजने दीठा, देखीने नियाणा कीया; चेलणाराणीने पिण दीठी, देखीने साधु साधवीये नियाणा कीया, तिवारे महावीरस्वामीये साधु साधवीने बोलावीने नव नियाणा प्ररूप्या. नियाणा करणवालाने कडुवा कर्मरा फल लागें तेहना नाम. पहिले पुरुषने देखीने पुरुष नियाणो करें १, बीजे स्त्री पुरुषनो नियाणो करें २, तीजे पुरुष स्त्रीनो नियाणो करें ३, चोथे स्त्री स्त्रीनो नियाणो करें ४, च्यार

नियाणावालो केवली प्ररूपित धर्मरो एक अक्षर पिण सुणवो पामें नही पांचमो देवतानो नियाणो करे देवता आपरी देवी भोगवें पारकी देवी भोगवें वैक्रिय करीने भोगवे इसो नियाणो करे ते जीव जन्मांतरे केवली प्ररूपित धर्म सांभले पिण सरदहे नही ए पांच नियाणावालो आगे जन्मांतरे दुर्लभबोधि होवें अनंतो काल संसार मांहि रूले ५, छठे देवभवरे विषे आपणी वैक्रिय देवी भोगवे पिण पारकी नही भोगवुं इसो नियाणो करे ते केवली प्ररूपित धर्म जन्मांतरे सांभले पिण अनेरा धर्मरी रुचि होवें जिन धर्मरी रुचि होवें नही ६, सातमे देवताना भवने विषे आपणी देवी भोगवुं पिण पारको तथा वैक्रिय नही भोगवुं इसे नियाणे वालो जन्मांतरे धर्म सांभलें सर्दहे ए दर्शण श्रावक होवें पिण पच्चखाण उदय आवे नही ७, आठमो श्रावकरो नियाणो करे तिको श्रावकरा व्रत पाले पच्चखाण करे ते चोखा पाले पिण संयम उदय आवें नही ८, नवमे साधुपणारो नियाणो करे ते जाणे हुं दलिद्री तुछ कुलने विषे उपजुं जिम संजमनी अंतराय नही पडे इसो नियाणा वालो संयम निर्मलो पाले पिण उणही भवे मोक्ष न जावें. नियाणो तो

परभवनी आशा वांछा वालो करे तिणे पापकारी फल भोगवे. इसा फल नियाणारा सुणीने साधु साधवी आलोइ नंदीने निशल्य थया ए. ५

ए नव वासुदेव इण चोवीसी मांहि थया तेहना नाम. त्रिपृष्ट १, द्विपृष्ट २, स्वयंभु ३, पुरुषोत्तम ४, पुरुषसेन ५, पुंमरीक ६, दत्त ७, नारायण ८, श्रीकृष्ण ए. ६

ए नव प्रतिवासुदेव. अश्वग्रीव १, तारक २, मेरक ३, मधुकेंटभ ४, निसंभ ५, बलभद्र ६, प्रह्लाद ७, रावण ८, जरासिंघ ए. ७

ए नव बलदेव नाम. अचल बलदेव १, विजय बलदेव २, भद्र बलदेव ३, सुभद्र बलदेव ४, सुनंद बलदेव ५, आनंद बलदेव ६, नंदन बलदेव ७, पद्म बलदेव ८, राम बलदेव ए. ८

ए आवती चोवीसीने विषे नव वासुदेव नाम. नंदसेन १, नंदमित्र २, दीर्घबाहु ३, महाबाहु ४, आभाबल ५, महाबल ६, बलभद्र ७, विपृष्ट ८, त्रिपृष्ट ए. ए

ए नव बलदेव नाम. जय १, विजय २, भद्र ३, सुप्रभ ४, सुदर्शण ५, आणंद ६, नंदन ७, राम ८, संकर्षण ए. १०

९ नव प्रतिवासुदेव नाम. वालक १, लोहजंग २, वज्रजंग ३, केशरी ४, अपराजित ५, प्रह्लाद ६, भीमसेन ७, महाभीमसेन ८, सुग्रीव ९. ११

९ नव बलदेव पितारा नाम एहीज वासुदेव पिता नाम जाणवा. प्रजापति राजा १, विजय राजा २, भद्रराजा ३, अग्निसिंह राजा ४, सेवंत राजा ५, महासेन राजा ६, नंदसेन राजा ७, दसरथ राजा ८, वसुदेव राजा ९. १२

९ नव वासुदेवरी मातारा नाम. पोमावती १, मृगावती २, पोह्मवती ३, सिंहाराणी ४, कुंतीराणी ५, लक्ष्मीराणी ६, सेषवती राणी ७, केकेइ राणी ८, देवकी राणी ९. १३

९ नव बलदेवरी मातारा नाम. भद्रा १, सुभद्रा २, सुप्रभा ३, सुदर्शणा ४, विजया ५, विजयंता ६, जयंता ७, अपराजिता ८, कौशल्या बीजो नाम रोहिणी ९. १४

९ नव लोकांतिक देवता तिके लोकरे अंते रहे तथा संसाररो अंते कीधो एक भवरे आंतरे मोक्षमे जासी ते लोकांतिक देवता पांचमे देवलोकमे कृष्णराजीने विषे रिष्ट रत्नमयी ए विमान जाणवा ते ८ सागरने आउखे लोकांतिक देवता जाणवा. १५

९ नव क्रिया काइयाकंत क्रिया १, हतरीएठाण क्रिया २, अभिकंठ क्रिया ३, अण-

ही पचावें नही पचताने अनुमोदे नही, अभिरा आरंभसुं पचाववो ते पचन कहीजें ६, मोल आणी वस्तु लेवें नही लेवरावे नही लेतांने अनुमोदें नही ए नव कोटी शुद्ध आहार लेवें ए. २०

ए नव प्रकारे मनपर्यवग्यानरो ऊपजवो. मनुष्यने १, गर्भजने २, कर्मभूमीने ३, संख्याता वर्ष आऊखावंतने ४, पर्यासाने ५, सम्यग्दृष्टिने ६, संजतीने ७, अप्रमादीने ८, ऋद्धिवंतने ए.

ए नव विधिपरिग्रह. धन १, धान्य २, रूपो ३, सोनो ४, खेत्र ५, वास्तु ते ढांकी जमीन ६, डुपद ७, चोपद ८, कुविधातु ए. २२

ए नव प्रकारनो ऊदारिक संबंधीयो ब्रह्मचर्य. मनसुं सेवें नही १, सेवावे नही २, सेवताने अनुमोदे नही ३, वचनसुं सेवें नही ४, सेवावें नही ५, सेवताने अनुमोदे नही ६, कायासुं सेवें नही ७, सेवावें नही ८, सेवताने अनुमोदे नही ए. २३

ए नव प्रकारे वैक्रिय संबंधियो ब्रह्मचर्य. नवेइ भेद ऊदारिकशरीरनी परे जाणवा. २४

ए नव प्रत्यनीक. आचार्यनो प्रत्यनीक १, उपाध्यायनो प्रत्यनीक २, थिवीरनो प्रत्य-

नीक ३, कुलनो प्रत्यनीक ४, गणनो प्रत्यनीक ५, संघनो प्रत्यनीक ६, ग्यानरो प्रत्यनीक ७, दर्शणरो प्रत्यनीक ८, चारित्रनो प्रत्यनीक ९. २५

९ नव प्रकारे रोग ऊपजें. घणो खावें तो रोग ऊपजें १, अजीर्ण ऊपरे खावें तो तथा घणो बैठें तो रोग ऊपजें २, घणो सूवें तो रोग ऊपजें ३, घणो जागें तो रोग ऊपजें ४, घणी वडीनीति बाधा रोके तो रोग ऊपजें ५, छोटीनीतिनी घणी बाधा रोके तो रोग ऊपजें ६, घणो चालें तो रोग ऊपजें ७, अणगमते आसणे बेसें तो रोग ऊपजें ८, वार २ विषय सेवें तो रोग ऊपजें ९. २६

९ नव पदवी मोटी जाणवी. तीर्थंकररी १, चक्रवर्तीरी २, वासुदेवरी ३, बलदेवरी ४, केवलीरी ५, साधुरी ६, श्रावकरी ७, सम्यकदृष्टिरी ८, मंडलीक जोरावर राजारी९. २७

९ नव नारद नाम. भीम १, आऊखो ८४ लाख वर्षरो ८० धनुषरी अवगाहना १, महाभीम नारदरो आऊखो ७२ लाख वर्ष ७० धनुषरी अवगाहना २, रुद्रनारद ६० लाख वर्ष आऊखो अवगाहना ६० धनुषरी ३, महारूपनारद आऊखो ३० लाख वर्ष अवगाहना ५० धनुष ४, कालनारद आऊखो १० लाख वर्ष अवगाहना ४५

धनुष ५; महाकालनारद आऊखो ६५ हजार वर्ष अवगाहना २४ धनुषरी ६, चतु-
मुखनारद आऊखो ३२ हजार वर्ष अवगाहना ४० धनुषरी ७, नयरमुखनारद आ-
ऊखो १२ हजार वर्ष अवगाहना १६ धनुष ८, उनतमुखनारद आऊखो १००० व-
र्षनो अवगाहना ८ धनुषरी ९. २८

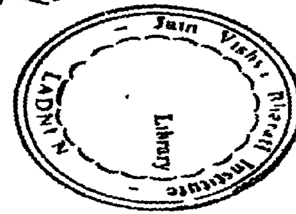
९ बोल. १ कालरो जाण, २ बलरो जाण, ३ खेदरो जाण, ४ जातरा मातरासे जाण (संजमरूपी जातरारे वास्ते आहार परमाण जाणे), ५ अवसररो जाण, ६ विनयरो जाण, ७ स्वमतरो जाण, ८ परमतरो जाण, ९ अभिमतरो जाण. २९

९ बोल. १ मेरुपर्वतसुं मोटो अभयदान, २ स्वयंभूरमणसमुद्रसुं मोटो सत्यवचन, ३ मीसरी सुं मीठो धर्म, ४ चंद्रमासुं निर्मली तपस्या, ५ पवनसु वत्तो मन, ६ अग्निसुं मोटी मोहनी, ७ तरवारसुं तीखो कडवो वचन, ८ धनसुं मोटो संतोष, ९ देवलोकसुं मोटो मोक्ष. ३०

९ बोल. रजपुतने क्रोध घणो १ क्षत्रीने मान घणुं २, गणिकाने वाणिक माया घणी ३, ब्राह्मणने लोभ घणो ४, मित्रने राग तथा हेतु घणो ५, शोक्यने द्वेष घणो ६,

जुवारीने शोक घणो ७, चोरनी माताने चिंता घणी ८, कायरने भय घणो ९. २१

९ मोक्षतत्त्वना नव भेद. मुक्तिपद छतो छे ते सत्पद प्ररूपणा १, सिद्धना जीव अनंता छे ते द्रव्य प्रमाण २, लोकने असंख्यातमें भागें एक सिद्ध तथा सर्वसिद्ध छे ते क्षेत्रप्रमाण ३, फुसणा अधिकी छे घणां सिद्धआश्री आदि नही अनंता छे ५, सिद्ध मुक्ति हुंति संसारमांही नावे ते भणी आंतरो नथी ६, सर्व जीवने अनंतमे भागे सिद्ध छे ते भाग ७, ज्ञान दर्शन क्षायकभावे छें जीव पारिणामिकभावें छे ते भाव ८, अल्पबहुत्व नपुंसकसिद्ध थोमा १ ते नपुंसक हुंती स्त्रीसिद्ध असंख्यात गुणा अधिका २, स्त्रीसिद्धसुं पुरुषसिद्ध असंख्यात गुणे अधिका ३, ९. २२

## ॥ अथ दशमो बोल लिख्यते ॥

१० दश जीवरा परिणाम. गति परिणाम १, इंद्रिय परिणाम २, कषाय परिणाम ३, लेश्या परिणाम ४, जोग परिणाम ५, उपयोग परिणाम ६, ग्यान परिणाम ७, दर्शण परिणाम ८, चारित्र परिणाम ९, वेद परिणाम १०. १

१० दश अजीवरा परिणाम. गतिपरिणाम १, बंधणपरिणाम २, संस्थानपरिणाम ३, वर्ण परिणाम ४, गंध परिणाम ५, रस परिणाम ६, स्पर्श परिणाम ७, अगुरु लघु परिणाम ८, शब्द परिणाम ९, भेद परिणाम १०. २

१० दश बोल नारकीने विषे माठा हुवें. माठो शब्द १, माठो रूप २, माठो गंध ३, माठो रस ४, माठो स्पर्श ५, माठी गति ६, माठी बुद्धि ७, माठी उठाणकर्म ८, माठो बल ९, माठो वीर्य १०. ३

१० एहीज दश बोल देवताने भला हुवें. ४

१० दश संज्ञा. आहारसंज्ञा १, भयसंज्ञा २, मैथुनसंज्ञा ३, परिग्रहसंज्ञा ४, क्रोधसंज्ञा

| | | |
|---|---|---|
| | ५, मानसंज्ञा ६, मायासंज्ञा ७, लोभसंज्ञा ८ ओघसंज्ञा ९, लोकसंज्ञा १०. | ५ |
| १० | दश बोल छद्मस्थ न जाणें अने केवली जाणें तथा च्यार ज्ञानरो धणी पिण न जाणें न देखें अने केवली तो जाणें पिण देखें पिण. धर्मास्तिकाय १, अधर्मास्तिकाय २, आकाशास्तिकाय ३, अशरीरी जीव ४, परमाणुपुद्गल ५, वाउकाय ६, गंधरा पुद्गल ७, शब्दरा पुद्गल ८, भव्य छें किंवा अभव्य छें इसो न जाणें ९, केवली थास्ये किंवा न थास्ये एहवो पिण न जाणे १०. | ६ |
| १० | दश समाधि. श्रुतेंद्रिय समाधि १, चक्षुइंद्रिय समाधि २, घ्राणेंद्रिय समाधि ३, रसेंद्रिय समाधि ४, स्पर्शइंद्रिय समाधि ५, इर्या समाधि ६, भाषासमाधि ७, एषणा समाधि ८, आयाणभंडमत्त निखेवणा समाधि ९, उच्चारपासवणखेलजलपरिठवणीया समाधि १०. | ७ |
| १० | ए दशहि असमाधि जाणवी. | ८ |
| १० | दश जातरी नारकीखेत्रमें वेदना. अनंतीभूख १, अनंतीतृषा २, अनंतीसीत ३, अनंतीगरमी ४, अनंतोरोग ५, अनंतोसोग ६, अनंतोभय ७, अनंतोदाघ ८, अनंतीखा- | |

ज ९, अनंतो परवशपणो १०. ९

१० दश चित्त समाधि. जिनधर्म करवानी रुची ऊपजें १, जातिस्मरणज्ञानसुं रुचि ऊपजें २, मोटो सुपनो देखें जणही भवे मोक्ष जावें तिणसुं रुचि ऊपजें ३, देवदर्शण देखें ४, अवधिग्यान ऊपजें ५, अवधिदर्शन ऊपजें ६, मनपर्यवग्यान ऊपजें ७, केवलग्यान ऊपजें ८, केवलदर्शन ऊपजें ९, केवल मरणे मरें ते चित्तसमाधि. १०

१० दश प्रकारना दान. अनुकंपा दान ते दूबला दुःखीयाने दान देवें १, संग्रह दान ते भेलो करीने दान देवे २, भय दान ते भररो मारीयो दान देवे ३, करुणा दान ते सोगरो दान देवे ४, लज्जा दान ते लाजरो मारीयो दान देवे ५, गारव दान ते अहंकाररो मारीयो चारण भाटने दान देवे ६, धर्म दान ते साधु सुपात्रने दान देवे ७, अधर्म दान ते दान दीधांसुं अधर्म ऊपजे ८, काही दान ते किहां २ रहीने दान देवे ९, कथ्यक दान ते हांती पोली लेवे अने देवे १०. ११

१० दश प्रकाररो मिथ्यात. जीवरो अजीव जाणे ते मिथ्यात १, अजीवरो जीव जाणे ते मिथ्यात २, धर्मरो अधर्म जाणे ते मिथ्यात ३, अधर्मरो धर्म जाणे ते मिथ्यात ४,

साधुनें असाधु जाणे ते मिथ्यात ५, असाधुने साधु जाणे ते मिथ्यात ६, सूत्रने उत्सूत्र जाणे ते मिथ्यात ७, उत्सूत्रने सूत्र जाणे ते मिथ्यात ८. मार्गने उन्मार्ग जाणे ते मिथ्यात ९, उन्मार्गने मार्ग जाणे ते मिथ्यात १०. १२

१० दश नक्षत्र वहतां सूत्र भणे तो ग्यानरी वृद्धीनरी होवे. मृगशिर नक्षत्र १, आर्द्रा नक्षत्र २, पुष्य नक्षत्र ३, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र ४, पूर्वाषाढा नक्षत्र ५, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र ६, मूल नक्षत्र ७, अश्लेषा नक्षत्र ८, हस्त नक्षत्र ९, चित्रा नक्षत्र. १३

१० दश सुपना. शूलपाणिजखरे मंदिर मांहि तेरमी चोमासी कीधी एक रात्री मांहि थम्मीरी निद्रा आवी तिण मध्ये १० सुपना दीठा ते कहे छे. पहिले सुपने पिशाच तथा भूत तथा राक्षस जोरावर जीवतो दीठो तेहनी चोटी पकडी नीचो नांखीयो तेहनो फल जगन्नाथस्वामी मोहरूपीयो कर्म मूलसे उपाडीयो १, बीजे सुपने श्वेत पांख कोयल दीठा तेहनो फल श्री जगन्नाथस्वामी शुक्ल ध्यानरा चार पाया अंगी- कार करीने विचरीया २, तीजे सुपने चित्र विचित्र पांखरी कोयल दीठी तेहनो फल श्री जगन्नाथस्वामी स्वसमय परसमयना भाव प्ररूपसी. स्वसमय जिनमत, परसमय

पाखंमत ३, चोथे सुपने श्वेत गोकुल गायोंरी टोली दीठी तेहनो फल श्री जगन्नाथस्वामी साधु साधवी श्रावक श्राविका चतुर्विध संघ तीर्थ प्रवर्तावसी ४, पांचमे सुपने दो माला दीठी तेहनो फल नाना रत्न श्रावकरो धर्म मोटा रत्न साधुरो धर्मप्ररूपसी ५, छठे सुपने पद्मसरोवर कमलरे फूले करी छायो दीठो तेहनो फल जीवाजीवादिकना सर्व पदार्थरो भाव प्ररूपसी ६, सातमे सुपने लवण समुद्र आपरी भुजाये करी तिरीजं दीठो तेहनो फल संसार समुद्रने तिरसी ७, आठमे सुपने दिनकर सूर्य सहस्र किरण देदीप्यमान ऊगतो दीठो. तेहनो फल निर्व्याघात विषे अंतरो पड़ें नही, निरावर्ण ते पाहाड़ पर्वत कूट चूलका आड़ा आवें नही, कसिण ते पूरो देखें, पड़िपुन्न ते संपूर्ण देखें पिण ऊंछो नही देखें, लोकालोक प्रकाशक केवलग्यान केवलदर्शन ऊपजसी ८, नवमें सुपनें मनुष्यलोक आपरें आंतो नथी वींटीयो दीठो तेहरो फल जगन्नाथस्वामीरो यश तीनलोकमें व्यापसी ९, दशमे सुपने मेरुगिरे पर्वतरी चूलिका ऊपर सिंहासन ते ऊपरे पोतें विराजीया तेहनो फल श्री जगन्नाथस्वामी द्वादशांगी सूत्र आख्यातसी प्ररूपसी आपरो

जसकीर्त्ति आपरें काने सुणसी १०. 

१० दश बोल अनंते काले हुंमानामा अवसार्प्पिणीने विषे हुवा तेहना नाम. तीर्थंकरने च्यार मावीत हुवें नही अने च्यार मावीत हुवा १, केवलीनी वाणी निष्फली जावें नही अने महावीरजीने केवलग्यान ऊपनो प्रथम देशना दीधी तिका खाली गई तिर्यंच देवता मिलीया पिण कोई विरती आखमी लेवावालो मिलीयो नही तिवारे केवलीनी वाणी निष्फल गई २, केवलीने परिसह हुवें नही अने गोशालें भगवंत महावीरने तेजोलेश्या मेहली तिणसें भगवंत महावीरने ७ महीना तांइ लोही गण रह्यो ३, चंद्रमा सूर्य एकण मंम्ले विमाने बेसी भगवंत महावीरने वंदना करणनें इण रीतसुं इंद्र वंदना करणने जावें नही अने ए गया ते अछेरो जाणवो ४, चमरेंद्र सुधर्म सामुहो कोपीने नही जावें अने ए चमरेंद्र गयो ५, स्त्री तीर्थ प्रवर्त्तावे नही अने मल्लीकुमरी तीर्थ प्रवर्त्तायो उगणीशमा तीर्थंकर जाणवा ६, वासुदेव संखे संखे मिलें नही अने कृष्णवासुदेव द्रौपदीने लेण गया तिवारे कपिल वासुदेवने संखे संखे मिलीया ७, एकण समय १०८ उत्कृष्ट उगाहणाना धणी सिद्ध नही थावें

अने अबके १०८ सिद्ध थया ८, जुगलीयो मरीने नरके नही जावें अने इण चो-
वीसीमें गयो ए अछेरो ए, संयती बेगा असंयतीनी पूजा नही थावें अने भगवंत
बेगा थकां गोसालानी पूजा थइ ए अछेरो थयो १०. १५

१० चोथा आरामध्ये दश बोलनी आसथा. तीर्थंकरनी आसता १, गणधररी आसता २, चवदे पूर्वधारीरी आसता ३, केवली प्ररूपित धर्मनी आसता ४, अवधिग्यानीरी आसता ५, अवधिदर्शणरी आसता ६, मनपर्यवग्यानरी आसता ७, केवलग्यानरी आसता ८, केवलदर्शणरी आसता ए, मोक्ष जावणरी आसता १०. १६

१० चोथे आरे दश बोल भला. भलो शब्द १, भलो रूप २, भलो गंध ३, भलो रस ४, भलो स्पर्श ५, भली बुद्धि ६, भली गति ७, भलो उठाणकर्म ८, बलवीर्य ए, पुरुषाकार पराक्रम १०. १७

१० दश पच्चरकाण. अणागए ते आगामी कालनो पच्चरकाण करें, अइक्कंते काल वरत्यां पच्चरकाण २, कोडिसहियं कोटिसहित पच्चरकाण करें ३, नियंवंचेव ते निश्चे करी तप करें ४, सागारं ते आगारसहित तप करें ५, अणागारं आगाररहित तप करें ६, प्र-

म्माणकम्मं कवल तप करे ७, निरवसेसं ते सरव तप करे ८, संकेतिकं ते गंठसी मुढसीनो तप करे ९, अद्धा पच्चक्काण ते पोरसी अर्द्ध पोरसी तप करे १०. १८

१० दश प्रकारे दोषण लगावे. दर्प्प ते कंदर्प विषयनो लीयो दोषण लगावे १, पम्माय ते प्रमादनो मारीयो दोषण लगावे १, अणाजोए ते विना उपयोग दोषण लगावे ३, आउरोए ते रोगरे कारण दोषण लगावे ४, आवर ते आपदा पर्मीया दोष लगावे. संकिए ते संकारो घालीयो दोषण लगावे ६, पदोसा ते द्वेषरो मारीयो दोषण लगावे ७, सहसागारं ते अकस्मात जोगे दोषण लगावे ८, भय ते भयरो घाल्यो दोषण लगावे ९, वीमसा ते शिष्य शाखा राखणने दोप लगावे १०. १९

१० दश प्रकारे आलोवतो थको दोषण लगावे. आकंपिता गुरुने कंपावे तथा पोते कांपतो कांपतो आलोवे १, अनुमानीता उनमान बांधीने आलोवे २. जं दिठंते दीठो २, आलोवे ३, जन्नं ते जाने २ आलोवे ४, सद्दाउलं ते उतावलो २ आलोवे ५, सुहमं ते नाहना दोष आलोवे ६, बादरं ते मोटा दोषणं आलोवे ७, बहुजणं ते घणाकने आलोवे ८. अवत्तवंते प्रायछितारा अजाण कने आलोवे ९, तस्स वीते

२०

आप सरीखो प्रायछितीयो हुई जिण कने आलोवे १०.

१० दश गुणारो धणी होवे जिको आलोवे. जाति संपन्ने, जाति संपन्ने जातिवंत होइ तिको आलोवे १, कुल संपन्ने कुलवंत होइ तिको आलोवे २, विणय संपन्ने विनयवंत होवे तिको आलोवे ३, नाण संपन्नं ग्यानवंत होवे तिको आलोवे ४, दंसण संपन्ने दर्शण सम्यक्त्ववंत होवे तिको आलोवे ५, चारित्त संपन्ने चारित्रवंत तिको आलोवे ६, खंती क्षिमावंत होवे तिको आलोवे ७, दंतो इंद्रीयांको दमणहार होवे तिको आलावे ८, अमायी मायारहित होवे तिको आलोवे ९, अपछाणुतावी आलोया पछे पिछतावे नही १०.

२१

१० दश प्रकाररो प्रायछित आलोवणारिहे. दूषण सेवीया ते गुरा आगे आवीने कहे इतनै पश्चातापहीज दूषण उतरे १, पडिकमणारिहे दूषण लागो होवे तेहनो मिछामि डुकडं देवे २, तदुभयारिहे दूषण सेवे तेहनुं गुरु कने आलोवे अने मिछामि डुकडं पिण देवे ३, विवगारिहे विगयरो त्याग करे ४, विउसग्गारिहे कायोत्सर्गा करे ५, छेदायरिहे कोइक दिनरी दिक्षा छेदे ६, मूलायरिहे पंच महाव्रत मूलथी उचरे ७,

तवायरिंहे तपस्या करे ८, अणवठप्पारिंहे तपस्या करीने फेर पंच महाव्रत उच्चरे ९, पारंचारिंहे गृहस्थलिंग करी मांम्ले बाहिर नीकलीने तपस्या करी फेर दिक्षा लेइने मांम्ले बेसे १०. २३

१० त्रस दशक. त्रसनाम १, बाहादरनाम २, पर्यासनाम ३, प्रत्येकनाम ४, थिरनाम ५, शुभनाम ६, सौभाग्यनाम ७, सुश्वरनाम ८, आदीयनाम ९, जसोकीर्त्तिनाम. २५

१० थावर दशक. सूक्ष्मनाम १, थावरनाम २, अपर्यासनाम ३, साधारणनाम ४, अथिर नाम ५, डुभगअसुभनाम ६, दोभागनाम ७, डुःस्वरनाम ८, अनादीयनाम ९, अ यशोकीर्त्ति नाम १०. २४

१० दश महावीरजीना श्रावक. आनंद १, कामदेव २, चुल्लणीपिया ६, सुरादेव ४, चुल्ल-शतक ५, कुंम्भकोलीयो ६, सकम्डालपुत्र ७, महाशतक ८, नंदिनीपिया ८, सालहि-पिया १०. २५

१० दश ठिकाणे दश वाना पाइजें. क्रोध घणो दोय स्त्रीना भर्त्तारने गृह मध्ये १, मान घणो रजपूतरे २, माया घणी भेखधारीने ३, कपट घणो वेश्याने ४, लोभ घणो आ-

ब्राह्मणने ५, शोच घणो जुवारीने ६, सोग घणो चोरनी मातारे ७, साच घणो सम्यग दृष्टिने ८ निद्रा घणी धर्मथानके ९, संतोष घणो साधुने १०. २६

१० दश प्रकारे मुंड. श्रोत्रेंद्रिय मुंड १, चक्षुरिंद्रीय मुंड २, घ्राणेंद्रि मुंड ३, रसइंद्री मुंड ४, स्पर्शइंद्री मुंड ५, क्रोध मुंड ६, मान मुंड ७, माया मुंड ८, लोभ मुंड ९, शिर मुंड १०. २८

१० दश बल. श्रोत्रेंद्रियबल १, चक्षुरिंद्रीयबल २, घ्राणेंद्रियबल ३, रसेंद्रिबल ४, स्पर्शइंद्री बल ५, नाण बल ६, दर्शण बल ७, चारित्र बल ८, तप बल ९, वीर्य बल १०.

१० दश चीज प्रधान. अनुत्तर नाणे १, अनुत्तर दंसणे २, अनुत्तर चारित्ते ३, अनुत्तर तवे ४, अनुत्तर वीरीये ५, अनुत्तर अगुरुलहुए ६, अनुत्तरा खंत्तीए ७, अनुत्तरा दं-त्तीए ८, अनुत्तरे सच्चे ९, अनुत्तरे सुहुमे १०. ३०

१० दश प्रकारे बुद्धि वधे. दीर्घ आउखो निर्मल बुद्धीयो तेहनी बुद्धि वधे १, वीनीत पुरुषरी बुद्धि वधें २, उद्यमवंतरी बुद्धि वधें ३, इंद्रियनो-इंद्रियरा मानना दमण-हाररी बुद्धि वधें ४, सूत्र उपरा अंतरंग राग हुवे तेहनी बुद्धि वधें ५, सखरा कार्य-

मांहि सावधान थावे तेहनी बुद्धि वधे ६, शंकारहित हुवे तेहनी बुद्धि वधे ७, गुरु-
नी प्रशंसा करे तेहनी बुद्धि वधे ८, बालभावथी मुकावे तेहनी बुद्धि वधे ९, धर्मने
ऊपरे दिढ रहे तेहनी बुद्धि वधे ९. २१

१० दश सुख. घरमे ऋद्धि १, देह नीरोग २, दीर्घ आऊखो ३, काम घणो ४, भोगसुख
५, अल्प तृसना ६, संतोष घणो ७, अनुत्तर विमानना सुख ८, साधुना सुख ९,
सिद्धना सुख १०. २२

१० कल्पवृक्ष दश वाना युगलीयांने देवें. आठ भूमीया रत्नना घर देवें १, अग्नि देदी-
प्यमान देवें २, स्त्री पुरुषरा आभरण सर्व रत्नना जडीत देवें ३, एकसो आठ जा-
तिना पक्वान चोशठ जातिरी तरकारी मनोगम एहवा भोजन देवें ४, सर्व रत्नना
जडीया भाजन देवें ५, बहु मोला वस्त्र देवें ६, शरीरना बलवीर्य कान्ति ज्योति वधें
एहवो मद देवें ७, च्यार जातिरा वाजित्र देवें; तंतवाजित्रत्र ते तांतसें वाजें, वीणा प्र-
मुख वितंत वाजित्र ते विना तांत वाजें, ढोल मार्दल प्रमुख घणवायंत्र ते कांसीया
ताल प्रमुख, झुपिरवायंत्र ते पोलावट वाजें पपरू शारंगी वांसली प्रमुख ८, सुगंध

फूल देवें ९, देदीप्यमान दीवांरी ज्योति देवें १०. ३३

१० दश कारणे दिक्षा लेवें. आपरे छांदे दिक्षा लेवें १, रीसने वसे दिक्षा लेवें २, बुढापे दिक्षा लेवें ३, रोग ऊपने दिक्षा लेवें अनाथीरी परे ४, जातिस्मरणग्यान ऊपने दिक्षा लेवें मृगापुत्रनी परे ५, तृष्णा वाद्यो नीकलें कपिलरिषीनी परे ६, गुरुउपदेशथी नीकलें आदीश्वरजीना ९८ वें बेटानी परे ७, देवता कहें थारो आउखो थोडो छें तिवारे दिक्षा लेवें ८, मोहरा घालीयो दिक्षा लेवें भृगुपुरोहितनीपरे ९, कोइ माने नही तिवारे दिक्षा लेवें पोटीला तथा तेतलीपुत्र प्रधाननी परे १०. ३४

१० दश प्रकाररी रुचि. निसर्गा रुचि पेहिला मिथ्यात्वी छें पिण कोमल परिणामी छें सरल स्वभाविक छें शुभ भावना भावतां जातिस्मरणग्यान ऊपजें पछें आफेइ सम्यक्त पामें तिका निसर्गरुचि १, उपदेश रुचि प्रथम जाणपणो नही पछें गुरुने उपदेशरे सुणवें करी जाणें ते उपदेशरुचि २, आग्यारुचि गुरुनी आग्या आराधतां राग द्वेष पातला पर्में सहिजें सम्यक्त पामें ३, सूत्ररुचि सूत्र अर्थ भणतां सम्यक्त पामें ४, बीजरुचि एक पदसुं अनेक पद आवें जिम पाणीरो बिंदु तेलमांहे पसीयो

नाना रंग दिसें तिम एक पदसुं अनेक पद आवें ते बीजरुचि ५, अभिगमरुचि इग्यारे अंग बार उपांगनो विचार करें ६, विस्ताररुचि एक पदना अनेक विस्तार करें सर्व पदार्थनी सातना करीने विस्तार करतो सम्यक्त पामें ७, संक्षेपरुचि मिथ्याती नही अने जिनवचन पिण विशेष जाणें नही ते संक्षेपरुचि ८, क्रियारुचि नवमी क्रिया करतुत करतां सम्यक्त पामें ९, धर्मरुचि षट द्रव्यना भाव जाणतो जिनवचन सर्द्दहतो सम्यक्त पामें ते धर्मरुचि १०. ३५

१० दश विधि समाचारी. आवसही स्थानकसें नीकलतां कहें १, निसहिया थानकमांही पेठतां कहें २, आपुछणा ते एकवारही पूछने कार्य करें ३, पडिपुछणा वारंवार पूछीने कार्य करें ४, छंदना आगन्या लेइने कार्य करें ५, इछाकारी ते गुरुनी इछायें कार्य करें ६, मिथ्याकारी तेउं वधु कार्य कीधे मिछामि दुकडं देवें ७, तहकारी ते गुरुवचन सुणीने तहत्ति करें ८, आछुठाणं ते गुरुनी सेवा पूजा करें ९, उवसंपया ते गुरुने समीपे रहें १० ३६

१० दश प्रकारना स्थविर. ग्रामथिवर १, नगरथिवर २, देशथिवर ३, कुलथिवर ४, घर-

थिवर ५, गणथिवर ६, संघथिवर ७, वयथिवर ८, सूत्रथिवर ९, प्रवृज्याथिवर. ३७

१० दश धर्म. ग्रामधर्म १, नगरधर्म २, देशधर्म ३, आसंकीयधर्म ४, पाखंन्डधर्म ५, कुलध-र्म ६, गणधर्म ७, ग्यानधर्म ८, दंसणधर्म ९, चारित्रधर्म १०. ३८

१० दश जणांसुं वाद नही कीजें. राजासें १, धनवंतसें २, बलवंतसें ३, पक्षपूराने धणी-सें ४, क्रोधीसें ५, नीचसें ६, तपस्वीसें, कूडाबोलासें, मातापितासें, गुरुसुरुणीसें. ३९

१० दश प्रकाररा शस्त्र. अग्निरो शस्त्र १, पाणीरो शस्त्र २, लूणरो शस्त्र ३, खटाईरो शस्त्र ४, चीगटरो शस्त्र ५, खाररो शस्त्र ६, मनरो शस्त्र ७, वचनरो शस्त्र ८, कायारो शस्त्र ९, अविरतिरो शस्त्र १०, ४०

१० दश प्रकाररा जीव. एकेंन्द्री पढम समय १, अपढम समय २, बेइंन्द्रि पढम समय ३, अपढम समय ४, तेरिंन्द्री पढम समय ५, अपढम समय ६, चौरिंन्द्री पढम समय ७, अपढम समय ८, पंचेंन्द्रि पढम समय ९, अपढम समय १०. ४१

१० दश कारणे मोक्ष जावें. त्रसकायसें मोक्ष १, मनुष्यरी गतिसें मोक्ष २, सन्नीपंचेंन्द्रीसें मोक्ष ३, यथाख्यात संयम क्षायक सम्यक्तसें मोक्ष ४, भव्यसिद्धियेंसें मोक्ष ५, अ-

नाहारिकसुं मोक्ष ६, केवलग्यानसें मोक्ष ७, केवलदर्शसुं मोक्ष ८, क्षायक सम्यक्तसें मोक्ष ९, केवल मरणसें मोक्ष १०. ५२

१० दश प्रकारे आगे जवने विषे सातावेदनीय शुज कर्म बांधें. सम्यक्त शुद्ध मन पालें ते साता शुज कर्म बांधे १, मन वचन कायाना जोग रुंधे तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे २, इंडिय नोइंडिय दमें तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे ३, क्षमा करें तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे ४, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावें तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे ५, वेयावच्च करें तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे ६, वेरागजाव आणें तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे ७, दान शील तप जावना जावें तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे ८, सिद्धांत सांजले तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे ९, समजाव प्रवर्त्ते तो सातावेदनीय शुजकर्म बांधे १०. ५३

१० दश प्रकारे कल्याणकारी कर्म बांधें. तपस्या करीने नियाणो न करे तो कल्याणरो कारण हुवे तामली तापसनी परे १, समकित सहित करणी करे तो कल्याणरो कारण हुवे श्रेणिकराजानी परें २, योग तीने थिर राखे तो कल्याणरो कारण हुवे रह-

नेमि राजीमतीरी परे ३, क्षमा करतां कल्याणरो कारण हुवे गजसुकुमालनी परें ४, पंचेंद्रि वश करे तो कल्याणरो कारण हुवे धना अणगारनी परें ५, पोतानो छांदो रोके तो कल्याणरो कारण हुवे सेलक राजर्षिनी परें ६, मायारहित संयम पाले तो कल्याणरो कारण हुवे गौतमस्वामीनी परें ७, कोइ द्वेषी धर्मसुं परिणाम फिरावे परं फिरे नही तो कल्याणरो कारण हुवे. केहनी परें अरणक श्रावकनी परें ८, सूत्ररी प्रभावना करे तो कल्याणरो कारण हुवे केशीकुमाररी परें ९, व्रत पच्चखाण चोखो पाले तो कल्याणरो कारण हुवे. केहनी परें वरनागनतुवानी परें १०. ४४

१० दश बोल पामणा दोहिला छे. मनुष्यरो जन्म पामणो दुर्लभ १, आर्य क्षेत्र पामणो दुर्लभ २, पंचेंद्रियपणो पामणो दुर्लभ ३, उत्तम कुल पामणो दुर्लभ ४, पंचेंद्रिय निर्मली पामणी दुर्लभ ५, नीरोग शरीर पामणो दुर्लभ ६, सतगुरुनी जोगवाइ पामणी दुर्लभ ७, सिद्धांतनो सुणवो पामणो दुर्लभ ८, सरधापरतीति पावणी दुर्लभ ९, तप संयम उपरें बल वीर्यनो फोरवो पामणो दुर्लभ १०. ४५

१० पुन्यवंत प्राणी होवे तिको दश बोल पामे. घणो परिग्रह होवे तिहां उपजे १, घणा

मित्र होवे तिहां उपजे २, सासु ससरा साजन घणा होवे तिहां उपजे ३, उंचगोत्र होवे तिहां उपजे ४, गोरो वर्ण होवे तिहां उपजे ५, नीरोग शरीर होवे तिहां उपजे ६, निर्मल बुद्धि होवे तिहां उपजे ७, विनीत होवे तिहां उपजे ८, बलवंत होवे ९, यशवंत होवे १०. ४६

१० दश प्रकाररी आणुपूर्वी. नामाणुपूर्वी १, स्थापनाणुपूर्वी २, द्रव्याणुपूर्वी ३, क्षेत्रानुपूर्वी ४, कालानुपूर्वी ५, भवाणुपूर्वी ६, उकित्तणाणुपूर्वी ७, णाणाणुपूर्वी ८, संठाणाणुपूर्वी ९, समवायाणुपूर्वी १०. ४७

१० साधुनी सेवा कीधां दश बोलरी प्राप्ति होवे. सूत्र सांभले १, ग्यान आवे २, विनय आवे ३, पचखाण आवे ४, संयम आवे ५, नवा कर्म आवता रोके ६, तपस्या करे ७, बोदा कर्म पूर्वे बांध्या ते करे ८, पापक्रियारहित हुवे ९, सिद्धिगति पामे १०. ४८

१० गोतमस्वामी पूछीयो हे भगवान तुमे कह्यो लवणसमुद्र तिरतां सोहिलो परं संसार समुद्र तिरतां दोहिलो ते किसे कारण, हे गोतम सांभल लवणसमुद्रमें पाणी घणो संसाररूप समुद्रमें मोहरूप पाणी घणो छे ते भणी तीर सके नही १, लवण समुद्रमें

पाणी.श कल्लोल घणा छे, संसाररूप समुद्रमें स्नेहरूपीया कल्लोल घणा २, लवण-स-मुद्रमें वायरो घणो छे संसार समुद्रमें मिथ्यातरूप वायरो घणो छे ते भणी तिर सके नही ३, लवण समुद्रमें कादो घणो छे संसार समुद्रमें रागद्वेषरूपीयो कादो घणा छे ४, लवण समुद्रमें किराम्हा घणा छे संसार समुद्रमें पाखंन्ड मतरूप किराम्हा घणा छे ते भणी तिर सके नही ५, लवण समुद्रमें मोटा पर्वत छे संसार समुद्रमें आठ कर्मरूपीया मोटा पर्वत छे ६, लवण समुद्रमें नान्हा मोटा कलशा छे संसार समुद्रमें अठारह पापथानक तथा १५८ कर्म प्रकृतिरूपीया कलशा छे ते भणी तिर सकें नही ७, लवण समुद्रमें मछ कछ नक्र ग्राह मगर घणा छे तिम संसार समुद्रमें कुंटंब परिवार रूपीया मछ कछ घणा ते भणी तिर सकें नही ८, लवण समुद्रमें सीप संख संघोटीया घणा छें तिम संसार समुद्रमें कुगुरु कुदेव कुशास्त्ररूपीया सीप संख संघोटीया घणा छें ते भणी तीर शकें नही ९, लवणसमुद्रमें जंघ प्रवाह भारी छें तिम संसार समुद्रमें कर्म कषायनो कदाग्रह भारी छें ते भणी तिर शकें नही १०. तिण कारणे लवणसमुद्र तिरतां दोहिलो कदाचित देवतारे साहाय्य करी तथा रत्ना

रे चांनणे करी तिरे तिम संसार समुद्र पिण सद्गुरुनें सहायें करीने तथा सिद्धांतरी वाणी सुणवें करीने तथा ग्यान दर्शण चारित्ररूपीये चांनणे करीने तिरे छें. ४९

१० दश प्रकाररी लोकरी स्थिति छें. जीव ऊपजें तथा खपें एहीज लोकरी मर्याद १, सदा काल जीव पापकर्म बांधे ते लोकमें बांधे ते लोकनी मर्याद २, जीव सदा काल मोहने वसें वर्तें छें ते लोकनी मर्याद ३, तीनेही कालें जीवरो अजीव नही हुवें ते लोकरी मर्याद ४, त्रस जीवरो थावर नही हुवें अने थावर जीवरो त्रस जीव न हुवें ते लोकरी मर्याद ५, लोकनो अलोक नही हुवें अने अलोकनो लोक न हुवें ६, लोकमें अलोक नही आवें अने अलोकमें लोक नही आवे ते लोकनी मर्यादा ७, जिहां लोक तिहां जीवने लोकनी मर्याद ८, जीवलोकने विषे गति आगति करें ते लोकनी मर्याद ९, जीवनो अने पुद्गलनो परिणाम लोकने अंते जाय ने लूखो पर्में अलोकमें जाय न शकें ते लोकनी मर्याद १०. ५०

१० दश प्रकारना शब्द छें. कंकण ते घंटानो १, टंकण ते झालररो २, लूखो ते किमाडनो ३, भिन्न ते बचबचीया दहीनो ४, जज्झर ते खोखरा ढोलरो ५, दीर्घ लांबो ते

गाजवानो ६, रहसें नान्हो शब्द ते वीणारो ७, अरुसे ते शंखनो शब्द ८, कोमल ते सूक्ष्म कंठसें गावें ९, खंखिणे ते घूघरांरो ऊमकार घोमानो हणहणाटो १०. ५१

१० दश प्रकारे क्रोध ऊपजें. मनोगम वस्तु लेवणी छें ते भणी क्रोध ऊपजें १, अमनोगमवस्तु ले लीधी ते भणी क्रोध ऊपजें २, अमनोगम वस्तु लेवती विरियां क्रोध ऊपजें ३, मनोगम अमनोगम माहरी ले लीवी ते भणी क्रोध ऊपजें ४, मनोगम वस्तु हिवणां लेवें छें ते भणी क्रोध ऊपजें ५, अमनोगम वस्तु हिवणां लेवें छें ते भणी क्रोध ऊपजें ६, मनोगम अमनोगम वस्तु हिवणां लेवें छे ते भणी क्रोध ऊपजें ७, मनोगम वस्तु चोरसी ते भणी क्रोध ऊपजें ८, अमनोगम वस्तु चोरसी ते भणी क्रोध० ९, मनोगम अमनोगम वस्तु चोरसी ते भणी क्रोध० १०. ५२

१० दश प्रकारे मान ऊपजें. जातिमान १, कुलरो मान २, बलरो मान ३, रूपरो मान ४, तपरो मान ५, लाभरो मान ६, सूत्ररो मान ७, ठकुराइरो मान ८, देवता पासे आवें तेहनो मान ९, लक्ष्मीरो मान १०. ५३

१० दश कारणे कलेश ऊपजें. थानकरे निमित्ते कलेश ऊपजें १, उपगरणरे निमित्ते

क्लेश ऊपजें २, शरीर निमित्ते क्लेश ऊपजें ३, भात पाणी निमत्तें क्लेश ऊपजें ४, ग्यानरे अर्थे क्लेश ऊपजें ५, दर्शणरे अर्थे क्लेश ऊपजें ६, चारित्रने अर्थे क्लेश ऊपजें ७, मननो क्लेश ऊपजें ८, वचननो क्लेश ऊपजें ९, कायानो क्लेश ऊपजें १०. ५४

१० दश बोल संयमने घातकारी हुवें. उदगमणउवग्घाए १, उप्पायणउवग्घाए २, एषणाउवग्घाए ३, परिभारणउवग्घाए ४, परिहरणउवग्घाए ५, णाणउवग्घाए ६, दर्शणउवग्घाए ७. चारित्तउवग्घाए ८, अप्रचित्तउवग्घाए ९, संरक्षणउवग्घाए. ५५

१० दश गुणे करीने श्रावक जाणीजें. नवतत्त्व पदार्थ निर्मला जाणे. १, धर्म करतां देवतांरो साहाय्य नही वांछे २, धर्मसुं देवदाणव कोमानुंकोमी चलावें तो चालें नही ३, भगवंतना वचन ऊपर शङ्का कंखा नही आणे ४, भगवंतना वचन एहीज अर्थ एहीज परमार्थ एहीज आत्मानो सज्जान, शेष संसारना कार्य सर्व अनर्थ जाणें ५, हाडने हाडानी मज्जा जीवने जीवना प्रदेश ते धर्ममें रंगा छें ६, मास १ मध्ये छ पोषधोपवास करें ७, जिम फिटकर रत्न निर्मलो तिम ज्यांरो हीयो निर्मलो छें तथा

घरना बारणा उघाडा छें साधु साधवीरी सदाही दानरी भावना भावें छें ८, श्रावक जी अप्रतीतिकारीये घरमांही न जावें राजाना अंतेवरमांही न जावें अने जावें तो अप्रतीति उपजें ९, श्रावकजी श्रमणनिर्ग्रंथने अन्न पाणी वस्त्रपात्र पीठ फलग सज्या संस्तारक उंषधभेषध सूझतो निर्दोष प्रतिलाभतां विचरें १०. ५६

१० पंचेंद्रिय जीवनो वध करें तो दश प्रकारनो पाप लागें. स्पर्शइंद्रियना सुखनो वियोग कीयो १, दुःखनो संयोग मेलीयो २, रसेंद्रीयना सुखनो वियोग कीयो ३, दुखनो संयोग मेलीयो ४, घ्राणेंद्रीयना सुखनो वियोग कीयो ५, दुःखनो संयोग मेलीयो ६, चक्षुइंद्रियना सुखनो वियोग कीयो ७, दुःखनो संयोग मेलीयो ८, श्रोतेंद्रियना सुखनो वियोग कीयो ९, दुःखनो संयोग मेलीयो १०. ५७

१० दश बोलें एकांत दुखम काल जाणीजें. अकालें वरसें १, कालें नही वरसें तथा थोडो वरसें २, असाधुरी पूजा हुवें ३, साधुरी पूजा नही हुवें ४, मोटे ठिकाणें मिथ्यात हुवें ५, वडांरो विनय न करें ६, अणगमता शब्द ७, रूप ८, गंध ९, रसस्पर्श. ५८

१० दश बोलें सुखमकाल जाणीजें. कालें वरसें अकालें नही वरसें १, साधुरी पूजा हुवें

२, असाधुरी पूजा नहीं हुवे ३, मोटे ठिकाणे सम्यक्त घणी हुवे ४, वर्मारो विनय घणो करे ५, मनगमतो शब्द ६, मनगमतो रूप ७, मनगमतो गंध ८, मनगमतो रस ९, मनगमतो फरस १०. ५९

१० दश विध यति धर्म. खंती क्षमा १, मद्दव मान त्याग २, अज्जव सरलता कपटादिका त्याग, मुत्ती निर्लोभ लोभका त्याग ४, तव तपस्या करे ५, संजमे संयम पाले ६, सच्चं सत्य बोले ७, सोयं उजय सोच्य ८, आकिंचण द्रव्यका त्याग ९, बम्भंच ब्रह्म-चर्य पाले १०. ६०

१० दश कल्प. अचेल कल्प १, उद्देशिक कल्प २, सिजातर कल्प ३, राजपिंड कल्प ४, कृतकर्म कल्प ५, चतुर्याम कल्प ६, जेष्ट कल्प ७, मासकल्प ८, पडिकमणाकल्प ९, पज्जोसणा कल्प १०. ६१

१० दश बोल छद्मस्थ जाणे न देखे. धर्मास्तिकाय १, अधर्मास्तिकाय २, आकासास्ति-काय ३, शब्द ४, गंध ५, वायरो ६, अशरीरी जीव ७, परमाणु पुद्गल ८, ए कर्मदाय करसी के नहि ९, ए मोक्ष जासि के नहीं १०. ६२

१० दश प्राण. श्रोतेंद्रि प्राण १, चक्षु इंद्री प्राण २, घ्राणेंद्रि प्राण ३, रसेंद्रि प्राण ४, फर्सेंद्रि प्राण ५, मनबल प्राण ६, वचनबल प्राण ७, कायबल प्राण ८, श्वासोश्वास प्राण ९, आउखो प्राण १०. ६३

१० दश वेयावच्चे. आयरिय वेयावच्चे १, उवझाय वेयावच्चे २, थिवर वेयावच्चे ३, तवसी वेयावच्चे ४, गिलाण वेयावच्चे ५, नव दिक्षीत वेयावच्च ६, गण वेयावच्च ७, संघ वेयावच्च ९, साधर्मिनी वेयावच्च १०. ६४

१० दश गुरु भक्ति. गुरु आया उभो थाये १, आसण आमंत्रे २, आसण बिछाय देवे ३, कीर्त्ति गुणग्राम करे ४, हाथ जोडके खडा रहे ५, सत्कार दे ६, सन्मान दे ७, आवतांकुं लेण जाय ८, रहियांरी सेवा करे ९, जाय तो पोचावण जाय १०. ६५

१० दश बोल करि जंबूद्वीप वरणव्यो. खंडा कहिता जंबूद्वीपना १९० खंड वा भर्त्त सारिखा १, जोजन २ प्रमाण खंडवा कीजे तो जंबूद्वीपना ७९० कोडि ५६ लाख ९४ हजार १५० जोजन १॥ गाउ १५॥ धनुष फाफेरा खंडवा होय २ वासा जंबुद्वीपमें ७ तथा १० छे ३ पव्वय जंबुद्वीपमें २६९ पर्वत सासवता छे ४ कूट जंबुद्वीपमें ४६७

तथा ५२५ कूट छे ५, तिर्थ जंबुद्वीपमें १०२ छे ६, सेढीए जंबुद्वीपमें १३६ श्रेणी छे ७ विजय जंबुद्वीपमें ३४ छे ८, द्रह जंबुद्वीपमें १६ द्रह सासता छे ९, सलिला जंबुद्वीपमें १४ लाख ५६ हजार नदी छे १०. ६६

१० दश बोल प्रस्ताविक. एक वालके अग्रभाग मांहि आकास्तिकायकी असंख्याती श्रेणि छे १, एकेक श्रेणि मांहि असंख्याती प्रतर २, एकेक प्रतर मांहि असंख्याता गोला ३, एकेक गोलामांही असंख्याता शरीर ४, एकेक शरीर मांहि अनंता जीव ५, एकेक जीवमांहि असंख्याता प्रदेश ६, एकेक प्रदेश मांहि अनंती कर्म वर्गणा ७, एकेक कर्म वर्गणामें अनंता परमाणु ८, एकेक परमाणु मांहि अनंती वर्ण गंध रस फरसनी पर्याय ९, एकेक पुद्गल पर्यायमें अनंती २ केवलज्ञानकी पर्याय १०.

१० दस बोल साधुकी संगतथी पामे. सवणे १, नाणे २, विन्नाणे ३, पच्चक्खाणे ४, संयमे ५, अणाहय ६, तवे चेव ७, वोंदाणे ८, अकिरियां ९, सिद्धि १०. ६७

१० दश बोल करी भव्यजीवसुं शोच करणो पडे. साधु आया प्रश्न करें नही १, वखाण वाणी सुणें नही २, सामायक पडिकमणो नही करें तो ३, आहार पाणी असु-

क्तो होय जाय तो ४, पढवैरी जोगवाइ हुवें पढं नही तो ५, साधर्मीकी खबर नही लेवें तो ६, धर्मजागरण नही करें तो ७, साधुकी विनय भक्ति नही करें तो ८, साधु आयाकी सारसंभाल नही करें तो ९, साधु विहार करी जाय तो १०. ६९

१० दश बोल अनंता. नाम अनंते १, थापना अनंती २, द्रव्य अनंती ३, गणित अनंती ४, प्रदेश अनंता ५, एक अनंता ६, दोय अनंता ७, देशविस्तार अनंता ८, सर्व विस्तार अनंता ९, सासते अनंता १०. ७०

१० दश पईन्ना. चोसरण पइन्नो १, गाथा ६२ आतुर पच्चक्खाण पईन्नो २, गाथा ८० महापच्चक्खाण पईन्नो ३, गाथा १३४ भत्तपच्चक्खाण पईन्नो ४, गाथा १७० तंडुलवेयाली पईन्नो ५, गाथा ४०० गणिविज्जा पईन्नो ६, गाथा ६०० देव स्तवन पईन्नो ७, गाथा २०० चंदविजय पइन्नो गाथा १७६ कहांवं गाथा ८, संथार पईन्नो ९, गाथा १२१ मरण विभत्ति पईन्नो १० गाथा ६६५. ७१

१० दश बोल जंबुस्वामी पछे भरतक्षेत्रमें विछेद गया. मनपर्यवग्यान १, परमा अवधि २, पुलाकनियंठो ३, आहारकलब्धि ४, उपसमश्रेणि ५, क्षपकश्रेणी ६, जिनकल्पी७,

परिहारविशुद्धि ७, सुखमसंपराय ९, यथाख्यातचारित्र १०. ७२

१० दश बोल पावणा दुर्लभ. मनुष्य अवतार १, आर्यदेश २, उत्तमकुल ३, पांचइंद्रिय संपूर्ण ४, निरोगीकाया ५, दीर्घआउखो ६, साधुसाधवीकी जोगवाइ ७, धर्मका सुणणा ८, धर्मकी श्रद्धा ९, उद्यमका कर्णा १०. ७३

१० दशौंकी संगति वरजवी. पासत्थाकी १, उसनाकी २, कुसीलियाकी ३, संसताकी ४, आपछंदाकी ५, नीन्हवकी ६, कदाग्रहीकी ७, अन्य मारगीकी ८, अनीतियाकी ९, वमनगाकी १०. ७४

१० दश बोल मोक्षगतिरा. सिद्धभगवंतजीरो लीजे नाम १, मांभलीए साधुजीरो व्याख्यान २, धरीए शुभध्यान ३, दिजीये शुद्धभावथी दान ४, पहेरिए सियल ६, छंडीये लज्या ५, मारीए मन ७, खाइए गम ८, दमीये देहनें ९, परमरस पीजीए.

१० दश बोल महा पापीरा कहीजे. आपरे जीवरी घात करसुं महा पापी कहीजे १, विश्वास दे घात करेसुं महा पापी २, कीनोभा गुण विसरेसुं महा पापी ३, सुंष लेने कुम्डी साख भरेसुं महा पापी ४, हिंसामें धर्म परुपेसुं महा पापी ५, भरी सभामें जूठ

बोलेसुं महा पापी ६, रुखमें दाव लगावे महा पापी ७, वनस्पती काटेसुं महा पापी ८, तलावरी पाल काटेसुं महा पापी ९, गरभ पडावसुं महा पापी. ए दश मोटा पाप छे १०. ७६

१० दश बोल बडाया वधे घटाया घटे. क्रोध १, हास्य २, रमत ३, खुराक ४, सोग ५, बुध ६, भय ७, निंद्रा ८, अहंकार ९, पंचेंद्री विषय सेवन १०. ७७

१० ज्ञानी पुरुषरो १० लक्षण. अक्रोधी हुवे १, वैरागी हुवे २, जीतेंद्री हुवे ३, क्षमावान हुवे ४, दयावान होवे ६, सेवे जन प्रिय ( सगलाने प्रिय लागे ), निरलोभी हुवे ८, दातार हुवे ९, भयरहित हुवे १० शोक चिंता रहित हुवे आनंदी हुवे. ७८

१० दश बोले असत्य भाषाण. क्रोधरे वश बोले तो असत्य १, मानरे वश बोले तो असत्य २, मायारे वश बोले तो असत्य ३, लोभरे वश बोले तो असत्य ४, रागरे वश बोले तो असत्य ५, द्वेषरे वश बोले तो असत्य ६, हास्यरे वश बोले तो असत्य ७, भयरे वश बोले तो असत्य ८, मुखरी वचन बोले तो असत्य ९, विकथाकारी वचन बोले तो असत्य १०. ७९

## ॥ अथ इग्यारमा बोल लिख्यते ॥

११ इग्यारह श्रावककी पडिमा. लोकिक लोकोत्तर मिथ्यात्व टालें शुद्ध सम्यक्त पालें १, व्रत पच्चक्खाण शुद्ध पालें दोय वखत सामायक पडिक्कमणा करें महीनेमें ६ पोसा करें न्हावें नही धोवें नही धोतीकी लांग देवें नही २, रात्रीभोजन करें नही ३, दिनका ब्रह्मचर्य पालें रातकी मर्यादा करें ४, काउसग्गध्यान करें ५, दिन रातका ब्रह्मचर्य पालें ६, सचित्त त्याग करें ७, आरंभ करें नही ८, आरंभ करावें नही ९, आरंभ करतेने अनुमोदे नही १०, साधुकी तरे विचरें गोचरी करें माथे सिखा राखें लोच करावें ११. विधि–पहिली पडिमामें १ मास तपस्या करें एकांतरे पारणो करें सम्यक्तव्रत निर्मला पालें इसीतरे जितनी पडिमा उतनीहि तपस्या करें जेसें इग्यारमी पडिमामें ११ मास तक तपस्या करें ११ दिनांसु पारनो करें लिया वृत पच्चक्काण निर्मला पालें.

१ इग्यारे श्री वीरना गणधर. इंद्रभूति १, अग्निभूति २, वायुभूति ३, व्यक्त ४, सुधर्मा

स्वामी ५, मंम्हितपुत्र ६, मोरीपुत्र ७, अकंपित ८, अचलभ्राता, मेतार्य, प्रभास. २

११ इग्यारे बोल जाणपणेका. धर्मका जाणपणा होय तो जीवदया पालें १, ग्यानका बल होय तो थोमा बोलें २. बुद्धिवंत होय तो सभा जीतें ३, साधुकी संगती होय तो संतोष ऊपजें ४, वैराग्य होय तो पांच इंडी दमें ५, सुत्र सिद्धांत सुणतां रहें तो धर्म विषे प्रणाम चढता रहें ६. प्राणी जीवकी रिक्षा करें तो निर्भयपणो पामें ७, मोह मछरपणो छोमें तो देवताको पूजनीक हुवें ८, न्यायमार्गमें चालें तो शोभा पावें ९, सर्व जीवकुं खमत खामणा करें तो साता पामें १०, भगवानकी आग्यासहित क्रिया करें तो मोक्ष पामें ११. ३

११ श्री जिनसासणमांही सम्यगदृष्टिने ११ बोल जाणवा जोइजें. विधिवाद जे वीतराग इम कह्यो इमज करिवो. एह विधिवाद १, चरितानुवाद अमुके इम कीधो नाम लेइने कहिवो एह चरितनुवाद २, स्थितवाद जगमांही जे पदार्थ जिम छें तिम कहिवो ते स्थितवाद ३, ज्ञेयवाद जाणिवा जोग ४, हेयवाद छांमिवा जोग ५, उपादेयवाद आदरवा जोग ६, धर्मपक्ष सम्यगदृष्टि श्रावक साधुनो मार्ग ते धर्मपक्ष ७,

अधर्मपक्ष मिथ्यात्वी अधर्मी श्रावकपणो गमे तो अधर्मपक्ष ८, मिश्रपक्ष चारित्र आश्री विरती अविरतीनो मार्ग आदरे ते मिश्रपक्ष ९, व्यवहारपक्ष जे बाह्य देखता लोक सहुने सुमता ते व्यवहारपक्ष १०, निश्चेवाद केवलीगम्य ते निश्चयवाद ११. ४

११ षट द्रव्यना ११ द्वार छे. गाथा—परिणामजीवजीवमुत्ती सपएसएगेक्षेते किरिया । निच्चं कारणे कत्ता थईए एवं एकारसम् ॥ १ ॥ जीवद्रव्य पुद्गलद्रव्य ए बे प्रणामि छे धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाश काल ए चार अप्रणामी छे १, जीवद्रव्य तो जीव बाकी पांच द्रव्य अजीव २, पुद्गलद्रव्य तो मूर्त्ति बाकी पांच द्रव्य अमूर्त्ति ३, कालद्रव्य अप्रदेशी बाकी द्रव्य सप्रदेशी ४; धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति ए त्रण एकेक छे सेष त्रण द्रव्य अनेक ५, आकाश क्षेत्री शेष पांच अक्षेत्री ६, जीवद्रव्य पुद्गलद्रव्य ए बे सक्रिया शेष चार अक्रिय ७, कालद्रव्य नो अनित्य शेष पांच नित्य ८, जीवद्रव्य तो अकारणी काम नही आवें शेष पांच कारणी काम आवें ९, जीवद्रव्य पुद्गल कर्त्ता शेष ४ अकर्त्ता १०, आकाशद्रव्य तो सर्व गति शेष ५ द्रव्य असर्वगति.

११ इग्यारे बोल चोरेंद्रीरा. विछु १, ढंकण २, भमरा ३, भ्रमरी ४, टीड ५, माखी ६,

मांस ७, मछर ८, पतंगीया ९, कसारी १०, खम्माकम्री ११. ६

११ इग्यार बोल प्रस्तावीक. समकितरूपी मूल १, धीरजकंद २, विनय वेदिका (चोकी) ३, जस ४, खंद पांच महाव्रत ५, माला भावना ६, त्वचा छाल ग्यान ध्यान ७, कुपल्लपान अनेक गुण ८, फूल सील ९, सुगंध उपयोग १०, फल मोक्ष ११, बीज. ७

११ इग्यार बोले करी ग्यान वधे. उद्यम करतां १, निद्रा तजें तो २, उणोदरी करें तो ३, अल्प बोलें तो ४, पंडितरो संग करें तो ५, विनय करें तो ६, कपटरहित तप करें तो ७, संसार असार जाणें तो ८, चोखणा पचोखणा करें तो ९, ज्ञानवंतने पास जाणें तो १०, इंद्रीयोना विषय त्यागें तो ज्ञान वधे ११. ८

## ॥ अथ बारमा बोल लिख्यते ॥

१२ साधुनी १२ पडिमा. पहिली १ मासनी १ दात अन्नरी १ दात पाणीनी १. बीजी २ मासनी २ दात अन्नरी २ पाणीरी २. त्रीजी ३ मासनी ३ दात अन्नरी ३ दात पाणीरी ३ चोथी ४ मासनी ४ दात अन्नरी ४ दात पाणीनी ४. पांचमी ५ मासनी ५ दात अन्न ५ दात पाणी ५. छठी ६ मासनी ६ दात अन्न ६ दात पाणी ६. सातमी ७ मासकी ७ दात अन्नरी ७ दात पाणीकी ७. आठमी ८ नवमी ९ दशमी १० सात दिनरी एकांतरे उपवास करे त्रिण आसण करे १० इग्यारमें छभक्त करे अहोरात काउसग्ग करे ११ बारमी पडिमा अष्टभक्त ३ करे मसाण भूमिमे १ रात्रि काउसग्ग करे तिहां ३, उपसर्ग ऊपजे देवता १ मनुष्य २ तिर्यचनो ते सहे तो ३ गुण ऊपजे अवधिज्ञान १ मनपर्यव ग्यान २ केवलग्यान ३; जो नही सहे तो ३ औगुण होय गहिलो १ गुंगा २ बावला ३ होयजाय १६ रोग माहिलो कोइ रोग ऊपजे धर्मथी भ्रष्ट होय.

१२ साधु १२ कुलनी गोचरी करे. उग्र कुलाणिवा १, भोग कुलाणिवा २, राय कुलाणिवा ३, खत्री कुलाणिवा ४, इखाग कुलाणिवा ५, हरिवंस कुलाणिवा ६, एसीय कुलाणिवा ७, वैसीय कुलाणिवा ८, कोठाग कुलाणिवा ९, गंमाग कुलाणिवा १०, गांमरख कुलाणिवा ११ वोकसालिय कुलाणिवा १२. २

१२ बारे बोल करी परम कल्याण करे. सम्यक्त्व निर्मल पाले तो आत्मा परम कल्याण करे श्रेणिक राजांनी परे १, नियाणा रहित करणी करे तो परम कल्याण करे तामली तापसनी परे २, मन वचन कायाका जोग सुभ वरतावे तो आत्मा परम कल्याण करे ३, गजसुकमालनी परे छती सक्ति खमा करे तो आत्मा परम कल्याण करे प्रदेशी राजानी परे ४, पांच इंद्री दमे तो आत्मा परम कल्याण करे. धन्ना अणगारनी परे ५, साधूनो आचार पाले तो आत्मा परम कल्याण करे गोतमस्वामीनी परे ६, धर्म ऊपरि श्रद्धा परतीत ल्यावे तो आत्मा परम कल्याण करे. वारुणनांमनतुवाना मित्रनी परे ७, माया कपटाइ छांडे तो आत्मा परम कल्याण करे श्री मल्लिनाथजीका छ मित्रनी परे ८, रोग आया हायवोय न करे तो आत्मा परम कल्या-

ए करे अनाथिनी परे ९, आश्रवमें संवर निपजावे तो आत्मा परम कल्याण करे संजती राजानी परे १०, परिसह आया समभाव वर्त्ते तो आत्मा परम कल्याण करे मेतार्यजीनी परे ११ आइ ममता पाळी लेवे तो आत्मा परम कल्याण करे कपिल मुनिनी परे १२.

३

१२ तपस्याना १२ भेद. अणसण १, ऊणोदरी २, भिक्षाचरी ३, रसपरीत्याग ४, कायक्लेश ५, पडिसंलिणता ६, प्रायछित्त ७, विनय ८, वेयावच्च ९, सिद्धाय १०, ध्यान ११ काउसग्ग १२.

४

१२ बारे भावना. अनित्य भावना भरतजी भावी १, असरण भावना अनाथिजीने भाइ २, संसार भावना शालिभद्रजीने भाइ ३, एकत्व भावना नमिराय ऋषि भाइ ४, अन्य भावना मृगापुत्रजी भाइ ५, अशुची भावना सनंतकुमार चक्रवर्त्ति भाइ ६, आश्रव भावना समुद्पालजी भाइ ७, संवर भावना केसीकुमार गोतमजी भाइ ८, निर्जरा भावना अर्जुनमाळी भाइ ९, लोकस्वरूप भावना सिवराज ऋषिश्वर भाइ १०, धर्म भावना धर्मरुचिजी भाइ ११, बोधिबीज दुर्लभ भावना आदिश्वरना ९८

पुत्रो भाइ १२.

१२ बारे बोल श्रावकना. नव पदार्थ जाण होय १, देवतादिकनो साहाय वांछे नही २, देवादिक धर्मसुं डिगावे तो डिगे नही ३, श्री जिन वचन ऊपर संका कंखा आणे नही ४, सम्यक्तमें हाड़ २ नी मिजी रंगाणी होय ५, पूछी २ ने निरणय करे ६, रिदय फिटक सरिखो निर्मलो ७, प्रतितकारीया घरमे जाय ८, जीमतां घरका बारणा ऊघाडा राखे ९, साधुजीने १४ प्रकारनो प्रासुक दान देवे १०, आठम चउदश पक्खि अमावास महिनेमें ६ पोसा करे ११, छती शक्ति धर्म करणीमें आपणो बल गोपवे नही १२.

१२ बार प्रकारनो आहार पाणी परिठवणो पिण भोगवे नही. आधाकर्मि १, उद्देशीक २, सूतीकर्म ३, मिश्र ४, सचित्त अचित मिल्या ५, अद्धोपरे ६, सिझातरनो ७, सचित्त पाणीनी बुंद पड़े तो ८, खेताइ जाइ कंते ९, कालाइ कंते १०, मगाइ कंते ११, पमाणाइ कंते १२.

१२ बारे संभोग. उपधि वस्त्र पात्रनो लेवो १, सूत्र सिद्धांत लेवो वाचणी लेवी देवी २,

आहार पाणी लेवो ३, मांहोमांहि नमस्कारनो करवो ४, सिष्यादिकनो देवो ५, निमंत्रणा करवी ६, मांहोमांही खमा होणा ७, कीर्त्तिगुणग्राम करेइ ८, वैयावच्च करणी ९, एकठा मिलबो १०, एक आसण बेसवो ११, कथा प्रबंधनो कहिवो १२. ८

१२ बारे उपयोग. ५ ज्ञान ३ अज्ञान ४ दर्शन एवं १२. ९

१२ बारे बोल करी भव्य जीवकुं पिछतावणा पडे. छती जोगवाइ साधकुं दान नही देवे तो १, दान देइने पछितावे तो २, दान देता वर्जे तो ३, छती जोगवाइ समाइक न करे तो ४, सामायक करतांने वर्जे तो ५, छती शक्ति तपस्या न करे तो ६, करताने वर्जे तो ७, साध आया तेहनी वाणी न सुणे तो ८, साधुकी निंद्या करेतो ९, साधुकुं वंदणा नही करे तो १०, छती योगवाइ भणे नही तो ११, छती जोगवाइ पाट पाटला थानक नही देवे तो १२. १०

१२ बारे मुक्तिनां नाम. इसितिवा १, इसिपब्भारातिवा २, तणुतिवा ३, तणुतणुतिवा ४, सिद्धितिवा ५, सिद्धालएतिवा ६, मुत्तितिवा ७, मुत्तिलएतिवा ८, लोयग्रेतिवा ९, लोयग्रेथुभोतिवा १०, लोयपेढिबुझणातिवा ११, सवपाणभूयजीवसत्वसुहातिवा. ११

१२ अप्रसस्तमनविनयका बारे भेद. पापकारी मन प्रवर्त्तावे १, क्रियाकारी मन प्रवर्त्तावे २, कठोरकारी मन प्रवर्त्तावे ३, नठोरकारी मन प्रवर्त्तावे ४, करगसकारी मन प्रवर्त्तावे ५, कम्वाकारी मन प्रवर्तावे ६, आश्रवकारी मन प्रवर्त्तावे ७, छेदकारी मन प्रवर्त्तावे ८ भेदकारी मन प्रवर्त्तावे ९, उद्वेगकारी मन प्रवर्त्तावे १०, परतापनाकारी मन प्रवर्त्तावे ११, सर्वभूतप्राणी जीवने घातकारी मन प्रवर्त्तावे १२. १२

१२ प्रसस्तमनका विनय बार भेद. निरवद्यकारी मन प्रवर्त्तावे १, अक्रियाकारी मन प्रवर्त्तावे २, अकठोरकारी मन प्रवर्त्तावे ३, अनठोरकारी मन प्रवर्त्तावे ४, अकरंगसकारी मन प्रवर्त्तावे ५, अणकम्वाकारी मन प्रवर्त्तावे ६, संवरकारी मन प्रवर्त्तावे ७, अछेदकारी मन प्रवर्त्तावे ८, अभेदकारी मन प्रवर्त्तावे ९, अणउद्वेगकारी मन प्रवर्त्तावे १०, अपरतापनाकारी मन प्रवर्त्तावे ११, सर्वभूतकारी प्राणी जीवकुं साता उपजावणकारी मन प्रवर्त्तावे १२. १३

१२ निर्जरातत्त्वना बार भेद कहे छे. प्रथम छ प्रकारे बाह्यतप. अनशनतप १, ऊणोदरी तप २, वृत्तिसंक्षेप तप ३, रसत्यागतप ४, कायक्लेशतप ५, संलीनता तप ६, छ प्र-

कारे अभ्यंतर तप. प्रायछित तप ७, विनयतप ८, वैयावच्चतप ९, सिद्धायतप १०, ध्यानतप ११, उत्सर्गतप १२. १४

१२ कल्प याने आचारवान देवता ते बारलोकना भेदे करी बार प्रकारे छे तेहनां नाम. सौधर्म देवलोक १, ईशानदेवलोक २, सनत्कुमारदेवलोक ३, माहेंद्रदेवलोक ४, ब्रह्मदेवलोक ५, लांतकदेवलोक ६, महाशुक्रदेवलोक ७, सहस्रारदेवलोक ८, आनतदेवलोक ९, प्राणतदेवलोक १० आरणदेवलोक ११, अच्युतदेवलोक १२. १५

१२ उपयोग बार प्रकारे छे. मतिग्यान १, श्रुतिग्यान २, अवधिग्यान ३, मनपर्यवग्यान ४, केवलग्यान ५, मतिअग्यान ६, श्रुतअग्यान ७, विभंगअज्ञान ८, चक्षुदर्शन ९, अचक्षुदर्शन १०, अवधिदर्शन ११, केवलदर्शन १२. १६

१२ बार वानां पामवा दुर्लभ छे. मनुष्यभव १, आर्यक्षेत्र २, मातापितानोपक्ष शुद्ध ३, मार्गानुसारी ४, रूपवंतपणुं ५, नीरोगता ६, पूर्णआउखो ७, भलीबुद्धि धर्म सांभलवो ९, धर्मनी रुचि १०, सद्दहणा ११, धर्मने विषे उद्यम १२. १७

१२ अथ बारह व्रत श्रावकका तिणमें पांच अणुव्रत उसका स्वरूप लिख्यते है. प्रथम

अणुव्रतमे श्रावक चलते फिरते त्रस्य जीवकुं जानबुझके मारनेकी बुद्धि करके न मारे, घुणा हुवा अन्नभट्टीमें भुनावें नही और घुणा अन्न पीसें पीसावें नही और द-लें दलावें नही और सिरका गेरे नही और मखीका गत्ता तोमें नही और गोबर स-मावें नही और विना गने पाणी पीवे नही और रस चलित पदार्थको वर्ते नही अ-र्थात् जिस खानें पीनेंकी चीजका अपनें वर्ण गंध रस स्पर्शसे प्रतिपक्ष अर्थात् मी-ठेसें खट्टा और खट्टेसें कडुआ वर्ण गंध रस होय गया और जिस आदामें तथा मि-ष्टान्न पकान बुरा आदिमें लट पड़ जाय तो उसे वर्तें नही अर्थात् बहुत कालकें लियें वस्तु संचय करके रखे नही जेसेकि चतुर्मासमें आठ तथा पंद्रह दिनकें उ-परांत काल तक संचय करें नही और ग्रीष्मकाल गर्मीमें १५ दिन व एक महीनेसें उपरात संचय करें नही और शीत कालमें एक महीने तथा देढ महीनेसें उपरांत संचय करें नही और चैतके महीनेसें लेकर आसोजके महीने तक रोटी दाल आ-दिक ढीली वस्तु रातवासी रखके खाय नही ऐसे पहले अनुव्रतके पांच अतिचार कहे है. १ प्रथम नौकरको तथा पशु घोडा बैल आदिकको तथा पक्षी काग सूआ

दिकको रीस करकें पिंजरेमें तथा रस्सी आदिकसें बांधे नही २ दूसरे नोकर आदि-कको तथा पशु बेल घोमा आदिकको क्रोध करीने गाढा घाव मारें नही ३, कुत्तेकें तथा बेल आदिकके अंग ( अवयव ) कान पूछ आदि छेदन करें नही, ४ ऊंट घोमे बेल गधे तथा गामी आदिमें सामर्थ प्रमाणके उपरांत भार धरें नही, ५ नोः करकें तथा पशु गाय घोमे आदिकके घास खानेकें समय अंतर दे नही अर्थात् भूखें रखें नही ॥ इति प्रथमानुव्रतम् ॥ १ ॥

॥ अथ थूल मृषावाद स्वरूप ॥ दूसरे अनुव्रतमें विना मर्यादा मोटा जूठ बोलें नही यथा सूत्र कन्नाली गोआली भूआली थापणमोसा कूमी साख इत्यादि जूठ बोलें नही जब तक जीवे तो फीर ऐसे कभी न करें १, किसीकुं जूंठा कलंक अ-र्थात् तहोमत लगावें नही २, किसीके छीपे हुवें अपराधको प्रगट करें नही क्योंकी कोई चाहें कैसाहीहो न जानें अपनी बुराई सुनकर कुछ आपघात आदि अकार्य करतें इत्यर्थ ३, जूंठा उपदेश करें नही जैसेंकी मेंने तो जूठ बोलता नही तुमने अमुक कार्यमें अमुक जूठ बोल देना ऐसें कहें नही ४, स्त्रीका मर्म अनाचार बिल-

कुछ प्रगट करें नही क्योंकी स्त्री चंचल स्वभाव होती है सो पहिले तो बुराई कर लेती है और पीछें बुराईको सुनकर जलदीहि कुएमें कुद पम्ती हैं इत्यर्थः स्त्रीका मर्म प्रकाशित न करें अथवा किसीकीभी चुगली न करें, ५ जूठी बही चीठी लिखें नही ॥ इति द्वितीयानुव्रतम् ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय अनुव्रत प्रारंभ ॥ तीसरे अनुव्रतमें ताला तोम्ना १, धरी वस्तु उठा लेनी २, कुंची लगानी ३, राहगिर लूट लेने ४, पम्ी वस्तु धनीकी जानके घरनी ५, इत्यादिक मोटी चोरी करें नही जब तक जीवें तो फिर ऐसा अकार्य कभी न करें १, कोई चीज चोरकी चुराई जानकर फिर सस्ती समझ कर लोभके वश होकर लेयें नही २ चोरको सहारा देवें नही जैसेकी जावो तुम चोरी कर लावो में ले लुंगा और तेरेपै कष्ट पम्ेगा तो में सहारा दुंगा ३ राजाकी जगात मारे नही ४ कम तोल कम माप करें कही ५ नयी वस्तुकी बानकी दिखाकर फिर उसमें पुरानी वस्तु मिलाके देवें नही ॥ इति तृतीय अनुव्रतम् ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ अनुव्रत प्रारंभः ॥ चोथे अनुव्रतमें स्व परणीत स्त्रीपें संतोष करें

परस्त्रीसें कामसेवनका त्याग करें यावज्जीवतक फिरत्नी कत्नी ऐसा न करें १ अपनी मांगी हुई स्त्री जैसैकी उसी सहरगें सगाई होय रही होय तो उस मांगी हुई स्त्री सें काम सेवें नही क्योंके वहविवाहीता नही २ अपनी व्याही हुई स्त्री छोटी उमरकी हो तो उसकें साथ काम सेवें नही क्योंकी उसे कामकी रुचि नही हुई है.३ परस्त्री कुमारी व व्याही अविधवा तथा वेश्या हो तिसके संग कुचमर्दन आदि कामक्री मा करें नही उर शीलवान माता तथा भगिनी आदिकके पलंगादिक एक आसनमें वैठें नही उर ८ वर्षके उपरांतकी बेटी हो तो उसे अपनी शय्यामें निद्रागत करें नही अर्थात् सुलावें नही उर ऐसेही स्त्रीकु चाहीयेकी अपने पतिके सिवाय उर कोई बहनोई तथा ननदोई तथा कोई उर प्राहुणा तथा नोकर वा पडोसी हो तिसके सामने कटाक्षनेत्रसें देखें नही तथा दंतपंक्ती प्रकटायके हंसे नही उर विना कार्य बोलें नही उर पूर्वोक्त मनुष्योके साथ अकेली रस्तेमें बार चलें नही तथा एकांतस्थानमें अकेली रहें नही उर विधवास्त्रीको तो विशेषही पूर्वोक्त कार्य वर्जित है उर विधवास्त्रीको शृंगार न करना चाहीयें क्योंकी जब मैथुन त्यागा गया

तो फिर शृंगार करनेकी क्या जरुरत है उंर आठ वर्षके उपरांत पुत्रादिकको अपने साथ पलंगपर सुआवे नही उंर पिता भ्राता श्वसुर जेठ देवर आदिकके बराबर एक आसन बेसे नही. क्योंकि अग्नि घृत के दृष्टांत अकार्य मैथुनके प्रसंगसे लोक व्यवहारमें अपयश होता है और गर्भादि कारण होनेसे आपघात बालघातादि दुषण होता हे. उंर दूषणके प्रभावसे परलोकमें नरक प्राप्त होकर (अग्नि प्रज्वालन) तात्ते थंभ बंधन मारन ताम्न जम पराभवरूप दुःखोंका भागी होता है तिणे कारणसे काम क्रीम्रा हास्य विलास करे नही ४ चोथें पराये नाते रिस्ते सगाइ व्याह जोमे नही ५ कामभोगपर तीव्र अभिलाषा करे नही ॥ इति चतुर्थ अनुव्रत ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम अनुव्रत प्रारंभः ॥ पंचम अनुव्रतमें तृष्णाका प्रमाण करे सो परिग्रह अर्थात सोना चांदी उंर रत्नादिक तथा मकानात खेत माल गाय भेंस उंर घोम्रा आदिककी मर्यादा करे जैसेकी में इतना पदार्थ रखुंगा उंर इतने उपरांत नही रखुंगा उंर फिरभी एसे न करे पूर्व करी मर्यादा उलंघे. जैसेकि मेने ५००० हजार रुपीया रखाथा उंर अब ज्यादा रुपीया होय गया तो अब मकानादि बनवा दूंगा

अपितु ज्यादा होय जाय तो अन्यदानादि धर्मोपकारमें लगाय देवे ॥ इति पंचम अनुव्रतम् ॥ ५ ॥

॥ अथ सात शिक्षाव्रत लिखते है सो इन ७ सिक्षाव्रतोमेंसे प्रथम तीन गुणव्रत कहते है. इन तीन गुणव्रतोकें अंगीकार करनेसें पूर्वे पांच अनुव्रतोको संवररूप गुणकी पुष्टि होती है ॥ अथ प्रथम गुणव्रत प्रारंभः प्रथम गुणव्रतमें दिशाकी मर्यादा करे जेसेकी उंची नीची दिशा पर्वत महल ध्वजादिक उंर नीचि दिशा कुआ भुमि गृह आदिक और तिर्छि दिशा पूर्व १ दक्षिण २ पश्चिम ३ उत्तर ४ इत्यादिक दिशाउंकी मर्यादा करे. जैसे कि में इतने कोस उपरांत स्वेछा काया करी आरंभ व्यापारादिके निमित्त जाउंगा नही क्योंकि उतने कोस उपरांत बाहिरले क्षेत्रके छकायके हिंसारूप वैरकी निवृत्ति रहेगी. फिर ऐसे न करेकि पूर्वे जो उंची नीची तिर्छि ३ दिशाका जितना प्रमाण करा हो उस विसरा देवे, क्योंकि जो विसारेगा तो शायद जादा जाना पड़ जाय उंर ४ चोथे एसे न करेकि मैने पूर्वकी दिशाको ५० जोजन जाना रखा है सो पश्चिमको जानेका तो काम कम पड़ता है और पूर्वको

बहुत दूर तक जाना पड़ता है तो पश्चिमका २५ योजन जाउंगा और पूर्वकुं ७५ जोजन चला जाउंगा एसे करे नही ५ पांचवें एसे भ्रम पड़ गया होकि मैने न जाने पश्चिमको ५० योजन रखाथा और पूर्वको १०० योजन रखाथा; न जाने पश्चिमको १०० रखाथा; तो पूर्व और पश्चिमको ५० योजन उपरांत जाय नही ॥ इति प्रथम गुणव्रतम् ॥ ६ ॥

॥ अथ द्वितीय गुणव्रत प्रारंभः द्वितीय गुणव्रतमें उपभोग परिभोग पदार्थका यथाशक्ति प्रमाण करे अर्थात उपभोग्य पदार्थ उसको कहते है कि जो पदार्थ वार २ भोगा जाय जैसेकी फूल कपड़ा स्त्री मकान आदि सोएसे पदार्थोंकी मर्यादा कर लेवे क्योंकि संसारमें अनेक पदार्थमें और सर्व पदार्थ पांच प्रकारके आरंभसे सभीके वास्ते बनते है सो मर्यादा करे. विना पदार्थोंकी पैदायशका आरंभरूप पाप हिस्से बमूजिम आता है क्योंकि इछाके प्रमाण करे विना न जाने कोनसा शुभाशुभ पदार्थ भोगनेमें आ जाय. जिणसे एसे मर्यादा कर लेवे कि जैसे २४ चोवीस जातिका धान्य हे अर्थात् अन्न हे, तिस्की मर्यादा करे की इतने जातिके अन्न नहि

खाऊंगा जैसेकी मरुआ चोलाइ कंगनी साक इत्यादि धान्यका बिलकुल त्याग करे और फलोंकी मर्यादा करे. परंतु जो जमीनमें फल उत्पन्न होता है जैसेकी लशन गाजर मूली इत्यादि लाखोंकि सम है और जो त्रस जीव अर्थात चलतफिरते जीवसहित फलफूल सागहो जैसेकी गुलरफल पीपलफल बम्फल आदि और फूल कचनार फूलसिबल फूलगोभी आदि और सागनूणी सागचणा इत्यादि तो बिलकुलही त्यागने चाहिये और अज्ञात फलभी न खाना चाहिये और ऐसेही ए प्रकारकी विगय सूत्र समाचारीमें कही है. डुग्ध १ दही २ मक्खन नोणी ३ घृत ४ तेल ५ मीठा गुड़ आदि ६ मधु शहद ७ मद्य मदिरा ८ मांस ए इति सो इनकी मर्यादा करे परंतु मद्य १ मांस २ ये विगय सर्व आर्य पुरुषोने अभक्ष कही है सो इनको विलकुलही त्याग और ऐसेही चर्मगाल सण ऊंन रेशम और कपासके वस्त्रकी मर्यादा करे परंतु चर्मके वस्त्रतो विलकुल त्याग दे और रात्रि भोजनकाभी त्याग करे रात्रिभोजनमें महा दोष है स्वमत परमत सभीमें त्याग है इससे अवस्य त्याग और चवदह नेमभी इसी ब्रतमें गर्भित है सो चवदे बोलसे जाणना. फेर भोग परि-

भोग्यकी मर्यादावान ऐसे करेकि १ मर्यादा उपरांत सचित्त वस्तु फलादिक शुन्य चित्त अर्थात गाफिल होकर खावे नही और २ सचित्त वस्तुको स्पर्श कर मर्यादा उपरांतकी अचित्त वस्तुभी खाय नही जैसे वृक्षसे गुंद तोमके खाय तो गुंद अचित्त है और वृक्ष सचित्त है इत्यादि उर ३ अधपक्का खाय नही और ४ कुरीतपकाया जैसे हीर्ले भूर्थाआदिक-खाय नही और ५ भूख अनिवारक जिस औषधि अर्थात जिस फलसे भूख न मिटे उसे खाय नही जैसे जिस फलका थोमा खाना और बहूत गेरनेका स्वभाव हे, यथा ईख सीताफल अनार सिंघोमा जामन जमोया कैत बिल्ल इत्यादि खाय नही, अथ दूसरे गुणव्रतमें अशुद्ध कर्त्तव्यकाभी त्याग करे जैसेकी १५ कर्मादान सो पनरमें बोलसे जाणना ॥ इति सप्तम व्रतम् ॥

॥ अष्टम गुणव्रत प्रारंभः ॥ अनर्थदंम अर्थात् नाहक कर्मबंधका ठिकाना तिसका त्याग करें वह अनर्थदंम च्यार प्रकारका है. १ प्रथम अवज्झाणचरियं सो आर्त्तध्यान अर्थात् १ मनोगम पदार्थके न मिलनेकी चिंता २ अमनोगम पदार्थ मिलनेकी चिंता ३ भोगोके न मिलनेकी चिंता और ४ रोगोके मिलनेकी चिंताका क-

रना २ दूसरा रौद्रध्यान अर्थात् प्रथम हिंसानंद सो हिंसाकर कर्मके विचारमें ध्यान होता जैसेकि मेरी सोकन तथा सोकनका पूत किस उपायसें मारा जाय और कब मरेगा तथा मेरी स्त्री रोगी है वा कुरूपा कलहकारी है सो कब मरेगी और यह बुढाबुढी कब मरेंगे तथा मेरे वैरीका नास कब होयगा और वेरीके शोक कब पडेंगा तथा वेरीके घरमें तथा खेतमें आग कब लगेंगी इत्यादि और दूसरे मृषानंद सो जूठ बोलने के तथा जूठा कलंक देनेके उपाय विचार रूप और ३ चौर्यानंद सो चोरीके ठलके विश्वासमें देनेके प्रसंग ठगी करनेके उपाय विचाररूप और चोथे ४ संरक्षणानंद सोधन धान्यके पैदा करनेके तथा धन धान्यकी रक्षा करनेके हिंसाकारी उपाय विचाररूप अर्थात् चूहे घी खाते है तो बिल्ली रखलें इत्यादि सोचे. आर्त्तध्यान उर रौद्रध्यान, ध्यानमें अनर्थ अर्थात् नाहक कर्मबंध हो जातें है अथ दूसरा अनर्थदंड प्रमादाचरण सो प्रमाद ५ पांच प्रकारका है तिसका आचरण सो प्रमादआचरण होता है सो १ प्रथम निद्रा प्रमाद सोंचें मर्यादा वखत बेवखत मो रहना यथा निद्रा चार प्रकारकी है १ स्वल्पनिद्रा २ सामान्यनि-

द्रा ३ विशेषनिद्रा ४ महानिद्रा. स्वल्पनिद्रा सो सात प्रहर जागना और एक पहर सोना तिसकुं उत्तम पुरुष कहते है. और दूसरा सामान्यनिद्रा सो पांच पहर जागना और त्रण पहर सोना तिसकों मध्यम पुरुष कहते है. और तीसरे विशेष-निद्रा सो चार पहर जागना और चार पहर सोना तिसको जघन्य नर अर्थात् नीच नर कहतें है. और महानिद्रा सो तीन पहर जागना और पांच पहर सोना [illegible] नर कहतें है. परंतु रोगादिक कारणकी वात न्यारी है. और २ रा विक-[illegible] विवेकवान रखे नहीं. [illegible] दिककी कथा करनी और देशोके खाने पकान व्यंजन [illegible] उस उपकरणसें [illegible] के चाल चलन आदि चोरोंकी जारोंकी राजाओंकी क-[illegible] नाहक कर्मबंध। और ३ तीसरे विषयप्रमाद सो बाग बगीचा नाटक [illegible] वतक तो [illegible] ना और पराये वर्ण गंध रस स्पर्श देखके जुलसना और फां[illegible] [illegible] न्दित पुरुषको देखना क्योंकि वहां एसे परिणाम होवें का [illegible] फांसी लगें कब घरकुं जावे इत्यादि. और ४ चोथे कषायप्र-माद क्रोधमें [illegible] जलना और मानमें नमेवना और माया अर्थात् दगाबाजी

याने ठलसें बात घमनी और लोप संज्ञामें प्रवर्त्तना जैसे कोई अकलका अंधा और गांठका पूरा आय जाय इत्यादि और ५ पांचवे आलस्यप्रमाद सो गुरु दर्शन करनेका और व्याख्यान सुणनेका आलस्य जैसेंकी धूप पमती है अब कौन जाय. और सामायिक करनेका आलस्य कि अबतो गर्मी पमती है तथा शीत पमती है कौन सामायिक करें. और साधूको आहार अर्थात् भिक्षा देनेका आलस्य करेंकी अरे अमुक तुही देदे, मैं तो लेटाहुं. इत्यादि तथा घी तेल तथा आचारका बर्त्तन गुम तथा सहतका बर्त्तन इत्यादिक उघामा आलस्य करकें रखें तो नाहक कर्म बंध जाते है. क्योंकि अनेक जंतु स्थूल सूक्ष्म पूर्वोक्त भाजनोमें गिर गिरके मूब मूबके मरजाते है इति द्वितीय अनर्थदंम २. अथ ३ रा अनर्थदंम. पापकर्मोपदेश सो अपने मतलब विना हरएक पास पमोसी आदिकको ऐसें कहनाकि अरे तेरे बबमे बमे होय गये है इनकु बधिया कराले तथा तेरी गाय घोमी सुनी होय गई है इनकु गर्भन करालें तथा तेरी बेटी सुनी हो गई है इसको व्याह दे तथा आम आमले आदिक बहुत बिकने आये हैं सो तुम बेठे क्या करते हो, जाउ ले आउ,

आचार गेर लो अबतो सस्ते मिलते है तथा अरे तेरे खेतमें झाम्पिये बोहोत हो गई है तथा बाड़ पुरानी होय गई है सो इनको फूंक दे इत्यादि. इति तृतिय अनर्थदंड ३. अथ ४ चोथा अनर्थदंड. हिंसाप्रदान सो हल मुसल चक्की चर्खा दांती कुहाड़ा घीयांकस कांटा मोल निकालनेका कोहलु इत्यादि तथा शस्त्रकी जाती तथा टोकना कड़ाहा आसमाना इत्यादि उपकरण अपने वर्त्तनेसे ज्यादा रखने सो विवेकवान रखे नही. क्योंकि ज्यादा रखेगा तो हरएक माग ले जायगा तो वहले जानेवाला उस उपकरणसें षटकाय हिंसारूप आरंभ करेगा. तव उसको आरंभका हिंसा आवनेसें नाहक कर्मबंध होंगे. इस च्यार प्रकारके अनर्थदंडका बुद्धिवान् पुरुष त्याग करें यावज्जीवतक तो फिर ऐसें न करें. १ प्रथम कंदर्प्प सो हांसी विलास ठठा ( मश्करी ) कामविकारके दिपानेवाले गीत राग रागनी दोहा छंद इत्यादिक निरर्थक चित्त मलीन करनेंके और सोग पैदा करणेंके कारण है. सो न करे और २ दूसरा कुकच सो भंडचेष्टा जैसेकी काणेकी अंधेकी लंगड़ेकी गूंगेकी खाज आदि रोगीकी नकल न करनी याने वैसे वनके दिखाना फिर हड़हड़ करके हंसना उर

औरोंको हंसाना और तिलस्मात् इन्द्रजाल करके कुतुहल करना तथा ख्याल तमाशे सांग नाटकका देखना तथा चोपड गंजीफा गोली कौडीसें खेलना इत्यादि निर्थक कालका और काजका विगोवना है क्योंकि इसमें कुछ लाभका कारण नहि है इसीसें जंम चेष्टा न करें. और ३ तीसरे मुखारिसो नाहक गाली देना याने गाली बिना बातका न करना तथा मातापिता और शाहका जंर विद्या गुरुका सामना कडुआ बोलना और निंदा करना तथा देवगुरु धर्मकी कसम खानी और तुं तुं क्या है इत्यादि निरर्थक कलहका करना सो न चाहिये. और ४ चोथे संयुक्त अधिकरणासोपायकारी उपकरण पूर्वोक्त घाज घानती हल मूसल आदिक बहुत रखने. सो रक्खे नही. और ५ में उपभोग्य अतिरिक्त सो खानेकी पीनेकी पहरनेकी वस्तु पै बहुत मोह करना और अनहुई वस्तुकी चाह करनी. जैसेकी मेरी पडोसीकी दुकान हवेली स्त्री आदिक क्या अछी है, आह मेरे ऐसी ऐसी क्यों न हुई मुजेभी ऐसी चाहीये. इत्यादि तीव्र अभिलाषा करनी न चाहीये इति तृतीय गुणव्रतम् ८

॥ अथ प्रथम शिक्षाव्रत प्रारंभः ॥ प्रथम शिक्षाव्रतमें सामायक करें सो सामा-

यिक च्यार प्रकारकी. द्रव्यथकी १ क्षेत्रथकी २ कालथकी ३ भावथकी ४ ते द्रव्य थकी सामायिक १ तथा २ खेत्रथकी लोक प्रमाण कालथकी २ घडी तथा ४ घडी ३ भावथकी शान्ति प्रणाम और सर्वभूत आत्मकल्प शत्रु मित्रसम ४ इत्यादि अथवा ४ प्रकारकी सामायिककी शुद्धता सो १ द्रव्यथकी २ खेत्रथकी ३ कालथकी ४ भाव-की. सो द्रव्यथकी सामायिक शुद्ध सामायिकका उपगरण शुद्ध अर्थात् आसन शुद्ध रक्खे जैसेकी बहुत करडा तप्पड आदिकका न रक्खे क्योंकी कोई मकोडी आ-दिक जीव मसला न जाय और बहुत नर्म नमदादिककाभी न रक्खे क्योंकि कोई पूर्वोक्त जीव फसके न मर जाय. सोलोइ तथा कंबल तथा बनात तथा और सामा-न्य वस्त्रका आसन रक्खे उंर पत्थर आदिककी भारी माला न रक्खे. सूतकी तथा काष्ठकी माला सोभी हलकी होय तो रक्खे और पूजन आनुपूर्वी पोथी शुद्ध रक्खें १ क्षेत्रथकी सामायिक शुद्ध सो पूर्वोक्त एकांत स्थानक सामायिक करें अपितु नाटक चेटकके स्थान तथा चुल्हे चक्कीके पास न करें. क्योंकी नाटक चेटक रागादिक देखने सुननेसें शायद श्रुति सामायिकसें निकल जाय और चुल्हे चक्कीके पास सचित्तका

संघट्ट होय जाय तथा बालबच्चेके आवजावसें चित्त भंग होय जाय इत्यर्थः २ और सामायिक शुद्ध सो लघुनीति वडीनीतिकी बाधाका काल न होय तथा राजादिक-के बुलानेका यानि कचहरी जानेका काल न होय क्योंकी चित्त व्याकुल होय जायगाकि कब सामायिक पूरी होय और कब जाऊं इत्यर्थः ३ भावशुद्ध सो पूर्वोक्त भावका शुद्ध रखना ॥ इति प्रथम शिक्षाव्रतम् ॥ ९ ॥

॥ अथ द्वितीय शिक्षाव्रतम् प्रारंभ ॥ द्वितीय शिक्षाव्रत दिशावकासी सो छठें और सातवें व्रतमें दिशाका और उपभोग परिभोगका विस्तारसहित और यावज्जीवतक प्रमाण कियाथा सो उसमेंसे दसवें दिशावकाशीव्रतमें दो घडीसें लेकर चार छ मास लगकी बहुत मर्यादा कर लेवें यथा सूत्रम् ॥इति द्वितीय शिक्षाव्रतम् ॥१०॥

॥ अथ तृतीय शिक्षाव्रत प्रारंभः ॥ तृतीय शिक्षाव्रत पोसोपवास सो द्वितीया पं-चमी अष्टमी एकादशी चतुर्दशी तथा पक्षीके दिन वा जिस दिन बन आवें उसी-दिन पोषधसाल अर्थात् एकांत मकानमें चारों आहार मैथुन और सावद्य व्यापार-का परित्याग करके सूर्योदयसें अगले सूर्योदय तक बेठा रहें यथा सूत्र पोसा करें

देवगुरु धर्मकी महिमारूप स्वाध्याय करें और पढ़ना पढ़ाना सिखना सिखाना आदिक धर्मकार्य करता रहे और जो पूर्वोक्त तिथियोंको पोषाव्रत न बन आवें तो पक्षीको जरूर करें उंर जो पक्षीको न बन आवें तो चोमासीको करें और जो चोमासीकोभी न बन आवें तो छमछरीको तो जरूरही पोषा करें क्युंकी वर्षदिनमें एक दिन तो सफल होय जाय इत्यर्थ ॥ इति तृतीय शिक्षाव्रतम् ॥ ११ ॥

॥ अथ चतुर्थ शिक्षाव्रत प्रारंभः ॥ चतुर्थ शिक्षाव्रत आतिथ्यसंविभाग सो तथा रूप श्रमण साधु त्यागी पुरुषको निर्दोष प्रासूक अन्न पाणी देवें परंतु ऐसें न करेंकी १ प्रथम जो प्रासूक अर्थात् अग्निआदिकसे तथा पीसन कूटन प्रमुखसें निर्जीव पदार्थ हो चूका हो तो फिर उसको सचित्त फल फूल बीज आदिक उपर रखना नही और २ दूसरे सचित्त वस्तु करकें प्रासूक वस्तु को ढकै नही क्योंकी जो ऐसे रखें तो उसको साधु महापुरुषके पडिलाभनेकी दान लब्धि कैसे होगी और उनकी भावना बिनतीभी निष्फल होय जायगी और ३ तीसरी साधुकी भिक्षाकी वख्त बीते पीछे भावना भावनी सो कालाइक्कम्मे दोष है क्योंकि समयपर भावना भावें तो शा-

यह सुफलभी होय जाय और विना समय तो अकालमें मेघ मागनेवत् है और ४ चोथे जो गृहस्थी आप एकांत बेठा हो तो प्रमादके वस होके दूसरेको आहारपानी देनेका काम न सोंपे अपितु आपही देवे क्योंकी आर्यदेश कुल आदिकी सामग्री विना सुपात्रदानकी योगवाइ कहां धरी हे इत्यर्थः और ५ पांचवे आहारपाणी दे-नेके पहिले वा पीछे अहंकार न करे जेसेकी में बडा दाता हुं मेरे तुल्य और यहां कौन दाता है हे नाथ जो आपको चाहिये सो यहांसे ले जाया करो अथवा मै दान डुंगा तो लोक मेरी बडाइ करेगे अपितु निर्जरा मोक्षार्थ उत्साह सहित दान देवे सो इस रीतीसे जेन धर्मकी प्रभावना होती है ॥ इति चतुर्थ शिक्षा व्रतम् ॥ इति बारह व्रत संपूर्णम् १२.

१२ -बारे भावना. १ अनित्य भावना. यह हमारा शरीर वैभव लक्ष्मी उर कुटुंब परिवार ए सर्व विनाशी है हुं आप अविनाशी हुं तो नश्वर वस्तुमें नाहक मूर्छा करके लुब्ध हुवा हुं. २ अशरण भावना. मृत्यु समय मेरा एश्वर्य लक्ष्मी उर कुटुंब परिवार मेरेकुं बचावेगा नही उर साथभी कोइ करेगा नही अशरण ऐसा मुझकुं एक धर्मकाही

शरणा हे ३ संसार भावना. में (हमारी आत्मानें) यह संसार समुद्रमें भमतां अनंता भव कर्या हे अब में उस बंधनसे कब छुटुंगा ४ एकत्व भावना. यह मेरी आत्मा एकली हे एकली आइ हे परभव एकलीही जावेगी ओर किया अशुभ कर्मफल आपही भोगेगी ५ अन्यत्व भावना. हुं किसीका नही ओर नही कोइ मेरा है ६ अशुचि भावना. यह उदारीक शरीर अपवित्र हे मलमूत्रकी खान हे रोग ओर जराका घर है में तिणसे जुदा हुं ७ आश्रव भावना. मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद अशुभ योग ओर कषाय यह पांच पापकुं प्रवेश करणेका रस्ता है अर्थात आश्रव हे ८ संवर भावना. समकित व्रत पच्चखाणं अप्रमाद शुभ योग ओर अकषाय यह पांच आवतां कर्मकुं रोकणेका दरवाजा हे अर्थात संवर हे ९, निर्ज्जरा भावना. अनशन उनोदरी वृत्ति संक्षेप रस त्याग कायक्लेष इंद्रिय पडिसंलीनता प्रायश्चित विनय वैयावच्च शास्त्र पठन ध्यान ओर काउसग ये बारह जो पूर्व बंधे हुवे पापोकुं बालनें वाले अभिसमान निर्ज्जरा हे १०, लोकस्वरूप भावना., मे अमुक घरमें हुं याने कूत्राके मेंढकवत अहंकारमें रह्या हुं परंतु चवदह राजलोकके अगाडी में ओर मेरा रहणेका

स्थान किस गिणतमे. ऊभा हुवा मनुष्यका आकारे रह्या चवद्द राजलोकमे नीचे भुवनपति व्यंतर ऊर सात नरक हे त्रिछीमे अढाइ द्वीप हे ऊंचे बारे देवलोक नव ग्रैवेक पांच अनुत्तर विमान ऊर ऊपर अनंत सुखमइ पवित्र सिद्धगतिकी नजीक सिद्धशिला हे ११ धर्म्म भावना भव २ में भ्रमण करतां २ सम्यक ज्ञानकी प्रसादी मेलणी अति दुर्लभ हे १२ बोधिदुर्लभ भावना धर्मके ऊपदेशक तथा शुद्ध शास्त्रका बोधक एसे गुरु ऊर श्रवण मिलना अति कठिन है ॥ इति भावना ॥

आपदा रूपीया तिणगा ४, हरख रूपणी रूई सोच रूपीया तिणगा ५, सिलरूई कुशील रूपीया तिणगा ६, ग्यानरूपी रूई अग्यानरूपी तिणगा ७, सम्यक्त्क रूई मिथ्यात्वरूप तिणगा ८, संयमरूप रूई असंयमरूपी तिणगा ९, तपस्यारूपी रूई क्रोधरूपी तिणगा १०. विवेकरूपी रूई अभिमानरूपी तिणगा ११, सनेहरूपी रूई मायारूपी तिणगा १२, संतोष रूपणी रूई लोभ रूपीया तिणगा १३. ३

१३ तेरे बोल. विद्यामें बुद्धिवंत नही .१, धर्मका प्यारा नही २, धनवंत नही ३, जातका निर्मल नही ४, दानको दातार नही ५, शूरवीर नही ६, रूपवंत नही ७, पंडित नही ८, बहूश्रुति नही ९, सो भागवंत नही १०, मिथ्यात्व गया नही ११, सदाकाल भली मनमें आवें नही १२, तपसी नही १३. ४

१३ तेरे काठीया. दूहा. जूवा १, आलस २, सोग ३, भय ४, कुकथा ५, कौतिक ६, कोह ७, कृपण बुद्ध ८, अज्ञान ९, भ्रम १०, निंद्रा ११, उंर मद १२, मोह १३.

१३ वेवढ पाडे वाटमे, करे उपद्रव जोर; जैसे देश गुजरातमें कहे काठीया चोर. २ आलस कर्म काठीयो १, मोह कर्म काठीयो २, अजस (उंगण) कर्म काठीयो ३,

प्रमाद कर्म काठीयो ४, कषाय कर्म काठीयो ५, रोग कर्म काठीयो ६, अविनय कर्म काठीयो ७, मान पूजा कर्म काठीयो ८, जय कर्म काठीयो ९, अंतराय कर्म काठीयो उपदेश नही लागे १०, अपजोग कर्म ११, निद्रा कर्म काठीयो १२, समदाणी कर्म काठीयो १३.

## ॥ अथ चवदह बोल लिख्यते ॥

१४ अजीवतत्त्वना १४ बोल कहे छे. धर्मास्तिकाय स्कंध १, धर्मास्तिकायदेश २, धर्मास्तिकाय प्रदेश ३, अधर्मास्तिकाय स्कंध ४, अधर्मास्तिकाय देश ५, अधर्मास्तिकाय प्रदेश ६, आकाशास्तिकाय स्कंध ७, आकाशास्तिकाय देश ८, आकाशास्तिकाय प्रदेश ९, कालवर्त्तना लक्षण १०, पुद्गलास्तिकाय स्कंध ११, पुद्गलास्तिकाय देश १२ पुद्गलास्तिकाय प्रदेश १३, पुद्गलास्तिकाय परमाणु १४. १४

१४ काल प्रमाण १४ भेद. प्रथम अति सूक्ष्म कालने एक समय कहियें १, तेवा असंख्याता समये एक आवलिका थाय २, तेवी १६७७७२१६ आवलिये एक मुहूर्त्त थाय ३, त्रीस मुहूर्त्ते दिवस एटले एक अहोरात्रि थाय ४, पंदर अहोरात्रे एक पखवाम्युं थाय ५, बे पखवाम्डीये एक महीनो थाय ६, बार महीने एक वर्ष थाय ७, तेवा ७०५६०००००००००० वर्षे एक पूर्व थाय ८, तेवा असंख्याता पूर्वे एक पल्योपम थाय ते आवी रीते च्यार गाउ लंबो अने च्यार गाउ पहोलो गोल आकारे ती-

एवा अनंता पुद्गल परावर्त्त संसारमें परिभ्रमण करतां जीवे व्यतिक्रम्या १४. २

१४ संघपट्टा नाम ग्रंथ तथा गुणप्राप्त नाम ग्रंथमें सम्यक्त्वने लायक मनुष्यमें चवदे बोल पावें. पहिले आपणी आत्मारो कल्याण करनेकी दृढ इछा होय १, गुणग्राही होय २, जूठने निंदवे ३, विनयवंत होय ४, निष्कपटी होय ५, सत्यवादी होय ६, पांचुं इन्द्रियाने दमणहार होय ७, कोमल हृदयरो धणी होय ८, नीतिवान होय ९, थिर चित्तनो धणी होय १०, हिमतबाहादुर होय ११, खरे धर्मरो अरथी होय १२, बुधवान होय १३, विवेकवान १४. ३

१४ शिक्षाके १६ बोल. १ मातापिता गुरु तथा मोटा पुरुषनो विनय करवो क्लेशने थानके मौनपणुं धारण करवुं, २ इंद्रीयो सर्वथा वश राखवी, ४ एक अक्षर शीखवनारने पण गुरु करी मानवो, ५ पोताना अवगुण शोधी काढवा, ३ महोटा पुरुष घेर आवें तो उभा थइ सन्मान देवुं, ७ दोस्तदारी मित्राचारी पंडितो साथे राखवी, ८ नवांनवां शास्त्र वांचवानो अभ्यास राखवो, ९ जे आपणी सगी थती नथी तेनी साथे बा अथवा बेन वा माता कहीने बोलवानो रीवाज राखवो १०, पुत्र पुत्रीने नानपणमांथीज

सारी संगत राखवी सदविद्या तथा धर्मना मूलतत्त्व शिखावना ११ जवान अवस्थामां पांचे इंद्रियोने वश करवी तथा रागद्वेष विषय अने कषायादिक जीतवा, १२ हुं मृत्युना मुखमां रह्यो छुं मारुं आयुष्य क्षणमात्र नथी एम मानी यथेष्टदान धर्म आचरवा, १३ सर्व वस्तुनो नाश थतो होय तोपण पोतानुं वचन अवश्य पालवुं, १४ कर्वुं होय ते बनते प्रयत्ने ज्ञाननी अने ज्ञानीनी विनय भक्ति करो अने लघुनीति वडीनीति स्नान मैथुन अने भोजन करती वखते शब्द उच्चारण न करो. ४

१४ जीवका भेद १४. एकेंद्रीका ४ भेद. सुक्ष्म एकेंद्री अपर्याप्ता १, पर्याप्ता २, बादर एकेंद्री अपर्याप्ता ३, पर्याप्ता ४, बेरेंद्री अपर्याप्ता ५, पर्याप्ता ६, तेरेंद्री अपर्याप्ता ७, पर्याप्ता ८, चोरेंद्री अपर्याप्ता ९, पर्याप्ता १०, असन्नीपंचेंद्री अपर्याप्ता ११, पर्याप्ता १२, सन्नी पंचेंद्री अपर्याप्ता १३, पर्याप्ता १४. ५

१४ गुणठांणा १४. मिथ्यात्व गुणठांणो १, सास्वादन गुणठांणो २, मिश्रगुणठांणो ३, अव्रत्ति सम्यग्दृष्टि ४, देशव्रत्ति गुणठांणो ५, प्रमत्त गुणठांणो ६, अप्रमत्त गुणठांणो ७, नियट्टिबादर गुणठांणो ८, अनियट्टिबादर गुणठांणो ९, सुक्ष्म संपराय गु-

णठांणो १०, उपशांत मोहनी गुणठाणो ११, क्षीणमोहनी गुणठांणो १२, सयोगी केवली गुणठाणो १३, अयोगी केवली गुणठांणो १४.

१४ समूर्छिम मनुष्य १४ ठिकाणे ऊपजें. उच्चारेसुवा वडीनितिमें १, पासवणेसुवा मूत्रमें २, खेलेसुवा खंखारमें ३, संघाणेसुवा नाकके मेलमें ४, वातेसुवा उलटीमें ५, पित्ते सुवा पीत्तमें ६, सोणिए सुवा खूनमें ७, पोयणीसुवा परुपासमां ८, सुक्के सुवा वीर्यमें ९, सुक्क पुग्गलपरिसाडे सुवा वीर्य सुका हुता फेर गिला हुवें उसमें १०, नगर निधमणे सुवा शहेरकी खालमें ११, स्त्री पुरुष संयोगे सुवा.१३, सबे असुइ ठाणेसुवा.

१४ पूर्व १४ ना नाम. उत्पात पूर्व १ हाथी प्रमाण मसी लिखता लागे १, अग्रणी पूर्व २ हाथी प्रमाण मसी लिखता लागे २, वीर्य प्रवाद पूर्व ४ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे ३, आस्ती नास्ती पूर्व ८ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे ४, ज्ञानप्रवाद पूर्व १६ हाथी प्रमाण मसी लिखता लागे ५, सत्यप्रवाद पूर्व ३२ हाथी प्रमाण मसी लिखता लागे ६, आत्माप्रवाद पूर्व ६४ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे ७, कर्मप्रवाद १२८ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे ८, प्रत्याख्यान पूर्व २५६ हाथी

प्रमाणे मसी लिखता लागे ९, विद्याप्रवाद पूर्व ५१२ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे १०, अविद्या पूर्व १०२४ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे ११, प्राण पूर्व २०४८ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे १२, क्रिया विशाल पूर्व ४०९६ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे १३, लोकबिंदुसार पूर्व ८१९२ हाथी प्रमाणे मसी लिखता लागे १४, सर्व हाथीनी संख्यां १६३८२ हुवा. ८

१४ जंबुद्वीपमें १४ मोटी नदी. गंगा १, सिंधू २, रोहिता ३, रोहिसा ४, हरिकंता ५, हरि सलिला ६, सीतोदा ७, सिता ८, नरकंता ९, नारीकंता १०, सोवन्नकुला ११, रूपकुला १२, रत्ता १३, रत्तवइ १४, ए सर्वने १४ लाख ५६ हजार ९० नदीउनो परिवार छे. ९

१४ अरिहंतनी माता १४ सुपना देखे. हाथी १, वृषभ २, सिंह ३, लक्ष्मीदेवता ४, फूलमाला ५, चंद्रमा ६, सूर्य ७, धजा ८, कुंभ ९, पद्म सरोवर १०, खीर समुद्र ११, देवविमान १२, रत्नराशि १३, अग्निशिखा १४. १०

१४ देवतामांहि १४ बोल उपजवाना. असंजय भवियदव्वदेवा जघन्य तो भवनपति उ-

त्कृष्टो ऊपरली नव ग्रैवेयकमे १, अविराधक साधु जघन्य पहिले देवलोक उत्कृष्टो २६ देवलोकमें २, विराधक साधु जघन्य भवनपति उत्कृष्टो पहिले देवलोकमें ३, अविराधक श्रावक जघन्य पहिले देवलोकमें उत्कृष्टो बारमें देवलोकमे ४, विराधक श्रावक जघन्य भवनपति उत्कृष्टो ज्योतिषी ५, असन्नी तिर्यंच जघन्य भवनपति उत्कृष्टो वाणव्यंतर ६, बालतपसी जघन्य भवनपति उत्कृष्टो जोतिषी ७, कुतुहलीयो साधु जघन्य भवनपति उत्कृष्टो पहिले देवलोक ८, प्रवार्थक त्रिदंडीया जघन्य भवनपति उत्कृष्टो पांचमे देवलोक ९, निन्हवजमाली जघन्य भवनपति छठे देवलोक हेठेकिलमेषी १०, सन्नीतिर्यंच जघन्य भवनपति उत्कृष्टो आठमे देवलोक ११, आजीवकामति गोसालो जघन्य सौधर्म उत्कृष्टो बारमे देवलोक १२, अभियोगी साधु जघन्य भवनपति उत्कृष्टो बारमे देवलोक १३, स्वलिंग साधु दर्शणविनगा जघन्य भवनपति उत्कृष्टो ऊपरली ग्रीवेकमां १४. ११

१४ अवनीतके १४ बोल. बार वार क्रोध करें ते अवनीत १, प्रतिबंधका क्रोध करें ते अवनीत २, मित्रकी मित्राई छांडे तो अवनीत ३, सूत्र भणी मद करें तो अवनीत ४

आपके अवगुण पारके माथे देवें तो अवनीत ५, मित्र उपरी कोप करें तो अवनीत ६. मित्रकी पूठ पाछे निंद्या करें तो अवनीत ७, निश्चयकारी भाषा बोलें तो अवनीत ८, द्रोही होय तो अवनीत ९, अहंकारी होय तो अवनीत १०, संविभागी कीसीकुं नही हुवें तो अवनीत ११, अप्रितीकारीयो होय तो अवनीत १२, लोभी होय तो अवनीत १३, इंद्रीयो मोकली मेले—विषय लालची ते अवनीत १४. १२

१४ सातावेदनी १४ बोल करी बांधे. दयावंत होय तो १, हर्षसुं दान देवें तो २, क्षमा करें तो ३, व्रतपच्चक्खाण शुद्ध पालें तो ४, पांच इंद्री वश करें तो ५, छकायरी रक्षा करें तो ६, शुद्ध मन शील पालें तो ७, ग्यानवंत होय तो ८, साधुको वंदणा नमस्कार करें तो ९, सूत्र सिद्धांत भणें तो १०, तीर्थंकरजीने वंदणा नमस्कार करें तो ११, अनुकंपा करें तो १२, धर्मोपदेश देवें तो १३, सत्यवचन बोलें तो १४. १३

१४ चक्रवर्त्तिके १४ रत्न. गाथा सेणावेइ सेन्यापती १, गाहायइ गाथापती २, पुरोहिया पुरोहित ३, वढेइ सुथार ४, चियनाकरे छिरयणाराइकुखें स्त्रीरत्न ५, वयट्टतले करी हस्ति रत्न ६, तुरीयी अश्वरत्न ७, चका चक्ररत्न ८, असि खड्गरत्न ९, छत्र छत्ता

१०, दंमेय दंमरत्न ११, आजह सालाहवंति चत्तारी चम्म चर्मरत्न ११, मणी मणी रत्न १२, कांगणी कांगणीरत्न १४. निही सिरीगेहे चक्किणो हुंती. १४

१४ चवदे ग्यानका अतिचार. गाथा जंवाइद्धं आघा पाग सूत्र अर्थ नणया १, वचा मेलीयं जपयोगरहित नणया २, हिणखरियं हिण अदार नणया ३, अचखरियं अधिक अदार नणया ४, पयहिणं पद जंगो नणयो ५, विनयहीणं विनयरहित नणे ६, जोगहीणं तीन जोग गम राख्या विना नणें ७, घोसहीणं शुरूजच्चारहीणं ८, सुठुदिन्नं नलो ज्ञान अविनीतने दीधो ए, डुठु पमिछियं अविनीतपणे ग्यान लीधो १०, अकाले कर्ज सिद्धाज अकालमें; सज्ञाय कीनी ११, काले न कर्ज सिद्धाज खरे वखते पढें नही १२, असिद्धाए सिद्धायं असिद्धाइमें नणया होय १३, सिद्धाए न सिद्धायं सिद्धाय करवा योग्य जायगामें सिद्धाय नही करी होय १४. १५

१४ उत्तम पुरुषके १४ लदाण. सुमतिवंत १, शीलवंत २, संतोषी ३, सत्संगी ४, स्वजन ५, साचाबोला ६, सत्पुरुष ७, समेला ८, सुलदाण ए, सुलज्ज १०, सुकुलीन ११, गंनीर १२, गुणवंत १३, गुणज्ञ १४. १६

१४ वली चोवदह विद्याका नाम. नजोगामिनी १, परकाय प्रवेशनी २, रूप परावर्त्तनी ३, स्तंजनी ४, मोहनी ५, सुवर्णसिद्धि ६, रजतसिद्धि ७, रससिद्धि ८, वंधथोजिनी ९, शक पराजयनी १०, वशीकरणी ११, जूतादि दमनी १२, सर्व संपत् करी १३, शिवपद प्रापणी १४. १७

१४ वक्ताना चवदह गुण लिखतें है. प्रश्नव्याकरणोक्त शोल बोलनो जाण पंमित होय १, शास्त्रथी विचार जाणे २, वाणीमांहे मीठाश होय ३, प्रस्ताव अवसर उंलखें ४, सत्य बोलें ५, सांजलने वालाका संशय दूर करें ६, अनेक शास्त्रवेत्ता गीतार्थ उपयोगी होय ७, अर्थने विस्तारी तथा संवरी जाणें ८, व्याकरणरहित बतां कंठनी जाषामें पिण अपशब्द न बोलें ९, वचनसें सनाजनने हर्ष करें १०, प्रश्नार्थ ग्राहक ११, अनिमानरहित १२, धर्मवंत १३, संतोषवंत १४. ए चवदे बोलका जाणकार होय सो वक्ता जाणना. १८

१४ श्रोताका १४ गुण. जक्तिवंत १, मीठाबोला २, गर्वरहित ३, सांजलवा उपर रुचि ४, चंचलतारहित एकाग्रचित्ते सुणें उर धारें ५, जैसा सुणें वेसा प्रगट अक्षर कहे ६,

प्रश्नका जाण ७, घणा शास्त्र सुण्या तिणके रहस्य जाणें ८, धर्मके कार्य आलस्य न करें ९, धर्म सुणतां निद्रा न करें १०, बुद्धिवंत होय ११, दातारूप गुण होय १२, जिसके पास धर्म सुणे उसका पिछाड़ी गुण वर्णवें १३, कोइनी निंदा न करें किसीके साथ वादविवाद न करें १४. १९

१४ अथ चवदह नियम दिन प्रति प्रमाण श्रावक करें सो विचार लिखतें है. गाथा-सचित्त १ दव्व २ विगई ३, वाणहि ४ तंबोल ५ वत्थ ६ कुसुमेसु ७ । वाहण ८ सयण ९ विलेवण १०, बंभ ११ दिशि १२ न्हाण १३ भत्तेसु १४ ॥ १ ॥ अर्थ-श्रावक नित प्रति नियम संभालें दिनमें जो चीज अपणे अंग खाते लगें उसका प्रमाण इस तरेसें करें. मट्टी सर्व जाती पाणी सर्व जाती जल अग्नि वायु वनस्पतिका छेदन भेदन तरकारी फल परवल भींडी तोरी केला मतीरा ककड़ी खरबुज निंबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहीयें सो रक्खें बाकीका त्याग करें १, दूसरा द्रव्य प्रमाण तहां धातु बस्तुकी शली तेसे अपणी अंगुली विगर जो चीज मुखमें घालणेमें आवें सो सब द्रव्यकी गिणतीमें आता है नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामां-

तर द्रव्यांतर होणेसें द्रव्य जुदा गिणनेमें आतें है जेसें गहुं एक द्रव्य उसकी प-
तली रोटी फीणा रोटी वेढवारोरी वाटी यह सब जुदा द्रव्य कहलाता है इसतरे भात
दाल रोटी कढी मांन्डीया कट्टु तरकारी सब जात पापड खीचीया सब तरेके फीणी
घेबर खाजा इत्यादिक सर्व द्रव्यमेंसे जो चाहीयें सो रखें बाकी नियम करें उत्कृष्ट-
पणे एक द्रव्यका नाम लेकर रखें सो एकही द्रव्य कहलावें जैसेकी मेवेकी खीच-
डी तो वह अनेक द्रव्य सेवणी हें तोभी एकही द्रव्य कहीयें इति द्रव्य प्रमाण
२, तीसरा विगय प्रमाण तिहां दश विगयोमेंसे श्रावककुं च्यार महाविगयका तो
त्यागही होता है जेसे मदिरा १, मांस २, मक्कण ३, उंरसहत ४. भक्ष्यविगय ६.
घृत १, तैल २, मीठा ३, दूध ४, दही ५, कढाईकी तली चीज ६. यह धारणा प्र-
माण रखें इति विगय नियम ३, पाद त्राण नियम तहां जूती खडाउं मौजा अप-
ना इतना विराणा ऐसे नित्य धारणा प्रमाणे मोकला राखें इति पानहि नियम ४,
अथ पांचमा तंबोल नियम. पान बीडा सुपारी लोंग इलायची गोटी उर बडी जा-
यफल जावंत्री प्रमुख सर्व खादिम वस्तु किरियाणेकी चीज धारणा प्रमाणे रखे इ-

ति तंबोल नियम ५. अथ छठा वस्त्र नियम. पोसाक बे तथा च्यार लूटा वस्त्र पांच तथा सात मोकला राखें, पोसाक एकमें पघमी १ जामा २ कमरबंध ३ धोती ४ इक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाक कहीजें एसेही स्त्रीके स्त्री मुजब जो एसा नही कर शके तो ४० तथा ५० कपमा दिनमें मोकला राखें पराया वस्त्र भूलचूकमें आवें तो जयणा इति वस्त्र नियम ६. अथ सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवमा केतकी कुंद मचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण राखें इति फूल नियम ७. अथ आठमा वाहन नियम. रथगामी व-हली इक्का बग्घी कोच पालखी घोमा हाथी ऊंट नामजाम म्याना इत्यादिक सब थल वाहन पाणीमें चलनेवाले मोरपंखी बतक घुरू दोमू लचकार मगर पनसोइ प-लवार वजरा नाव बोट इत्यादि सब तरहका तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्र-कारके असवारीकी धारणा करें इति वाहन नियम ८. अथ शय्या नियम. पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी बनात सूजनी सेत्रुंजी दूलीचा चांनणी शीतल-पट्टी चटाई सफंदर खतकी गलका चममेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी

इत्यादिक धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करें इति शय्या नियम ९. अथ दशमा विलेपन नियम. सरसुंका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तुरी कुंकुं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन फोर्में परिमल प्रमुख आंखोमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाणा सो विलेपन धारणा प्रमाणे प्रमाण करें इति विलेपन नियम १०. अथ ब्रह्मचर्य नियम. रातको तथा दिनको सूई मोरेके दृष्टांत भोगादिकका प्रमाण करें स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा इति ब्रह्मचर्य नियम ११. अथ दिशि नियम. पूरव १, पश्चिम २, दक्षिण ३, उत्तर ४, अग्निकुण ५, नैऋतकुण ६, वायवकुण ७, ईशानकुण ८, अधोदिशि ९, ऊर्ध्वदिशि १०, यह दश दिशिका अपणे जाणें आणेंका प्रमाण करें चिट्ठी लिखणी आदमी भेजणा देशांतरकी चिट्ठी वाचणी उसकी जयणा इति दिशि नियम १२. अथ तेरमा स्नान नियम. तहां आजदिनमें स्नान २ वार अथवा ४ वार मोकला परंतु पाणीका तोल रखें घड़े प्रमुखकका प्रमाण करें एक स्नानमे इतना पाणी खरच करुं ज्यादा नही गटाऊं इति स्नान करण नियम १३. अथ चौद-

मा भात नियम दिनमें भात २ सेर तथा २ वेर जीमूंगा अथवा च्यार वेर उपरांत दुविहार या चौविहार धारणा प्रमाणे राखें तथा दिनमें जल पीणेंमें आवें उसका प्रमाण राखें तोलसें या मापसें इति चवदे नियम विचार संपूर्णम् १४. एही नियम चोतीसमें बोलमेंभी विस्तारपूर्वक हे. २०



॥ अथ पनरे बोल लिख्यते ॥

१५ मनुष्य समझावणी १५ बोल. १ रूप क्रोध ठक अंध न व्हीजें, २ भांग तमाखुं अमल तजीजें, ३ बुरी गाररो संग न कीजें, ४ वेर बुराई कदे न लीजें, ५ न्यात जातमें फंद न पाम्हीजें, ६ सात व्यसनसुं अलगा रहीजें, ७ चोरी जारी जूठ तजीजें, ८ खोट दगारा वणज न कीजें, ९ मोह मायामें निपट न कलिजें, १० अथिर संसार सुं विरक्त रहीजें, ११ गृहस्थ धर्म बारे व्रत कीजें, १२ हकमें चाल खरो जस लीजें, १३ इसा सूर किणसुं गंजीजें, १४ निरलोभी निर्ग्रंथ गुरु कीजें, १५ साचा सुख मोक्षरा लीजें. १

१५ पनरे योग. १ सत्य मन योग, २ असत्य मनयोग, ३ सत्य मृषा मनोयोग, ४ असत्य मृषा मनोयोग, ५ सत्य वचन योग, ६ असत्य वचन योग, ७ सत्य मृषा वचन योग, ८ असत्य मृषा वचन योग, ९ औदारिक काय योग, १० औदारिक मिश्र काययोग, ११ वैक्रिय काययोग, १२ वैक्रिय मिश्र काययोग, १३ आहारक काय-

योग, १४ आहारक मिश्र काययोग, १५ कार्मण काययोग. २

१५ सिद्धना जीव पन्नरे भेदे छे तेहनां नाम. १ जिनसिद्ध. ऋषभादि तीर्थंकर जाणवा, २ अजिनसिद्ध ते पुंडरिकादि गणधर जाणवा, ३ तीर्थसिद्ध ते प्रसन्नचंद्रादिक तथा गणधरादिक, ४ अतीर्थसिद्ध ते मरुदेवादि जाणवा, ५ ग्रहस्थलिंगसिद्ध ते भरतचक्रवर्त्यादि जाणवा, ६ अन्यलिंगसिद्ध ते तापसादि वेसे वल्कलचिवरी, ७ स्वलिंग सिद्ध ते साधु वेसे जंबुस्वामी प्रमुख, ८ स्त्रीलिंगसिद्ध ते राजीमत्यादि, ९ पुरुषलिंग सिद्ध ते गुणाढ्यराजादि, १० नपुंसकलिंग सिद्ध ते करत्रिम नपुंसक गांगेयादि, १३ बुधबोधित सिद्ध ते पनरेसेंतीन तापसादि, १४ एक सिद्ध ते गजसुकुमालादि, १५ अनेक सिद्ध ते भरतपुत्रादिक. ३

१५ परमाधामी १५ जातका. गाथा—आंबे १ अंबरसे २ चेव, सामे ३ सबले ४ तियावरे । रूद्दे ५ विरुद्दे ६ काले ७ महाकाले ८ तियावरे ॥ ९ ॥ असीपत्ते १० धणुं ११ कुंभे वालु १२ वेयरणी १३ । खरसरे १४ महाघोसे १५ ए ए पन्नरस परमाहामिया ॥२॥ ४

१५ पंद्रह कर्मादान नाम मात्र स्वरूप लिखतें है. कर्मादान उसकुं कहते है जिस क-

र्त्तव्यके करनेसें महा पापकर्मनी आमदानी होय. इत्यर्थः—प्रथम इंगालकर्म सो कोयले करके वेचने और काचजठी पजावें लगावें जंर भाट झोकना इत्यादि कर्म करें नही १, और दूसरे वनकर्म. सो वन कटावें नही वन कटानेका ठेका लेवें नही २, साम्हीकर्म. सो गाम्ही बहल पहिये बेम्हा हल चर्खा कोल्हु चुहा घीस पकम्हने पिंजरा इत्यादि बनवाके वेचें नही ३, चोथा भाम्हीकर्म. सो ऊंट बैल घोम्हा गद्धा गाम्ही रथ किराची इनका भाम्हा खावें नही ४, पांचवा फोम्हीकर्म. सो लोहेकी खान वा लूण आदिककी खान खुदावें फुम्हावें नही तथा पत्थरकी खान फुम्हावें खुदावें नही ये पांच कुकर्म कहे है. अब पांच कुवाणिज्य कहते है. प्रथम दांत कुवाणिज्य. सो हाथीके दांत जल्लुके नख गायका चमर मृगके सींग चमम्हा जूता इत्यादिक वाणिज्य करें नही १, दूसरा लाख कुवाणिज्य. सो लाख नील सज्जी शोरा सुहागा मनशिल इत्यादिकका वाणिज्य करें नही २, तीसरा रस कुवाणिज्य सो मदिरा मांस चरबी घी राल मधु (शहत) खांम्ह इत्यादिक ढीली वस्तुका वाणिज्य करें नही ३ चोथा केशवाणिज्य. सो द्विपद लम्हका लम्हकी खरीद कर उन्हें पाल कर नफा कर

वेचें तथा पंखी तोता मैना तीतर वटेर मुर्ग प्रमुख लेकर वेचने तथा चोपदा गाय भेंस बेल घोमा प्रमुख खरीदके पालने नफा लेकर वेचना इत्यादिक वाणिज्य करें नही ४, पांचवा विष वाणिज्य. सो संखिया वछनाग अफीम हरताल चरस गांजा प्रमुख तथा शस्त्र इत्यादि कुवाणिज्य कहे है. अब पांच सामान्यकर्म कहते है. प्रथम यंत्र पीमन कर्म सो सरसों तिल इक्षु आदिक पीलावें नही १, निर्लांछन कर्म सो बैल घोमा खस्सी करना तथा ऊंट बैलको दाग देना तथा कूत्ता आदिकके कान पूंछ काटने तथा चोर आदिकको बेंत लगानें फांसी आदिक देनेका हुकम चढाना पमें ऐसा नोकरी सो इत्यादिक कर्म करें नही २, तीसरा दावाग्नि दानकर्म. सो वनमें आग लगानी तथा खेतकी वाम फूकनी इत्यादि करें नही ३, चौथा शोषण कर्म. सो कूवा तलाव आदिकका पाणी सुकावें खेतमें देनेको तथा नया पाणी पैदा करनेको इत्यादि करें नही ४, पांचवा असति जन पोषणकर्म सो शौकके निमित्त तीतर बटेर कबुतर कूत्ता बिल्ली प्रमुख पालणे पोषणे तथा भंर दुष्ट शिकारी जनका पोषण इत्यादिक कर्म करें नही. इति पन्नरे कर्मादान १५. ५

समुद्रमें तो डुंगर छें संसाररूपी समुद्रमें आठ करमरूपीया डुंगर छें ८, पूज्य भगवान समुद्रमेंतो भवरीया पड़े छे, संसाररुपी समुद्रमें दगाबाजी कपटरुपी भवरीया पड़े छे ९, पूज्य भगवान समुद्रमेंतो तीरे छे संसाररुपी समुद्रमें अलोभरुपी तीरणो छे १०, पूज्य भगवान समुद्रमेंतो सीगोटीया छे संसाररुपीसमुद्रमें तीनसें तेसठ पाखंडरुपीया सीगोटा छे ११, पूज्य भगवान समुद्रमेंतो मोती माणक हीरा रत्न नीकले छे संसाररुपी समुद्रमें साधु साधवी श्रावक श्राविकारुपीया रत्न पदार्थ छे १२, पूज्य भगवान समुद्रमें कल्लोला छे संसाररुपी समुद्रमें लोभरुपी कल्लोला छे १३, पूज्य भगवान समुद्रमेंतो अग्नि छे संसार समुद्रमें क्रोधरुपि अग्नि छे १४, पूज्य भगवान समुद्रमें कांठो छे संसाररुपी समुद्रमें मोक्षरुपीयो कांठो छे १५.



## ॥ अथ सोळे बोल लिख्यते ॥

१६ सूत्र सुयगडांगका १६ अध्ययन. स्वसमय परसमय अध्ययन १, वेताली अध्ययन १, उपसर्ग परीज्ञा अध्ययन ३, इस्त्रिपरिज्ञा अध्ययन ४, नरक विज्ञति अध्ययन ५, वीरथुइ अध्ययन ६, कुशील परिज्ञासिया अध्ययन ७. सकाम अकामवीर्य अध्ययन ८, धर्म अध्ययन ९, समाधि अध्ययन १०, मोक्ष मार्ग अध्ययन ११, समोसरण अध्ययन १२, जथातथ्य अध्ययन १३, ग्रंथ अध्ययन १४, जमति अध्ययन १५, गाहा अध्ययन १६. १

१६ सोळ वचन. एक वचन घट पट वृक्ष १, द्विवचन घटौ पटौ वृक्षौ २, बहुवचन घटा वृक्षा ३, स्त्रीलिंग वचन कुमारी नगरी नदी ४, पुरुषलिंग वचन देव नर अरिहंत साध ५, नपुंसकलिंग वचन कुम्भ कमल नैण ६, अतीतकाल वचन अकरोत् अभूत् ७, अनागतकाल वचन करिष्यति भविष्यति पठिस्यति ८, वर्त्तमानकाल वचन करोति भवंति पठंति ९, परोक्ष वचन ए कार्य इणे कियो १०, प्रत्यक्ष वचन इमज छे

११, उपनीत वचन ए पुरुष रूपवंत १२, अपनित वचन जिम ए पुरुष कुरुपवंत १३, उपनित अपनित वचन जिम ए रूपवंत परं कुसीलियो १४, अपनित उपनीत वचन जिम ए पुरुष कुशीलियो परं रुपवंत छे १५, अध्यात्म वचन जग्न बोले रुई वाणीयानि परे १६.

२

१६ सोल सुख. पहिलो सुख काया निरोग १, बीजो सुख घरमे नही सोग २, तीजो सुख गुणवंता साथ ३, चोथो सुख जे स्त्री हाथ ४, पांचमो सुख जे रिण नही देणो ५, छठो सुख जो धरमी तणो ६, सातमो सुख जो निर्जे गाम ७, आठमो सुख चलणो नही गाम ८, नवमो सुख जे मीठो नीर ९, दशमो सुख जे पंम्तित सीर १०, इग्यारमो सुख जो पौषधसाल ११, बारमो सुख जो चित विशाल १२, तेरमो सुख जो पुत सपुत १३, चवदमो सुख जो घरे विभूत १४, पनरमो सुख जे केवलज्ञान १५, सोलमो सुख पोहचे निर्वाण १६.

३

१६ चंद्रगुप्त राजाना १६ सुपना. कल्पवृक्षनी तुटी माल संयम लेसे नही भूपाल १, सूर्य अकाल आथमेरो जाण जाया पंचमकालना तिणने न होसी केवलज्ञान २, तीजे

चंद्रमा चालणी समाचारी जोईश्र ३, भूत भुतणी नाचता दीठा ते पाखंडीयानो जोर होसी ४, बारा फणरो नाग दीठो तिणरो फल बारा बरसी काल पडसी ५, देवतारो विमान पाछो फिरीयो देख्यो तिणरो फल विद्यालब्धि विछेद जासी ६, ऊकरडी ऊपर कमल ऊग्यो देख्यो तिणरो फल चार वरणा मांहि वाणीया के जिन धर्म रहसी ७, आगीयानो दीठो उद्योत बहु मिथ्यात अल्प धर्मरी जोत ८, समुद्र सुको तीन दिस दक्षिणकानी थोडो पाणी दक्षिणमे भगवंतरो धर्म जाणी ९, हेम थालीमे श्वान खाइ खीर खांड ऊंचकी लक्ष्मी नीचके घर मांड १०, हाथी ऊपर चढयो वंदरो नीच कुलको राजा सुंदरो ११, समुद्र मर्यादा लोपी तिवार सिख लोपी गुरु मावीतनी कार १२, महारथ जूता वाछडा धर्म करसी बहू बालुडा १३, तेज रहित रत्नज देख गरडा धर्ममे कुलख विशेष १४, राजपुत्र बेल चढयो देख राजा मिथ्या धर्म संवेख १५, विगर मावत हाथी लडता मही बहु वर्षा आरे पांचमे नही १६. ४

१६ सोले शीलका गुण. शुद्ध शील पाले तो कलंक लागे नही १, शुद्ध शील पाले तो

संसार समुद्र रहित हुवे २, शुद्ध शील पाले तो साचो धर्म पावे ३, शुद्ध शील पाले तो लोकमें जस होय ४, शुद्ध शील पाले तो देवता होय ५, शुद्ध शील पाले तो देवताका पूजनीक होय ६, शुद्ध शील पाले तो रूपवंत संपदा पावे ७, शुद्ध शील पाले तो सर्प फूलकी माला होय ८, शुद्ध शील पाले तो अग्नि शीतल होय ९, शुद्ध शील पाले तो विष अमृत होय १०, शुद्ध शील पाले तो सिंह मृग होय ११, शुद्ध शील पाले तो गज बकरी होय १२, शुद्ध शील पाले तो आपदासुं संपदा पामे १३, शुद्ध शील पाले तो टुणो टुमण लागे नही १४, शुद्ध शील पाले तो समुद्र थाग देवे १५, शुद्ध शील पाले तो मेरू पर्वत टींबे सरीखो थावे १६. ५

१६ सोले बोल देख्यारे चेला वना पांख सूवा देख्यारे चेला विना मोत मुवा देख्यारे विना पान तरवर देख्यारे चेला विना पाल सरवर. उत्तर—देख्या गुरुजी विना पांख सुवा देख्या गुरुजी विना मोत मुवा देख्या गुरुजी विना पान तरवर देख्या गुरुजी विना पाल सरवर. प्रश्न—क्याहेरे चेला विना पांख सूवा क्याहेरे चेला विना मोत मुवा क्याहेरे चेला विना पात तरुवर क्याहेरे चेला विना पाल सरवर. उत्तर—मनहै गुरू-

जी विना पांख सुवा१, निद्रा है गुरुजी विना मोत मूवा २, हिंसा है गुरुजी विना पान तरवर ३, त्रसना है गुरुजी विना पाल सरवर ४, क्रोध है विना अग्नि जलते ६, पाप है गुरुजी विना खार खार ७, धर्म है गुरुजी विना प्यार प्यारा ८, वादल है गुरुजी विना वृक्ष गया ९, विद्या है गुरुजी विना द्रव्य माया १०, राग है गुरुजी विना बंध बंधण ११, निंद है गुरुजी विना मंम मंमं १२, परिग्रह है गुरुजी विना नरक दुःख १३, संतोष है गुरुजी विना सुख सुखं १४, साधु है गुरुजी विना दान दानं १५, सिंह है गुरुजी विना मान मानं १६. ६

१६ सोलै दुःख. पहले दुःख घर आंगण कुवो १, दूजो दुःख बेटो जुवो २, तीजो दुःख घर आंगल झाड ३, चोथे दुःख पाडोसी चाड ४, पांचवे दुःख वेश्यां घणी ५, छठे दुःख निरधन धणी ६, सातमो दुःख कुल क्लेश ७, आठमो दुःख कमाणी परदेश ८ नवमो दुःख कुबोल्या बोल ९, दशमो दुःख बहु बेटी रंडोल १०, इग्यारमो दुःख अन्याई राजा ११ बारमो दुःख शरीरे नही ताजा १२ तेरमो दुःख लंपटसुं काज १३ चवदमो दूख घर स्त्री दगाबाज १४ पनरमो दुःख जे माथे रिणी १५ सोलमो दुःख जे फोजा धणी.७

## ॥ अथ सतरह बोल लिख्यते ॥

१७ असंयमका १७ भेद. पृथ्वीकाय असंयमे १, अप्पकाय असंयमे २, तेउकाय असंयमे ३, वाउकाय असंयमे ४, वनस्पतिकाय असंयमे ५, बेरेंद्री असंयमे ६, तेरेंद्री अ- असंयमे ७, चोरेंद्री असंयमे ८, पंचेंद्री असंयमे ९, अजीव असंयमे १०, पेहिया अ- संयमे ११, उपेहिया असंयमे १२, परमार्जणा असंयमे १३, परिठावणीया असंयमे १४, मन असंयमे १५, वचन असंयमे १६, काय असंयमे १७. १

१७ सतरे भेदे संयम. पृथ्वीकाय संयमे १, अप्पकाय संयमे २, तेउकाय संयमे ३, वाउ- काय संयमे ४, वनस्पतिकाय संयमे ५, बेंद्री संयमे ६, तेंद्री संयमे ७, चोरेंद्री संयमे ८, पंचेंद्री संयमे ९, अजीव संयमे १०, पेहिया संयमे ११, उपेहिया संयमे १२, प- मजणा संयमे १३, परिठावणिया संयमे १४, मन संयमे १५, वचन संयमे १६, काय संयमे १७. २

१७ सतरे मरण. अवीची मर्ण ते समय समय आयु घटें १, अवधीमर्ण ते नारकी देवता

मरकर पिछा देवता नारकीमें न ऊपजें १, आयंतिय मर्ण मनुष्य मर कर मनुष्यमें ऊपजें तिर्यंच मर कर तीर्यंचमें ऊपजें ३, बल्लमर्ण व्रत भागीने मरें ४, वसठ्ठमर्ण इंद्रीयाके बल मरें ५, अंतोलमर्ण पाप विना आलोयण मरें ६, तद्भवमर्ण ७, प्र-बालमर्ण अव्रतीमर्ण ८, पंमितमर्ण चोराशी लाख जीवायोनीके साथ खामणा करके मरें ९, बाल पंमित मर्ण मिश्रपणे मर्ण १०, छद्मस्थ मर्ण ११, केवली मर्ण १२, बे-हास मर्ण फांशी लगा कर मरें १३, गिद्धपिठ मर्ण जनावरके कलेवरमांहे प्रवेश होय कर मरें १४, भत्त पच्चखाण मर्ण आहारत्याग कर मरें १५, अंगीतमर्ण च्यार आहार त्याग कर मरें १६, पाउगमनमर्ण संथाराका मर्ण १७. ३

१७ तेंद्रियना १७ भेद. कानखजुरा १, मांकम २, जू ३, कीमीयो ४, उदेही ५, मकोमा ६, इल ७, घीमेल ८, सावा ९, गोकीमा १०, गद्दहीया ११, विष्टाना कीमा १२, गोबरना कीमा १३, धनेरिया १४, कुंथुआ १५, गोपालीक १६, इंद्रगोप १७. ४

१७ सत्तरे बोल प्रस्ताविक. जो तुमकुं दुःखोका भय होय और सुखनी अभिलाषा होय तो धर्मरूपी कल्पवृक्ष सेवो १, धर्मकी जम विनय और पापकी जम व्यसन यह को

म ग्रंथका सार है २, जिसके पास क्षमारूपी खड्ग नित्य पास है उसकुं क्रोधरूपी वैरी कुछ नही कर सक्ता ३, शोकरूपी वैरीकुं ज्यादा पास रखोंगे तो तुम्हारी बुद्धि हिम्मत और धर्म ए तीनका जड्सें नाश हो जावेगा ४, जैसे पुत्र विगर पालणा और वींद विगर जान शोभती नही तैसें धर्म विगर आत्मा शोभती नही ५, जिके मनुष्य परस्त्रीकुं मात तथा बेनके सदृश समझता है और सर्व जीवोंकुं अपणी आत्मा समान गिणता है वह दुःखी नही होता यह वात शास्त्रद्वारा सिद्ध है ६, शास्त्रका श्रवण शमशानभूमि और रोग पीडा ए तीन स्थान वैराग्य उपजणेका मुख्य कारण है ७, बेसमजका अर्थ करणेवालेकुं शास्त्रभी शस्त्रकी तरे हो जाता है ८, बुद्धि बढनेका उर नया तर्क उत्पन्न होणेका मुख्य कारण मनकी शुद्धि है ९, तुम्हको दुःख पडे उस वक्त चिंता त्याग कर धैर्य राखो क्युंकि चिंता कुछ दुःख हरणेकी दवाई नही चिंतासें चतुराइ घटेंगी उर चतुराइके अभावे तप जप उर नियम किसकें आधारे रहेंगे सम दम उर समाधि किसकुं अवलंबन करेंगे वास्ते उस वक्त धैर्य राख कर धर्म सेवण करना एहीज उत्तम है १०, जो तुमको सर्व

ऊनियोंको वश्य करणी होय तो परत्या ऊंगुणमें प्रवेश न कर गुण ग्रहण करो मी-
ठा ऊंर हितकारी वचन बोलो ऊंर उदारता गुणकी वृद्धि करो ११, अपणे हसते २
कहते है कि क्या तुम्हारा हाथ टुंट गया क्या तुं अंधा होय गया ऐसे ऐसे कटुक
वाक्य कहकर चीकणे कर्म बांधते है वो जब कर्म उदय आवेंगे तब रोय रोय कर-
भी छोमतां मुश्किल होयगा वास्ते वचन निकालती वख्त खुब शोच कर बोलना
क्युंकी बूरीका तथा तरवारादि शस्त्रका घाव दवाईसें अछा होय जावें परं वचन-
का घाव मिलना कठिन है इसें हरेक वक्त विचार पूर्वक बोलना १२, सामायिक
करती वखत जिसका प्रणाम स्वजनोके ऊपर ऊंर परजनोके ऊपर ऊंर निंदा तथा
प्रशंसामें समभाव रखेंगे उसीहीका सामायिक मोक्षदायक होवेगा १३, जैसे राजाकी
आज्ञाका भंग करणेसें इसलोकमें मनुष्यको धन वगेरेका दंम होता है तैसेंही स-
र्वज्ञ भगवानकी आज्ञा भंग करणेसें जीवको परभवमें अनंता भवभ्रमणरूप दंम
होता है १४, जो तुम्ह तुम्हारे प्रियमित्र और सगा तथा संबंधीके साथ प्रेम रखणा
चाहते हो तो जिस वखत ते क्रोध करें तब तुम क्षमा धारण करो १५, जो तुम्ह

को धर्मकी जल्दी उत्पत्ति करणी होय तो शास्त्रका बहुमान करो और अग आचरण राखो १६, कम्वा वचन कटुक मती कृपणपणा और कुटिल स्वभाव ए च्यार दुर्गुण त्यागोगें तबही निश्चे धर्मकी प्राप्ति होवेगी १७. ५

१७ ज्ञानावरणी कर्म बांधवाना हेतु १७. ज्ञानरी आसातना करें १, ज्ञानी साधु प्रमुखरी आसातना करें चूंमो आचरें २, ज्ञानरो कारण पुस्तक प्रमुखरी आसातना करें ३, नष्टजाय में उण पासें न भएयो ४; उपघात करें ज्ञान अथवा ज्ञानीरो मूलसुं विनाश करें ५; प्रद्वेष ज्ञान अथवा मतिज्ञानी प्रमुखसुं अप्रीति राखें ६, मतिज्ञानी प्रमुखरे भात पाणी कपमा प्रमुखरो अंतराय करें अथवा ज्ञान भणतां अंतराय करें ७; मतिग्यानी अथवा मतिज्ञान प्रमुख उघामे ८, अथवा ज्ञानरो अवर्णवाद बोलें ए, आचार्य उपाध्याय प्रमुखरो अविनय करें १०, अकाले सिज्ञाय करें ११, कालें सिज्ञाय न करें १२, जीवहिंसा करें १३, जूठ बोलें १४, चोरी करें १५, कुशील सेवें १६, परिग्रहको त्याग करें १७, रात्रीभोजन इत्यादि हेतु करी ज्ञानावरणी कर्म बांधे.

## ॥ अथ अढारे बोल लिख्यते ॥

१८ अब्रह्मचर्यना १८ भेद. उदारीक मैथुन सेवन आश्री मने करी १, वचन करी २, कायाये करी ३, सेवावण आश्री मन करी ४, वचन करी ५, कायाये करी ६, अनुमोदन आश्री मन ७, वचन ८, काया ९, वैक्रिय मैथुन आश्री इमहीज करण ३, करावण ३ अनुमोदन ३, एवं १८. १

१८ पोषध तथा सामायिकमें रहे हुवे के १८ दोष. असामायिकवंतकी वेयावच्च करतो दोष १, पोष निमित्ते सरस आहार करे तो २, संयोग मिलावे तो ३, केश नख समरावे तो ४, पहिले दिन वस्त्र धोवरावे तो ५, शरीरकी शुश्रुपा करे तो ६, आभर्ण पहिरे तो ७, मयल उतारे तो ८, निंद्रा लेवे तो ९, विण पुंजे खाज खणे तो १०, विकथा करे तो ११, पारकी निंदा करे तो १२, अनेरी संसारकी चरचा करे तो १३, भय करे तो १४, अंग उपांग स्त्रीना निरखे तो १५, संसारको नातो करे तो १६ खुल्ले मुख बोले तो १७, संसारकी वात करे तो १८. २

१८ सिखामण १८ रे. आवसग्ग करे तो पच्चखाण उपयोग हुवे १, मनमें संदेह होय सो पूछने टाले २, साधर्मिकुं दोष लाग्या हुवे तो एकांत सिखामण दे ३, सांज सवेरे व्रत पच्चखाण चितारे संभाले ४, जेसा प्रायश्चित्त लाग्या होय तेसा दंड लेवे ५, साधर्मिसुं चरचा करतां विचमे वाद न करे ६, भगवंतका मार्गमें खेंचाताण न करे ७, एकली स्त्रीसुं आलाप संलाप न करे ८, पक्खी चोमासे नफो टोटो विचारे ९, विनयसहित अक्षर पढे विनयसहित पढावे १०, तीर्थंकरनी आग्या सहित कोइ सिखामण देवे तो सत माने ११, कोइ साधर्मि धर्म करणी करतो हुवे तो विचमें मिले नही १२, धर्मके ठिकाणे आयके संसारी वात न करे १३, धर्मि २ आपसमे कलह राड न करे १४, धर्मि धर्मके ठिकाणे बोडके उंर ठिकाणे जाय नही १५, स्वधर्मिकुं डिगतेकुं थिर करे १७, रोगी गिलाणीकी वेयावच्च करे १८. ३

१८ साधु १८ स्थानके उतरे. देहरा १, सभा २, पाणी स्थानक ३, प्रव्राजक मठ ४, वृक्ष नीचे ५, वन ६, गुफा ७, लोहारसाला ८, पर्वतनी गुफा ९, जूना थानक १०, बाग फल फूल करी सहित ११, रथशाला १२, कूपशाला १३, यग्यादिक मंडप १४

सूना घर १५, मसाण १६, पर्वत मांहि कोरया घर १७, हाट १८. ४

१८ अढारे कल्प. अहिंसा १, अमृषा २, अदत्त ३, ब्रह्मचर्य ४, अपरिग्रह ५, पृथ्वी ६, अप्प ७, तेउ ८, वायु ९, वनस्पति १०, त्रस ११, रात्रीभोजन त्याग १२, अकल्प-नीय टाले १३, गृहस्थनो भोजन तजे १४, गृहस्थने गृह न वसे १५, पलंग तजे १६, स्नान न करे १७, सिणगार न करे १८. ५

१८ अढारे द्रव्य दिसि. पूर्व १, पश्चिम २, दक्षिण ३, उत्तर ४, इशाण कूण ५, अ-ग्नि कूण ६, नैऋत कूण ७, वायव कूण ८, विदिशिना आठ आंतरा एवं १६, ऊंची १७, नीची १८. ६

१८ अढारे भाव दिशी. पृथ्वी १, अप्प २, तेऊ ३, वाऊ ४, अग्गबिया ५, मूलबिया ६, पोरबिया ७, खंधबिया ८, बेंद्री ९, तेरेंद्री १०, चौरेंद्री ११, पंचेंद्री १२, तिर्यंच १३, कर्मभूमी १४, अकर्मभूमी १५, छप्पन अंतरद्वीपा १६, देवता १७, नारकी १८.

१८ श्री ऋषभदेवजी १८ लिपी प्रगट किवी. हंस लिपी १, भूत लिपी २, जक्ष लिपी ३ राक्षस लिपी ४, उम्ही लिपी ५, पवनि ६, कुरकी, ७, वाम्ही ८, माधवी ९, -मालवी

१०, नम्री ११, नागरी १२, लाटी १३, पारसी १४, अनमति १५, चाराणी १६, प्रदेश १७, मूल देश १८.
८

१८ अढारे वर्ण नाम. कंदोइ १, पटेल २, कुंभार ३, सोनार ४, माली ५, तंबोली ६, गंधर्व ७, वैद्य ८, सुथार ९, नारू १०, घांची ११, मोची, १२, गांछी १३, पीछी १४, रंगारा १५, ग्वाल १६, दरजी १७, कैवर्त्तक भिल्ल १८.
९

१८ अढारे बोल १०८ बोला मांहिसुं धर्मि पुरुषके योग्य. बम्नोके बीचमें न बोले १, मर्मको वचन नही बोले २, माया कपटाइना वचन नही बोले ३, विचारीनें बोले ४, हिंस्याकारक वचन छाना या उघाम्ना नही बोले ५, दुष्ट वचन ते नही बोले ६, जूंम्ना नाम गोत्रका वचन नही बोले ७, तुंकारा देकर नही बोले ८, अणसुहाता नही बोले ९, मारकूट पम्ने क्रोध नही करे दूसरेकी साखीमें शुभ मन वरतावे १०, डुर्वचन बोले तो क्रोध न करे ११, कोलाहल शब्द उपर क्रोध न करे १२, गुरुके आज्ञामें चले आपरे छंदे नही चाले १३, गुरुरी सेवा करतो थको गुरुरे पास रहे १४, गुरुरी सेवा करे भली प्रज्ञारो धणी भलो तपस्वी शूरवीर कहीये १५, धीरजवंत १६, सरल

मनुष्य विचारीनें धर्म परुपे १७, गृद्धी नही आणे पांच इंद्रियोके विषयपर तथा आरंभ विषे १८.

१० १८ श्रावकको अढारे पापस्थान त्यागना.- प्राणातीपात जीवके प्राणोकी हिंसा १, मृषावाद असत्य जूठ बोलवुं २, अदत्तादान चोरी करवी ३, मैथुन कुकर्म सेवणा ४, परिग्रह द्रव्य धन राखणो ५, क्रोध कोप करणो ६, मान अहंकार करणो ७, माया कपट करणो ८, लोभ तृष्णा जादा रखणी ९, राग सनेह प्रीति करणी १०, द्वेष द्वेष अप्रीति करणी ११, कलह क्लेश करणो १२, अभ्याख्यान जूठा कलंक देणा १३, पैशुन्य चूगली करणी. १४, परपरिवाद दूसरेका अवर्णवाद कहणा १५, रइ अरइ रती अरती खुसी नाराजी राखणी १६, मायामोसो कपट कर जूठा बोलणा १७, मिथ्यादंसण शल्य जूठी श्रद्धाको शल्य राखणो १८. ए अढारे पापस्थानक श्रावक वर्जे

१८ अढारे बोले करी साधु अपणा मन चलायमान हुवे को थीर करे. प्रथम दुःखमा आरामें आजीविकाका कष्ट १, दूजें कामभोग विषय मधुबिंदु समान २, तीजें काम भोगमें रोगका भय ज्यादातर हे ३, चोथे इह दुःख सामान्य है अल्प समय रहेगा

४, पांचमें लोकमें हांसी करेंगे ५, छठे वमन कीया विषय फेर ग्रहण करूंगा ६, सातमे कुगती बंधन संग्रह हुवेगा ७, आठमें सम्यक्तरूपी शुद्ध धर्म हाथ आवेंगा नही ८, नवमे रोग आएसें क्या करूंगा ९, दशमे गृहस्थाश्रममें मन सदा चिंतातुर रहेंगा १०, इग्यारमे कष्टरहित दिक्षा है कष्टसहित गृहस्थावास ११, बारमे बंधण गृहस्थाश्रम मुक्त प्रवर्ज्या ने चारित्र १२, तेरमे सावद्य गृहवास निरवद्य चारित्र १३, चवदमे सामान्य कामभोग्य १४, पनरमे परतख पुण्य पाप १५, सोलमे मनुष्यका आयु अनित्य है जैसें डाभ उपरी जलबिंदुवत् वा बीजलीका चमत्कार समान १६, सत्तरमे पापकर्म करेंगा १७, अढारमे विना भोगव्या छूटेंगा नही १८. १२

## ॥ अथ उंगणीसमा बोल लिख्यते ॥

१ए ज्ञातासूत्रका १ए अध्यन. मृगापुत्र अध्यन १, धनासार्थवाह अध्यन २, मोरमीके इंमेका अध्यन ३, काछबाका अध्यन ४, थावचापुत्रका अध्यन ५, तुंबमीका अध्यन ६, रोहणीका अध्यन ७, मल्लिनाथका अध्यन ८, जिन ऋषिजिनपालका अध्यन ए, चंद्रमाका अध्यन १०, दवदव ऋषिकी दवदंत ऋषिका अध्यन ११, सुबुद्धिप्रधान अध्यनं १२, नंदन मणायारका अध्यन १३, तेतली प्रधानका अध्यन १४, नंदी वनफलका अध्यन १५, द्रौपदीका अध्यन १६, काली दीपक घोमेगा अध्यन १७, सुसमादारीयाका अध्यन १८, पुंमरीकका अध्यन १ए. १

१ए काउसग्गरा १ए दोष. गोमा उपर पग राखे १, काया आघी पाछी मोलावे २, उठंगण लेवे ३, माथो नमाय उन्नो रहे ४, दोनुं हाथ उंचा राखे ५, घुंघटो काढे ६, पग उपर पग राखे ७, वांको आमो रहे ८, साधुनी बरोबर रहे ए, गामीनी उंघणानी परे रहे १०, लम्मो वांको रहे ११, रजोहरण ऊंचो राखे १२, एक आसण न

रहें १३, आंख एक ठाम न राखें १४, माथो हलावें १५, कुकुकार करें १६, मील चलावें १७, आलस मोड़े १८, सुन्य चित्त करें १९. २

१९ जीवनी जाति देहमान आयु. पृथिवीकाय अंगुलनो असंख्य भाग २२००० वर्ष आयु १, अपकाय अंगुलनो असंख्य भाग ७००० वर्ष आयु २, अग्निकाय अंगुलनो असंख्य भाग तीन दिनका आयु ३, वायुकाय अंगुलनो असंख्य भाग ३००० वर्ष आयु ४, साधारण वनस्पतिकाय अंगुल असंख्य भाग आयु अंतरमुहुर्त्त ४, प्रत्येकवनस्पति हजार योजन जाजेरा १०००० वर्ष आयु ६, बेंद्रिय जीव बारे योजन बारे वर्ष आयु ७, तेंद्रिय जीव तीन कोस ४९ दिन आयु ८, चौरिंद्रि जीव चार कोस ६ महिना आयु ९, समूर्छिम मतस्यादि हजार योजन क्रोडपूर्व १०, संमूर्छिम चतुष्पदादि दोयसेंले नव कोस ८४००० हजार वर्ष आयु ११, समूर्छिम खेचर दोयसेंलें नव धनुष ७२००० हजार वर्ष आयु १२, समूर्छिम उरपरिसर्प्प दोयसेंलें नव योजन ५३००० हजार वर्ष आयु १३, समूर्छिम भुजपरिसर्प्प दोयसेंलें नव धनुष ४२००० हजार वर्ष आयु १४, समूर्छिम उरपरिसर्प्प दोयसें नव योजन ५३००० ह-

जार वर्ष आयु १५, समूर्छिम भुजपरिसर्प्प दोयसेंलें नव धनुष ४२००० हजार वर्ष आयु १६, गर्भज मत्स्यादि हजार योजन क्रोमपूर्व आयु १७, गर्भज थलचर ७ कोस तीन पल्योपम गर्भज खेचर पंखी दोसेंलें नव धनुष पल्योपमासंख्य. १८, गर्भज उरपरिसर्प्प हजार योजन क्रोम पूर्व गर्भज भुजपरिसर्प्प दोसेंलें नव कोस क्रोम पूर्व. २



## ॥ अथ वीस बोल लिख्यते ॥

२० वीस बोल, बमोंकी सीख. १ भलो चावें तिणरी सीख मानीजें, २ गुण माने तिणने भणाइजे, ३ कृतघ्नने औगणग्राही जाणीजे, ४ अति तृष्णा लोभ न कीजें, ५ वांको वरते तोही द्वेष न कीजें, ६ खोटे हाण खेबरकत जाणीजें, ७ पापथी दुःख ने धर्मथी सुख जाणीजें, ८ जंगो वचन बोलें तिणने हलको आदमी जाणीजें, ९ माता पिता गुरु देवरी भक्ति कीजें आग्यामें रहीजें, १० वमेरांरो हुकम मानीजें पाछो उत्तर न दीजें, ११ आपरो धर्म हुवें तिण मारग चालीजें सील पालीजें पारकी स्त्री सुं टालो कीजें, १२ आपरा कुलरा आचारमें चालीजें कूड न भाखीजें, १४ दुःखी होवें तिणरो उपगार कीजें, १५ गांव चालीजें तो सखरा सुकन देख चालीजें, १६ नाणो परखने लीजें, १७ फाटो कपडो सीवीजें, १८ रूठाने मनाइजें, १९ आपरो धन सुमारग खरचीजें, २० थलीश गांवमें वसीजें तो अगनरो जतन कीजें. १

२० वीस असमाधिया. दब दब करतो चालें तो १, विना पूछे चालें तो २, पूंजे किहा

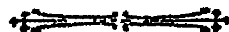
पग घरें कहां तो ३, मर्यादासुं अधिका पाटला जोगवें तो ४, गुरुके सामो बोलें तो ५, बहुश्रुतिजीकी घात चिंतवें तो ६, बमोंके सामो बोलें तो ७, वारवार क्रोध करें तो ८, पीठ पूठे गुणवंतका अवगुणवाद बोलें तो ९, निश्चेकारीजाषा बोलें तो १० नवो कलह करें तो ११, कलहकुं क्षमाया हुवें फिर फिर उदीरे तो १२, अकाले सिझाय करें तो १३, सचित्त रजसुं खरड्यो होय विना पूंजे उठे बेठे चले तो १४, पहर रात्री उपरांत गाढे शब्दे बोलें तो १५, वारवार च्यार तीर्थमें कलह करें तो तथा सर्व प्राणीजूतनी घात चिंतवें तो १६, रेतुं बोलें तो १७, छकायके जीवांकुं असमाधि उपजावें तो १८, सवेरेका आहार लावें स्यामतांइ जोगवें तो १९, एषणा कुमती आहार जोगवें तो २०. २

२० वीस विहरमान नाम. सीमंधरजी १, जुगमंधरजी २, बाहुजी ३, सुबाहुजी ४, सुजातजी ५, स्वयंप्रजजी ६, ऋषजानंदजी ७, अनंतवीर्यजी ८, सूरप्रज्जुजी ९, विशालजी १०, वज्रधरजी ११, चंडानंदजी १२, चंडबाहुजी १३, जुजंगजी १४, इश्वरजी १५, नेमप्रजजी १६ वीरसेनजी १७ महाजद्रजी १८ देवजसाजी १९ अजितवीर्यस्वामीजी २१

२० वीस बोलें करी जीव तीर्थंकर गोत्र कर्म बांधे. अरिहंतजीरो जाप करें तो जीव कर्म-
री कोम्मी खपावें उत्कृष्टी भावना आवें तो तीर्थंकर गोत्र बांधे १, सिद्धारां गुणग्राम
करें तो तीर्थंकर गोत्र बांधे २, सूत्रसिद्धांतरा गुणग्राम करें तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ३,
गुरुना गुणग्राम करें तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ४, थिवरना गुणग्राम करें तो तीर्थंकर
गोत्र बांधे ५, बहुश्रुतीना गुणग्राम करें तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ६, तपस्वीना गुणग्रा-
म करें तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ७, ग्यान उपर उपयोग देतोथको तीर्थंकर गोत्र बांधे
८, सम्यक्त पालतो थको तीर्थंकर गोत्र बांधे ९, विनय करतो थको जीव तीर्थंकर
गोत्र बांधे १०, दोय वेला आवसग्ग करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे. ११, व्रत
पच्चखाण चोखा पालतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १२, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्या-
वतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १३, बारे भेद तपस्या करतो थको जीव तीर्थंकर
गोत्र बांधे १४, सुपात्रने दान देवतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १५, वेयावच्च
करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १६, सर्व जीवांने सुख उपजावतो थको जीव
तीर्थंकर गोत्र बांधे १७, अपूर्वग्यान पढतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १८, सूत्र-

नी भक्ति करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १९, तीर्थंकरनो मार्ग दीपावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे २०. ४

२० दर्शनावरणी कर्म बांधवाना हेतु कहे छे. १ चक्षुदर्शन प्रमुखरो झूंमो करे, २ दर्शनी साधु प्रमुखरो झूंमो करे, ३ दर्शनरो कारण कान आंख्या नाक प्रमुखरो झूंमो करे कान प्रमुख छेदे, ४ पुस्तकरी आशातना करे, ५ में जण पासे नही जण्यो इम नट जाय, ६ दर्शन अथवा दर्शनीको मूलसुं विनाश करे, ७ दर्शन अथवा दर्शनी प्रमुखसुं अप्रीति राखे, ८ दर्शन अथवा दर्शनी प्रमुखरे जात पाणी वस्त्र उपाश्रयरो अंतराय करे अथवा जणतां अंतराय करे, ९ दर्शन अथवा दर्शनीकी घणी आशातना करे जाति प्रमुख उघाडे, १० दर्शन अथवा दर्शनीमांही दूषण काढे, ११ कान कातरे, १२ आंख्या उघाडे, १३ नाक छेदे, १४ जिह्वा प्रमुख कतरे, १५ जीवरी हिंसा करे, १६ जूठ बोले, १७ चोरी करे, १८ कुशील सेवे, १९ परिग्रहको व्रत नही हुवे, २० रात्रीजोजनको त्याग न करे. इत्यादि हेतु करी दर्शनावरणी कर्म बांधे. ५



## ॥ अथ इकवीस बोल लिख्यते ॥

---

२१ इकवीस सबला दोष. हस्तकर्म करें तो सबलो १, मैथुन सेवें तो २, रात्रीभोजन भोगवें तो ३, आधाकर्मी आहार भोगवें तो ४, राजपिंड आहार भोगवें तो ५, उदेशी १, क्रीय २ पामीचे ३ अछिजे ४ अणुसिठे ५ अझायरे ६ ए ७ दोष आहार भोगवें तो ६, वारवार पच्चखाण लेवें भांगें तो ७, ७ महीनामांही नवो टोलो बदले तो ८, एक मासमें ३ नदीके पाणीरो लेप लगावें तो ९, एक मासमें ३ माया थानक सेवें तो १०, सिझातरनो आहार भोगवें तो ११, जाणपुछने प्राणातपात सेवें तो १२, जाणपुछ मृषावाद बोलें तो १३, जाण पुछ अदत्तादान लेवें तो १४, सचित्त उपरे उठें बेठे तो १५, सचित्त संनिग्ध माटी उपर उठें बेठें तो हलें चलें तो १६, इंडा जालासहित पाट पाटला भोगवें तो १७ मूल १ कंद २ खंध ३ त्वचा ४ शाखा ५ प-लव ६ फूल ७ फल ८ बीज ९ हरी १० ए दश प्रकारनी हरीकाय भोगवें तो १८,

एक सालमें दश नदीरो लेप लगावें तो १९, एक वर्ष मध्ये दश दश माया थानक सेवें तो २०, सचित्त सेती हाथ पग खरड्या होय ,जिसके हाथसुं आहार पाणी वेहरावे साधु लेवें तो सबलो दोष लागें २१. १

२१ इक्वीस जातरो पाणी धोवण. हांडीनो १, कठोतीनो २, चावलनो ३, तिलनो ४, तुसनो ५, जवनो ६, उसावण ७, कांजीनो ८, उन्हो पाणी ९, अंबाडनो १०, आंबानो ११, कविठनो १२, बिजोरानो १३, द्राखनो १४, दाडिमनो १५, खजुरनो १६, नालेरनो १७, कयरनो १८, बोरनो १९, आमलानो २०, आमलीनो धोवण. २

२२ श्रावकना इक्वीस गुण. अक्षुद्र १, जसवंत २, सोम प्रकृति ३, लोकप्रिय ४, आकरो स्वभाव नही ५, पापसें डरें ६, श्रद्धावंत ७, चतुरता ८, लज्यावंत ९, दयावंत १०, मध्यस्थ ११, गंभीर १२, सोमदृष्टि १३, गुणरागी १४, धर्मकथी १५, साचो पक्ष करें १६, शुद्ध विचारी १७, वृद्धोकी रीत चालें १८, विनयवंत १९, किया गुण मानें २०, परहितकारी २१. ३

२१ श्रावकके इक्वीश गुण. नवतत्त्वका स्वरूप जाणें १, धर्मकरणीमें सहाय वंछे नही २ धर्मध्यकी चलाया किसीका चलें नही ३, जिनधर्ममें शंकादि आणें नही ४, जे सूत्ररो अर्थ ग्यान धारें तिणरो निर्णय करें प्रमाद करें नही ५, श्रावकरी हाड उर हाडरी मीजी धर्ममें रंगायमान रेवे ६, म्हारो आउखो अथिर छें, जिनधर्म सार छें इसी चिंतवणा करें ७, श्रावकजी फटिकरत्न जैसा निर्मला होय कूड कपट राखें नही ८, श्रावक घरका द्वार सवा पोहर दिन चढें तांई दान सारु उघाडा राखें ९, श्रावक एक मासमें छ पोसा करें १०, श्रावक राजाके अंतेउर भंडार शाहुकारकी दुकानमें जावें तो अप्रीति उपजें नही ११, लिया व्रत पच्चखाण निर्मला पालें १२ चवदे प्रकारे दान सुझतो मुनिने देवें १३, धर्मको उपदेश देवें १४, तीन मनोरथ सदा चिंतवें १५, च्यार तीर्थरा गुणग्राम करें अन्याय करें नही १६, नया नया सूत्र सिद्धांत सुणें १७, कोइ नयो आदमी धर्म पायो हुवें जिणने साहाज्य देवें ग्यान सिखावें १८, दो वखत कालोकाल पडिक्कमणा करें १९, सर्व जीवसुं हितपणो राखें वैरभाव राखें नही २०, छती शक्ति तपस्या करें ग्यान शिखणको उद्यम करें २१. ४

२१ इकवीस बोल. चुगल १, चोर २, छली ३, अधर्मि ४, अधम ५, अविनीत ६, अधिक बोला ७, अनाचारी ८, अन्यायी ९, अधीरा १०, अधूरा ११, निःस्नेही १२, कुलक्षण १३, कुबोला १४, कुपात्र १५, कुमाबोला १६, कुशीलिया १७, कुशासनी १८, कुलखंपण १९, मूंमा २०, ठुंब २१.

५

## ॥ अथ बाइस बोल लिख्यते ॥

२२ परिसह २२. दिगंबा क्षुधा परिसह १. पिपासा तिरषा २, सीत ३, उष्ण ४, अचेल कपडाका परिसह ५, डांस मछर परिसह ६, अरइ आरति पीडा ७, इछी स्त्री परिसह ८, चरिया विहार परिसह ९, निसिया थानकका परिसह १०, सेजा संथाराका परिसह ११, आक्रोश रीस परिसह १२, वह वधबंधण परिसह १३, जायणा निल्याका परिसह १४, अलाभ नही मिलणेका परिसह १५, रोगका परिसह १६, तृणकास डाभ प्रमुख फरस परिसह १७, जल मल पसीना मेलका परिसह १८, सकार आदर बहुमान परिसह १९, पन्ना बुद्धिका परिसह २०, अज्ञान परिसह २१, दर्शण परिसह संका नही करे २२. १

२२ बोल २२. अनंता सुक्ष्म परमाणु मिले १, बादर परमाणु होय १, अनंता बादर परमाणु मिले तो १ उष्ण सेनिया रज होय २, आठ उष्ण सेनीया रज मिले तो १ शीतसेनिया रज होय ३, आठ शीतसेनिया रज मिले तो १ उर्द्ध रेणु रज होय ४,

आठ ऊर्द्ध रेणु मिले १ तसरेणु रज होय ५, आंठ तसरेणु रज १ रथरेणु रज होय ६, आठ रथरेणु रज मिले १ देवकुरू उत्तरकुरूना मनुष्यनो बाल होय ७, आठ देवकुरू उत्तरकुरूरा मनुष्यारो बाल लिजे तो १ हरिवास रम्यक वासना मनुष्यानो बाल होय ८, आठ हरिवास रम्यकरा मनुष्यारा बाल लीजे तो हेमवय एरणवयना मनुष्यरो १ बाल होय ९, आठ हेमवय एरणवयना मनुष्यारा बाल लीजे तो १ महाविदेहना मनुष्यनो बाल होय १०, आठ महाविदेह मनुष्यारा बाल लीजे तो १ भरत्त एरवर्त्तना मनुष्यारो बाल होय ११, आठ भरत एरवर्त्त मनुष्यारा बाल लीजे तो १ लीख होवे १२, आठ लीखे १ जू १३, जुवे आठ जव मध्य एक १४, आठ जव मध्ये १ आंगुल १५, अठार आंगुले १ पांव पग १६ दोय पग १ विहब विलस्त १७, दोय विहबे १ हाथ १८, दोय हस्ते १ कुख १९, दोय कुखे १ धनुष २०, दोय हजार धनुष १ गाउ २१ चार गाउए १ जोजन २१. २

२२ बोल २२ सुठाम १, सुगाम २, सुजात ४, सुभ्रात ५, सुतात ६, सुमात ७, सुवात ८, सुकुल ९, सुबल १०, सुस्त्री ११, सुपुत्र १२, सुपात्र १३, सुक्षेत्र १४, सुदान १५

सुमान १६, सुरुप १७, सुविद्या १८, सुदेव १९, सुगुरु २०, सुधर्म २१, सुवेश २२, सुदेश ए सर्वे पुन्यसे मिलती हे. ३

२२ वाद २२ सुं न करणा. १ धनवंत सेती वाद न करीजे, २ बलवंत सेती वाद न कीजे ३ घणे परिवाररे धणीसुं वाद न कीजे, ४ तपस्वीसुं वाद न कीजे, ५ नीचसुं वाद न कीजे, ६ अहंकारीसुं वाद न कीजे ७, गुरांसुं वाद न कीजे, ८ थिवरासुं वाद न कीजे, ९ चोरसुं वाद न कीजे, १० जुवारीसुं वाद न कीजे, ११ रोगीसुं वाद न कीजे, १२ क्रोधीसुं वाद न कीजे, १३ जुठा बोले तेसुं वाद न कीजे, १४ कुसंगतीसुं वाद न कीजे, १५ राजा सेती वाद न कीजे, १६ शीतल लेश्यारे धणीसुं वाद न कीजे, १७ तेजु लेश्यारे धणीसुं वाद न कीजे, १८ मुंहे मीठा पेटे दगो तेसुं वाद न कीजे, १९ दानेसरीसुं वाद न कीजे, २० ज्ञानीसुं वाद न कीजे, २१ गणिकासुं वाद न कीजे, २२ बालकसुं वाद न कीजे. ४

२२ बोल २२ सिद्धांतरा. जे कोइ साधु राते उंषध सनिधि राखे रखावे तो अणाचारी अही समान जाणवो दश वैकालिकमें कह्यो छे १, जे कोइ साधु गृहस्थ कने चं

पावे ते अनाचारी जाणवो आचारांग मांहे कह्यो छे २, जे कोइ साधु ग्रहस्थ कने वस्तु ओढण वास्ते लेवे ते अनाचारी जाणवो सुगडांग मांहे कह्यो छे अध्ययन ए मे ३, जे कोइ साधु काकडी खरबुज तथा ओरही फल फुजी वनस्पतिना फल गोली बीज काचरी काढी हुवे लेवे ते अनाचारी पनवणा तथा दशाश्रुत स्कंधमांहे कह्यो छे ४ जे कोइ साधु साधवी एकलो विहार करे ते आग्या बाहर ठाणांगमें कह्यो छे ५, जे कोइ साधु साधवीनो आण्यो आहार करे ते अनाचारी जाणवो आचारांगमें कह्यो छे ६, जे कोइ साधु गोचरी प्रमुख बाहार जातो थको भार उपगरण फलक पीठ पाटीया ग्रहस्थने भोलावीने जाय ते आग्या बाहिर दश विकालिक ७ अध्ययनमें कह्यो छे, ७ जे कोइ साधु ग्रहस्थ माथे चीठी तथा पोथी मेले ते अनाचारी जाणवो दश विकालिक ७ मे अध्ययनमे कह्यो छे ८, जे कोइ साधु पुरुष विना स्त्रीने उपदेश देवे ते अनाचारी जाणवो भगवती सूत्रमें कह्यो छे ए, जे कोइ साधु दोय तथा अढाइ कोस उपरांत आहार पाणी लेवा जाय ते अनाचारी भगवती तथा उत्तराध्यन सूत्रमें कह्यो छे १०, जे कोइ साधु द्रव्य धातु राखे ते अनाचारी ब्रह्म व्या-

करणमें कह्यो छे ११, जे कोइ साधु छुगमा धोवे धोवावे स्नान करे ते चारित्रथी डुराचारी जाणवो सुगमांग अध्यन ७ मेमें कह्यो छे १२, जे कोइ साधु होय मोर पांखनी पीछी राखे ते अनाचारी प्रश्न व्याकरणमे कह्यो छे १३, जे साधु होय सुगंध अत्तर प्रमुख लगावे सुगंध लेवे माथो धोवे ते अनाचारी दस विकालिक ६ छे अध्यनमे कह्यो छे १४. जे साधु नित्य पिंम लेवे ते पासछो आवश्यक चूर्णिमें कह्यो छे १५, सिज्ञातररो पिंम लेवे ते पासछो आवश्यक चूर्णिमें कह्यो छे १६, जे कोइ साधू एकलो विहार करे ते पासछो उपदेशमालामे कह्यो छे १७, जे साधू होय चवदे उपगरणसुं अधिको राखे तो पासछो निसीथचूर्णिमें कह्यो छे १८. जे कोइ साधू पुस्तक लिखावे ते पासछो प्रवचन सारोद्धारमें कह्यो छे १९, जे कोइ साधू शेषकाले मास १ उपरांत रहे तो पासछो कर्णिकाया तथा आचारांगमे कह्यो छे २०, जे कोइ साधू पुस्तक उपगरण पात्रा प्रमुख घणा करे ते पासछो २१, जे साधूके चेला चेली श्रावक श्राविका साधवी परिग्रह घणो ते पासछो उपदेशमालामे कह्यो छे २२.

 १ जीवना जेद २ कोम ७४ लाख २ गुणठाणा ३ कोम १२ लाख ३ जोग ५ कोम

## ॥ अथ तेवीसमा बोल लिख्यते ॥

२३ सुगमांगजीके अध्ययन तेवीस. पहिले श्रुत स्कंधका १६ अध्ययन स्वसमयादिक कह्या अने दुजे श्रुत स्कंधनां ७ अध्ययन भाख्या अणगार पोखरणी ते बाचमीका १ क्रिया अध्ययन २, आहार परिज्ञा ३ पच्चखाण परिज्ञा ४ अणगारि ५ आद्रकुमारका ६ उदर्कपेलाद पुत्रका ७ एवं तेवीस अध्ययन. १

२३ पदवी तेवीस. रत्न चौद. चक्र १, छत्र २, चामर ३, दंम ४, असी ५, मणी ६, कांगणी ७, सेनापति ८, गाथापति ९, बढ्ढइ १०, प्रोहित ११, स्त्री १२, अश्व १३, गजरत्न १४, नव उत्तम पुरुषकी तिर्थंकरकी १५, चक्रवर्त्तिकी १६, बलदेव १७ वासुदेव १८, केवली १९, साधु २०, श्रावक २१, सम्यग्दृष्टि २२, मंमलीक राजाकी. २३

२३ पांच इंद्रीके तेवीस विषय. श्रोतेंद्रीके तीन विषय. जीव शब्द १, अजीव शब्द २, मिश्रशब्द ३, चक्षुइंद्रीके पांच विषय. कालो ४, पीलो ५, नीलो ६, रातो ७, धोलो ८, घ्राणेंद्री बे विषय. सुगंध ९, दुर्गंध १०, फरसेंद्री आठ विषय खरखरो ११, सुंवालो

१२, हलको १३, भारी १४, शीत १५, उष्ण १६, लुखो १७, चीकणो १८, जीह्वा इं-
डीके पांच विषय. तीखो १९, कड्वो २०, कसायलो २१, खाटो २२, मीठो २३. ३

२३ चोवीस तीर्थंकरोका तेवीस आंतरा. १।२ तिर्थंकर विचाले ५० लाख कोड सागरको आंतरो, २।३ तिर्थंकर विचाले ३० लाख कोडि सागरको आंतरो; ३।४ तिर्थंकर विचाले १० लाख कोड सागरको आंतरो, ४।५ तिर्थंकर विचाले ९ लाख कोड सागरको आंतरो ५।६ तिर्थंकर विचाले ९० हजार कोड सागरको आतरो, ६।७ तिर्थंकर विचाले ९ हजार कोड सागरको आंतरो, ७।८ तिर्थंकर विचाले ९ सय कोड सागरको आंतरो, ८।९ तिर्थंकर विचाले ९० कोड सागरको आंतरो, ९।१० तिर्थंकर विचाले-९ कोड-सागरको आंतरो, १०।११ तिर्थंकर विचाले १ कोड सागर ६६ लाख २६ हजार वर्ष ऊणा, ११।१२ तिर्थंकर विचाले ५४ सागरको आंतरो, १२।१३ तिर्थंकर विचाले ३० सागरको आंतरो, १३।१४ तिर्थंकर विचाले ९ सागरको आंतरो, १४।१५ तिर्थंकर विचाले ४ सागरको आंतरो, १५।१६ तिर्थंकर विचाले पउण-पल्य-ऊणा ३ सागरको आंतरो, १६।१७ तिर्थंकर विचाले आधे पल्यको आंतरो,

१७।१८ तिर्थंकर विचाले पल्यको चोथो भाग एक हजार कोड़ वर्ष ऊणो, १८।१९ तिर्थंकर विचाले एक हजार कोड़ वर्षनुं, १९।२० तिर्थंकर विचाले ५४ लाख वर्षरो, २०।२१ तिर्थंकर विचाले ६ लाख वर्षनुं, २१।२२ तिर्थंकर विचाले १५ लाख वर्षनुं, २२।२३ तिर्थंकर विचाले ८३ हजार २७५० वर्षनुं, २३।२४ तिर्थंकर विचाले २५० व-र्षनुं एक कोड़ सागरोपमरा ४२ हजार वर्ष ऊणा २२.

२३ तेवीस बोल जलदी मोक्ष जाणेका. १ आकरो (कठिन) तप करें ते जीव शिघ्र मुक्ति जावें, २ मोक्षरी इछा राखें तो जीव वेगे मोक्ष जावें, ३ शुद्ध प्रणामसें सूत्र सिद्धांत सुणें तो जीव मोक्ष जावें, ४ शुद्ध मनसुं सूत्र ग्यान भणें तो जीव मोक्ष जावें, ५ पांच इंद्रीना विषय त्यागे तो जीव मोक्ष जावें, ६ छकाय जीवारी दया पालें तो जीव मोक्ष जावें, ७ भण्या हुवा ग्यान वार वार विचारें तो जीव मोक्ष जावें, ८ साधु साधवीरी भक्तिभाव राखें तो जीव मोक्ष जावें, ९ तीन जोगसें करण करावण अनुमोदन यह नव कोटी शुद्ध पचखाण करें तो जीव मोक्ष जावें, १० धर्मका संबंध सर्द्दहतो जीव मोक्ष जावें, ११ कषायका त्याग करें तो जीव मोक्ष जावें,

१२ क्षमा करें तो जीव मोक्ष जावें, १३ लग्या दूषणका प्रायश्चित लेवें तो जीव मोक्ष जावें, १४ लीये हुवे व्रत पच्चखाण निर्मल पालें तो जीव मोक्ष जावें, १५ शुद्ध प्रणामसुं शील पालें तो जीव मोक्ष जावें, १६ च्यार तीर्थको साता उपजावें तो जीव मोक्ष जावें, १७ निरवद्य भाषा बोलें तो जीव मोक्ष जावें, १८ संजम लेकर अंततक शुद्ध पालें तो जीव मोक्ष जावें, १९ धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावें तो जीव मोक्ष जावें, २० महीनेमें नव पोसा करें तो जीव मोक्ष जावें, २१ पाछली रात्री धर्म जागरणा करें तो जीव मोक्ष जावें, २२ उन्नय टंक काले प्रतिक्रमण करें सामाइक करें तो जीव मोक्ष जावें, २३ आलोयण लेइ संथारो करी पंडित मरण हुवें तो जीव मोक्ष जावें. ५

२३ बोल तेवीस भावपूजाका- न्हवण करूणाभाव १, जिन गुण जल २, जयणा स्नान ३, अंगोछे अर्थात् नम्रता अंग झुकाइजें ४, केशर भक्ति कीजें ५, श्रद्धारूप वंदणा ६, ध्यान रंगरोल ७, तीलक ते शुद्ध भाव ८, निरमत्र समाधि ते पखाल ९, धर्म ते अंगलुहणो १०, सद्भाव आभरण पहिरावे ११, नववाडी शुद्ध ब्रह्मचर्य नव

अंग पूजा १२, पंचाचार विशुद्ध ते फूल पगर १३, ज्ञानरूप दीपक १४, नयाचिंतन घतपूर १५, तत्त्व पात्र विशाल १६, धूप संवर भाव १७, कृष्णागर गुरु जोग १८, अनुभव ते शुद्ध वास १९, मद्य अष्ट त्याग ते अष्टमंगलीक २०, सत्य ते घंटा २१, सुधर्म ते मंगल दीवो २२, नीसल्प ते टीको २३. ६



## ॥ अथ चोवीस बोल लिख्यते ॥

भणन गुणनका आलस करें तो ग्यानका टोटा बहुसूत्री अध्ययनकी साख १, साधु साधवीके दर्शन न करें तो सम्यक्तमें टोटा सोमल ब्राह्मणकी साख २, काले पडिकमणो न करें तो व्रत पच्चक्खाणमें टोटा उत्तराध्यन सूत्रकी साख २९ मे अध्ययने ३, साधु साधवी मांहोमांही वेयावच्च न करें तो तीर्थमें टोटा ठाणांगसूत्रकी साख ४, तपस्या आचार भावनाका चोर हुवें तो देवताकी उंची पदवीका टोटा पांचमा अध्ययन भगवतीका डुजे उदेशाकी साख ५, कठिन कुद्धष्य भाव राखें तो शितलतापणानो टोटो समवायांगसूत्रनी साख ७, अजयणासुं चालें तो जीवदयाका टोटा उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन २४ मानी साख ८, तन धन जोबन रुपको मद करें सो शुभकर्मका टोटा पन्नवणासूत्रकी साख ९, बडानो विनय न करें तो तीर्थंकरकी आज्ञानो टोटो विवहारसूत्रकी साख १०, माया कपटाइ कुडम करें तो जस कीर्त्तिनो टोटो आचारागसूत्रकी साख ११, पाछली रात धर्म जागरणा नही करें तो धर्मध्यानको टोटो

नसीहसूत्रकी साख १२, क्रोध क्लेश कषाय करें तो हेत स्नेह भावका टोटा कोणि-
क चेभानी परे सूत्र भगवतीनी साख १३, चिंता उचाट माया सोग संकल्प विकल्प
मन करें तो बुद्धि अकलका टोटा भगुप्रोहितनी शाख १४, स्त्रीनो लालची होय तथा
तान राग सांभले तो ब्रह्मचर्यनो टोटो उत्तराध्ययन सूत्रनी साख १५, साधु साधवी
श्रावक श्राविका मांहोमांही हेत मिलाप न राखें तो जैनमार्गनो टोटो संखजी पोख-
लजीनी परें भगवतीसूत्रनी साख १६, सुपात्रने उलटभावसें दान नही देवें तो पुन्य
प्रकृतीनो टोटो पर्में कपीलादासीनी साख १७, साधु गामाणुगामे विहार न करें तो
धर्मकथानो टोटो पर्में सेलक राजऋषीसरनी परे १८, धर्म करें नही ग्यान भणें, नही
इंद्र्यां जीतें नही तो जिनसासननो टोटो पर्में समाचारीनी साख १९, व्रत पचस्काण-
में दोष लगावें आलोवे नही नंदे नही प्रायछित लेवें नही तपस्या करें नही. संले-
षणा करें नही तो मोक्षना सुखनो टोटो पर्में श्री पार्श्वनाथजीनी दोयसें छप्पन सा-
धवीनी परे २०, अरिहंतजीका तथा अरिहंत भाष्या धर्मका तथा च्यार तीर्थना अ-
वर्णवाद बोलें तो सत्यधर्म पामणेको टोटो पर्में ठाणांगसूत्र पांचमे ठाणेनी साख २१

सद्गुरुनो वचन नही मानें तो ऊंची गतिनो टोटो पडे ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तिनी साख २२, साधु साधवी गुरु गुरुणीनी आज्ञा उलंघे तो आराधकपणानो टोटो पडे सुकमाला खंधकजीनी साख २३, भगवानरा वचन उपरांत तर्क उठायने कहे तो शुद्ध मार्ग- १ नो टोटो पडे जमालीजीनी साख २४.

२४ चोवीस जातीना देवता. १० भुवनपति असुर कुमार १, नाग कुमार २, सोवन कुमार ३, विद्युत कुमार ४, अग्नि कुमार ५, दीप कुमार ६, उदधि कुमार ७, दिशा कुमार ८, पवन कुमार ९, थणीय कुमार १०. आठ वाणव्यंतर पिशाच १ भुत २, जक्ष ३, राक्षस ४, किंनर ५, किंपुरुष ६, महोरग ७, गंधर्व ८, पांच ज्योतषि चं- २ द्रमा १, सूर्य २, ग्रह ३, नक्षत्र ४, तारा ५, एक वेमाणीक २४.

२४ अतीत कालकी चोवीसीका नाम. केवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागरजी ३, महायसजी ४, विमलजी ५, सर्वानुभुतिजी ६, श्रीधरजी ७, दत्तजी ८, दामोदरजी ९, सुतेजजी १०, स्वामीजी ११, मुनिसुव्रतजी १२, सुमतीजी १३, शिवगतिजी १४, अस्तागजी १५, नमिस्वरजी १६, अनिलजी १७, यशोधरजी १८, कृतार्थजी १९,

जिनेश्वरजी २०, शुद्धमतीजी २१, शिवंकरजी २२, स्वंदनजी २३, संप्रतिजी २४. ३

२४ अनागतकालकी चोवीसीका नाम. पद्मनाभजी १, सुरदेवजी २, सुपार्श्वजी ३, स्वयंप्रभजी ४, सर्वानुभूतिजी ५, देवश्रुतजी ६, उदयजी ७, पेढालजी ८, पोट्टिलजी ९, सतकीर्त्तिजी १०, सुव्रतजी ११, अममजी १२, निष्कषायजी १३, निष्पुलाकजी १४, निर्ममजी १५, चित्रगुप्तिजी १६, समाधिजी १७, संवरजी १८, यशोधरजी १९, विजयजी २०, मल्लिजी २१, देवजी २२, अनंतवीर्यजी २३, भद्रंकरजी २४. ४

२४ अवगाहना २४ तीर्थंकरनी. पहेलाकी ५०० धनुषरी अवगाहना १, दूजोंकी ४५० धनुषरी अवगाहना २, तीजाकी ४०० धनुषरी अवगाहना ३, चोथाकी ३५० धनुषरी अवगाहना ४, पांचमाकी ३०० धनुषरी अवगाहना ५, छठारी २५० धनुषरी अवगाहना ६, सातमारी २०० धनुषरी अवगाहना ७, आठमारी १५० धनुषरी अवगाहना ८, नवमानी १०० धनुषरी अवगाहना ९, दसमानी ९० धनुषरी अवगाहना १०, इग्यारमानी ८० धनुषरी अवगाहना ११, बारमानी ७० धनुषरी अवगाहना १२, तेरमानी ६० धनुषरी अवगाहना १३, चवदमानी ५० धनुषरी अवगाहना १४, पन-

रमानी ४५ धनुषरी अवगाहना १५, सोलमानी ४० धनुषरी अवगाहना १६, सत्त-रमानी ३५ धनुषरी अवगाहना १७, अढारमानी ३० धनुषरी अवगाहना १८, उगणीसमानी २५ धनुषरी अवगाहना १९, वीसमानी २० धनुषरी अवगाहना २०, इकवीसमानी २५ धनुषरी अवगाहना २१, बावीसमानी २० धनुषरी अवगाहना २२, तेवीसमानी ९ हाथरी अवगाहना २३, चोवीसमानी ७ हाथरी अवगाहना २४. ५

| | तीर्थंकर नाम. | जन्मनगरी. | पितानांनाम | मातानांनाम | आयुमान. | चवन. | जन्म. | दिक्षा. | केवल. | मोक्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ऋषभदेवजी. | वनीतानगरी | नाभीराजा. | मरुदेवा | ८४ लक्षपूर्व | अ.व.४ | चै.व. ७ | चै. व. ८ | का. व. ११ | माह व. १३ |
| २ | अजितनाथजी | अयोध्यानगरी | जितशत्रुरा. | सिद्धार्थरा. | ७२ ,, | वै सु.१२ | मा.सु.८ | माहसु.९ | पो. सु. ११ | चै.सु.५ |
| ३ | संभवनाथजी. | सावथीनगरी | जितारीरा. | सेनाराणी | ६० ,, | फा.सु.८ | मा. सु. १४ | मि. सु. १५ | का.व.५ | चै.सु.५ |
| ४ | अभिनंदनजी. | अयोध्यानगरी | संवरराजा | सिद्धार्थरा. | ५० ,, | वै.सु.४ | मा.सु २ | माह सुद १२ | पो. सुद १४ | वै.सु.८ |

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | सुमतिनाथजी. | अयोध्यानगरी | मेघरथरा. | मंगलाराणी | ४०लक्षपूर्व | श्रा.सु.२ | वै सु. ८ | वै.सु.९ | चै. सु. ११ | चै.सु.९ |
| ६ | पद्मप्रभुजी. | कोशंबीनगरी | श्रीधरराजा | सुसीमारा. | ३० | ,, | माहव.६ | का. व. १२ | का. व. १३ | चै. सु. १५ | मि. व. ११ |
| ७ | सुपार्श्वनाथजी. | वणारसीनग. | प्रतिष्टराजा. | पृथ्वीमाता | २० | ,, | भा.व ८ | जे.सु१२ | जे. सु. १३ | का.व.६ | फा.व.७ |
| ८ | चंद्रप्रभुजी | चंद्रपूरीनगरी | महासेनरा. | लक्ष्मणारा. | १० | ,, | चै.व. ५ | पो.व.१२ | पो. व. १४ | फा.व.७ | भा.व.७ |
| ९ | सुविधिनाथजी | कार्कंदीनगरी | सुग्रीवराजा | रामाराणी | २ | ,, | फा.व.९ | मा. व. १२ | मि.व.६ | का सु ३ | भा.सु.९ |
| १० | सीतळनाथजी. | भदिलपुर. | द्रढरथराजा | नंदाराणी | १ | ,, | चै.व.६ | मा. व. ११ | मा. व. १२ | पो. व. १४ | वै.व. २ |
| ११ | श्रेयांसजी. | सिंहपुरी | विष्णुराजा | विष्णुराणी | ८४ लक्ष वर्ष | जे.व.६ | फा. व. १२ | फा. व. १३ | माहव. ३ | सा.व.३ |
| १२ | वासपूज्यजी. | चंपापुरी | वसुपूज्यरा. | जयाराणी | ७२ | ,, | जे सु.९ | फा. व. १४ | फा.व.३ | मा.सु.२ | अ. सुद १४ |
| १३ | विमलनाथजी | कंपिलपुर. | कृतवर्मरा. | स्वामाराणी | ६० | ,, | वै सु.१२ | मा.सु.३ | मा.सु.४ | पो.सु.६ | अ.व.७ |
| १४ | अनंतनाथजी. | अयोध्यानगरी | सिंहसेनरा. | सुयशाराणी | ३० | ,, | सा.व.७ | वै.व.१४ | वै.व.१४ | वै. व. १४ | चै.व.५ |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५ | धर्मनाथजी. | रत्नपुरीनगरी. | भानुराजा | सुव्रत्ताराणी | १०लक्षवर्ष | वै.सु. ७ | मा.सु.३ | मा. सु. १३ | पो. सु. १५ | जे.सु.५ |
| १६ | शांतिनाथ. | गजपुर. | विश्वसेनरा. | अचिरारा. | १ ,, | भा.सु.७ | जे. व १४ | जे. व. १४ | पो.सु.९ | जे.व. १३ |
| १७ | कुंथुनाथजी. | गजपुर. | सूरराजा | श्रीराणी | ९५हजारव | सा.व.९ | वै.व.१४ | वै.व १४ | वै.सु.३ | वै.व. १ |
| १८ | अरनाथजी. | गजपुर | सुदर्शनरा. | देवीराणी | ८४ ,, | फा.सु.२ | मि. सु. ११ | मि. सु. ११ | का. सु. १२ | मि. सु. १० |
| १९ | मल्लीनाथजी. | मिथिलानगरी | कुंभराजा | प्रभावतीरा. | ५५ ,, | फा.सु.४ | मि. सु. ११ | मि. सु. ११ | मि. सु. ११ | फा. सु १२ |
| २० | मुनिसुव्रतजी. | राजगृहीनगरी | सुमित्रराजा | पद्मावतीरा | ३० ,, | सा. सु. १५ | जे.व. ८ | फा. सु. १२ | फा. व. १२ | जे. व ९ |
| २१ | नमीनाथजी. | मथुरानगरी | विजयराजा | विप्राराणी | १० ,, | आ. सु. १५ | श्रो.व. ८ | अ.व. ९ | मि. सु. ११ | वै.व.१० |
| २२ | नेमिनाथजी. | सौरीपुर. | समुद्रविजय | शिवादेवी | १ ,, | का०व० १२ | सा.सु.५ | सा.सु.६ | आ.व. ३ | अ.सु.८ |
| २३ | पार्श्वनाथजी | वणारसीनगरी | अश्वसेनरा. | वामादेवी | १०० ,, | चै.व.४ | पो. व. १० | पो. व. ११ | चै.व. ४ | सा.सु.८ |
| २४ | महावीरजी | क्षत्रियकुंड न | सिद्धार्थरा. | त्रिशलादेवी | ७२ ,, | अ.सु. ६ | चै. सु. १३ | मि. व. १० | वै.सु.१० | का.व.९ आ.व.१३ गर्भापहार |

२४ चोवीस दंमकना नाम. सात नारकीरो एक दंमक १, दश भवनपतीरा दश दंमक ११, पांच थावररा पांच दंमक १६, तीन विकलेंडीरा त्रण दंमक १९, तिर्यंच पंचेंडी दंमक २०, मनुष्यनो २१, वाणव्यंतरनो २२, जोतषीनो २३, वैमानीकनो २४. ७

॥ अथ पचीसमा बोल लिख्यते ॥

२५ महाव्रतनी पचीश भावना. पहिले महाव्रतकी पांच भावना. इर्याभावना १, मनभावना २, वचनभावना ३, एषणाभावना ४, आयाणभंम्मत निखेवणाभावना ५, दुजे महाव्रतरी पांच भावना. जूठ न बोलें ६, क्रोध करी न बोलें ७, लोभ करी न बोलें ८, भय करी न बोलें ९, हास करी न बोलें १०, तीजे महाव्रतनी पांच भावना. अढार प्रकारना थानक न भोगवें ११, तृण मात्र पण जाचीने लेवें १२, थानक घटारे मठारे नही १३, साधर्मीका वस्त्र आज्ञा विना लेवें नही १४, साधुरी वेयावच्च करें १५, चोथे महाव्रतरी पांच भावना. स्त्री पशु पंम्डगरहित थानक भोगवें १६, स्त्री की कथा न करें १७, स्त्रीका अंग उपांग न निरखें १८, पूर्वली क्रीम्डा भोग न संभारे १९, सरस आहार नित प्रते न करें २०, पांचमा महाव्रतनी पांच भावना. शब्द २१, रुप २२, गंध २३, रस २४, फरस २५. मनोगम उपर राग न करें अमनोगम उपरे द्वेष न करें. १

२५ पडिलेहणा पचीस. नव अखोडा ९, नव पखोडा १८, ७ पडिमा २४, एक द्रष्टि. २

२५ बोल पचीस असंख्याता. पांच थावरका जीव. पृथ्वी १, अप्प २, तेउ ३, वाउ ४, प्रत्येक वनस्पतिका जीव ५, बेरंद्री ६, तेरंद्री ७, चोरंद्री ८, समुर्छिम मनुष्य ९, संमुर्छिम तिर्यंच १०, जलचर सनी ११, थलचर सनी १२, खेचर सनी १३, नारकी १४, भवनपति १५, वाणव्यंतर १६, वैमानीक १७, जोतषी १८, द्वीप १९, समुद्र २० धर्मास्ति २१, अधर्मास्ति २२, आकाशास्ति २३, एक जीवरा प्रदेश २४, साधारण वनस्पतिरा शरीर २५. ३

२५ पडिलेहणा पचीश. समकितमोहनी १, मिथ्यातमोहनी २, मिश्रमोहनी ३, कामराग ४, स्नेहराग ५, दृष्टिराग ६, सुदेव ७, सुगुरु ८ सुधर्मकी सरदहणा ९, तीन अग्यान छोडे १२ शुभमन १३, शुभवचन १४, शुभकाया १५, अशुभ मन, वचन, काया १८, कुदेव १९, कुगुरु २०, कुधर्म २१, तीन ग्यान २४, द्रिष्टि २५. ४

२५ पचीस पडिलेहणा. हास्य १, रति २, अरति ३, भय ४, सोग ५, दुगंछा ६, कृष्णलेश्या ७, नीललेश्या ८, कापोतलेश्या ९, ऋद्धिगारव १०, रसगारव ११, सातागा-

रव १२, मायाशल्य १३ नियाणाशल्य १४ मिथ्यादर्शणशल्य १५ क्रोध १६ मान १७, माया १८ लोभ १९ पृथ्वी २० अप्प २१ तेउ २२ वाउ २३ वनस्पति, त्रसकाय. ५

२५ मिथ्यात्व पचीस प्रकारनो. धम्मे अधम्म सन्ना १, अधम्मे धम्म सन्ना २, मग्गे उम-ग्ग सन्ना ३, उमग्गे मग्ग सन्ना ४, जीवे अजीव सन्ना ५, अजीवे जीव सन्ना ६, साधु असाधु सन्ना ७, असाधु साधु सन्ना ८, मुत्ते अमुत्त सन्ना ९, अमुत्ते मुत्त स-न्ना १०, अभिग्रहीक मिथ्यात ११, अणाभिगृहीक मिथ्यात १२, अभिनिवेसिक मि-थ्यात १३, अणाउपयोग.मिथ्यात १४, संसयिक मिथ्यात १५, लोकिक मिथ्यात १६ लोकोत्तर १७, कुपरावचन मिथ्यात १८, उणारित १९, अइरित २०, अकरिया मि-थ्यात २१, विपरीत मि० २२. अविनय २३, अपमान २४, असातना मि० २५. ६

२५ पचीस क्रिया. काइया १, अहिगरीणीया २, पाउसिया ३, परितावणिया ४, पाणा-इवाया ५, आरंभिया ६, परिगहिया ७, माया वत्तिया ८, मिछादंसण वत्तिया ९, अपचखाण वत्तिया १०, दिठिया ११, पुंठीया १२, पाडुंचीया १३, सामंतोवणिया १४, साहथिया १५, निसीथीया १६, अणवणीया १७, विदारणिया १८, अणाभो-

गवत्तिया १९, अणवकंखवत्तिया २०, अणाउपयोग २१, समुदाणी २२, पेज २३ दोस २४ इरियावहीक्रिया २५. ७

२५ साढा २५ आर्य देश. मगध देश राजग्रही नगरी १ कोमी ६६ लाख गाम १, अंग देश चंपानगरी ५ लाख गाम २, बंग देश तामलीक नगरी १८ लाख गाम ३, कलिंग देश कंचणपूर नगर २० लाख गाम ४, काशी देश वाणारसी नगरी १ लाख ९० हजार गाम ५, कोसल देश अजोध्या नगरी ९९ हजार गाम ६, कुरू देश गजपूर नगरी ८ आठ लाख २३ तेवीस हजार ४२५ गाम ७, कुशावर्त्त देश. सोरीपुर नगर १ एक लाख ४३ हजार गाम ८, पंचाल देश कंपिलपुर नगर तीन लाख तेसठ ६३ हजार गाम ९, जंगल देश अहिछत्रानगरी ७ लाख ४५ पेतालीस हजार गाम १०, कछ देश कोशंबी नगरी २८ हजार गाम ११ सांम्डिल देश नंदीपुर नगरी २१ हजार गाम १२, मालव देश भद्दिलपुर नगरी ७० हजार गाम १३, वछ देश वेराट नगरी २ लाख ८८ अठ्यासी हजार गाम १४, दशार्ण देश मृगावती नगरी १८ हजार गाम १५, वरण देश इछापुर नगरी चोवीस २४ हजार गाम १६,

विदेह देश सिवावती नगरी ४२ हजार गाम १७, सिंधू देश वीतभयपाटण नगरी ६ लाख ८० असी हजार पांचसो गाम १८, सोवीर देश मथुरा नगरी ८ हजार गाम १९, विदेह देश मथुरा नगरी ८ हजार गाम २०, शुरसेन देश पावापुरी नगरी ३६ छतीस हजार गाम २१, भंग देश मासपुर नगर ५२ हजार चारसो पचास गाम २२, लाटण देश कादावती नगरी ७० लाख १३ हजार गाम २३, कुणाल देश सावत्थी नगरी ६३ तेसठ हजार गाम २४, सोरठ देश द्वारा नगरी ६८ अमसठ हजार ५ पांचसे २६ छवीस गाम २५, केकई देश सेतांबका नगरी १ लाख २९ हजार आर्य देश १ लाख २९ हजार अनार्य देश ७ हजार खाखसे. ८

२५ पचीस स्थान. प्रासाद १, विहार २, हर्म्म ३, हस्तिशाला ४, अश्वशाला ५, भांमा-गार ६, कोष्टागार ७, भूमिगृह ८, धर्मशाला ९, दानशाला १०, सभाशाला ११, आयुधशाला १२, स्नानगृह १३, अलंकारसभा १४, नायकगृह १५, शत्रुकार १६, पानीयशाला १७ आश्रम क्रीमा गृह १८ महानस भोजनशाला १९ शांतिगृह २० उटज अपवरकचंद्र० २१, सूतिकागृह २२, गोशाला २३, पाकपूटिगतिका तपनीश-

२५ पचीस क्रिया अर्थः—कायाये करी क्रिया कीजें ते कायकीक्रिया १, हल मुसल कसी कुहालादि शस्त्रसुं ऊपजे ते अधिकरणकी २, रीससुं ऊपजें ते प्रद्वेषकी ३, परने पीमा ऊपजावें ते पारितापनकी ४, प्राणी वध कीजें ते प्राणातिपातकी ५, आरंभ कीजें करसाणादिक ते आरंभकी ६, धन धान्यादि लाभे ते परिग्रहकी ७, मायाये करी लागें ते मायाप्रत्ययिकी ८, मिथ्यात्वे करी लागें ते मिथ्यादर्शनकी ए, अविरतीने लागें ते अपच्चखाणकी १० नाटक प्रमुखने जोयवै लागें ते दृष्टिकी ११, सुकमालने फरसें ते पृष्टिकी १२, बाहिरली वस्तु कांइ देखी ते वस्तु करवा वांछे ते प्रातीति १३, घृतादिक भाजन न ढांके ते सामंतोपनिकी १४, हथीयार घमावें अथवा तीखा करावें शस्त्रकी १५, आपणे हाथे हणें ते स्वहस्तीकी १६, वस्तु अणावे मेल्हिवे ते आज्ञापतिकी १७, फल काष्ठादि विदार ते विदारणकी १८, अजाणतां कीजें ते अनाभोगीकी १ए, इहलोक परलोक विरोधी ते अनवकांख प्रत्ययकी २०, अन्य पांस कार्य करावें ते अन्य प्रयोगकी २१, आठ कर्मना बंध थाय ते समुदानकी २२,

स्नेहे करी लागें ते प्रेमकी २३, क्रोध माने करी लागें ते द्वेषकी २४, केवलीने लागें ते इरज्यापथिकी २५. १०



## ॥ अथ छवीस बोल लिख्यते ॥

२६ बोल छवीस प्रश्नोत्तर. १ कहो पुजजी कहो स्वामीजी इयां घणा जीवांरी उत्पत्ति की सै पापरे उदेसुं. सुण सिष्य पुरवले भव घणा कछ मछरो आहार कीनो तिण पापरे उदेसुं, २ कहो पुजजी इण जीवने भणणां गुणणो नही आवे सुं किण पापरे उदेसुं पुरवले भव आप भणीयो नही पेलैने भणतां अंतराय दीनी तिण पापरे उदेसुं, ३ कहो पूज्य जीव कालो कुदरसण कीण पापरे उदेसुं. पूरवले भव रूपरो अहंकार कीनो तिण पापरे उदेसुं, ४ कहो पूज्य इण जीवने अजस अकीरती आवेसुं किण पापरे उदेसुं सासु ससरेसुं इसका कीना तिण पापरे उदेसुं, ५ कहो पूज्य इण जीवने कुभो कलंक आवेसुं. किण पापरे उदेसुं पुरव भवे वारंवार कलह कीनो तिण पापरे उदेसुं. ६ कहो पूज्य इण जीवरो बोलायो चालीयो सुहावें नहीसुं किण पापरे उदेसुं. पुरवले भव आपरो कियो थापीयो पेलैरो कियो उथापीयो तिण पापरे उदेसुं, ७ कहो पूज्य इण जीवने शाताशी जस मीलें नही सुं किण पापरे

उदेसुं. पूर्व भव जातरो अहंकार किनो तिण पापरे उदेसुं, ८ कहो पूज्य इण जीवने घणो क्रोध आवें सुंकिण पापरे उदेसुं. पुरवले भव घणो लोभ कीनो तिण पापरे उदैसुं, ए कहो पूज्य इण जीवरे संसारभ्रमण मिट्यो नही सुंकिण पापरे उदैसुं. पुरव भवे पोसा पडिकमणेमें विराधना कीनी तिण पापरे उदैसुं १०, कहो पूज्य इण जीवने देस परदेस जावे पिण लाभ हुवे नही सुं किण पापरे उदैसुं. पुरवले भव पोते दान दियो नही पैलेने देतां अंतराय दीनी तिण पापरे उदैसुं ११, कहो पूज्य इण जीव पांचे इंद्री हीण पाइसुं किसे पापरे उदैसुं. पूरवले भव गाजर मूला कांदा जमिकंदरो आहार कीनो तिण पापरे उदैसुं १२, कहो पूज्य इण जीवे पुरुष पणो पायने स्त्री सरीखो हुवे सुं किसे पापरे उदैसुं. पुरवले भवे मायारी कपटाइ कीनी तिण पापरे उदैसुं १३, कहो पूज्य इण जीवे पांच इंद्रिरो विजोग पायो सुं किण पापरे उदैसुं पूरव भवे वनस्पतिनी छेदन भेदन घणी कीनी तिण पापरे उदैसुं १४, कहो पूज्य इण जीवने घणी निंद आवे सुं किण पापरे उदैसुं. पुरव भवे दारु भागरो निसो घणो कीनो तिण पापरे उदै सुं १५, कहो पूज्य इण जीवरो शरीर

निरोग नही रहे सुं किण पापरे उदैसुं. पुरव भवे घणा जीव मोसीया तिण पापरे उदे सुं १६, कहो पूज्य आ जीव लूलो पांगलो गूंगो कीसे पापरे उदैसुं. पुरवले भव भागसीमे घालने कुटोया पीटीया तिण पापरे उदै सुं १७, कहो पूज्य इण जीवने रोज घणो आवे सुं किसे पापरे उदै सुं पुरवले भव काची कुंपलां तोडी तिण पापरे उदै सुं १८, कहो पूज्य इण जीवसुं तपस्या नही हुवे सुं किण पापरे उदै सुं पूरवले भव आप तपस्या किधी नही ने पेले करताने अंतराय दीनी तिण पापरे उदैसुं १९, कहो पूज्य इण जीवने लुगाइ बेटा घर सुहावे नही सुं किण पापरे उदैसुं पुरवले भव दान सील तप भावना भावी नही तिण पापरे उदै सुं २०, कहो पूज्य इण जीवने सीख सीखामण वाहाली लागे नही सुं किण पापरे उदै सुं पूरव भवे आर्त्त ध्यान रुद्र ध्यान ध्यायो तिण पापरे उदै सुं. २१, कहो पूज्य इण जीवने भरजोबनमे दयापणो आवे नही सुं किण पापरे उदै सुं पूरव भवे घणा मैला मंत्र कीना तिण पापरे उदै सुं २२, कहो पूज्य इण जीवने भरजोबनपणामे रंडापो आवे सुं कीण पापरे उदै सुं. पुरव भवे जन्म सुं हंस उपाडिया तिण पापरे

उदयसुं २३, कहो पूज्य इण जीवने कुटंब घररो सुख देवे नही सुं किण पापरे उदै सुं. पुरव भवे टोगमा टोगमीने दुध ढोमीयो नही ने अंतराय दीनी तिण पापरे उदै सुं २४, कहो पूज्य आ जीव कांणो हुवो सुं किसे पापरे उदैसुं ? पुरव भवे बोरकाचर फल फुल सूइसुं विंधीया ने माला किनी तिण पापरे उदैसुं २५, कहो पूज्य आ जीव आंधो हुवेसुं किण पापरे उदैसुं. पुरवले भव दीसता जीव धानमे पीसीया तिण पापरे उदैसुं २६, कहो पूज्य ओ जीव अपुत्रीयो दुखीयो हुवे सुं किण पापरे उदैसुं. पुरवले भव घणी बुराइ कीनीं अणदिठी अणसुणी वातो कीधी तिण पापरे उदेसुं. १

२६ बोल २६ श्रावकरी मर्यादारा. अंगोछा उल्लणिया विहं १, दंतण विहं २, वृक्षना फल फल विहं ३, तेलादि अभ्यंगण विहं ४, मर्द्दन उवट्टण विहं ५, स्नानपाणी मज्जण विहं ६, वस्त्र वस्त्र विहं ७, चंदनादि विलेवण विहं ८, फुल पुष्फ विहं ९, गहणा आभरण विहं १०, धूप विहं ११, पीणकीचिज पेज विहं १२, सुखडी वगेरे भक्षण विहं १३, चावल उदन विहं १४, दाल सूप विहं १५, विगय विहं १६, साग विहं

१७, वेलरा फल माहुर विहं १८, जिमण विहं १९, पाणी विहं २०, मुखवास विहं २१, पगरणि वाहनि विहं २२, असवारी वाहन विहं २३, सिज्जा सयण विहं २४, सचित्त विहं २५, दव्व विहं २६.  २

२६ गुणठाणा १४ ऊपर २६ बोल. १४ गुणठाणा मांहि २ सावद्द १।३,१२ निर्वद १, १४ गुणठाणामे २ अधर्मि १।३, बाकी १२ धर्मि २, गुणठाणा १४ मांहि २ परमत्ती १।३, १२ समत्ति ३, गुणठाणा १४ मांहि २ विराधक १।२, १२ आराधक ४, गुणठाणा १४ में २ आग्या बाहिर १।३, १२ आग्या मांहि ५, १४ गुणठाणामें २ मिथ्याहष्टि १।३। १२ सम्यगहष्टि ६, १४ गुणठाणे २ अग्यानि १।३, १२ ग्यानि ७, १४ गुणठाणे ४ अवृत्ति पांचमो १ वृत्ति ९ सर्ववृत्ति ८ में गुणठाणा १४।४ असंवरी पहिलो १ पांचमो संवरासंवरी ९ संवरी. गुणठाणा १४ में ४ असंजती १ पांचमो संयता संयती ९ संयमी १०, १४ गुणठाणे १२ अकेवली २ केवली १३।१४ मो ११, १४ गुणठाणे १० सरागी पहिला ४ वितरागी ११, १२, १३. १४।१२. १४ गुणठाणे ९ सवेदी ५ अवेदी १० ११, १२, १३, १४ मो १३. १४ गुणठाणे ३ गुणठाणामे काल न करे ३।१२।१३ मे

बाकी ११ गुणठाणा काल करे १४, गुणठाणा १४ में ५ सास्वता १।४।५।६।१३ मो ९ असासता १५, तीर्थंकरदेव ५ गुणठाणा नही फरसे २।३।५।११ मो ९ फरसे १६, १४ गुणठाणे ६ प्रमादी प्रथम ८ अप्रमादी १७, १४ गुणठाणे १० सकषाइ प्रथम ४ अकषाइ १८, १४ गुणठाणे १३ संयोगी १ अयोगी १४ मो १९, १४ गुणठाणे सलेसी १३ अलेसी १४ मो २०, १४ गुणठाणे १३ भासक १ अभासक १४ मो २१, १४ गुणठाणे १३ आहारी १ अणाहारीक १४ मो २२, पहिले गुणठाणे भव्य अभव्य दोनुं बाकी १३ गुणठाणे भव्य २३, गुणठाणा ३ जीवरे परभव साथे जावे १।२।४ बाकी ११ न जावे २४, १४ गुणठाणे ११ सइंदिया १३।१४ मो अणेंदीया २५, १४ गुणठाणा ४ अपचखाणी प्रथम १० पचखाणी २६. ३

२६ देवलोक १६. बारे १२ कल्प ९ ग्रैवेक ५ अणुत्तर विमाण एवं २६. ४



## ॥ अथ सत्तावीस बोल लिख्यते ॥

२७ सत्तावीस गुण साधुके. पांच महाव्रत पालें, पांच इंद्री वश करें, च्यार कषाय टालें एवं १४. क्षमावंत १५, वैराग्यवंत १६, भावसच्चे १७, करणसच्चे १८, योगसच्चे १९, मन समधारणीया २०, वयसमधारणीया २१, कायसमधारणीया २२, नाणसंपन्ने २३, दर्शनसंपन्ने २४, चरित्रसंपन्ने २५, सितादिकवेदनी सहे २६, मरणांत उपसर्ग सहे. १

२७ आकाशना सत्तावीश बोल. आगासे तिवा १, आकाश त्थकाए तीवा २, गगणेतिवा ३, उसेतिवा ४, समेतिवा ५, विसमेतिवा ६, खहेतिवा ७, तिहेतिवा ८, वातातिवा ९, विवरेतिवा १०, अम्बरेतिवा ११, अंबरेतिवा १२, गम्भेतिवा १३, गुसिरेतिवा १४, मगेतिवा १५, विमुहेतिवा १६, अदेतिवा १७, वियदेतिवा १८, आधारेतिवा १९ वोमेतिवा २०, भायणतिवा २१, अतिरिखेतिवा २२, सामेतिवा २३, उवासंतरतिवा २४, आगमेतिवा २५, फलिहेतिवा २६, अणंतेतिवा २७. २

२७ पृथ्वीकायना भेद सत्तावीश. १ स्फटिकरत्न, २ मणिरत्न, ३ रत्ननी सर्व जाति ४, प-

खाला, ५ हिंगलो, ६ हरताल, ७ मणशिल, ८ पारो, ९ सोनुं, १० रूपुं, ११ त्रांबु १२ लोढुं, १३ जसत, १४ सीसुं, १५ कथिर, १६ खमीमाटी, १७ हरमजीवानी १८ अरणेटोपाषाण, १९ पलेवोपाषाण २०, अबरख २१, तुरीमाटीनी जाति २२, खारी माटीनी जाति, २३ माटीनी सर्व जाति, २४ पाषाणनी सर्व जाति, २५ सुरमानी जाति, २६ अंजननी जाति, २७ लूणनी जाति. ३

२७ शिखामणके सत्तावीश बोल. १ मित्रसें कपट रखणा नही, २ स्नेहवान स्त्रीका पण विश्वास न करणा, ३ अन्याय मार्गसेंती द्रव्य पेदा न करणा, ४ बम्रोंके साथ वैर करणा नही, ५ नीच पुरूषके संग विवाद करणा नही, ६ वैरीके उपर पण निर्दयी न होणा, ७ समर्थ होकर दुसरेकी आशा भंग नही करणी, ८ किसीकुं जूठा कलंक न देना, ९ किसीकुं खराव मालुम होय एसा वर्त्ताव नही करणा, १०, जिस ठिकाणे दुश्मन ज्यादा होय वहां जावें नही, ११ अपणी बडाइ मुखसें करणा नही, १२ चोरीकी चीज मोल लेणी नही, १३ कार्य तथा सत्कार विगर किसीके घर जाणा नही, १४ मातापितानी आग्या लोपवी नही, १५ सगां साथे कदापि विरोध

करवो नही, १६ कपटीका आडंबरको विश्वास न करणो, १७ शूरवीर होकर निर्बलने दुःख देणा नही, १८ अति कष्ट पड्ये पण आत्मघात करणा नही, १९ हांसी करतां किसीपर क्रोध करणो नही, २० कोइ क्रोधने वशे करी कडवा वचन आय कर कहै तथापि न्यायमार्ग छोडे नही, २१ माता पिता गुरु शेठ स्वामी और राजा इणोके अवगुण बोलणा नही २२, स्नेहराग समान दुसरा उत्कृष्ट बंधन नही और प्राणीकी हिंसा समान मोटा पाप नही, २३, माता बेन और पुत्री साथे एक आसने बेठणा नही, २४ क्रोधी कृपण आलसु और व्यसनीकी संगत करणी नही, २५ धनसें बहोत प्यार होय परंतु अन्याय करी उपार्जन नही करणा कारण सोनेरी छूरी कोइ पेटमां मारता नथी, २६ कदापी सत्य छोडना नही, २७ जिस घरमें कोइ मनुष्य न होय उसमें चोकस विना जाणा नही. ४

## ॥ अथ अठावीस बोल लिख्यते ॥

२८ अठावीस आचार कल्प. आचारांगसूत्रना पचीश अध्ययन. स्त्रीपरिज्ञा अध्ययन १, लोकविजीया २, सीतोसनीया ३, समक्त ४, लोकसार ५, धुता ६, विमोखा ७, उपादान ८, महाप्रज्ञा ९, पिंडेषणा १०, सेज्या ११, इर्या १२, भाषा १३, वस्त्र एषणा १४, पात्र एषणा १५, अवग्रहपडिमा १६, सात सतकीया २३, भावना २४, विमुक्ता २५, उसीतना त्रण. लघुमासादिक प्रायछित २६, गुरुमासादिक प्रायछित २७, व्रत आरोपण प्रायछित २८. १

२८ शिखामणका अठावीस बोल. सुधी सरदहणासुं सुणेवेका उद्यम करें १, जो जो मर्यादा वडाने करी तेहनो निरवाह करवो २, डुसमनसेंती काम पडें तो विचारीने पाडवो ३, घणी लटपट करें तिणने आपणो मन नही दीजें ४, लोक बुगाइ उभा रहेने वात न करवी ५, वडा सीख देवें तो प्रमाण करवी ६, जिसके बोलीये बंध नही तिणसेंती न बोलीये ७, सील समकितमें परिसह उपजें तो पिण नहि गणो ८

नीचकी संगती न करवी ९, वडासुं मित्रसुं हेत वधारवो १०. सात कुव्यसनरो संग न करवो ११, वडेरा चूका हुवे वाद न करवो १२, अणविवेकीने सीख न देणी, माने वा न मानें १३ वडेरानो विनय करवो १४, आपरा गुण आपरे मुंढेसुं न प्रकासवा १५, पारका अवगुण जाणतो हुवें ते किणही आगल न कहेवा १६, घरमें सुख दुःख अनेक छे पिण धर्मरी मर्यादा न मूके १७, नीच पुरुषने न छेडवो छेडे तो रेंकारा तुकारा बोलें १८, पीठ पाछे किणरी निंदा न करवी जो सांभले तो वेर बंधे १९, सील संयमे दिढ रहेवो २०, क्रोधीने न छेडवो २१, दोय जणा वात करता होय तो तीजाने उभो न रहणो २२, आपरे घररा छिद्र तथा सुख दुःख किणहीसुं न कहणो २३, जो क्रोध आवें तो जिम तिम न बोलें बोलें तो पीछतावणो पडे २४, विवहार निश्चे दोइ साचववा उद्यम ते व्यवहार निश्चे करवो ते मोक्ष २५, वडेरां ताणता होय तो छोटाने ढील देणी २६, घरमें काम अनेक छे पिण दोय घडी धर्मरो काम करवो २७, आगे पाछे जोइने चतुराइसुं बोलवो २८. २

२८ अठावीसवार फलातां गिणवी. पुछंगे १, पुवे २, त्रडियंगे ३, तुडीए ४, अडडंगे ५,

अममे ६, अववंगे ७, अववे ८, हुहुअंगे ९, हुहुए १०, उपलंगे ११, उपले १२, पनुमंसे १३, पउगे, १४, नलिणंगे १५, नलिणे १६, अठणीउरगे १७, अठिणीउर १८, आउअंगे १९, आउ २०, नउअंगे २१, नउ २२, पउअंगे २३, पउ २४, चुलिअंगे २५, चुली २६, ससीपहेली अंगे २७, सीसपहेली २८. ३

२८ अठाइस लब्धी. आमोसही १, विप्पोसही २, खेलोसही ३, जलोसही ४, सवोसही ५, सन्निनश्रोता ६, अवधिज्ञान ७, रूजुमति ८, विपुलमति ९, चारणलब्धि १०, असिविष ११, केवललब्धि १२, गणधर लब्धि १३, पूर्वधरलब्धि १४, अरिहंतलब्धि १५, चक्रवर्त्ति लब्धि १६, वासुदेव लब्धि १७, बलदेव लब्धि १८, वीरमधुसपिया १९ पदानुसारी २०, काष्टबुद्धी २१, बाहुबुद्धी २२, तेजु लेश्या २३, आहारक सरीर लब्धि २४, सीतल लेश्या २५, वैक्रिय लब्धि २६, अखीण माहाणसीया लब्धि २७, पुलाक लब्धि २८. ४

२८ श्री वीरनी २८ उपमा. सूर्यनी उपमा १, अग्निनि उपमा २, समुद्रनी उपमा ३, देवतामांहि इन्द्र मोटो ४, उंचामांहि समेर पर्वत मोटो ५, लांबा पर्वतमांहि निषध

पर्वत ६, चुम्रि आकारे पर्वतमाहि रुचिक पर्वत ७, रूखमांहि सामलि वृक्ष ८, वनां मांहि नंदन वन ९, शब्दामांहि गाजनो शब्द १०, ग्रह नक्षत्र मांहि चंद्रमा ११, सुगंधमांहि बावनाचंदन १२, समुद्रमांहि स्वयंभूरमण समुद्र १३, नागकुमार मांहि धरणिंद्र १४, रसामांहि सेलडी रस १५, हाथीया मांहि ऐरावण हाथी १६, सिंह मांहि केसरीसिंह १७, नदीया मांहि गंगानदी १८, पंखीया मांहि गरूड पंखी १९, युधमें वासुदेव २०, फूला मांहि अरविंद कमल २१, दानमांहि अभयदान २२, राजामांहि चक्रवर्त्ति २३, सतभाषामांहि निरवद्य भाषा २४, तपस्यामांहि सिल तपस्या २५, देवताकी थितिमांहि लवसतमिया २६, सभामांहि सुधर्मा सभा मोटी तिम भगवंत मोटा २७, धर्ममांहि मुक्ति मोटी तिम भगवंत मोटा २८. ५

२८ चोथा मोहनीय कर्मनी उत्तर प्रकृति २८. १ सम्यक्त मोहनीय, २ मिश्र मोहनीय, ३ मिथ्यात्व मोहनीय, ४ अनंतानुबंधी क्रोध, ५ अप्रत्याख्यानी क्रोध, ६ प्रत्याख्यानी क्रोध, ७ संज्वलन क्रोध, ८ अनंतानुबंधी मान, ९ अप्रत्याख्यानी मान, १० प्रत्याख्यानी मानी, ११ संज्वलन मान, १२ अनंतानुबंधी माया, १३ अप्रत्याख्यानी माया

१४ प्रत्याख्यानी माया, १५ संज्वलन माया, १६ अनंतानुबंधी लोभ, १७ अप्रत्याख्यानी लोभ, १८ प्रत्याख्यानी लोभ, १९ संज्वलन लोभ, २० हास्यनोकषाय, २१ रतिनोकषाय, २२ अरतिनोकषाय, २३ शोकनोकषाय, २४ भयनोकषाय, २५ जुगुप्सानोकषाय, २६ पुरुष वेदनोकषाय, २७ स्त्री वेदनोकषाय, २८ नपुंसक वेदनोकषाय.

## ॥ अथ ओगुणतीस बोल लिख्यते ॥

२९ पापसूत्र २९. भूमिकंप विचार शास्त्र १, दिशा लाल फल विचार शास्त्र २, सुपनका विचार शास्त्र ३, उलकापात धरती धूजै ४, अंग फूरणेका ५, सुरचलणेका ६, तिलमिसेका ७, स्त्री पुरुष लक्षण ८, अर्थ १६, अर्थ पाठ दोनो २४, विकथा करणेका २५, जोतिषशास्त्र २६, वेदक शास्त्र २७, जोगमिलावणेका २८ ऊंर अनेरा वसीकरणादिक २९.

२:

२९ मूर्खका २९ बोल. १ विना भूख खाय सो मूरख, २ अजीर्णथकां खाय सो मूरख ३ घणो सूवे सो मूरख ४, घणो चले सो मूरख ५, घणी देर पग ऊपर भार देइने बेठे सो मूरख ६, वर्मनीत लोटीनीतकी हाजत रोकें सो मूरख ७, नीचेकुं शिर ऊपरकुं पग करके सुवे सो मूरख ८, सारी रात स्त्री संग विषय सेवें सो मूरख ९, सोले वरसकी उमर होय विना मैथुन सेवें सो मूरख १०, बुढापेमें व्यांह सो मूरख ११, भोजन तथा भजन करतां वात करें तथा हसें सो मूरख १२ चिंता मिटतां बाद करें

सो मूरख १३, हजामत करावतां वात करें सो मूरख १४, विना पहिचाने आदमीके साथ चले सो मूरख १५, पच्चखाण लेके याद न करें सो मूरख १६, माता पिता और गुरुकी भक्ति नही करें सो मूरख १७, धनवानसें और पंडितसें वाद करें सो मूरख १८, तपस्वीसें वाद करें सो मूरख १९, पराया बल धन रूप विद्या देखके हर्ष या ईर्षा करे सो मूर्ख २०, हकीमके मिलणेसे रोगकी हकीकत सुनायके औषध न खाय सो मूर्ख २१, पंडितके मिले पर मनका संसा न मिटावे सो मूर्ख २२, सतपुरुष त्यागी साधूकी संगत पायके त्याग पच्चखाण सेवा भक्ति न करे सो मूर्ख २३, सुपात्रके जोग मिले पर दान नही देवे सो मूर्ख २४, पाणी पीतो हसे सो मूर्ख २५, दारिद्र आवे आगली कमाइनी इछा राखे सो मूर्ख २६, आपरा गुण आपरे मुखसुं वखाणे सो मूर्ख २७, माथे देणो करके धर्म करे सो मूर्ख २८, उधारो धन देके पाछो नही मागे सो मूर्ख २९, सजन साथे विरोध करे और पारका लोको साथे प्रीति करे सो मूर्ख. २

२९ २९ अढारना उत्कृष्टा मनुष. ७ कोडाकोड कोड कोड ९२ लाख कोडाकोड कोड

२५

२८ हजार कोड़ कोड़ाकोड़ २ सो कोड़ कोड़ाकोड़ ६२ कोड़ कोड़ाकोड़ ९२ लाख कोड़ाकोड़ ४२ हजार कोड़ाकोड़ ६४३ सो कोड़ाकोड़ ३७ लाख कोड़ ५९ हजार कोड़ ३५४ सो कोड़ ३९ लाख ५० हजार ३३६ ॥ ७।९२।२८।१।६२।५१।४२।६४३।
३७।५९।३५४।३९।५०।३३६. ३



॥ अथ तीस बोल लिख्यते ॥

३० तीस बोल करी जीव महा मोहनी कर्म बांधे. त्रस जीवने पाणी मांहि म्बोयने मारे ते जीव महा मोहनीय कर्म बांधे १, मुहमा जिंचीने गला घोंटीने मारे ते जीव महा मोहनी कर्म बांधे २, अग्निमे प्रज्वालि धुंवाम्मामे घोटीने मारे ते जीव महा मोहनीय कर्म बांधे ३, माथे घाव घालीने मारे ते जीव महा मोहनी कर्म बांधे ४, आला चांबमा घूप तावमामें बेठाइने मारे ते जीव महा मोहनी कर्म बांधे ५, गहला गूंगाने मारीनें हसे ते महा मोहनी कर्म बांधे ६, अणाचार सेवीने गोपवे ते महा मोहनी कर्म बांधे ७, आपणो सेव्यो पाप पारके माथे देवे ते महा मोहनी कर्म बांधे ८, जरी पर्षदामें मिश्र जाषा बोले ते महा मोहनी कर्म बांधे ९, राजाका बुरा चिंतवें धन आवताने रोके राजारी राणीने जोगवे ते महा मोहनी कर्म बांधे १०, बाल ब्रह्मचारी नही बाल ब्रह्मचारी कहावे ते महा मोहनी कर्म बांधे ११, ब्रह्मचारी नही ओर ब्रह्मचारी कहावे ते महा मोहनी कर्म बांधे १२, साहने गुमास्ता राख्या ठे ते-

हना बुरा चिंतवे धन खंमावे साहको स्त्रीने भोगवे ते महा मोहनी कर्म बांधे १३, अने इश्वर हुवो पंचाने इश्वर करी थाप्यो छे ते पंचानु बुरा चिंतवे ते महा मोहनी कर्म बांधे १४, चाकर ठाकुरने प्रधान राजाने स्त्री भरतारने मारे सापण आपणे इश्माने गीले ते महा मोहनी कर्म बांधे १५, पृथ्वीपति राजाकी घात चिंतवे ते महा मोहनी कर्म बांधे १६, एक देशनो राजा तथा साध साधवीकी घात चिंतवे ते महा मोहनी कर्म बाधे १७, धर्मि पुरुषने धर्म करता भ्रिगावे ते महा मोहनी कर्म बांधे १८ तिर्थंकर देवके अवगुण वाद बोले ते महा मोहनी कर्म बांधे १९, चतुर्विध संघका अवर्णवाद बोले ते महा मोहनी कर्म बांधे २०, आचार्य उपाध्यायजीके अवर्णवाद बोले ते महा मोहनी कर्म बांधे २१, आचार्य उपाध्ययजीके समान बैठे ते महा मोहनी कर्म बांधे २२, बहु सूत्री नही अरु कहावे ते महा मोहनी कर्म बांधे २३, तपस्वी नही तपसी कहावे ते महा मोहनी कर्म बांधे २४, रोगी गीलाणकी वेयावच्च न करे ते महा मोहनी कर्म बांधे २५, टोला मांहि भेद पाम्रे ते महा मोहनी कर्म बांधे २६, हिंस्याकारी शास्त्र परूपे ते महा मोहनी कर्म बांधे २७, देवता मनुष्यके

बहु धन आवखो थोमो २२, मासकल्प सरीखा खेत्र थोमा २३, साधु श्रावकरी पमिमा विछेद जासी २४, आचार्य ते शिष्यने सूत्र थोमो जणासी २५, शिष्य ते कलह असमाधिना कारण होसी २६, समण थोमा अने मुंम घणा २७, आप आपणी समाचारी गछरी जुदी जुदी होसी २८, मलेछ राजा बलवंत होसी २९, हिंदु राजा अल्प होसी ३०. २

३० साधुकी त्रीस उंपमा. कासीके जाजनकी १, संखकी २, काछबेकी ३, सोलमे सोनेकी ४, कमलरे फूलरी ५, चंद्रमाकी ६, सूर्यकी ७, पृथ्वीकी ८, मेरुपर्वतकी ९, स्वयंजूरमणसमुद्रकी १०, अग्निकी ११, चंदणकी १२, द्रहके पाणीकी १३, वृषजकी १४, हाथीकी १५, आसोजकातिके पाणीकी १६, सिंघकी १७, गेंमेकी १८, जारंमपंखीकी १९, सुनाघरकी २०, पाछणेकी २१, आकाशकी २२, सर्पकी २३, चकोरपंखीकी २४ वायरेकी २५ जीवकी २६ वृद्धकी २७ जमरेकी २८ मृगकी २९ पारेवाकी. ३

३० बोल त्रीस परम कल्याण. १ तपस्या करीने नीयाणो न करें तो जीवरो परम कल्याण हुवें किणनी परे तामलीतापसनी परे, २ समकित नीरमलो पालें तो जीवरो परम

१३, अदत्तादान त्यांगे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अमरजीरा सात-
से सिष्यनी परे १४, शुद्ध मन सील पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी
परें सुदरसण शेठनी परे १५, ममता छोडीने समता आदरे तो जीवरो परम कल्या-
ण होवे किणनी परे कपील ब्राह्मण कपिल केवलीनी परे १६, सुपात्रने दान देवे
तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे रेवतीजी गाथापतणीनी परे १७, चलीये
चीतने थिर करावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे राजिमतीनी परे १८ उ-
त्कृष्टो तप करे तो ज़ीवरो परमकल्याणीक हुवे धनाजी अणगारकी परे. १९ उत्कृ-
ष्टी वैयावच करे तो जीवरो परमकल्याणीक हुवे कीणनी परे पंथकजीनीपरे. २०
अंतभावना भावे तो जीवरो परमकल्याणीक हुवे कीणनी परे भर्त्तमहाराजानी परे.
२१ चलीवै चीत्तने थीर करे तो जीवरो पररमकल्याणीक हुवे रहनेमीजीनी परे.
२२, उत्कृष्ट क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अरजनमालीनी
परे २३, जिन धर्मेरी आसता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अर-
णीकजीनी परे २४, चार तीर्थने साता उपजावे तो जीवरो परम कल्याण होवे कि-

णुनी परे तीजे देवलोकरे इन्द्ररे पाछले भवनी परे २५, उतकृष्ट वीनो करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे बाहुबलजीनी परे २६, उत्कृष्ट दलाली करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कृष्ण महाराजनी परे २७, उत्कृष्टो अभिग्रह करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे ढंढण मुनिराजनी परे २८, शत्रु मित्र उपर सरिखा भाव राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे उदाइ राजानी परे २९, अनर्थरो हेतु जाणीने दया पाळे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे धर्मरुची अणगारनी परे ३०, कष्ट पड्या सिलमें दृढ रहे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे चंदनबाला वा उणकी मातानी परे. ४

३० कर्मविपाक प्रकरणमेंसे ३० सामान्य कर्मबंध फल कहतें है. यथा १ प्रश्न निर्धन किस कर्मसें होवे, उत्तर पराया धन हरणेसें. २ प्रश्न दरिद्री किस कर्मसें होवे, उत्तर दान देतेको वर्जनेसें, ३ प्रश्न धन तो पावें परंतु भोगना नही मिलें किस कर्मसें, उत्तर दान देकें पछतावनेसें, ४ प्रश्न अकुली अर्थात् जिस पुरुषके पुत्र पुत्री न होय किस कर्मसे होवें, उत्तर जो वृक्ष रस्तेके उपरहो जिनसें अनेक पशु और मनु-

ष्य फल फूल खावें और गाया करकें सुख पावें एसें वृक्षोको कटावें तो, ५ प्रश्न वंध्या किस कर्मसें होय, उत्तर गर्भ गलावें तथा गर्भ गलाने उषधि देवें तथा गर्भवती मृगीका वध करें तो, ६ प्रश्न मृत वंध्या किस कर्मसें होय, उत्तर वैगण आदिका चुर्था करें तथा होलें करें तथा कंदमूल खाय तथा मुर्गी आदिक अंमे बच्चे मार खाय तो, ७ प्रश्न अधूरे गर्भ गल गल जायें किस कर्मसे, उत्तर पत्थर मार मारके वृक्षके कच्चे फल फूल पत्ते तोमें तथा पंखीयोंके मालेने तोमें तथा पकमीके जाले उतारें तो, ८ प्रश्न गर्भमेंही मर मर जाय तथा योनिद्वारमें आके मरें किस कर्मसें उत्तर महा आरंभ जीवहिंसा करें मोटा जूठ बोलें तथारूप साधुको असूफता आहार पानी देवें तो, ९ प्रश्न अंधा किस कर्मसें होय उत्तर मक्ष्याछय तोमके सहद निकाजे (भिम्त तइया दांटीया) मछरको धूआं देके आग लगाके मारे तथा क्षुद्र जीवोको म्बोके मारें तो, १० प्रश्न काणा किस कर्मसें होय उत्तर हरि वनस्पतिका चुर्णा करें तथा फलफूल फूल वा बीज वींधे तो, ११ प्रश्न गुंगा किस कर्मसें होय उत्तर देवधर्मकी निंदा करें तथा निर्ग्रंथ गुरुकी निंदा करें तथा गुरुके मुंहम-

चकोरके भिड देखें तो, १२ प्रश्न बहरा बोला किस कर्मसे होय, उत्तर पराया भेद लेनेको लुक छिपके वात सुनने तथा निंदा सुननेका स्वभाव होय तो, १३ प्रश्न रोगी किस कर्मसें होय उत्तर गूंलर उडुंबर आदि फल खाय तथा चूहे घीस पकड़नेके पिंजरे वेचें तो, १४ प्रश्न बहूत मोटी स्थूल देह पावे किस कर्मसें, उत्तर शाहके चोरी करें तथा शाहका धन चुरावें तो, १५ प्रश्न कोढी किस कर्मसें होय उत्तर वनमें आग लगावें तथा सर्वको मारें तो, १६ प्रश्न दाह ज्वर किस कर्मसें होय उत्तर ऊंट बेल गधे घोरके उपर ज्यादा बोज लादे तथा शीत वा गर्मिमे राखें तो १७ प्रश्न सिरसाम अर्थात् चित्तभ्रम किस कर्मसें होय उत्तर ऊंची जाति व गोत्रका मान करें तथा भाना भाना अनाचार मद्यमांसादि भक्षण करके मुकरे तो, १८ प्रश्न पथरी रोग किस कर्मसें होय उत्तर कन्या तथा बहन बेटी माता स्थान स्त्रीसे विषय सेवें तथा वज्र कंद मून मून खाय तो, १९ प्रश्न स्त्री पुरुष और शिष्य कुपात्र वैरी समान कीस कर्मसें होय पिछले जन्ममें उनसे निष्कारण विरोध किया होय तो, २० प्रश्न पुत्र पाल्यापोसा मर जाय किस कर्मसें उत्तर घरोंमें मारी होय तो, २१ प्र-

य पेटमें कोइ न कोइ रोग चला रहें होताही रहें किस कर्मसें उत्तर वचा खुचा खापाके असारनिसार भोजन साधूको देवें तो, २२ प्रश्न बालविधवा किस कर्मसें होय उत्तर अपने पतिका अपमान करके परपतिके साथ रमें तथा कुशीलनी होयकें सती कहावें तो, २३ प्रश्न वैश्या किस कर्मसे होय उत्तर उत्तम कुलकी वहु बेटी विधवा हुए पीछे कुलकी लाजसें कोइ अकर्त्तव्यतो न करने पावें परंतु सत्संगके अभावसें भोगोगी वांछा रखें तो, २४ जो जो स्त्री व्याहे सो मरें जिम पुरुषकी स्त्री न जीवें किस कर्मसें होय उत्तर साधु कहाके स्त्री सेवें तथा त्यागी हुइ वस्तुको फिर ग्रहे तथा खेतमें चरती हुइ गोको त्रासें, २५ प्रश्न नपुंसक किस कर्मसें उत्तर अति कूट महा छलकपट करें तो, २६ प्रश्न नर्कगतिमें जाय किस कर्मसें होय उत्तर सात कुव्यसन सेवें तो, २७ प्रश्न धनाढ्य किस कर्मसे होय उत्तर सुपात्रको दान देकें आनंद पावें तो, २८ प्रश्न मनोवांछित भोग मिलें किस कर्मसें होय उत्तर परोपकार करें तथा धर्मीकी टहल करें तो, २९ प्रश्न रूपवान किस कर्मसे होय उत्तर तपस्या करें तो, ३० प्रश्न स्वर्गमें जाय किस कर्मसें होय उत्तर क्षमा दया तप संयम करें तो.

३० बोल ३० सिखामण. बोलीका बंध नही तिणरो संग न कीजे १, वीटलसुं प्रीत न कीजे २, सज्जन मित्रने छेह न दीजे ३, चुकाने वार वार न पुछीजे ४, उलटी बुद्धिने वार वार शिख न दीजे ५, घणो मान वधीयो तोही वीनी न छोमीजे ६, सुख डुखमे पिण भली मरजादा न छोमीजे ७, आपरा गुण आपरे मुंहे न वखाणीजे ८, पुंठ पाछे अवगुण न बोलीजे ९, बुरीगारने छेमीजे नही १०, हीयारी गत जिण तिणने कहीजे नही ११, विण विचार्यां दाय आवे जिम न बोलीजे १२, कीयो उपगार छुलीजे नही १३, निर्गुण गुरु देव धर्म मानीजे नही १४, प्राणी गणीने वाद न कीजें १५, गुरांसुं वमांसुं सामो न बोलीजें १६, धर्मरे ठिकाणे जुठ न बोलीजें १७, कुम्रानी पख नही वांचीजें १८, धर्मरी वात उघाम्रे मुख न बोलीजें १९, अवनीतरो पक्ष न वांछीजें २०, कपटीरो वेसास न कीजें २१, कीणही वस्तुरो गर्व न कीजें २२, कीणसुं मेल राखीजें नही डुःख न दीजें २३. पारकी चाम्री न खाइजें२४ परउपगार करतां ढील न कीजें २५, कम्रवो कठोर निर्लज न बोलीजें २६, वृत्त प-

चक्खाणमें दोष न लगाइजें २७, पांच इंद्रीने विषे रसमें न पामीजें २८, पाखंडी लोभी गुरुरी संगत न कीजें २९, सातुंइ व्यसन सेवीजें नही ३०. ६

## ॥ इकतीस बोल लिख्यते ॥

३१ वाटे वहतां जीवरा प्रश्न ३१. १ वाटे वेहता जीवमे समकित ४ पावे वेदक सम्यक्त टली, २ वाटे वहता जीवमे सरीर २ पावे तेजस १ कारमण, ३ वाटे वेहता जीवमें गुणठाणा ३ पावे १।२।४। ४ वाटे वहता जीवमें जोग १ पावे कारमण, ५ वाटे वहता जीवमें उपयोग १० पावे मनपर्यव १ चक्षुदर्शन २ टल्या, ६ वाटे वहता जीवमें इंद्री ५ छदमस्थमें केवलीमें नही, ७ वाटे वहता जीवमें लेश्या ६ तथा केवली आश्री अलेसी, ८ वाटे वहता जीवमें दृष्टि दोय लाभे सम्यगदृष्टि १ मिथ्यादृष्टि २ ९ वाटे वहता जीवमें अज्ञान ३ लाभे, १० वाटे वहता जीवमें समुद्घात २ पहली लाभे, ११ वाटे वहता जीवमें ग्यान ४ लाभे मनपर्यव ज्ञान टल्यो, १२ वाटे वहता जीवमें दर्शण ३ चक्षुदर्शन टल्यो, १३ वाटे वेहता जीवमें वेद ३ लाभे अवेदी पिण हुवे, १४ वाटे वेहता जीवमें पर्याप्ति ६ माहिली नही, १५ वाटे वेहता जीवमें स्थित जघन्य १ समय उत्कृष्टी ४ समयरी, १६ वाटे वहता जीवमें कषाय ४, १७ वाटे वहता

२१ बोल २१ जिहाज द्रव्य तथा भावका. १ द्रव्यजीहाज लकडीके पाटीयाकी होय तिम संयमरूपी भावजिहाजमें १७ भेदे संयमरूपी पाटीया हुवें, २ द्रव्य जिहाजमें सांकल होय तिम संयमरूपी भाव जिहाजमें धीरजरूपी सांकल होवें, ३ द्रव्य जिहाजमें खीला होवे तिम संयमरूपी भावमें पच्चक्काणरूपीया खीला होवे, ४ द्रव्यजिहाजमें चाटु होय तिम संयमरूपी भावमें गुरु उपदेशरूपीया चाटु होवे, ५ द्रव्य जिहाजमें गत होय तिम संयमरूपी भावमें संवररूपी गत होवे, ६ द्रव्यजिहाजमें थांभा होय तिम संयमरूपी भावमें चढता वैरागरूपी थांभा होय, ७ द्रव्यजिहाजमें धजा होय तिम संयमरूपी भावमें निर्मल ज्ञानरूपी धजा होय, ८ द्रव्यजिहाजमें खेवटीया होय तिम संयमरूपी भावमें समकितरूपी खेवटीया, ९ द्रव्यजिहाजमें भोरी होय तिम संयमरूपी भावमें धीरजरूपी भोरी होय, १० द्रव्यजिहाजमें काम करनेवाला होय तिम संयमरूपी भावमें वेयावच्च करनेवाला होय, ११ द्रव्यजिहाजमें खाणेरो माल भरी होय तिम संयमरूपी भावमें क्रिया शीलरूपी खाणेरो माल होय, १२ द्रव्यजिहाजमें वायु चले तिम संयमरूपी भावमें शुभ भावे धर्मध्यान शुक्लध्यान

तथा बारे भेदे तपस्या करणरूप वायरो होय, १३ द्रव्यजिहाजने वायरेसुं बांको होय तेने रोके तिम संयमरूपी भावमें आलसरो त्याग कर ज्ञानको उपदेश रोके, १४ द्रव्यजिहाजमें कियाणो भरे तिम संयमरूपी भावमें पांच महाव्रत तथा बारव्रत और नाना प्रकारको ज्ञान भरे, १५ द्रव्यजिहाजमें रस्तो किताबसुं देखावे तिम संयमरूपी भावमें सूत्र सिद्धांतसुं साधु मुनिराज रस्तो बतावें, १६ द्रव्य जिहाज समुद्रमार्गे चालें तिम संयमरूपी भावमें संजमरूपी मारगे चालें अकुलाइसें सीधे सरल मारगे, १७ द्रव्यजिहाजमें पुरपाटण पहोंचे तिम संयमरूपी भावमें मोक्षरूपी पाटण पहोंचे, १८ द्रव्यजिहाजमें व्यापारी होय तिम संयमरूपी भावमें साधुरूपीया व्यापारी होय, १९ द्रव्यजिहाजमें धनरा चरू छे तिम संयमरूपी भावमें अगीआर अंग बार उपांग रूपीया चरु छे, २० द्रव्य जिहाजमें व्यापारी भली भाषा बोलें तिम संयमरूपी भावमें सुमतिसहित विचारने बोलें, २१ द्रव्य जिहाजमें रत्न छे तिम संयमरूपी भावमें प्राणरूपी रत्न छे, २२ द्रव्य जिहाजमें भला नफेरी वांछा करें तिम संयमरूपी भावमें मोक्षरी वांछा करें, २३ द्रव्य जिहाजमें व्यापारी वासो करें तिम संयमरूपी भावमें

मुनिराज गाम गाम एक रात नगरां नगरां पांच रात वास करें, २४ द्रव्य जिहाजमें चोर प्रमुखनो भयरहित होय तिम संयमरूपी भावमें पांच इंद्रीने जीतें सात भयरहित होय, २५ द्रव्यजिहाजमें व्यापारी वस्तुनी ममता करी पीछी न ले जाय तिम संयमरूपी भावमें साधु सचित्त अचित्त मिश्र परिग्रहनी ममता न करें, २६ द्रव्य जिहाजमें व्यापारी टोटेनो व्यापार न करें तिम संयमरूपी भावमें हिंसादिकथी निवरते, २७ द्रव्यजिहाजमें मालरी गांठ खोलें तिम संयमरूपी भावमें पापसुं निवरते आठ कर्मरूपी गांठ खोलें, २८ द्रव्य जिहाजमें माल वेची हलको होय तिम संयमरूपी भावमें क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष पतला पार्मेसुं हलको होय, २९ द्रव्य जिहाजमें व्यापारी विना चलती चीजरी इछा नही करें तिम संयमरूपी भावमें व्यापारी असंजमरी इछा नहि करें, ३० द्रव्य जिहाजमें व्यापारी लोभ वास्ते व्यापार करें तिम संयमरूपी भावमें व्यापारी १० जतीधर्मसहित क्षमारो व्यापार करें, ३१ द्रव्य जिहाजमें व्यापारी नाना प्रकारनो व्यापार करें तिम संयमरूपी भावमें व्यापारी विविध प्रकारे धर्म करें.

३१ बोल ३१ वृद्धोकी सीख. राजारी कृपा देखने आसंगो न कीजें मित्र करीने न जाणी-
जे विनयादि करने अरज विनती सावधान थकी कीजे १, आपणी परणी स्त्रीने
पुत्र न दीजे उणारो भरण पोषण कीजे घणो आदर सन्मान प्यार राखीजे पिण
मरम वातरो भेद न दीजे २, परस्त्रीरो दासीनो वेश्यानो संग न कीजे ३, नीला रूंख
नीचे धर्म थानक रावल देवल कुंभ न भाखीजे ४, जूवे न रमीजे सात व्यसन न. सी-
खीजे ५, जिणरे वास वसे तिणसुं वाद न कीजे ६, जिण जायगा सुखसुं रहीजे
तठे बुराइ न करीजे ७, पुत्रने खाणे पीणे कपडे गहणे सोरो राखीजे पिण लाडको
न कीजे विद्यारो उद्यम कराइजे रीस करने माथामे न दीजे टाबर थकांनेहीज त्रा-
समें राखीजे भलो सुधरे ८. सनेहरी जायगा हुवे तठे लेवा देवा वेपार न कीजे
९, पारको बुरो न विचारीजे निंदा न कीजे १०, सांजरा मारग न चालीजे ११,
मारगमें असंदा आदमीरो विश्वास न कीजे १२, कुवा उपर उभा न कांखीजे १३,
पंचारो कह्यो उथापीजे नही १४, पाणी उंघट घाटे न पीवीजे १५, काम जाते हुवे
तो लारे हेलो न दीजे १६, कांम जातां पाणी न पीवीजे १७, पाणी पीने घर न

बूजीजे १८, लोक चहरे तिको वात न कीजे १९, कुमारग धन खरचने न गमाइ-
जे २०, सगा सोयाने जाचीजे नही २१, व्रत भंग न कीजे २२, आसण पगसुं से
सने बेठीजे २३, मार्गमें तरुण लुगाइरो साथ न कीजे २४, बारे नीकले तो गाफल
न रहीजे चोकी पोरो दीजे २५, तीरसां थकां पाणी घणो न पीजे २६, ऊंकडुं बांु
न वेसीजे २७, दिनरी घणी निंद्रा न लीजे २८, घरमें बावल रूंख न राखीजे आं-
बलीरी गया न वसीजे २९, अजाण्यो ओखद न खाइजे ३०, पाणीरो आसंगो
न कीजे ३१.

५



## ॥ अथ बत्तीस बोल लिख्यते ॥



३२ बत्तीस अनंतकाय. सर्व कंदनी जाति १, सूरण कंद २, वज्र कंद ३, लीली हलदी ४, लीलुं आडु ५, लीलो कचूर ६, सतावरी वेली ७, विराली वेली ८, कुंआरी ९, थोहरि कंद १०, गलोइ ११, लसण कली १२, वासना कारेला १३, गाजर १४, लूणो साजी वृक्ष १५, लोढो पद्मनी कंद १६, गिरिकर्णीका सर्व वनस्पतिना नवा उगता कूंपल पान १७, खरसुआ कंद १८, थेग कंद १९, निली मोथ २०, लूण वृक्षनी छाल अनंतकाय जाणवी परंतु एना बिजा अवयव अनंतकाय नही २१, खिल्लुमा कंद विशेष २२, अमृतवेलि २३, मूलानी पान्द २४, भूमिफोडा जे वर्षाकाले छत्राकारे उगे ते २५, विरूढा अंकूर्यां धान्य २६, टंकवथुल शाक ते वनस्पति पहेलुं उग्यो तेहज बिजुं नही २७, सूअर वेली २८, पल्लंक शाक विशेष २९, कुवली आंबली ३०, आलु कंद ३१, पिंडालु कंद ३२. १

३२ वांदणाके ३२ दोष. गुरुने वंदणा देइने वांदे १, उकरु बेठो वांदे २, नाचतो वांदे

३, सगलाने एकत्रा वांदे ४, रजोहरण आंकुस जिम राखे ५, गृही कपमा ऊंचा क-
रीने वांदे ६, चपलपणे वांदे ७, माछलानी परे उलट पलट होय वांदे ८, मनमें गुण
छोमी अवगुणही वांदे ९, कपट जीवसुं वांदे १०, मरतो वांदे ११, जे मुजने अमु-
को मान देसे १२, साख करी वांदे १३, गर्व करी वांदे १४, इस लोकने हितकारी
वांदे १५, चोरनी परे वांदे १६, प्रतिज्ञा देते वांदे १७, सासता वांदे १८, विस्वास उ-
पजावा देते वांदे १९, वचन हिलतो वांदे २०, विकथा करतो वांदे २१, दृष्टि तिर्छि
राखतो वांदे २२, कोइ साधु देखे कोइ न देखे २३, क्या करीए वांद्या विना छुटका
नही २४, आपसमें घाट बाघ वांदे २५, गुरुने ऊंचे स्थानक बेठा वांदे २६, बेठा
हुवा वांदे २७, हस्तो वांदे २८, रजोहरण आघो पाछो करतो वांदे २९, असमाधिया
होयने वांदे ३०, काउसग्गमें वांदे ३१, पछे समाधि पूछे वांदे ३२, ए दोष ३२ टाली-
ने वांदे ते मुक्ति जावे. २

३२ सामायकके ३२ दोष. १० मनका. अवसर विना करे १, जसकीर्त्तिके अर्थे करे २,
इह लोकनी वांछा करे ३, गर्व अहंकारे करे ४, फल प्रते संदेह करे ५, चिहितो

धूजतो करें ६, संसेसहित करें ७, मनमांही रीस करें ८, वंनयहीण करें ९, वेगारी-री परे करें १०, दश वचनके. कुम्रा वचन बोलें ११, अणविमास्यो बोलें १२, रागां करी गीत गावें १३, घणो बोलें १४, कल्रह करें १५, विकथा करें १६, हांसी करें १७, उंतावलो उतावलो नणें १८, अयुक्ति नाषा बोलें १९, अवृतिने आवो पधा-रो कहें २०, बार कायाके. पालठी वाली बेठे २१, अथिरासण बेठे २२, विषयसहि-त दृष्टि जोवें २३, सावज कार्य करें २४, घरनुं काम करें २५ उठंगणो लेइ बेठें २६ शरीर संकोचीने बेठें २७, विना कारण अंग उपांग मोर्डे २८, करम्का मोर्डे २९, शरीरनो मेल उतारे ३०, विन पूंज्या खाज खुणे ३१, उंघ लेवें ३२. ३

३२ पुरुषके बत्तीस गुण. सीलवंत १, कुलवंत २, सतवंत ३, विद्यावंत ४, अल्पआहारी ५, उंचा चित्त ६, तेजवंत ७, प्रमोदसहित ८, वचन अचल ९, दयावंत १०, नरम प्रणाम ११, धर्मनीत १२, उत्तम १३, ज्ञानवंत १४, लज्यावंत १५, गुणगंजीर १६, सूरमा १७, इर्ष्यावंत १८, चतुर १९, दानमें चित्त उदार २०, जोगध्यानी २१, ना-ग्यवंत २२, सुजांण २३, परउपगारी २४, देवपूजा २५, मातापिताकी सेवा २६, गु-

रुकी सेवा २७, मातपितानी सेवा २८, गुरुनी सेवा २९ बुद्धिवंत ३०, निर्जय होय ३१, तेजवंत ३२.

४ ३२ आगम बत्तीसके नाम. आचारांग १, सुगडांग २, ठाणांग ३, समवायांग ४, जगवती ५, ग्याता ६, उपासकदशा ७, अंतगड ८, अणुत्तरोववाइ ९, प्रश्नव्याकरण १०, विपाक ११, बार उपांग. उववाइ १२, रायपसेणी १३, जीवाभिगम १४, पन्नवणा १५, जंबुद्वीपपन्नत्ती १६, चंदपन्नत्ती १७, सूरपन्नत्ती १८, पुफिया १९, पुफचुलिया २०, कप्पिया २१, कपवमंसीया २२, वह्निदशा २३, चार छेद. नसीत २४, दशाश्रुतस्कंध २५ वेदकल्प २६, विवहार २७, पांच मूल. दसविकाल २८, उत्तराध्ययन २९, नंदी ३०, अणुयोग द्वार ३१, आवसक ३२.

५ ३२ योग संग्रह. आलोय निंदके निशल्य होय १, आलोया निंद्या प्रकासें नही २, दृढ धर्मी होय ३, इहलोक परलोकनी वांछारहित तप करें ४, आसेवणा शिक्षाग्रहण सिक्षा सेवें ५, शरीरकी सुसरखा न करें ६, छानी तपस्या करें अग्यात कुलनी गोचरी करें ७, निर्लोभी होय ८, सरल स्वभावी होय ९, परीसहसुं डरे नही उपसम

वंत होय १०, निर्मल मनसुं संयम पाळें ११, सम्यक्त शुद्ध पाळें १२, चित्त एकाग्र म राखें १३, मायारहित आचार पाळें १४, विनयवंत होय १५, संतोष धैर्यवंत होय १६, वैराग्यवंत १७, धर्मध्यान अछी तरा राखें १८, रूडीक्रिया करें १९, संवरकुं पुष्ट करें २०, आपणी आत्माके अवगुण अलगा करें २१, अग्यानीका संग निवारे २२ मूल गुण उत्तरगुण आराधे २३, एक गाम चित्त राखीने काउस्सग्ग करें २४, प्रमादरहित करणी करें २५, क्षिण प्रते रूडी करणी करें २६, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावें २७, मन वचन कायाका योग धर्ममें प्रवर्त्तावें २८, संसारसुं विरक्ति भाव आणें २९, गुराने प्रायश्चित दिया सो वहे ३०, आलोइने निशल्य थाय ३१, आलोइ निंदीने संथारो करें ३२.

६

३२ शीलकी ३२ उपमा. ग्रह नक्षत्र तारा मांहि चंद्रमा मोटो तिम सर्व व्रत मांहि सीलव्रत मोटो १, मणी मोती सीप प्रवालादिक मांहि जिम रत्नाकर समुद्र मोटो तिम सीलव्रत मोटो २, सर्व रत्न मांहे वैडूर्य रत्न मोटो तिम सीलव्रत मोटो ३, सर्व आभर्ण मांहि माथेरो मुकुट मोटो तिम सीलव्रत मोटो ४, सर्व वस्त्र मांहि खेमयुगल

कपास वस्त्र मोटो तिम सीलव्रत मोटो ५, सर्व कमल मांहि अरविंद कमलनो फूल मोटो तिम सीलव्रत मोटो ६, सर्व चंदनोमांहि बावना चंदन मोटो तिम सीलव्रत मोटो ७, सर्व पर्वत मांहि जंपथी करके चूल हेमवंत पर्वत मोटो तिम शीलव्रत मोटो ८, सर्व नदी मांहि सीता सीतोदा नदी मोटी तिम सीलव्रत मोटो ९, सर्व समुद्र मांहि स्वयंभूरमण समुद्र मोटो तिम सीलव्रत मोटो १०, गोल पर्वत मांहि रूचिक पर्वत चूडी आकार मोटो तिम सीलव्रत मोटो ११, सर्व हाथीया मांहि इंद्रनो एरावण हाथी मोटो तिम सीलव्रत मोटो १२, सर्व चोपदा मांहि केसरी सिंह मोटो तिम सीलव्रत मोटो १३, नागकुमारमांहि धरणेंद्रजी मोटा तिम सीलव्रत मोटो १४, सोवणकुमारना देवता मांहि वेणुकुमार मोटो तिम सीलव्रत मोटो १५, सर्व देवलोक मांहि पांचमो ब्रह्म देवलोक मोटो तिम सीलव्रत मोटो १६, सर्व सभा मांहि सुधर्मा सभा मोटी तिम सीलव्रत मोटो १७, स्थितिमांहि लवसतमा देवताकी स्थिति मोटी तिम सीलव्रत मोटो १८, रंग मांहि किरमची रंग मोटो तिम सीलव्रत मोटो १९, दान मांहि अभयदान मोटो तिम सीलव्रत मोटो २०, संघयणमांही वज्रनाराचसंघयण मोटो तिम

सीलव्रत मोटो २१, संठाणमांही समचोरस संठाण मोटो  तिम सीलव्रत  मोटो २२,
ग्यानमांहि केवलग्यान मोटो तिम सीलव्रत मोटो २३, ध्यानमांहि  शुक्लध्यान मोटो
तिम सीलव्रत मोटो २४, लेस्यामांहि शुक्ललेश्या मोटी तिम सीलव्रत मोटो २५, सा-
धुमांहि तिर्थंकरदेव मोटा तिम सीलव्रत मोटो २६, क्षेत्रमांहि  महाविदेहक्षेत्र  मोटो
तिम सीलव्रत मोटो २७, पर्वतमांहि उंचपणे सुमेरुपर्वत मोटो तिम  सीलव्रत  मोटो
२८, वनामांहि नंदणवन मोटो तिम सीलव्रत मोटो २९, वृक्षोमांहि जंबुसुदर्शण वृक्ष
मोटो तिम सीलव्रत मोटो ३०, सेनामांहि चक्रवर्त्तिकी सेना मोटी तिम सीलव्रत मो-
टो ३१, रथांमांहि वासुदेवको संग्रामीक रथ मोटो तिम सीलव्रत मोटो ३२.   ७

३२ सूत्र बत्तीस. १ आचारांगसूत्र अध्ययन २५ मूल श्लोक २५०० शीलांगाचार्यकृत टी-
का १२००० चूर्णी ८३०० तथा भद्रबाहुस्वामी कृत  निर्युक्तिनी गाथा  ३६८  श्लोक
४५० भाष्य (तथा लघुवृत्ति नथी) सरवाले श्लोक २३२५०, २ श्रीसुयगडांगसूत्र अध्य-
यन २३ पाखंडमत निर्दलनरूप मूलश्लोक २१०० शीलांगाचार्यकृत  टीका  १२८५०
तथा चूर्णी १०००० श्लोक छे अने श्रीभद्रबाहुस्वामीकृत निर्युक्तिनी गाथा २०८ श्लो

क २५० छे (भाष्य नही) सरवाळे श्लोक २५२०० तथा १५८३ नी सालमां आधुनिक श्री हेमविमलसूरिये ७००० श्लोकने आसरे दीपिका करेली छे पण ते जुनी टीपो-मां पूर्वाचार्योनी गणतीमां नथी, ३ श्रीठाणांगसूत्र एना दश अध्ययन छे एना मूळ श्लोक ३७७० छे तेनी टीका संवत ११२० मां श्रीअभयदेवसूरिकृत १५२५० श्लोकनी छे सरवाळे १९०२० श्लोक छे, ४ श्रीसमवायांगसूत्र एना मूळ श्लोक १६६७ छे तेनी टीका अभयदेवसूरिकृत ३७७६ श्लोकनी छे एनी चूर्णी पूर्वाचार्यकृत ४०० श्लोक छे सरवाळे ५८४३ संख्या थइ, ५ श्रीविवहापन्नत्ति भगवती सूत्र शतक ४१ छे एमां छ-त्रीश सहस्र प्रश्न गौतमना छे मूळ श्लोक १५७५२ टीका संवत ११२८ मां श्री अभ-यदेव सूरिनी करेली द्रोणाचार्ये शोधेली १८६१६ श्लोकनी छे एनी चूर्णी ४००० श्लोक पूर्वाचार्य कृत छे सरवाळे ३८३६८ नी संख्या तथा एनी लघु वृत्ति संवत १५६८ ना वर्षमां दानशेखर उपाध्यायनी करेली १२००० श्लोकनी संख्या छे ६, श्री ज्ञाता धर्म कथांग सूत्र अध्ययन १९, कथा उगणीश सांप्रत देखाय छे प्रथम साडी त्रण कोटि कथाओ प्रसिद्ध छे एनी श्लोक संख्या ५५०० तेनी टिका श्री अ-

जयदेव सूरि कृत ४२५२ श्लोक छे ७, श्री उपासग दशांग सूत्र दश अध्ययन मूळ श्लोक ८१२ एनी टिका श्री अभयदेव सूरि कृत ९०० श्लोक छे सरवाळे १७१२। ८, श्री अंतगडदशांग सूत्र ९० अध्ययन छे मूळ श्लोक ९०० तथा अभयदेवसूरि कृत टिका १०० श्लोक छे सर्व संख्या १२००. ९, श्री अणुत्तरोववाइ सूत्र तेत्रीश अध्ययन मुळ श्लोक २९२ तथा अभयदेव सूरि कृत टिका १०० श्लोक छे सर्व संख्या ३९२. १०, श्री प्रश्न व्याकरण सूत्र दश अध्ययन रुप मुळ श्लोक १२५० श्री अभयदेव सूरि कृत टिका ४६०० सर्व संख्या ५८५०. ११ श्री विपाक सूत्र वीश अध्ययन छे मुळ श्लोक १२१६ श्री अभयदेव सूरि कृत टिका ९०० श्लोक छे सर्व मळी इग्यारे अंगनी मुळ संख्यां ३५६५९ तथा टिका ७३५४४ अने चूर्णि २२७०० तथा निर्युक्ति ७०० मळी १३२६०२ तथा सूयगडांगनी दिपीकानी संख्या जुदी छे एमां आचारांग तथा सूयगडांगनी टिका श्री शीलांगाचार्य कृत छे. बाकी नव अंगनी टीका अभयदेव सूरि कृत छे माटे श्री अभयदेव सूरि नवांगी वृत्तिकारने नामे ओळखाय छे, हवे बार उपांगनी संख्या लिखे छे १२, श्री उववाइ उपांग आचा-

रांग प्रतिबद्ध एनी मुख संख्या १२०० तथा श्री अजयदेव सूरि कृत टिका संख्या
३१२५ सर्व संख्या ४३२५. १३, श्री रायप्पसेणी उपांग सूयगडांग प्रतिबद्ध एनी मुख
संख्या २०७८ तथा श्री मलयगिरी कृत टिका ३७०० सर्व संख्या ५७७८. १४ श्री जि-
वाजिगम उपांग ठाणांग प्रतिबद्ध एनी मुल संख्या ४७०० तथा श्री मलयगिरिकृत
टिका.१४००० तथा लघुवृत्ति ११०० तथा चूर्णिश्लोक १५०० छे सर्व संख्या २१३००
१५ श्रीपन्नवणा उपांग शीस्याचार्यकृत समवायांग प्रतिबद्धनी संख्या ७७८७,मलयगिरि
महाराजनी करेली टीका १६००० तथा हरिभद्रसूरिकृत लघुवृत्ति ३७२८ श्लोक छे
सर्व संख्या २७५१५, १६ श्रीजंबुद्वीपन्नत्ति उपांग भगवति प्रतिबद्ध एनी मूल सं-
ख्या ४१४६ मलयगिरिकृत टीका १२००० तथा चूर्णि १८६० छे सर्व संख्या १८००६
१७ चंद्रपन्नत्तिसूत्र ज्ञाताप्रतिबद्ध मूल संख्या २२०० तथा मलयगिरिकृत टीका ९४११
तथा लघुवृत्ति १००० श्लोक छे ए सर्व संख्या १२६११, १८ सूरपन्नत्ति उपांग पूर्वो-
क्त चंदपन्नत्ति तथा ए बेहु मली ज्ञाताप्रतिबद्ध छे एनी मूल संख्या २२०० तथा
श्रीमलयगिरिकृत टीका ९००० अने चूर्णी १००० सर्व संख्या १२२०० १९, नि-

रयावलिका सूत्र अथवा नामांतरे एक कप्पिया अध्ययन १०, बीजुं कप्पवडिंसिया अध्ययन १२, त्रीजुं पुप्फिया अध्ययन १०, चोथुं पुप्फचूलिया अध्ययन १० अने पांचमुं वह्निदिसा ए पांच उपांगनुं नाम निरयावलिका कहेवाय छे ए कप्पिया प्रमुख पांच उपांगनी अध्ययन संख्या ५२ छे ते अनुक्रमे सातमा, उपासकदशांगादिक पांच अंग प्रतिबद्ध छे ए पांचेनी मली श्लोक संख्या ११०९ छे ए पांचेनी वृत्ति ७०० श्लोक प्रमाण श्री चंद्रसूरिकृत छे सर्व संख्या १८०९ एम बारे उपांगनी सर्व मली मूल संख्या २५४२० तथा टीकानी संख्या ६७९३६ अने लघु टीकानी संख्या ६८४८ तथा चूर्णीनी संख्या ३३६० एकंदर सरवाले संख्या १०३५५४, २४ नशीथ छेदसूत्र अध्ययन २० मूल जुनी टीपमां ८१५ श्लोक छे एनुं लघु भाष्य ७४०० श्लोक छे तथा चूर्णी २८००० श्लोक छे महोटुं भाष्य १२००० श्लोक छे ते टीकाने नामे पण कहेवाय छे सर्व संख्या ४८२१५ छे, २५ बृहत्कल्प छेदसूत्र अध्ययन २४ एनी जुनी टीपमां संख्या ४७३ नी छे एनी वृत्ति संवत १३३२ ना वर्षमां बृहद्गच्छीय श्री क्षेमकीर्त्तिसूरिकृत ४२००० संख्यानी छे तथा एनुं भाष्य जुनी टीपमां १२०००

छे प्रत्यंतरे १७६४५ पण छे तथा लघुवृत्ति संवत ११२९ मां श्री नेमिचंद्रसूरिकृत १३६०० श्लोकनी छे एनी निर्युक्ति श्री भद्रबाहूस्वामिकृत गाथा ६०७ श्लोक तथा एनी चूर्णि ६००० श्लोकनी छे सरवाळे संख्या ४०३०० छे ३ नंदीसूत्र श्री देवर्द्धि-गणि क्षमाश्रमणकृत मूल श्लोक ७०० छे एनी वृत्ति ७७३५ श्लोक प्रमाण श्री म-लयगिरिकृत छे एनी चूर्णि संवत ७३३ मां करेली २०० श्लोकनी छे एनी लघु टी-का श्री हरिभद्रसूरिकृत श्लोक २३१२ छे सरवाळे संख्या १२७४७ छे तथा एनी टी-प्पणी श्री चंद्रसूरिकृत ३०० श्लोकनी छे ४ अनुयोगद्वारसूत्र गाथा १६०० श्लोक १८०० छे तथा मल्लधारी श्री हेमचंद्रसूरिकृत वृत्ति संख्या ६००० छे तथा श्री जि-नदास महत्तरकृत चूर्णि २००० श्लोकनी छे तथा श्री हरिभद्रसूरिकृत लघु वृत्ति संख्या ३५०० छे सर्व संख्या १४३०० आवश्यकसूत्र मूल १०५ गाथा छे एनी टीका श्री हरिभद्रसूरिकृत २२००० श्लोक छे तथा एनी निर्युक्ति श्री भद्रबाहुस्वामिकृत ३१०० श्लोक छे तथा चूर्णि १८००० श्लोक छे.

## ॥ अथ तेतीस बोल लिख्यते ॥

३३ गुरुकी आसातना तेतीस. तीन चालणेकी गुरुके आगे चाले १, गुरुके बरोबर चाले २, पाछे अडतो चाले ३, इम तिन आसातना खडे रहणेकी ६, इम तिन बेसणकी ९, दिशा गए गुरुसुं पहला हाथ धोवे १०, गुरुके पहली इरियावही पडिकमे तो ११, गुरु प्रश्न करता होय विचमें बोले तो १२, गुरुके पास सुता होय गुरु बोलावे जागता न बोले तो १३, आहार पाणी ल्यायकर गुरु थकी पहली छोटा जतिकुं देखावे तो १४, गुरु पहली छोटा जति कने आलोवे तो १५, गुरु पहली छोटा यतिकुं आमंत्रे तो १६, गुरुकी आग्याबिना छोटा यति तथा अनेरा साधुकुं आहार पाणी देवे तो १७, गुरु शिष्य आहार पाणी करता होय सरस २ गुरुकुं देवे तो १८, गुरु बुलावे बोले नही तो १९, गुरु बुलावे आसण बेठा जवाब देवे तो २०, गुरु बुलावे तो कहे तुं क्या कहैतो २१, गुरुने तुंकारा देवे तो २२, गुरुने तो तुं अवचन बोलावे तो २३, गुरुने उत्तर पडुत्तर देवे तो २४, गुरु अर्थ करता होवे तिवारे भरी

सन्नामें कहे इम छे इम नहि छे २५, गुरु सूत्र पाठ कहेता हुवे तिवारे नरी सन्नामें कहे इम नहि इम छे तो २६, गुरु कथा कहेता हुवे चेलो खुशी न हुवे तो २७, गुरु कथा कहेतां परखदामें नेद पाडे तो २८, गुरु कथा कहेता हुवे शिष्य कहे आहारकी वेला थइ छे वखाण छग दो क्युं नही इम कहे तो २९, गुरु कथा कही वाही कथा वणाय २ करे आछीतरेसुं कहेतो तो ३०, गुरुके आसणसुं ऊंचा आसण बेठे तो ३१, गुरुके बरोबर आसण करे तो ३२, गुरुके आसणकुं पग लगावे संघठ करे विना खमाया जाय तो ३३. १

३३ अल्पाबहुत्व ३३. १ सबसुं थोमा चोथी नारकीना निकल्या सिद्ध नगवंत होय २, तीजी नारकीना निकल्या सिद्ध संख्यातगुणा ३, बीजी नारकीना निकल्या सिद्ध संख्यातगुणा ४, वनस्पतिना निकल्या संख्यातगुणा ५, पृथ्विकायना निकल्या संख्यातगुणा ६, अपकायना निकल्या संख्यातगुणा ७, नुवणपति देवतारी देविरा निकल्या संख्यात गुणा ८, नुवनपति देवताना निकल्या संख्यात गुणा ९, वाणव्यंतर देवतारी देवीरा निकल्या संख्यात गुणा १०, वाणव्यंतर देवतारा निकल्या सं-

ख्यात गुणा ११, जोतषी देवतारी देवीरा निकळ्या संख्यात गुणा १२, जोतषी देवतारा निकळ्या संख्यात गुणा १३, मनुष्यणी स्त्रीना निकळ्या संख्यात गुणा १४, मनुष्यना निकळ्या संख्यात गुणा १५, पेहली नारकीना निकळ्या संख्यात गुणा १६, तिर्यंचणीना निकळ्या संख्यात गुणा १७, तिर्यंचना निकळ्या संख्यात गुणा १८, पांच अनुत्तर विमानरा निकळ्या संख्यात गुणा १९, नव ग्रैवेयकना निकळ्या संख्यात गुणा २०, बारमा देवलोकना निकळ्या संख्यात गुणा २१, इग्यारमें देवलोकरा निकळ्या संख्यात गुणा २२, दशमें देवलोकरा निकळ्या संख्यात गुणा २३, नवमा देवलोकरा निकळ्या संख्यात गुणा २४, आठमा देवलोकरा निकळ्या संख्यात गुणा २५, सातमा देवलोकरा निकळ्या संख्यात गुणा २६, छठा देवलोकरा निकळ्या संख्यात गुणा २७, पांचमा देवलोकरा निकळ्या संख्यात गुणा २८, चोथा देवलोकरा निकळ्या संख्यात गुणा, २९ तीजा देवलोकरा निकळ्या संख्यात गुणा, ३० दुजे देवलोकरा देवतारी देवीरा संख्यात गुणा, ३१ दुजे देवलोकरा देवतारा नि

कल्प्या संख्यात गुणा, ३२ पेहला देवलोकरी देवीरा निकल्या संख्यात गुणा, ३३ प-
हेला देवलोकरा देवताना निकल्या संख्यात गुणा.



## ॥ अथ चोतीस बोल लिख्यते ॥

३४ चोतीस तीर्थंकरदेवजीरा अतिशय. रोमराय केश नख सोभनीक वधे पिण असोभनीक नहि वधे १, भगवंतजीरे गात्रें लेप लागें नहि २, गायरो दूध ऊजलो निर्मल साकर घालीयें मीठो तिसो भगवंतजीरो रुधिर मांस मीठो ३, पद्म कमल सुगंध सुहामणो वासें तिसो भगवंतजीरो श्वासोश्वास सुगंध सुहामणो वासे ४, चरमचक्षुरो धणी आहार निहार करतां देखें नहि ५, श्री भगवंत देव विचरे जिठें तीन छत्र होय ६, भगवंतजी विचरे जिठें तीन चमर होय ७, फटिक रत्नमयी सिंहासण फावे ८, विहारमें सहस्र ध्वज आगें चालें ९, धर्मचक्र आगल चालें १०, अशोक वृक्ष फल्यो फूल्यो मार्गमें छाया करें ११, पूठें भामंडल प्रभा करें १२, विचरें जिठें रमणीक भूमि सुहामणी लागें १३, विचरें जिठें कांटारा मुंढा ऊंधा होय १४, बहुत रुत सुहामणी लागें १५, थोमो सुहामणो सुहामणो वायरो वाजें १६, नान्हनी नान्हनी बुंद मेह वरसें तिणसुं रज होय ते ऊपसम जावें १७, ढिंचण परिमाणे अचि-

त्त फूलांरी ढिगला देवता करें १८, अमनोज्ञ गंध रस शब्द रूप कदेही न होय १९, मनोज्ञ गंध रस फरस शब्द रूप सदा काल होय २०, भगवंतरी वाणी जोजन तांइ सुणीजें २१, अर्द्ध मागधी भाषा सांभलीजें २२, नाहर बकरी पशु जनरा वैरभाव जागें नहि जागें तो उपशम जावें भेला बैठें २३, देवादिकनी जातना पूर्व बद्ध वैर कृत्रिम अकृत्रिम सर्व वैरभाव दूर जायें २४, अन्यतीर्थि पिण भगवंतने नमस्कार करें २५, अन्यतीर्थि मत पक्षधारीने बोलें खिष्ट होय ते जावें २६, भगवंत विचरें जठें सो कोसतांइ ईत नहि होय २७, सो कोसमें मारी मिरगी न होय २८, स्वचक्रनो भर भय न होय २९. परचक्रनो भय सो कोस तांइ न होय ३०, घणी वर्षा न होय ३१, थोभी वर्षा न होय ३२, काल दुकाल पड़े नहि ३३, रोग सोग फोभी फुंणगल नही होय कदाच होय तो उपशमें ३४.

३४ असिद्धाइ ३४. उक्काचाए १, गजीए २, बिजीए ३, दिसीदाहे ४, निघाए ५, जुवए ६, जखालीतए ७, धूमीए ८, महीया ९, रजघाए १०, अठी ११, मंस १२, सोणी १३, असुइसांमंते १४, चंदोरवराए १५ सुसाण सामंते १६, सूरोवराए १७, पडिणीए

१८, रायबुगहे १९, भवसथल आगो भरालियरा सलियर सरीरमें २०, चैद सुदि पुनिम २१, वैशाख वदि वीज २२, असाढ शुदि पुनिम २३, श्रावण व.दि एकम २४ भादरवा सुदि पुनिम २५, आसोज वदि एकम २६, आसोज सुदि पुनिम २७, कातिक वदि एकम २८, कातिक सुदि पुनिम २९, मिगसर वदि एकम ३०, प्रभात ३१, मध्याह्न ३२, सिंझा ३३, अर्द्धरात्रि ३४.

२४ असिझाइरो सवैयो. तारो टुटे १, रातिदिशा २, अकाले मेह गाजें ३, वीज ४, कम्के अपार ५, भंर भुमी कंपा भारी हे ६, बालचंद्र ७, जखचेन ८, आकासे अगनकाय ९, काली धोली धुंध १०, भंर रजुघात न्यारी हे ११, हाड १२, मांस १३ लोही १४, राध १५, ठंम्ले मसाण बले १६, चंद्र १७, सूर्य ग्रहण १८, भंर राज्य मृत्यु राली हे १९, थानकमें पड्यो मम्हाकी पंचेंद्री कलेवर २०. ए वीस बोल टाल कर ग्यानी आग्या पाली हे १, असाढ २१ भाद आसु काती चैत्ती पुनम जाण। इणथी लगती टालीये, पडुवा पांच वखाण ॥ पम्भा पांच वखाण सांज सवेर न भणीये। आधी रात दोष हर सर्व मिल चौतीस गिणिये ॥ चौतीस असझाइ टालके

सूत्र भणसी सोय । ऋषि लालचंद इणपरि कहे ताके विघन न व्यापे कोय ३४२

३४ नियम धारण बोल. १ सचित्त जो जीवसहित होय कच्चा जल हरीवनस्पती फल पान साकहरा दातण निमक उपरसे लेणा काचो कोरो धान इच्छा माफक राखे और त्याग करें, २ द्रव्य जितनी वस्तु मुखमें गेरे उतने द्रव्य जल मंजन दातण रोटी दाल भात शाक कढी मिठाई पुडी पापड पान सुपारी इलायची चुरण दही दूध घी तेल मीठो मलाइ रबडी दवाइ चांय प्रमुख विगय दूध दही २ घृत ३ तेल ४ मीठो ५ मीठाइनी जात पकवान जो कडाहीमें घी तेलमां तलीया जावें महावीगय, ३ मधु १ माखण २ सहत ३ मांस ४, ४ पानीही जुता चटी मोजा खडाउ वगेरे, ५ तंबोल पान सुपारी इलायची लोंग पानकी जुर्की चूर्ण खाटेरी पोली पीपलादि, ६ वत्र वस्त्र पगडी टोपी अंगोछा रूमाल कपडा पहेरणे तथा उढणेका कपडा सर्व च्यार प्रकारना उनी सूती रेसमी सणीका इणकी मर्यादा रखे, ७ कुसुमेसु जे वस्तुना नाकसें सुंघणेमें आवे सो फूल फूलोंका हार गजरा तुर्रा वगेरे अत्तर सुंघणीं वगेरे मर्यादा राखें, ८ वहाण सवारी गाडी फेटण हाथी घोडा उंठ रथ वैली

संहेज गाड़ी एका तांगा पालखी मोली रेलगाड़ी तथा आमवे न्याव जहाज स्टी-
मर चेलून हवाई जहाज मोटर साइकल आदि चढणेका प्रमाण राखें, ९ सयण
सोनेवैठणेरी सिझा खुरसी पाटा पलंग तखत बाजोठ मैच गलीचा सतरंजी जाजम
गादि मकान दुकान आदि इणोंका इछा मुजब प्रमाण राखें, १० विलेवण यानें
सरीरपर लगाने तथा मलनेका पदार्थ केसर कुंकु चंदन तेल पीठी लेप दवाई ह-
जामत सुरमो काजल बुरश कंधी दरपण सावन प्रमुखका प्रमाण करें, ११ बंभ ब्र-
ह्मचर्य स्त्रीका संजोग वेश्या तथा परस्त्रीका त्याग करें तथा स्वस्त्रीका पिण सूई मो-
रा दृष्टांते प्रमाण करें दिनका कुशील त्यागे हांसी ठठाकीतोल नाता सगाइ पर-
विवाहका त्याग वा प्रमाण राखें, १२ दिशि सरीरसें उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम ऊंचा
नीचा जाना तथा आना संदेशा चिठि तार तथा कासीद भेजना माल मंगाना
भेजना उसका प्रमाण राखें, १३ न्हाण स्नान मोरी स्नान दोनुं हाथ भोना मध्ये
स्नान मुंह पग तथा खाली लीला अंगोछा शरीरपर फेरणा मोरी स्नान सारे शरीर-
का स्नान कपड़ा धोना तथा घोलानारी मर्यादा करें नदी तलाव कुवा वावड़ीमें

न्हाणेका त्याग वा प्रमाण करें, १४ भत्तेसु च्यार प्रकारना आहार अशन के० अन्न सर्व जातिरो पान के० पाणी सर्व प्रकाररो खादिम बिदाम पिस्ता डाख आदि सा-दिम के० खारो सोपारी चूर्ण आदि वजनरो प्रमाण करें, १५ पृथ्वीकाय गेरु मुरड़ खड़ी माटी आदि वापरणेका प्रमाण करें, १६ अपकाय कूवानो पाणी नदी नल त-लाव करणेरो तथा पाको पाणी आपरे तथा दूजेरे पलीन्डेरो पीणो वापरणेरो न्हाणे धोणे काममें आवें तेहनी वजनकी मर्यादा राखें उपयोगसहित विना गएयो पाणी पीणो वापरणो नहि, १७ तेउकाय आरंभ करणो करावणो चूला सिगड़ी भठीमें विना देखें गणा लकड़ी वगेरे वापरणा नहि दाहा लगाणेका चराग दियासलाई विजलीरी चरागरी मर्यादा करें सड़ककी रोसनीकी जयणा, १८ वाउकाय पंखो त-था विजलीरो पंखो पंखी तथा रुमाल कागदसें हवा लेणेरी मर्यादा करें फूंक तथा हिंडे हींडणेरी उपयोग सहित त्याग डुसरे जागारे पंखेरी जयणा, १९ वनस्पतिकाय हरो साग वृक्ष तथा वेलका फल पान खाणेकी मर्यादा तथा हाथसें तोड़नेरा त्याग हरे दातणरा त्याग तथा सूकी वनस्पति विना देख्या धान वापरणो नहि तृण

काष्ट धान बीज लेणे वेचणेरी मर्यादा या त्याग, जमी कंदमुल मुलेरी जम्द गाजर आलु मुंगफली कादा लसण आदि लीलोतरीरा त्याग, लीलोती सुकाणी अथवा सुकवानीरा त्याग, २० त्रसकाय हालतो चालतो अपराधी कुबुद्धि करीने हणने त- था हणानेरा त्याग, गाय ऊंट घोडा बेल दुपद चोपद वेपार अर्थे लेणा वेचणेरा त्याग, गाडी घोडा असवारी जाडे फेरनेरी त्याग, मागी देणेरी मर्यादा, विना देखें चालणो नहि बेठणो नहि उघाडा ठाम रखणा नहि गोबर सडावें नहि क्रोध करी पशुको बांधे नहि जीवरी जयणा पालें विना चुण्यो धान वापरणो नहि जाला फु- लण आयो आहार विन गण्यो पाणी त्यागें, २१ असी शस्त्र खंजार तरवार वंदुक तमंचा भाला बरछी वगेरे चलाणेरा त्याग चक्कू केंची सरोटो चिमटो तालाकुंची वर- तण ठाकडी कांटो बाटरी मर्यादा, २२ मस्सी लिखणा पढणा दवात कलम पेनशी- ल टाइप ठापा वहो किताब खाता वगेराकी मर्यादा, २३ कृपी किरसानी कर्म खेती खाण भाठा वन कटाणा घाणी कढाणी तलाव बावडी कुवा कुंड टांका भवरा ज- मीन खोदावणी तथा बागबगेचा वगेरा करसानी कर्मका त्याग, २४ आराकेता आ-

रंभ चुलेरा भठीरा आरंभ वगेरे करणे कराणेका त्याग या मर्यादा, २५ गारा कम-ठाणो चेजो मकान मरमत चुनो ईंट गारो गोबरको आरंभ, २६ सोनारा चांदी सोनो कांसी तांबो पीतल लोहा वगेरेकी जनस घर तथा भाइ परसंगीरे अरथे कराणी लेणी वेचणेरी मर्यादा घरमें सोनार लोहार कसारा वगेराने राखीने काम कराणेरा त्याग, २७ गिणनारी मर्यादा, २८ परखणा रुपीया तथा जुहारात वगेरे, २९ तोला तोलरी मर्यादा वजन हाथसुं तोलणा दुसरेसुं तोलाणा, ३० मापा हाथसुं पायलीसुं तथा गजसुं हाते या दुसरेसुं, ३१ कूरा घर दुकान संबंधी जिनस खरीदणेरी मर्यादा, ३२ विकरो घर दुकान संबंधी जिनस वेचणेरी मर्यादा उपरांत त्याग, ३३ आपरे घररी तथा दुसरेरे घरसुं आईहुई तथा मोलरी चीजरी मर्यादा, ३४ आपरे घररी भोगणेमें आइ तेहनी मर्यादा.

॥ विधि संक्षेपमें लिखा है विस्तार जितना अधिक करें याने खोल खोल कर रखें उतनाही जादा फायदा है परंतु जितना रखें उसमें दोष न लगावें भूलचुकसें अतिचार लग जाय तो कमसुं कम दस नवकार मंत्रके और राख्या तिकेसुं जादा

## ॥ अथ पैत्रीस बोल लिख्यते ॥

३५ वाणीरा गुण पैत्रीस. समकितसहित वाणी बोलें १, ऊंचै स्वरे बोलें २, सार वचन बोलें निरसो वचन काढें नहि ३, पंमताइनो वचन भाखें ४, गंभीर ऊंमें स्वरे बोलें शब्द तुटें नहि ५, पंमछंदो ऊठें वाणीरा च्यार कोस तांइ सांभलें ६, रागसहित बोलें ७, सूत्र थोमो अर्थ घणा विस्तारसें भाषें ८, मर्यादामांहि रहे पूर्व वचनसें विरुद्ध नहि ९, पदे पदनो अर्थ जुदोजुदो कहें १०, सांभलणहारनो संदेह टालें ११, अन्यतीर्थीना वचन दोष हरें १२, सुणतांने रीझावें पिण मन ऊजी जायगा न जावें १३, देशकालवाची शुद्ध वचन कहें १४, अणमिलतो वचन न भाखें १५, जीवादिक वस्तु प्रकाशतां मिलतो वचन कहें १६, पद आगलें पद जोइने अर्थ उपदेशें १७, वातरूप बालक समझे तिम समझावें १८, अति मधुरी मीठी वाणी बोलें १९, प्रभुजी देशना देवें पिण मरम किणरो प्रकाशें नहि २०, अर्थ धर्मसहित वाणी प्रकाशें २१, जीवादिक वस्तु प्रकाशतां विस्तार भारी करें २२, मध्य स्वभावें कहें आ-

पणी स्तुति परकी निंदा न करें २३, मधुर वाणी सनस नहि राखें २४, शब्द लिंगादि शुद्ध कहें २५, सांभलणहारने चिंते चमत्कार ऊपजें २६, भगवंत देवें देशना पिण घणी सुस्ती नहि घणी उतावळथी नहि २७, सांभलणहारनें रोगादिक दुःख पीडे नहि २८, भरमणा विना वचन भाखें सुणनहारने संदेह नहि रहें २९, जे पदार्थ वर्णवें ते संपूर्ण कहें ३०, भगवंत देशनामांहि सापेक्ष वचन भाखें ३१, अर्थ पद जुदो जुदो कहें ३२, च्यार भाषामांहि सत्य विवहार वचन भाखें ३३, लज्जासहित उत्साहसहित वचन भाखें ३४, जीवादिक वस्तु प्रकाशतां निशंक परूपें परं शंकावें नहि ३५. १

## ॥ अथ बत्तीस बोल लिख्यते ॥

३६ उत्तराध्ययनजीके बत्तीस अध्ययन. विनय अध्ययन १. परिसह अध्ययन २, चउरंगी अध्ययन ३, असंख्याय अध्ययन ४, अकाम सकाम मर्ण ५, खुम्राग नियंठियं ६, एसए ७, कविलियं ८, नमीरायरीसी ९, डुमपत्तय १०, बहुसुए ११, हरियेसियं १२, चित्तसंभूए १३, असुयारिहूं अ० १४, सभिक्कु १५, बंभचेरसेमाही १६, पावसमणय १७, संजतिरो अ० १८. मियापुत्तस्स १९ महानियठियं २०, समुद्रपालिए २१, रहनेमि २२, केसीगोतम २३, अठ्यपवयणा २४, जयघोस विजयघोस २५, समायारी २६, रखलठी २७, मोखमग्ग २८, सत्तपरिकम्म २९, तवमगाइयं ३० चरणविहनाम ३१, पमायठाणं ३२, अठकम्मपगमीउ ३३, लेश्या ३४, अणगारमग्गं ३५, जीवाजीव भत्ती ३६. १

३६ आचार्यके बत्तीस गुण. पांच महाव्रत पालें ५, पांच इंद्रि निग्रह करें १०, च्यार कषाय निवारें १४, पांच आचार पालें १९, आठ प्रवचन माताको आराधे २७, नव

वाम्नि ब्रह्मचर्य पाळें एवं ३६. 

३६ पन्नवणासूत्रके बत्तीस पद. पदपरूपणा १, पदस्थान २, बहुवक्तव्यता ३, स्थित ४, विशेष ५, वुकंती ६, सासोसास ७, सत्या ८, जोणी ९, चर्म १०, भाषा ११, शरीर १२, प्रमाण १३, कषाय १४, इंद्री १५, प्रयोग १६, लेश्या १७, कायथित १८, सम्यक्त १९, अंतक्रिया २०, उंगाहण २१, संठाण २२, क्रिया २३, कर्मबंध २४, कर्म वेदना २५, वेदताबंधका २६, वेदत्ता वेदका २७, आहार २८, उपयोग २९, पासणीया ३०, सन्या ३१, संयम ३२, उपध ३३, परिचारणा ३४, वेदना ३५, समुद्घात.

३६ भाव संग्राम बत्तीस. जीवरूपीयो राजा १, सम्यक्तरूपीयो प्रधान २, पांच महाव्रत रूप उमराव ३, ग्यानरूपी भंमारी ४, धीर्यरूपी हाथी ५, आजव मदवरूपी होदा अंबाम्री ६, संतोषरूप महावत ७, मनरूप घोम्रो ८, परउपगाररूपी पलाण ९, भाषासुमतिरूपी पाखर १०, चारित्ररूपी लगाम ११, जिनधर्मरूपी चाचक १२, सीलरूपी रथ १३, भेदे संयमरूपी दल फोज १४, विवेकरूपी निशाण १५, धर्मध्यान शुक्लध्यानरूपी धजा १६, पंच प्रकारे सिझायरूप चारित्र १७, भेदे तपरूपी शस्त्र १८, सं-

वररूपी वगत्र १९, सीलरूपी वोपर २०, क्षमारूपी ढाल २१, दयारूपी बरछी २२, क्रियारूपी कवाण २३, ग्यानरूपी तरकस २४, संयमरूपी तीर २५, अभिग्रहरूपी तरवार २६, शुक्ललेश्यारूपी बंदुक २७, पच्चक्खाणरूपी शांवाल २८. सांचरूपी दारु २९ भावनारूप गोला ३०, रागद्वेषरूपी जामग्री ३१, च्यार चोकम्मीरूपी जाला ३२, कायारूपी बुरज ३३, आठ कर्मरूपी वैरी जीत्या ३४, मोक्षरूपी गढ लीधो ३५, छकाय रूपी प्रजारे तेनी रिक्षा करवी ३६. ३

३६ उपदेशी छत्तीस बोल. सर्दहणा शुद्ध हुवे जिणरो उपदेश सुणीजें १, व्रत मर्यादा कीधी हुवें तिणसुं प्यार कीजें २, परवस पम्नीया सील दृढ राखीजें ३, समकित शील दृढ राखोजें ४, रीस चढे तोही क्षमा कीजें ५, धर्माचार्यरा हुकमसें चालीजें ६, जिण गुरु कने सूत्र वाच्या भणीया तिणने कष्ट करें तिणने पापश्रमण महा मोहनीरो बंधनहार जाणवो ७, साचे मन गुरूकी भक्ति कीजें ८, गुणवंत देवगुरु धर्म मानीजें ९, संसय उपजे तो सत्गुरुने पूछीजें १०, दोष आलोइने शुद्ध होइजें ११ गुरांरो कारज हर्षसुं कीजें १२, छकाया बचे जठे धर्म जाणीजें १३, सत्यवादीनी प-

तित आणीजें १४, अमृतसुं मीठो निरवद्य बोलीजें १५, पांच सुमति तीन गुप्ति शुद्ध चोखी पालीजें १६, संसाररो सगपण काचो जाणीजें १७, खाणो भोग कर्म बंधणरो कारण जाणीजें १८, धर्मरो सगपण साचो जाणीजें १९, निर्लोभी सतगुरांरी संगत कीजें २०, पाप अठारे परिहरीजें २१, गुरांसुं वांको वरते तिणरो वमो अभाग जाणीजें २२, गुरांसुं सवी वरते तिणरो बमा भाग जाणीजें २३, गुरांरी सीख उंधी मानें तो हीण पुनीयो जाणीजें २४, गुरांरी सीख सुधी मानें तो पुण्यवंत जाणीजें २५, चूकमें चालें तो चोर कहीजें २६, सुध चालें तो शाह कहीजें २७, ऊंडो वचन नहि बोले तिणने गंभीर आदमी जाणीजें २८, घणी हांसी लबलब करें ते गुणने खोवें २९, सूर थइ संथारो करें तो वीतराग सरिखो जाणीजें ३०, सुवतां सागारी अणसण कीजें ३१, पाछली रातरी सिझाय धर्म चिंतणा कीजें ३२, अठायां उघाभे दील न सूझजें ३३, तीन काल अशुभ वात न कीजें ३४, संसाररो कार्य उतावलसुं न कीजें ३५, नभ नागा न सूझजें ३६. ४

२६ आयुखारा छत्तीस बोल. १ जीव जाति आयु वर्ष १२०, २ हस्ति आयु वर्ष १२०, ३

मनुष्य आयु वर्ष १२०, ४ अश्व आयु वर्ष ३२ अथवा ४८, ५ व्याघ्र आयु वर्ष ६४ ६ काग आयु वर्ष १००, ७ गर्दभायु वर्ष ६४, ८ गाली आयु १६, ९ श्वान आयु वर्ष १२, १० शियाल आयु वर्ष १०, ११ हरण आयु वर्ष २४, १२ हंस आयु वर्ष १००, १३ मांजारी आयु वर्ष १२, १४ सुम्रा आयु वर्ष १३, १५ गेंम्रा आयु वर्ष २०, १६ सारस आयु ५०, १७ क्रौंच आयु ६०, १८ बगला आयु ६०, १९ सर्प्पायु १०० अथवा १२०, २० कीम्री आयु ४९, २१ उंदर आयु २–२०, २२ ससला आयु १० –१४, २३ देवी आयु ५०, २४ सुवर आयु ५०, २५ वागोल आयु ५०, २६ बपैया आयु ३०, २७ सिंह आयु १०००, २८ मागला आयु १०००, २९ ऊंट आयु २५, ३० भेंस आयु २५, ३१ गाय आयु ३०, ३२ घेटा आयु १६, ३३ जु आयु मास ३, ३४ कंसारी आयु मास ३, ३५ वींछी आयु मास ६, ६६ चौरिंद्री आयु मास ६. ५

३६ वंश छत्तीश. १ सूर्यवंश, २ सोमवंश, ३ यादववंश, ४ कंदबवंश, ५ परमारवंश, ६ इ क्ष्वाकुवंश, ७ चहुआणवंश, ८ चौलुकवंश, ९ मौरिकवंश, १० शोलारवंश, ११ सैंधववंश, १२ छिंदकवंश, १३ चापोत्कटवंश, १४ प्रतिहारवंश, १५ लुम्हकवंश, १६ राष्ट

॥ दुहा ॥

वासी वीकानेररा, सुश्रावक अतिज्ञान। भंशवंश घर सेठिया, अग्रचंद भैरुदान ॥१॥
भभि दूगी तास घर, वांचति निर्मल बुद्ध। बहु सिद्धांत संचय करे, मुनिजन कीजों सुद्ध ॥२॥
केवलज्ञानीकुं सदा, बंदु बे कर जोड़। गुरु मुखसें धारण करो, अपणो जिदकुं छोड़ ॥३॥
जिनवचन तहमेव सच, समभाव नहि ताण। जतनासुं वाचो सही, एह भजुनी वाण ॥४॥
सूत्र अर्थ अरु नय वचन, तिनके भेद अपार। अल्पबुद्धि अग्यान हुं, कविजन लेहुं सुधार ॥५॥
अक्षर पद भंगो अधिक, आघो पीछो होय। अशुद्ध लिख्यो होय तेहनो, मिच्छाडुक्कड़ तेह ॥६॥

॥ इति श्री बत्तीस बोल समास ॥

## आचारांगसूत्र. (आवृत्ति बीजी.)

अमृतना सुस्वाद माटे खात्री आपवानी जरुर नथी. वीरपरमात्माना जीवनचरित्र अने अणगार महात्माओना आचार विचारथी वाकेफ थइ संसारमां श्रावक तरीकेनुं शुद्ध वर्तन राखवा आ पवित्र पुस्तक दरेक जैने वांचवुं जोइए आजकाल शास्त्रार्थना जे झगडा थाय छे ते आवां पुस्तकना वांचनथी आपोआप, बंध थइ जशे. सर्व देशना लोको लाभ लइ शके माटे द्वीतियावृत्ति मोटा नागरी बाळबोध टाइपथी सहेलुं भाषान्तर अने मुळ पाटसहित मोटा खर्चे प्रसिद्ध करेल छे. मुल्य रुपिया चार पोष्टेज खर्च वी. पी. साथे पांच आना.



## श्री संघपट्टक.

संघे शी रीते वर्तवुं जोइए ते संबंधी नियमोना फरमाननो सर्वोत्तम ग्रंथ.

आ ग्रंथ अद्भुत काव्योमां रचायेल छे अने ते नवांगी वृत्ति करनार श्री अभयदेवसूरिना शिष्य श्री जिनवल्लभसूरिए न्यायशैलीथी भरपुर घणीज उपयोगी अने विस्तारवाळी मोटी टोका रची छे. आ ग्रंथ मोटा जैनी टाइपोथी लगभग पानां (७००) नो तैयार छे ने तेने पाका पुंठाथी बंधाएल छे आ ग्रंथनी फक्त थोडीज नकलो शीलीक छे. आ ग्रंथनी रु. २–८–० छे. जोइए तेमणे ताकीदथी मंगाववुं पाछळथी पस्तावो थशे. टपाल खर्च वी. पी. साथे आट आना.



## सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रार्थ.

महंतमुनि तिलोकरीखजीकृत.

आ सामायिक प्रतिक्रमणसूत्रने अमोए अमाराथी वनती महेनते वे त्रण मतो एकठी करीने शुद्ध करीने छपावी बहार पाडेल छे. आ पुस्तक सारु मारवाड, मेवाड, पंजाव, दक्षिण विगेरे आदि स्थळोना, भाइओने उपयोगी थाय तेवी वनती गोठवण करी छे. आ पुस्तकनी अंदर सामायिक प्रतिक्रमण अर्थ साथे, दश पच्चख्खाणो, चत्तारी मंगळ, चार शरणां, श्रावकने चिंतववाना त्रण मनोर्थ, प्रतिक्रमणनी सज्जाय, जीवराशीनी सज्जाय, उपदेशक पदो, महावीरस्वामीनु चोढालीयुं, गौतमस्वामीनी सज्जाय, महावीरस्वामीना वे छंदो विगेरे विषयो आवेला छे. किम्मत आठ आना टपालखर्च वी. पी. साथे त्रण आना.

—✻❂✻—

## नित्य नियमनी पोथी. ( आवृत्ति चौदमी. )

आ पोथीमां आनुपूर्वि, अनानुपूर्वि, बार भावना, शियलनी नववाडो, शियलनुं चोढालीयुं, नानी तथा मोटी साधु वंदणा, शिखामणना अढावीश बोल, समकितना ६७ बोल, श्रावकने चिंतववाना त्रण मनोर्थ, सज्जायो तथा वैरागी पदो विगेरे घणा विषयो आवेला छे. आ पोथीना उपयोगीपणा विषे आ पोथीनी चौदमी आवृत्ति छपाइ वहार पडी छे तेज तेनी सावीती छे. जोइए तेमणे मंगाववी. किम्मत बेआना टपालखर्च ०॥ आनो

—✻❂✻—